सूची

प्रस्तावना ९

कला

मेरा गाँव १९
कांगड़ा-कला की खोज की पृष्ठभूमि २५
शिवालक ३०
नूरपुर ३६
नगरोटा ४३
पालम घाटी ४८
अंदरेटा ५४
बैजनाथ ६०
महाराजनगर ६६
ग्वाल टीला ७०
सुजानपुर ७४
गुलेर चित्र कला की खोज ८२
गुलेर चित्र-कला का इतिहास ८७
कांगड़ा ९४
ज्वालामुखी १०३
नदौण १०९
व्यास की सर ११४
डेहरा गोपीपुर ११९
डाडा सिबा १२३

प्रस्तावना

ग्राम्य सस्कृति, कला तथा गीता रा मेरा प्यार कोई आज से नही है। बचपन से ही ग्राम्य वातावरण और ग्रामवासी मुझ पर गहरा प्रभाव डालते रहे हैं। मैंन इनके लोक गीतो और लोक-कथाओ म भरपूर रस लिया है। होशियारपुर की दसूहा तहसील के ग्राम बोदलाँ म मेरे बचपन न गाँवा से मेरा ऐसा नाता जोडा जो आज तक मेरे हृदय म अभिव्यक्ति के लिए छटपटाता रहा है। कागडा के समूचे रहन सहनकी होशियारपुर के पवतीय प्रदेश की सस्कृति से इतने निकट की साभेदारी है कि कागडा घाटी की सुदरता का वणन करते हुए मुझे कुछ एसा अनुभव होता है जसा कि मैं अपन ही गाँव का चित्रण कर रहा हाऊँ।

कागडा के गाँवो को देखकर मैंने अनुभव किया कि इनकी होशियारपुर के ग्रामा से बडी समानता है। आम और शीशम के पेड दोनो ही जिलो के शृङ्गार है। दगल मेले और त्योहार भी एक-दूसरे से मिलत जुलत है। बोली और रीति रिवाज मे भी बहुत साम्य है। कई लोक गीता के बारे म यह निणय करना भी कठिन हो जाता है कि य दोना प्रदेशा म से किसके है। कागडा के गाँवा का दौरा करते, और वहा क चित्राको देखकर आत्मविभोर होत हुए मुझे कुछ ऐसा अनुभव हुआ जसे कि मैं गाँव स दूर रहने के अपन अभाव की पूर्ति कर रहा हाऊ। लाहौर और लदन म देखे हुए चित्र कागडा के नसर्गिक वातावरण म देखने पर एक नया ही आनन्द दत हैं। मैं इस परिणाम पर पहुँचा कि अजता क भित्ति चित्रा के बाद पजाब ही एक ऐसा प्रदेश है, जिसने भारत को एसी भव्य और कोमल कला प्रदान की है। कागडा के लोक गीता म मुझे होशियारपुर की वनस्पति और होशियारपुर जन-जीवन की झलक मिली।

इसके बाद फुल्कारिया और कागडा के कढे हुए रुमाल देखे। भारत के किस प्रान्त म इतनी सुदर कढाई होती है ? जो प्रदेश इस प्रकार की उच्चकोटि की कला, रग बिरगी कढाई, हृदय म उतर जान वाले गीत और गुरुओ की आध्यात्मिक वाणी को जन्म दे सकता है उसे असभ्य और गँवार नही कहा जा सकता।

कालान्तर मे मेरी कागडा चित्रकला पर पहली पुस्तक भी प्रकाशित हो गई। इसकी कलामर्मज्ञो और कलाप्रेमिया न बडी सराहना की। इस पुस्तक के

छपन के बाद मैंने सोचा कि कागडा क लोक गीतो की भी खोज की जाय। चित्र कला और लोक गीतो म ही लोगा का आन्तरिक भावनाएँ मुखर होती है।

जस कागडा की चित्रकला शृङ्गार रस म डूबी है ऐसे ही कागडा के लोक गीत प्रम रग म रँगे हैं। सुदर मृग नयनियाँ जिनका रूप चकाचौंध करता है विरह की अग्नि म जलती हुई मुडर पर खडी अँधेरी राता म अपने परदेसी प्रियतम को याद करती हैं और प्रेम सन्देश भेजती हैं। वे बादलो, पख-पखेरुओ से कहती हैं कि वे उनकी दशा उनके प्रियतम को कह सुनाएँ। मिलन के चित्र तथा गीत और भी लुभावने हैं। वियोगिया के मिलन आत्मा की सर्वोपरि सुखानुभूति है। जसे ज्योति ज्योति म मिल जाती है एसा ही आत्माओ का सयोग है। यही परमानन्द का उच्च शिखर है। यही परमात्मा से साक्षात्कार है मिलन है। जो सच्चे प्यार से अनभिज्ञ हैं वे चाहे कितना पूजा-पाठ करें जगला पहाडा की खाक छानें उनका जीवन व्यय ही गया। ईश्वर प्रम है—निस्वार्थ और सच्चा प्रेम जो शरीर की सुध-बुध भुला दता है और जीवात्मा रस के सागर म हिलोरें लेने लगता है। इन गीता म हृदय की सच्ची वाणी है। ये हम एक कोमल, कमनीय ससार म ले जाते हैं। यही है सच्चे प्यार की दुनिया। कागडा के लोक गीत तो और भी मीठे और भी कोमल और भी प्यारे है।

इन गीतो की खोज और अध्ययन से यह पता चला कि कागडा, बिलासपुर सुकेत जम्मू और चम्बा की बोली भी पजाबी ही है। यह परिणाम एक लम्बी खोज के बाद निकला कि पजाबी उत्तरी भारत की साँझी बोली है और किसी सम्प्रदाय विशेष अथवा धम की निजी सम्पत्ति नही है।

कई लाग मुझसे पूछते हैं कि मैं पजाब की कला लोक-गीत, बोली और साहित्य म इतनी रुचि क्या लेता हू? मरा उत्तर है १९४७ म जब देश का बटवारा हुआ ता पश्चिमी पजाब क लोग दिल्ली म आए तथा और जगला म भी फल गए। जहाँ भी सिर छिपाने को जगह मिली पजाबी बस गए। मैंने देखा कि भारत के कुछ लोग इनको असभ्य-सा समझते थे। बहुत-से दूकानदार पेशा लोग मिलने आते और टूटी फूटी हिन्दुस्तानी म बात करते जिसमे आधी पजाबी होती। एम लगता जस य न तीतर हैं न बटेर। अपनी बोली को गँवारू और जग्की समझना और दूसरी बोलिया को सभ्य। अभी तक हमारे बहुत से पजाबी भाई विशेषकर शहरा म रहन वाले, इस बडे भ्रम म पडे हुए हैं। इनकी वही मन स्थिति है जो क्रान्ति स पहले रूस के उच्च वग के लोगा की थी। वे भी रूसी को गवारू बोली ही समझते और फ्रासीसी ही बोलते थे। अब वही रूसी भाषा है जिसम विज्ञान और साहित्य के ऊँचे-से ऊचे विचार अभिव्यक्त किये गए हैं। इस सम्बन्ध म दूर जाने की आवश्यकता नही। पचास साठ साल पीछे की ओर देखें तो पता चलता है कि भारत मे भी तमिल को छोडकर जो सस्कृत से भी

पुरानी है बहुत सी प्रान्तीय भाषाओं मे कोई विशेष साहित्य उपलब्ध नही था।

दिनेशचन्द्र सेन, बगाल के एक उच्चकोटि के विद्वान, अपने 'बगला भाषा का इतिहास' मे लिखते हैं कि उन्नीसवी शताब्दी के अन्त मे कलकत्ता मे एक साहित्य सभा हुआ करती थी, जिसके अग्रेज और बगाली दोनो सदस्य थे। इस सभा मे आम तौर पर अग्रेजी मे ही लेख पढे जाते और वाद विवाद भी अग्रेजी मे ही होता। एक अग्रेज सदस्य ने सुझाव रखा कि गोष्ठियो मे लेख बगला मे पढे जायें। यह सुनते ही बगाली सदस्य आग बगला हो गए और सबने इसका विरोध किया। उन्होने कहा कि बगला एक गवारू बोली है और वे इसमे लेख पढना पसन्द नही करेंगे। पर शीघ्र ही बगालियो के विचारो मे परिवर्तन आया और अग्रेज़ी पढे सब विद्वान्—राजा राममोहन राय, टैगोर तथा बकिमचन्द्र चटर्जी के नेतृत्व मे अपनी भाषा मे दिलचस्पी लेने लग गए और ५० ६० वर्षों में ही, उन्होने साहित्यिक दृष्टि से बगला को एक समृद्ध भाषा बना दिया।

पजाबी बोली तो बहुत पुरानी है और है भी बहुत लचीली जानदार और रसीली। वास्तव में भाषा को बनाने वाले उस भाषा के लेखक होते हैं। यदि सुलझे हुए विद्वान और विचारक लिखने बैठ जायें तो वही बोली समृद्ध और सशक्त हो जाती है। बाबा फरीद के श्लोको, गुरुवाणी, भाई गुरुदास के काव्य, शाह हुसैन और बुल्ले की काफियो, वीर रस की हीर और हाशिम की रचनाओ ने पजाबी भाषा को जो सम्पन्नता प्रदान की है उसका प्रमाण पजाबी के वर्तमान साहित्यिको की रचनाओ में प्रत्यक्ष झलकता है। धनीराम चात्रिक और पूरनसिह की पजाबी पढने में कितनी रसीली और मान्य है। गुरुबख्शसिंह ने इस बोली में सोज़ पैदा किया है और इसमे उर्दू, अग्रेजी और हिन्दी के शब्दो का खुले तौर पर प्रयोग करके पजाबी भाषा को लचीला बनाया है। मोहनसिह की 'अबी दे बूटे' नामक कविता दिल को कुछ इस तरह कचोटती है कि कहते नही बनता। अमृता प्रीतम ने अपनी कविता मे नारी के प्यार भरे हृदय को हमारे सामने खोलकर रख दिया है। कुलवन्तसिह विर्क गुलज़ारसिंह सधू सतोष सिंह धीर और नानकसिंह दुग्गल ने अपनी लघु कथाओ मे हमारे देहातो का ऐसा चित्रण किया है कि ग्राम्य जीवन की जीती-जागती तसवीरें आँखो के सामने उभर आती है—गाँव के जाटो की दरिया दिली हौसला दृढता और जी तोड परिश्रम ! धूल आँधी, पानी से उनका सघर्ष मानो साकार हो उठता है। सतसिह सेखो ने इन्हीं पजाबियो के जीवन की कसक और विवशता को पैनी दृष्टि से देखा। करतारसिंह दुग्गल ने अपनी कहानियो मे पोठोहार का खूब रग बाँधा है। पोठोहारिनो की सुन्दरता कोमलता, प्यार भरी चितवन, विरह मे टप टप गिरते उनके आँसू और चाँदी से सफेद पोठोहारी झरनो का कल-कल करता पानी—ये सब हमारे सामने जीता जागता दिखाई देने लगता है। पजाब के विविधता

पूर्ण जीवन का इतना सजीव और विस्तारपूर्वक वर्णन सिद्ध करता है कि जिस भाषा में इतने बहुरंगी और परिपूर्ण चित्र प्रस्तुत किए गए हैं वह निश्चय ही अत्यन्त समृद्ध और जीवित है तथा प्रत्येक साहित्य प्रेमी का मोहित और प्रेरित करती है।

जब भी किसी को किसी चीज से अलग रखा जाए तो उसके लिए मन उसकी चाह और भी बढ़ जाती है। यह भी पंजाबी भाषा से मेरे प्यार का एक कारण है। मैं ग्यारह वर्ष उत्तरप्रदेश में रहा जहाँ पंजाबी कभी कभार ही सुनने को मिलती थी। १९४१ ४५ तक रायबरेली में रहते हुए एक पंजाबी मुसलमान मोहम्मद अफ्ज़ल से भेंट का प्रायः अवसर मिलता। जब मैं पंजाबी में उससे बात करता तो उस पर ऐसा मस्ती छाने लगती जैसे किसी को कोई खोई हुई वस्तु मिल जाए। इसके अतिरिक्त मैंने यह भी देखा कि हम पंजाबी लोग हिन्दुस्तानी का कितना ही अभ्यास करें उत्तर प्रदेश वाले हमारी त्रुटियाँ झट पकड़ लेते और कहते क्या साहब! आप पंजाबी हैं क्या? मैंने सोचा छोड़ो यह छल छद्म, हमारी बोली किसी से कम नहीं। यह बोली है प्यार की और प्यार करने वालों की। यह बोली है हीर और राँझा की सोहनी और महीवाल की। यह बोली है उन दिलों को मोह लेने वाले लोक गीतों की जिनके सामने उर्दू हिन्दी की कृत्रिम कविता फीकी सी लगती है। यह बोली है पंजाब के परिश्रमी किसानों और मजदूरों की जो वर्षों की उपेक्षा के बावजूद जंगल के पेड़ पौधों की तरह—जिन्हें आसमान मेंह सींचता है—बढ़ती और फलती फूलती रही है।

पंजाबी के विरोध में मम्मी डैडी कहने वाले अंग्रेजी पढ़े लिखे पंजाबियों ने भी, पंजाबी में मेरी दिलचस्पी को काफी बढ़ाया है। इसमें शायद उनका दोष नहीं—क्योंकि शासकवर्ग सदा ही अपने आपको साधारण जनता से विलग रखने के लिए उनसे भिन्न भाषा ही बोलता रहा है। गुप्तकाल सन १००० तक हिन्दू राजा रानियाँ और उनके दरबारी तथा बड़े कर्मचारी संस्कृत में ही बोलते थे और जनता की अपनी बोली प्राकृत थी। प्राकृतों में से ही प्रान्तीय भाषाएँ निकलीं। मुसलमानों के राज्य में राजभाषा फारसी थी। सेना में, जिसमें हर तरह की खिचड़ी थी उर्दू ने जन्म लेना शुरू किया। अंग्रेजों के राज्य में सरकारी भाषा अंग्रेजी हो गई पर पंजाब की कचहरियों में उर्दू में ही काम होता था। अजीब तमाशा था। गवाह बयान पंजाबी में देता और लिखा जाता उर्दू में। आम लोगों पर रौब जमाने के लिए भी अफसर लोग उर्दू ही बोलते। जैसे ही एक गाँव का मुसलमान बाबू बन जाता तो उसकी बीवी जो गाँव में पहले साग तोड़ती और उपले चुनती खुली फिरती थी—बुरका ओढ़कर बेगम बन जाती। ऐसे ही बाहरी भाषा भी एक बुरके का ही काम करती है और इसे ओढ़कर लोग अपने आपको सम्मानित वर्ग में शामिल हुआ समझ लेते हैं।

जो कुछ मैंने ऊपर बताया है यह मुझ अकेले का ही अनुभव नहीं बहुत सारे

कलाकारों और लेखकों का भी है। कहानीकार और नाटककार बलवन्त गार्गी ने बताया कि जब वह कालेज म पढ़ता था, उसे अंग्रेजी मे लिखने का बड़ा शौक था। वह अपनी अंग्रेजी की रचनाएँ इकट्ठी करके शान्तिनिकेतन गया और उन्हे टैगोर को दिखलाया। टैगोर ने कहा, 'बच्चे ! तेरी मातृभाषा कौन सी है ?" उसने उत्तर दिया, "पजाबी।" टगोर ने कहा, तो फिर तुम पजाबी म लिखा करो।" इस बात ने गार्गी के जीवन म परिवर्तन ला दिया और अब वह पजाबी के लब्धप्रतिष्ठ नाटककारो म से है। इससे उलटा तजरुबा लोक-गीतो के सग्राहक देवेन्द्र सत्यार्थी का है। शुरू शुरू म उसने पजाबी मे अच्छा काम किया। जब वह हिन्दी 'आजकल' का सम्पादक बना तो हम तुम के बिना बात ही नही करता था। पर वहाँ से छुट्टी हो जाने पर उसने फिर पजाबी मे बोलना शुरू कर दिया। भारत के प्रसिद्ध कलाकार पृथ्वीराज कपूर न बताया था कि जब वह लगातार उर्दू बोलता है तो उसका मुह दुखन लग जाता है और फिर जब तक पजाबी मे न बोले, चन नही पडता। साराश यह कि अपनी मातृभाषा-जैसी कोई चीज नही। अगर मन मे विचार है, भाव हैं तो झरनों की तरह फूटकर निकलते है, भाषा चाहे कोई भी हो। पर जिस सुदरता और सच्चाई के साथ मातृभाषा म व्यक्त होते हैं और किसी भाषा म नही।

हिन्दी की तरह पजाबी भी कई तरह से लिखी जाती है। जब इसको सस्कृत और हिन्दी के विद्वान लिखते हैं, तब सस्कृत शब्दो से लाद देते हैं, और आजकल की हिन्दी की तरह इसे भी इतना कठिन बना देते हैं कि आम आदमी तो समझ ही नही सकता कि लेखक कहना क्या चाहता है ! जब यह फारसी के आलिमो के हाथ पडती है तो वे इसे फारसी के भारी भरकम लफजो स लाद देते हैं। ये लेखक इतना नही समझते कि कोई भी रोज पराँठे नही खा सकता और यदि खायगा तो बदहजमी हो जायगी। भाषा एक माध्यम है जिससे हम अपने विचार और भावनाएँ दूसरा तक पहुँचाते हैं, और यह माध्यम जितना सुगम हो उतना ही अच्छा होता है। हम यह भी नही भूलना चाहिए कि पजाबी मुसलमानो, हिन्दुओ और सिखो की साँझी बोली है और इस न मौलवी की बीबी, न ही भाई जी की सिहनी और न ही पडित जी की पडिताइन बनाना उचित है। यह तो हम सबकी मा है और हम सब उसके बच्चे है। माँ की बोली तभी अच्छी है जब उसके बच्चे उसको समझ सकें। जसे अंग्रेजी म लटिन, ग्रीक, एग्लो सक्सन, स्काच, कैल्ट, गलिक, पुर्तगाली और हिन्दुस्तानी तक के शब्द सम्मिलित ह इसी तरह ही पजाबी की नई बनाई जा रही इमारत के दरवाजे भी चारो ओर स खुले रखे जाने चाहिएँ और इसमे अरबी फारसी, उर्दू सस्कृत हिन्दी, और अंग्रेजी तक के शब्दो को आने देना चाहिए। इस तरह से ही यह भाषा समृद्ध हो

लोक-गीत और प्राकृतिक सुन्दरता के सम्बन्ध में की है। मुझे पूरी आशा है कि पाठक इसका अध्ययन उतने ही चाव से करेंगे जितने चाव और प्यार से मैंने इसे लिखा है।

७ तीनमूर्ति लेन,
नई दिल्ली

महेन्द्रसिंह रंधावा
२० जनवरी १९६२

कला

मेरा गाँव

कितने सुन्दर है हाशियारपुर के गाँव ! समूचे भारत म यही एक इलाका है, जहाँ मन्ताना म स हिमालय की बरफ से ढकी चोटिया इतनी स्पष्ट दिखाई दती है। शिवालक की ऊदी नीली पहाडियो न तो सीरोवाल की उपजाऊ स्थलो को और भी मनोरम बना दिया है। चारो ओर आमो के बाग तथा शीशम के झुड और गाँव का नाम बोदलाँ। जिसके निकट वन म 'गरना साहिब' का गुरुद्वारा है।

हर मौसम म गाँव के इलाके की रौनक, और बदलते हुए दश्य बडे ही मन भावन लगत हैं। बरसात म जब चारो ओर से घनघोर काली घटाएँ उमडती है तथा मूसलाधार पानी बरसता है, तो बादला की गरज सुनकर मोर चारो ओर स क-औं क औं का शोर मचा दते हैं। रात भर मेढको की गुड गुड वातावरण म गूजती रहती है। जब मढक मौन हो जात हैं ता झीगुर अपनी ही-ही की तान छेड देत है। रात को पीपल-तले तलया पर जुगनुआ का नाच शुरू हो जाता है और लगता है जसे तारो का मेह बरस रहा हो।

दिन मे गाय भसो का चारागाहा म चरना और उनके पीछे सफेद सफेद बगलो का टिड्डियाँ चुगते फिरना ! बछडा का पूछ ऊपर उठाकर मस्ता म कुलाँचे भरना ! बरसात का मौसम मनुष्य को ही खुशी नही देता, पशु पक्षी भी इस खुशी म साझी होते हैं, और बादलो का स्वागत करते हैं। सलेटी बादला मे सफेद बगलो की पक्तियाँ और भी सुदर लगती है मानो प्रकृति के गले म सफेद फूलो की वरमाला पडी हो।

बरसात म अमराइयो मे खूब गहमा गहमी रहती है। दिन म कोयल की 'कुहू कुहू' और रात को पपीहे की 'पी कहाँ, पी कहाँ' हवा म गूँजती रहती है। हम तडके ही बागा मे निकल जाते, और कमडल म पानी भरकर वक्षो स नीचे गिरे हुए आमो को चुन-चुनकर, पानी म धो धोकर चूसत जाते।

पद्रह बीस पेडो के आम चूस लेते तो पता चल जाता कि सबस स्वादिष्ट आम किस पेड के है। फिर उसी पड के आमा का टोकरा मँगवा लत और ठडे पानी म धोकर बाल्टी भर लेते। हाशियारपुर के गाँवो का शीतल जल भी तो एक वरदान

है। गर्मियों में भी इतना ठंडा कि नहाओ तो कपकपी छूट जाय। हाँ तो गर्मियों में हम आमों को ठंडा करके जी भरकर चूसते। कोई सिंदूरी तो कोई तीन के रंग का कोई पीला तो कोई मीठा तो कोई खटमिट्ठा, कोई खट्टा तो कोई सौंफिया।

मुसलमान भाइयों के बहिश्त में हूरों और पानी के चश्मों का वर्णन किया जाता है। हम होशियारपुरियों के बहिश्त में मीठे आम है—और आमों की कौन सी वस्तु मात दे सकती है? हमारे भाइयों को अपने स्वर्ग में हूरें अथवा अप्सराएं मिलें अथवा नहीं लेकिन हमारा स्वर्ग तो हमारे पास है। और हर तीसरे साल सावन भादों में हम इसका आनन्द ले सकते है। काम धंधे और चिंताओं में डूबे, शहरों से ऊबे हुए कई लोग मुझसे पूछते है कि हमारी बीमारी का कोई इलाज है और कि आत्मा को शान्ति कैसे मिल सकती है? इनको मैं यह परामर्श देता हूं, होशियारपुर के बागों में जाकर पंद्रह दिन आम चूसो और भूल जाओ कि तुम पढ़े लिखे हो।'

आमों का मौसम बीतता तो मक्की के भुट्टे चल निकलते। हम खेतों में झाड़ झंखाड़ को जला भुट्टे भून भूनकर खाते। और घर लौटकर खट्टी लस्सी का गिलास नमक और काली मिर्च डालकर पीते। भुट्टे पकने को होते तो कहारी के भाड़ पर उनके मुरमुरे भुनवाते और पक जाते तो फुल्ले।

सन्नियों में चलने (कोल्हू) चलते तो हवा गर्म गुड़ और राब की महक से भर जाती। कितनी स्वादिष्ट है गुड़ और राब की महक। मुझे अभी तक वह महक आती है। रात को कम्बल लपेटकर भट्टी के पास खोरी पर लेट जाना और जाटों की बातें सुनना! गप्पों में बोल्लों वालों का कोई मुकाबला नहीं कर सकता। आधा गाँव बेकार है और चबूतरों तथा लकड़ी के ठूंठों पर पंक्तियाँ की पंक्तियाँ बैठी दीखती हैं।

जब सर्दी बढ़ जाती तो जाट दीवानखाने के बरामदे में सँगनियाँ जलाकर आग तापते और साथ-ही साथ सन भी उतारते जाते। मैं गोपीचन्द विक्रमाजीत राजा भोज और पूर्ण भक्त की कहानियाँ बड़े ध्यान से सुनता। कभी-कभी जाटों को भूगोल समझाने की चेष्टा करते हुए कहता कि धरती गोल है और सूर्य की परिक्रमा करती है। एक राजासिंह नामक भैसों का व्यापारी था। उसने काफी पैसा जोड़ा था किन्तु रहता था अत्यन्त मैली कुचैली कोठरी में। उससे मैं कहा करता 'चाचा! घोर नरक में क्या रहता है? पैसा साथ बाँधकर ले जायगा क्या? एक हवादार कोठा छतवा ले।' वह कहता 'तब छतवायेंगे जब धरती घूमना बन्द कर देगी कहीं कोठे का मुंह ही दूसरी तरफ न हो जाय।

पौष के महीने में सर्दी और बढ़ जाती। पहाड़ की ओर से कड़ाके की हवा चलती, रात को कोहरा पड़ता और तालाबों पर बरफ की तह जम जाती।

धुंध में सूरज एसे दिखाई देता जसे चाद हो। भैंसें पानी पीने के लिए तालाब की ओर भागती, थथनी पानी म डालतीं और ठड के मारे झट स बाहर निकाल लेती। भेस जोडे, और बाहा की कची बनाए जाट दात कटकटात पर अपना काम हिम्मत से करते जाते। मुझे भी बहुत सर्दी लगती। गम स्वेटर और कोट पहने, तथा सिर पर गम गुलूबन्द लपेटे जब प्रात काल नित्यकम के लिए, घर से खेतो की ओर निकलता तो चरणसिंह मसद कहता, "सरदार जी! आप पूनी की तरह लिपटे हुए कहाँ जा रहे हैं?" पौष के महीने मे छत पर धूप सेंकने का बडा आनन्द है तथा साग और मक्की की रोटी कुछ और ही मजा देती है।

फाल्गुन और चत म खेतो की बहार जोबन पर होती। सरसो के पीले फूलो के साथ गेहूँ के खेत ऐसे लगते जसे एक हरी तस्वीर पीले चौखट म जडी हुई हो। साग तोडन वालियो के लाल पीले नीले दुपट्टे हरी लहलहाती फसलो म कितने सुदर लगते! लडके छालियो की टाट के पटाखे बजाते और जौ की कोपलो की पीपनियाँ। नगे पैर, ठडी रेत पर चलने में और भी आनन्द आता। यह कृषको के लिए फुरसत का महीना है। बसाखी के मेले पर कुश्तिया होती और लडके लड्डू और जलेबिया जी भरकर खाते।

जब गेहूँ की फसल कट चुकती तो किसान गहाई म जुट जाते। चिलचिलाती धूप के फरले चलते और छाजो से उडाई होती। जब ज्येष्ठ आषाढ मास म अनाज की भराई हो चुकती तब न्यौता का दौर शुरू होता। इन न्यौतो मे गावो के लोग एक दूसरे को दावत खिलाते—माश (उडद) की दाल और लाल मिर्चो से रँगी हुई खट्टी लस्सी के पकौडा का रायता और लोहे पर सिकी हाथ की रोटियाँ। यह १९१८ की बात है। अभी गावो मे चुनाव की बीमारी नहीं पहुँची थी, और लोग मैम्बरी और मिनिस्टरी के सपने नहीं देखते थे। सब बडे प्यार-सलीके से रहते थे और एक-दूसरे के दुख सुख के साझी होते थे।

अभी मुह अँधेरा ही होता, और सुबह का तारा चमक रहा होता कि हम रोटियाँ और अचार अगोछे म बाधकर बलगनो के स्कूल को चल देते। बहुत-सारे तो स्कूल पहुँच जाते पर कई पीर फ्लाही ही रुक जाते और शाम को घर आकर बताते कि पढ आए हैं।

बहुत-से लोग गर्मी पसन्द नहीं करते, पर मुझे गर्मियो के महीने बहुत अच्छे लगते हैं। दिन को ठडे पानी से नहाने का मजा और रात को मकान की छत पर सोने का। खुले आसमान के नीचे सोकर प्रकृति से सीधा सम्पर्क स्थापित हो जाता है। चारपाई पर लेटकर, चाद-तारो की ओर देखना और देखते ही चले जाना! आकाश म चाद की दैनिक यात्रा कितनी रोचक है! पहाडो के पीछे से धुधली सी रोशनी का दिखाई देना, धीरे धीरे उसका तेज होना और फिर सारे आकाश म फैल जाना! चाँद और बादलो की आँख मिचौनी और भी आनन्द देती।

ध्रुवतारे और सप्तर्षि को उत्तरी आकाश में देर तक दृष्टि गड़ाकर देखना और ध्रुव भक्त की कहानी की याद हो आना। आकाश गंगा का अँधेरी रात में और भी चमकना और मेरा यह सोचना कि इस धुंधली-सी पट्टी में लाखों सूरज और मण्डियां घूम रही हैं—और अनेकों में जीवन हमारी पृथ्वी से भी आगे बढ़ा हुआ होगा। एक तारों का गुच्छा सा जिसको सतबहनी कहते हैं उसको देखते ही समय का अनुमान लगाना और सोने की तयारी करना। कुत्तों की चऊँ-चऊँ का रात की खामोशी को और भी बढ़ाना। रात्रि के इस मौन में कितनी शांति होती है! और इससे ही हम शक्ति और जिन्दगी मिलती है। कभी-कभार तड़का होने ही आँख का खुल जाना और सुबह के तारे की ओर देखना। इसकी चमक कितनी भली लगती है! ऐसा प्रतीत होता है, जैसे यह आसमान का दीपक हो। इस समय सारा गाँव सो रहा होता और मुझे ऐसा लगता जैसे सारी प्रकृति की सुन्दरता का स्वामी मैं ही हूँ और इसके सब भेद केवल मुझे ही मालूम हों! इसकी सुन्दरता का अवलोकन करते हुए मैं अपना आपा भूल जाता और मुझे एक नशा सा चढ़ जाता।

आमों के बाग होशियारपुर के वासियों को जिस्मानी खुराक ही नहीं देते, इनसे ग्रामीण जनता को रूहानी खुराक भी मिलता है। हरेक बाग में संतों का डेरा होता है और लोग फुरसत के समय गुरुवाणी का पाठ सुनने आते हैं। हमारे गाँव के बाग में भी संत नारायणसिंह संत हरनामसिंह और उनके साथियों ने बड़ी रौनक लगा रखी थी। गर्मी की छुट्टियों में श्रोताओं में हम भी सम्मिलित हो जाते। संत नारायणसिंह बड़े नेक इंसान थे। सफेद भरी हुई दाढ़ी चेहरे पर नूर और मीठे बोल। जब भी बात करते शांति और खुशी बिखेरते। संत हरनामसिंह योग वाशिष्ठ और 'सूरज प्रकाश' की बड़ी अच्छी कथा कहते और हम बड़े चाव से सुनते।

बागों में बड़ी सफाई रहती और झाड़ू देने वालों की कोई कमी न होती। कहते हैं कि भादों की चिलचिलाती धूप जाट को साधु बना देती है। सन्तों का सेवक एक मग्गू नाम का जाट था। गुडाई से उकताया हुआ बाग की ओर आ गया। मैंने पूछा "मग्गू! कोई भजन-पाठ भी करते हो?" वह बोला "समाधि तो लगन ही नहीं देते संत जी। कभी कहते हैं पानी भरो कभी कहते हैं झाड़ू दो।" श्रोताओं में पड़ोसी गाँव का राजपूत चौधरी मीरखाँ सन्तों और गुरुवाणी का बड़ा प्रेमी था। आम के नीचे चारपाइयों की पंक्ति लगी होती और सबसे चौड़ी खाट पर चौधरी साहब विराजमान होते। ठंडाई के दौर के साथ साथ कथा भी चलती रहती। चौधरी साहब बड़े विशाल हृदय थे। आधी के करीब जमीन हमारे चाचा महरसिंह के पास गिरवी रख चुके थे। महरसिंह बड़े कंजूस थे और सन्तों का चढ़ावा कम ही चढ़ाते थे। कंजूस भी क्या न होते। जो ताम्बर

उन्होंन दौलत पैदा की थी। जब मेंह् पडता ता शीशम उगात। और कोई काम न होता तो सन ही उतारत या फिर गँडासे से चारा काटने लगने। सन्त हरनामसिंह सदा यही उपदेश देते, 'माया के जाल मे नहीं फसना चाहिए। जो कमाओ, उसम से साधु सन्तो की भी सेवा करो।" महरसिंह की कजूसी और तगदिली को याद करके कबीर साहब के इस दोहे का उच्चारण करत

'सूमे धन राखन को दोआ,
मुगध कहे धन मेरा।
जम का डड मूड मे लागे,
छिन म करे नबेरा।"

जब पिछली दो पक्तियो का उच्चारण होता तब चौधरी भीमेखाँ भी साथ ही-साथ जोर से दोहराता 'जम का डड मूड मे लागे, छिन म करे नबेरा। और फिर बडी हँसी मचती।

अमृत वेला मे सन्त कुए केपास स्नान करते, और मैं ढीगली से डोल खाचता। सरदी का मौसम होता। पानी मे से भाप निकल रही होती और सन्त कच्छे को मसलने हुए कहने, 'रामदास सरोवर नहाते, सब उनरे पाप कमात।' सन्तो की सेवा करके बडा आनन्द आता। इन बाता से ही नम्रता और सेवा भाव उत्पन्न होना है, जो आजकल लुप्त-सा हा रहा है। कुए के पास जहाँ जिन्दगी की झलक देखते वहा मौत की परछाइया भी दिखाई देती। गाँव म किसी की मत्यु हो जाती तो बाहर से लाग सोग मनाने आते। स्त्रियाकी टालियाँकुए के पासडेरा लगातीं। पहले तो सब हँसती खेलती रहती पर कुए के पास आत ही, घाघरे कधो से उतारकर पहन लेती और सहसा विलाप करना शुरू कर दती। गाव पहुँचते ही मीरजादी सबका चाज ले लेती और 'शम शम शेरा' कहकर परेड करवाती।

गर्मियो के महीनो म जब मेंह् की बाट देखी जाती है तब गाँव वालो के पास काम कम होता है। दगल होते और गाव के पहलवान बादाम खाकर कसरत करते। मिल्खी पहलवान अपना पाँच मन का पत्थर उठाता। शीशम के झुरमुट म कुलारों के भाड बडी खूबी से नकलें उतारते। कई बारलोग काफी देर तक उनको पैसा न देते तो वे आपस मे बात चीन का ढग इस तरह पलट लेते 'भई। यह गाँव लगना तो शौकीनो का है पर हैं सब ठडेन्दार। लगता है जैसे सबन धनिया पी रखा हा। यह सुनकर लोग हस-हसकर लोट पोट हो जाते और नकलची फिर अपनी बात शुरू कर देता

'एक चीज ऐसी है जो रब के पास भी है नही।

'क्या?

"रब्ब के पास गुस्सा है नही।

'एक चीज ऐसी है जो आसमान म भी है नही?

'वह क्या ?

दरख्त।

एक चीज ऐसी जो धरती पर है नहीं।

'वह क्या ?

'तारे।'

'एक चीज ऐसी जो इन चौधरियों के पास भी है नहीं।'

वह क्या ?

'इनके पास न नहीं है।'

और बारात में आए हुए जाट चौधरी झेंप कर, झट से रुपया निकालते और भांडों को थमा देते।

इस तरह लोग खुशियाँ मनाते। रात को रास रचाई जाती। रासधारिये आम तौर पर कृष्णलीला ही करते और बारह बारह साल के लड़के मुह पर आटा पोतकर गोपियाँ बनते। गोपियों को देखकर जाट मस्त हो जाते और दुअन्नियों का मेंह बरसा देते।

कभी-कभी जलसे वालों की पार्टी भी आती जिनमें नबिया कालू और भोले भराई की ढ़ड सारंगी वाली पार्टी बड़ा समां बांधती। जलसा पार्टी के आगे आगे तीन नाचने वाले सुन्दर घाघरा पहनकर मोरों की तरह झूमते इठलाते। उनके पीछे ढोलक वाला मस्ती में आकर [illegible] करता और सारंगी वाला झूमता हुआ-सा अपनी सारंगी पर गज फेरता। करताल वाला पोस्त के सरूर में ढड वाले के साथ मिलकर बोल उठता

ऐवा आदि धआंरिए
मुण्डीयां वर देह
विच पहाड़ी आसन तेरा
मेरे कारज सिद्ध कर देह।

और इसके बाद सारे जलसा पार्टी का अगुआ दोहा उठाता और नाचने वाले अखाड़े में ऐसे कूद पड़ते जैसे मुर्गा मुर्गी पर लपकता है।

कभी-कभी [illegible] हीर रांझा करते और पूरन भगत की कथा गा-गा कर [illegible]। इस तरह गाँव के [illegible] ढंग से अपना मनोरंजन करते और जीवन का आनन्द लूटते।

कागडा-कला की खोज की पृष्ठभूमि

गाव का स्वग १६२८ मे छूट गया, और मैं लाहौर म मिशन कालेज म भरती हो गया, और १६२६ मे गवनमेंट कालेज म । यहा अमीरा के लडके वडे सूट बूट पहनकर आते, और नाक भी रेशमी रूमाल से ही पाछने। लाहौर का किले-जसा डरावना रेलवे स्टेशन मुभे हमेशा उदास कर दता। जब कभी बौटनी की प्रयोगशाला से अवकाश मिलता, तो मैं लाहौर के अजायबघर म चला जाता। यह गुम्वद वाली इमारत, जिसके सामने भगिया की तोप गडी हुई है वडी विचित्र सी है ढाला तलवारो, पुरानी वन्दूका और भी कई छुट पुट चीजा स भरी हुई। प्रवेश द्वार के पास शीशे की अलमारिया म कुछ तसवीरें लगी हुई थी। इन चित्रो के लाल हरे, नीले और पीले रग मुझे सदा अपनी ओर आकर्षित करत इनम राजा रानिया के साथ, बादला के सुदर दश्य देखन को मिलते ता कही भवनो की छत पर गदन उठाए और बादला से प्यार कर रहे होते, और कही कुआ पर स्त्रिया घडे लिये हुए पानी भर रही हाती। इन चित्रा मे, चित्रकार न ग्राम्य जीवन को इतने प्यार और उत्साह स दर्शाया था कि इनको देखकर मुझे अपना गाँव याद आ जाता। पूछन पर पता चला कि य चित्र हमारे पडौसी जिले कागडा म अठारहवी और उन्नीसवी शती म चित्रित किये गए थे।

सन १६३३ म मैंने आई० सी० एस० का परीक्षा पास की और दो साल लदन म काटे। गाँव की शान्ति की तुलना म लदन के यातायात के कोलाहल से जी घबरा उठता। डामर स पुती सडकें और धुएँ से काली हुइ पत्थर की इमारतें जो सिर उठाकर सूरज की रोशनी और खुली हवा को ढूढने की व्यथ कोशिश कर रही थी, वडी निराश सी दिखाई देती। मन मे कई बार उमग उठा कि किसी खुली जगह निकल जाऊँ और धरती माता के दशन करूँ। जब हैम्पस्टड हीथ म मैंने हरी घास और मिट्टी देखी तो वडी खुशी हुई। मिट्टी का डला हाथ मे लेकर या लगा जस अपन गाँव की धरती की निशानी हाथ लग गई हो। इसान इसलिए नहीं बना कि वह कुर्सिया पर बैठे और मकान की चारदीवारी म बन्दी होकर रह जाय। जब मनुष्य का प्रकृति से सम्बन्ध छूट जाता है तो वह घुलने लगता है और उसम वे सब गुण, जो मिट्टी, हवा और धूप पैदा करती है, लुप्त

दिल म जोश आया कि इनके सुधार का काम किया जाय। उन दिना अंग्रेजो का बालवाला था, और कोइ अफसर दम नही मार सकता था। वे दिखावे का ग्राम सुधार ही चाहते थे असली नही। अगर कोई लगन के साथ काम करता तो उसको दिल से नफरत करते चाहे मुह से कुछ न कहते। अंग्रेज अफसरा की परवाह न करते हुए मैंने यह काम सहारनपुर, फैजाबाद और अल्मोडा के जिला म खूब उत्साह से किया, और लोगा म एक लहर पदा कर दी।

१९३८ मे मेरा तबादला अल्मोडा हो गया। यह पहाडी जिला संस्कृति और कला का केन्द्र बना हुआ था, और बहुत-से पश्चिमी कलाकार विद्वान और योगी यहाँ कालीमठ के पहाड पर रहत थे। यहा मेरी भेंट ब्रूस्टर नामक एक अमरीकी कलाकार से हुई। शनिवार और रविवार मैं उन्हीके यहाँ व्यतीत करता।

वहा से बिनसर के पहाडो, और नना देवी तथा नन्दाकोट की बर्फानी चोटिया के अत्यन्त सुन्दर दृश्य दिखाई देते। ब्रूस्टर साहब ने कुमाऊ की वनस्पतियो, पहाडो और मन्दिरो के बड भव्य चित्र बनाए थे। ये मेरे मन को बहुत भाते।

१९४० मे मुझे इलाहबाद बदल दिया गया और ब्रूस्टर की कला पर मैंने एक छोटी सी किताब लिखी। कला के सम्बन्ध म यह मेरी पहली पुस्तक थी, और मुझे इस बात का बडा मान था कि कला के पारखियो म अब मेरा भी नाम जुड गया है।

१९४२ म जब मैं रायबरेली का डिप्टी कमिश्नर था जी मे आया कि अपनी पुस्तक की प्रतिया के बदले कला के अन्य विद्वाना से कला-साहित्य इकट्ठा किया जाय। इसी सिलसिल मे बगाल के कला पारखी अर्धेन्द्र गगोली को मैंने अपनी किताब भेजी और बदल म उसकी एक छोटी-सी पुस्तक जिसम कागडा शैली के चित्र थ भेजने का अनुरोध किया। कुछ दिनो बाद गगोली का पत्र आया। उसम लिखा था, आपकी किताब किसी काम की नही। आपको मालूम ही नही कि भारतीय कला है क्या ? यदि आप कागडा शली के चित्र दख पाय तो आपको पता चले कि कला किसको कहते है ! अपनी पहली किताब की निन्दा पढकर बडा क्रोध आया और गगोली के पत्र के टुकडे करके मैंने बाहर फेंक दिए। गुस्सा चाहे बहुत था, पर उसकी कागडा कला की उत्कृष्टता की बात मेरे मन म जसे गड सी गई। १९४५ मे, मैं इडियन कौंसिल ऑफ एग्रीकलचरल रिसच का सक्रेटी बनकर दिल्ली आया, और देश के बँटवारे तथा आजादी के बाद अपना नाम उत्तर प्रदेश से बदलवाकर पजाब म लिखवा दिया। १९४८ मे जब पजाब आया तो टूटे फूटे, धूल मे मिले लुहू लुहान पजाब म यहा-वहाँ हर कहीं शरणार्थी कम्प ही दिखाई देते। १९४९ म पजाब सरकार न जमीन की बाट का काम मुझे सौंपा। यह काम मैंने त्रिलोकसिंह और प्रेमनाथ थापर क साथ मिलकर किया। उजडे हुआ को बसाकर, और कई नई योजनाएँ बनाकर मुझ बडा स तोष हुआ।

कांगड़ा में वारटी एस्टेट नाम से चाय बागान है। कांगड़ावासी चाहते थे कि यह उनको अलाट कर दिया जाय।

१९५१ तक जब काम-काज का जोर ज़रा हल्का पड़ा मैंने सोचा कि कांगड़ा का दौरा करके इस चाय बागान को देखा जाय। अप्रैल १९५१ में मैं पालमपुर पहुँचा और घोड़े पर सवार होकर बहुत सारे गांव देखे। धौलीधार को दूर से तो कई बार देखा था, पर निकट से देखने का अवसर अब ही मिला। घाटी की सुन्दरता देखकर मुझ पर वही असर हुआ जो रांझा का हीर को पहली बार देखने पर हुआ होगा। जी चाहता था कि इन वर्फानी पहाड़ों को देखता ही रहूँ देखता ही रहूँ!

इस दौरे में ही सोभासिंह चित्रकार से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। इन्होंने अन्द्रेटा गाँव के एकान्त में कुटिया बनाई है। सोभासिंह ने कांगड़ा चित्रों के एक संग्रह का जिक्र किया जो भवारना के मियाँ रामसिंह के पास था। दिल में शौक उठा कि कांगड़ा-कला की उत्पत्ति और विकास की खोज की जाय। इस बीच मुझे अम्बाला का कमिश्नर बनाकर भेज दिया गया। जालन्धर के कमिश्नर के पास अम्बाला के कमिश्नर के मुकाबले में ज्यादा अपीलें होती थीं। और जालन्धर डिवीजन की कुछ अपीलें अम्बाला कमिश्नर को भुगतानी पड़ती थी। मैंने कांगड़ा की अपीलें स्वीकार कर लीं ताकि इस बहाने मुझे कांगड़ा का इलाका देखने का और अधिक अवसर मिल सके।

इन्हीं दिनों लाहौर से पचासीस प्रतिशत कांगड़ा शैली के चित्र पंजाब म्यूज़ियम शिमला में आ गए। यह भारत के पंजाब के लिए लाहौर म्यूज़ियम के कला भंडार का भाग था। इनमें से बहुत-से चित्र बड़े सुंदर थे। मैंने सोचा कि साठ प्रतिशत कमी जिन चित्रों की बाँट के कारण हो गई है उसको पूरा किया जाय। अम्बाला में एक बहुत बड़े सांस्कृतिक मेले का आयोजन किया, और उसकी आमदनी से न केवल बहुत-सा पुस्तकालय ही खोला इसके साथ ही कांगड़ा घाटी में जो चित्र मिले सब खरीदकर पंजाब म्यूज़ियम शिमला में रख दिए। फिर पंजाब सरकार को प्रेरित किया कि वह भी इस कला-संग्रह के अभियान में योग दे। पंजाब सरकार के मन्त्री सरदार प्रतापसिंह कैरों और सरदार उज्जलसिंह के सहयोग से बीस हजार रुपया प्रति वर्ष कांगड़ा चित्रों की खरीद के लिए मिलने लगा और भारत के दूर दूर के नगरों में से कांगड़ा के जो भी चित्र उपलब्ध हुए सब के सब इकट्ठा करके पंजाब म्यूज़ियम के हवाले किए।

भारत सरकार के सूचना और कला मन्त्रालय ने १९५३ में मुझसे कहा कि कांगड़ा-कला पर किताब लिखूँ। कलाकार गुप्ता सरकार और फोटोग्राफर म. ऐस. [illegible] के साथ मैंने कांगड़ा घाटी का एक और दौरा किया और कांगड़ा, गुलेर, नूरपुर और चम्बा में राजाओं के चित्र संग्रहों की खोज की।

इसी वप ही पजाव सरकार ने मुझे पजाव का डैवेलपमैंट कमिश्नर नियुक्त किया और मुझे सारे पजाव के गांवा मे घमने की छट मिल गई। पजाव के गांवा के दौरे फिर से वसान के महकमे के काम के दौरान भी, काफी किए थे। गांव वसाने के काम म, यह अनुभव बहुत काम आया। सवस वडी खुशी ता मुझे यह हुई कि अव मुझे कागडा के गांवो की सेवा करन का अवसर मिला।

अगस्त १६५३ मे मैं शिमला स पजाव की नई राजधानी चडीगढ आ गया। यहाँ मुझे श्री डवल्यू० जी० आचर की पहाडी चित्र-कला पर लिखी हुए पुस्तक पढन का अवसर मिला। इस पुस्तक न मुझे वडा प्रभावित किया। सवसे वडी वात तो यह थी कि आचर न लन्दन म वैठकर जा अनुमान लगाए थ व सही निकले। इस सच्चे और गहरी खोज क काम न, मेरे दिल मे आचर क लिए वडा सम्मान जगाया। मैं उनको व्यक्तिगत रूप से नही जानता था, पर फिर भी पत्र लिखा। उनका वडा प्यार भरा जवाव आया। मैंन उन्हें कागडा आने का निमन्त्रण दिया। मुझे वडी खुशी हुइ कि वे १६५४ म भारत मेरे पास आए। भारत के वडे लेखक डाक्टर मुल्कराज आनन्द भी उनके साथ थ। हम तीनो न कागडा का दौरा किया।

शिवालक

शिवालक का नीली पहाड़िया के पीछे बफ स ढकी चोटिया की एक पक्ति है जो जनवरी मास म दिखाई देती है। धौलीधार नामक यह पवत खड पीप म एक जादू की तरह उत्तर म दूर क्षितिज तक प्रकट होता है तथा बगास म फिर धूल और धुध म लुप्त हो जाता है। शिवालक की नीली पहाड़िया की पृष्ठभूमि म यह अत्यन्त सुदर प्रतीत होता है। लगता है जसे यह पजाब क मदानो का मुकुट हो।

जिला होशियारपुर म अपन गाँव क मकान की छत पर खडा मैं कई बार इस बफ की चोटी को अपलक निहारता हुआ विचारा म डूब जाता था। मुझ पर सदा ही इसका जादू-सा प्रभाव होता। फिर मैंने इस हिमशिखर का दृश्य बनखडी क एकात बगल स देखा जो होशियारपुर स ऊना जान वाली सड़क पर बना हुआ है। मुझ लगा जस यह बगला शिवालक की पहाड़िया म किसी बाज का घोसला हो और मैं यहाँ स धौलीधार की अनुपम छटा को देखता नही थकता था। चिन्त पुरनी क मदिर स मैंने इस बर्फानी पहाड का दश्य और निकट से देखा और मुझे यह चुम्बक की तरह अपनी ओर खीचता हुआ प्रतीत हुआ। सूय के प्रकाश म यह चोटी एस चमक रही थी जस चाँदी की डली हो या कोई हिमालय पवत की नवविवाहिता रानी किसी गहरी प्रतीक्षा म खोई हुई हो।

कागडा की घाटी अपनी कोमल सुन्दरता क लिए विख्यात है। नाटी नाटि पहाड़िया और छोटे छोटे घरा कोठिया हवेलिया तथा मदिरो के बीच सीढीदार खेत हैं। नहरो की तरह फल इन खेता के किनारा म से बहती मोतिया जसे स्वच्छ बफ स ठड पानी की अगणित कूलें हैं जिनके कारण यह घाटी बडी मनोरम लगती है। इस घाटी की कमनीय सुन्दरता के विपरीत धौलीधार के हिम से ढके आकाश स बातें करने वाल पहाड हैं जिनम स बर्फानी नदियाँ नाचती गाती हुई गुजरती हैं। रसाब चीड क जगला और मदानो पर खामोशी और शान्ति का साम्राज्य है। किसी दश की सुन्दरता का कारण वहाँ क प्राकृतिक दश्य ही नही उसक निवासी भी होत हैं। कागडा की घाटी म प्रकृति का सौन्दय वहाँ क बसने वाला के सौन्दय स और भी चमक उठा है। धौलीधार क सघन जगला म गद्दी नौजवान और सुन्दर गद्दी स्त्रियाँ घूमती फिरती हैं। उनका जीवन शुद्ध ग्रामीण सादगी का जीवन

है। घाटिया के दामन म राजपूत और ब्राह्मण सुन्दरियाँ अपनी सुन्दरता को, लाख-लाख लज्जा और सकाच के पर्दों स, छिपाती फिरती हैं। कमर पर भले भल से घाघरे, नाक मे नवेली नथ और सिर पर चमकत हुए चौंक। इस घाटी म हम कागडा की अति सुन्दर कला के नमूने भी मिलते हैं जिनम प्रेम की भावनाआ को रगा और रेखाआ के अत्यन्त कोमल सम्मिश्रण ने अमर कर दिया है। दा शताब्दियाँ बीत जान क बाद भी, उनम दिखाए गए पात्र जैस जान-जागत, हँसते खेलत दिखाई देन हैं। मरे मन मे आया कि कागडा की इस अनुपम घाटी को और निकट स देखू और इसका आनन्द लू।

फाख्ताआ की घू घूँ स हवा गूँज रही थी और मोर मस्ती म भर मकाना की छता पर नाच रह थ। अपन चमकते पखा का प्रदशन करके व मोरनिया का मन माह रहे थे। अकुर फूटन की ऋतु थी। शहतूत की कोमल पत्तियाँ निकल रही था और शाखाएँ, जा एक सप्ताह पूव इधन की तरह लगती थी, उनम भी हरियाली झलक रही थी। लाखा कापले, फूटन की तयारियाँ कर रही थी। आम क बागा का उदासी भी खत्म हो रही थी। सारे वक्ष हल्के पीले बौर स लदे हुए थ। रात का पपीहा का पी कहाँ-पी कहाँ का राग खूब समाँ बाँध रहा था, और दिन म कोयल की कुहू-कुहू बागा की रौनक को बढा रही थी। मेरे सामने धौलीधार की सफेद प्राचीर, बफ स ढकी हुई दिखाइ दे रही थी और उसके नीचे शिवालक की नीली पहाडियाँ और भी सुन्दर लग रही था।

कागडा घाटी के पहाडो, नदियो, जन-जीवन तथा कला सौन्दय की खोज, मैंन माच १९५१ म आरम्भ की। कागडा, व्यास नदी की घाटी है। यहाँ व्यास म और भी कई नदिया मिलती हैं। हमने व्यास नदी का मीरथल के नए पुल द्वारा पार किया। मुकेरिया-पठानकोट सडक पजाब की सबसे रमणीक सडक है। पहाडिया के दामन म यह सडक आम के बागा म से गुजरती हुई, कई बरसाती नाला का फलागती है जिन पर जगह-जगह पुल बनाए गए हैं। मीरथल का पुल इजीनियरी विज्ञान का एक उत्तम नमूना है। जब हम इस इलाके मे से गुजर तो आम के पेडो पर हल्का पीला बौर आया हुआ था, जिनसे हवा म सुगधि फली हुइ थी। खेतो म चारो ओर हरियाली थी, और गहूँ की खेतिया प्रात काल के शीतल पवन से झूम रही थी। आठ मील मोटर चलाने के बाद हम डमठाल के आश्रम म पहुँच गए। यह आश्रम शिवालक की गोद म बना हुआ है। आश्रम तक पहुँचने के लिए पहले हम एक बडे सघन वट वक्षो के झुड म से गुजर। बड के वक्ष हमे ऐंस लगे जसे रहे रग के मदिरा के झुरमुट हो। इनकी ठडी मीठी छाया म यात्री सा जाते हैं और इनके सघन घेरा म से सूरज की किरणें कभी कभी ही नीचे पहुँच पाती हैं, और हमेशा अधेरा-अधेरा रहता है। बड के वक्षा की लटकी हुई हवाई जडें, हिमालय के किसी तपस्वी की गुथी हुई जटाआ सी प्रतीत हाती हैं। हम एक

अतिप्राचीन, अतिपावन और अनुपम आश्रम म प्रवेश कर रहे थ। आश्रम के अन्दर, एक सुन्दर ड्योढी म से होकर जाना होता है। बाहर के बड़े फाटक पर एक बहुत बड़ा मधुमक्खियो का छत्ता लगा हुआ था। इसके बाद महन्तो की समाधियाँ बनी हुई थी।

यह आश्रम तोताराम के पुत्र नारायण का बनाया हुआ है जो गुरुदासपुर के खानोवाल नामक गाँव का ब्राह्मण था। नारायण की चमत्कारी शक्ति के बारे म कई किस्से प्रचलित हैं। कहा जाता है कि डमटाल के पास से एक सौदागर गुजरा जिसके पास खच्चरो पर चीनी की बोरियाँ लदी हुई थी। खेलने वाले कुछ बच्चो ने सौदागर से पूछा बोरियो म क्या है? सौदागर ने कहा 'खाली।' लडको म से नारायण नामक एक बालक ने कहा बोरियो म रेत है। सौदागर ने इस लडके की बात पर कोई ध्यान नही दिया किन्तु ठिकाने पर पहुँचकर उसने देखा कि बोरियो म तो सचमुच रेत ही था। लौटती बार सौदागर को फिर डमटाल म लडके के साथ खेलता हुआ नारायण मिला। इस बार नारायण ने कहा बोरियो म चीनी है। यह देखकर सौदागर की खुशी की सीमा न रही कि बोरियाँ सचमुच चीनी से भरी हुई हैं। इस घटना के बाद यह मशहूर हो गया कि ब्राह्मणो के उस लडके म कोई शक्ति है। इसी तरह की एक कहानी शाह फरीद के बारे म भी प्रसिद्ध है तभी उनको फकीर शक्कर गज कहा जाता है।

कुछ समय बाद नारायण को मुगल बादशाह जहाँगीर ने शाहदरा बुलवा लिया और उसकी करामात को परखने के लिए विष के छह प्याले दिए। नारायण सारे-के-सारे प्याले, हँसते-खेलते पी गया। यह देखने के लिए कि वह जहर भी है अथवा नही सातवाँ प्याला एक हाथी को पिलाया गया। हाथी पलक झपकते ही ढेर हो गया। इस चमत्कार की कथा मन्दिर के अन्दर दीवार पर बने एक चित्र मे दिखाई गई है जिसमें नारायण विष का प्याला गटागट पी रहा है और उसकी पीठ पर उसके गुरु भगवान के दोनो हाथ उसको इस कठिन घडी से पार उतार रहे हैं।

कहा जाता है कि डमटाल म पानी की बडी तगी थी। इस कारण ग्राम वासियों को बडी कठिनाई होती थी। नारायण एक बार मदिर के पीछे जगल म तपस्या कर रहा था कि अचानक ही उसने धरती म चिमटा मारा और बीच म से जल का स्रोत फूट निकला। इस स्रोत पर अब पक्का तालाब बना दिया गया है। इसके एक ओर एक गुफा है जिसम नारायण तपस्या किया करता था।

इस आश्रम का मदिर नूरपुर के राजा जगतसिंह ने १६४६ म बनवाया था। उन दिनो शाहजहाँ का राज था। इस मन्दिर के कथा भवन की दीवारो को कांगडा-कला के चित्रो से सजाया गया है। जब हम वहाँ पहुँचे तो लगता था कि इसकी छत अब गिरी कि अब गिरी। सारे-के-सारे मदिर म माना ततयो का

साम्राज्य था। हर कमरे म उन्होंने डेरा डाल रखा था।

नारायण के चित्र को छोडकर बाकी भित्तिचित्र, महाभारत और रामायण के कई दृश्य प्रस्तुत करते हैं। कही कृष्ण, गोपियो के साथ खेल रहे ह, कही श्री रामचन्द्र का ब्याह रचाया जा रहा है। इसी मदिर म पहाडी राजे, जब कभी उन पर कोई विपत्ति आती आकर आश्रय लिया करते थे। कहा जाता है राजा वीरसिंह नूरपुरिया, जब महाराज रणजीतसिंह के डर स भाग खडा हुआ था तो उसन यहाँ आकर शरण ली थी। एक कोने म, एक स्त्री हिरन के पास खडी एक वक्ष के नीचे इकतारा बजा रही है। कागडा की कला-कृतियो मे यह दृश्य बार-बार आता है। इस चित्र का विषय विरहिणी नायिका है जो अपने नायक की याद म काले मृग को दुलरा रही है। इसी भाव को इस पक्ति म प्रकट किया गया है पी मिलन की चार चित्त खडी बजावत तार।

आश्रम दोमज़िला है। चौबारे म एक कमरा है जिसको रगमहल कहते है। यह १८५० ई० म बनाया गया था। इस कमरे के भित्तिचित्र सिख-कला शैली पर बनाए गए हैं। प्राय चित्रो म सुन्दर दाढ़ियाँ तथा पगडियो म मोती और हीरे जडे हुए दिखाए गए हैं। रामायण के भी कुछ दृश्य अकित किये गए हैं। एक चित्र म एक फिरगी अपनी पत्नी के साथ बग्घी म बैठा हुआ दिखाया गया है। बग्घी के चार घोडे खीच रहे हैं। इससे प्रकट होता है कि यह चित्र सिखो के बाद, अंग्रेजी शासन-काल म चित्रित किया गया होगा। आश्रम के मन्दिरो की भी कई तसवीरें है जिन्हें गेरुए तथा अन्य गारे रगो स सजाया गया है।

हरिदास जो इस आश्रम का १९३४ ३५ म महत था, कागडा के चित्रो का प्रसिद्ध सग्रह अपने साथ ही ले गया। आजकल के महन्त के पास केवल दुर्गा के चित्रो का एक सैट है जिसे १९४७ म एक जाट फौजी अफसर पेशावर के किसी मदिर से लाया था। वह अफसर अपने साथ गधार की मूर्ति-कला के भी कई नमूने लाया जिनम कुछ महात्मा बुद्ध की मूर्तियो के शीश थे। एक मूर्ति ऋषि मार्कण्डेय की भी है। लछमनदास ने मार्कण्डेय की मूर्ति अपने कमरे मे रखी हुई है और मजेदार बात यह है कि इस मूर्ति मे तथा महन्त लछमनदास की शक्ल म, बहुत ज्यादा समानता है।

महन्तजी बडे आदर भाव से मिले। इसके बाद हम आश्रम के पीछे के जगल म चले गए। इसमे शहतूत और आम के असख्य वक्ष हैं। हवा म कामनी और बसूटी के फूलो की महक बसी हुई थी, और धरती पर नीले फूलो का बिछौना बिछा हुआ था। आश्रम के एकान्त और शान्ति का जी भर आनन्द लेकर हमने मदिर से प्रस्थान किया और उसे भित्तिचित्रो का ध्यान रखने को कहा। लगता था, उसे इन चित्रो के मूल्य का ज़रा भी ज्ञान नही था।

डमटाल के आश्रम से नाम को विदा होकर हमने चक्की नदी को पार किया। सड़क की ओर ढलान में मिट्टी और रेत की कई तह दिखाई देती हैं जिनमें हर तरह के गोल बट्टे जड़े हैं। यह रेत, यह मिट्टी, ये गोल गिट्टे, ये पत्थर वास्तव में शिवालक दरिया की यादगार हैं जिसको इंडो ब्रह्म का महानदी भी कहते हैं। इसमें ब्रह्मपुत्र, गंगा और सिंध तीनों नदियों का जल बहता था और शिवालक का यह दरिया पंजाब और सिंध के मार्श्वासीन नामक सागर में जाकर समाप्त होता था, जो टीथ्स महासागर का एक भाग था। कोई दस लाख वर्ष हुए धरती में उथल पुथल मची और पश्चिमी पंजाब में पोठोहार का पथरीला धरातल ऊपर खिसक आया। तभी शिवालक दरिया का बहाव भी रुक गया। शिमला के पश्चिमी ओर हिमालय पर्वत श्रेणियों के जल का प्रवाह चिनाब, रावी, व्यास और सतलज की ओर चला गया और शिमला के पूर्व की ओर का प्रवाह गंगा, यमुना आदि नदियों के प्राचीन जल मार्गों से बंगाल की खाड़ी तक पहुंचने लग गया। इन नदियों के दिशा पलटने का सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि ये सब की सब अपने बहाव के दौरान अंग्रेजी अक्षर 'वी' का रूप धारण कर लेती हैं। और इनके दौर उत्तर पश्चिम की ओर होते हैं। शिवालक दरिया के टीले पत्थर, गिट्टे, रेत और मिट्टी एक बार उभरी और शिवालक के पहाड़ों का रूप धारण कर गई। तो वास्तव में शिवालक के पहाड़ पुराने शिवालक दरिया के अवशेषों का नया रूप हैं।

इस बात का एक और प्रमाण जल-जीवों के बारे में भी मिलता है। जो जानवर सिंधु नदी में मिलते हैं वही गंगा में मिलते हैं और वही ब्रह्मपुत्र में, किंतु दक्षिण भारत की महानदियों में नहीं मिलते। अनेकों जल धाराएं, सिंधु और गंगा की साझी हैं और इसी प्रकार कई और जल जीव भी एक समान हैं। इसका सबसे बड़ा प्रमाण है कि सिंध और गंगा किसी जमाने में मिलकर बहती थीं। ये जल जीव गुफाओं से हजारों मील चलकर एक नदी से दूसरी नदी में नहीं आ सकते थे। इससे यह सिद्ध होता है कि ये तीनों नदियां किसी समय एक ही धारा के रूप में बहती थीं।

भारत के नदियों की आवारागर्दी बड़ी मशहूर है। सिंधु और गंगा नदियों के बीच कोई ऊंची पहाड़ी नहीं और धरती की सतह में मामूली-सा अन्तर एक से दूसरी में मिला सकता है। पहले सरस्वती नामक नदी अरब सागर में जाकर गिरती थी पर धरती के ऊंचा हो जाने के कारण महानदी दो धाराओं में बंट गई। एक अरब सागर की ओर सिंध के रूप में और दूसरा बंगाल की खाड़ी की ओर गंगा और ब्रह्मपुत्र के रूप में। भूतत्ववेत्ताओं की राय में इस दौर का दूसरा अध्याय समाप्त नहीं हुआ। अरब सागर में गिरने वाली नदियों का बहाव धीरे-धीरे बंगाल की खाड़ी की ओर होता रहा होगा और इसका आखिरी

कडी गगा और यमुना का अलगाव शायद ऐतिहासिक काल म कभी हो पाया हो। इससे पहले यमुना का पानी पश्चिम की ओर बहता रहा होगा, और फिर कभी गगा म कभी सिधु म या फिर सूख चुके उस दरिया म जा मिलता होगा जिसके निशान अभी भी राजपूताना मे मिलते है। दिल्ली के उत्तर म कही करनाल के पास यमुना नदी, और आजकल की घग्घर नदी किसी ज़माने म बीकानेर के नगर सूरतगढ क समीप मिलकर बहती थी और हाक्‍रा नाम से बहावलपुर म से होकर सिधु म जा मिलती थी। घाघरा अथवा छोटे घग्घर का सूखा तल अभी भी कही-कही दखने को आता है, और उत्तरी राजपूताना और दक्षिणी पजाब के मानचित्रो म दिखाया गया होता है। यमुना न अब अपनी तली को मदानो मे बहुत गहरा कर लिया है और अब इसका रुख और नही बदल सकता तथा मजबूर होकर यह गगा की एक सहायक नदी ही बनी रहेगी।

शिवालक के पुरान जानवरो की हड्डिया आजकल के शिवालक पहाडो की मिट्टी में पत्थराई हुई मिलती हैं। कोई दस लाख वष हुए, शिवालक के जगलो और दलदल में कई प्रकार के जीव जन्तु होते थे। कोई तीस प्रकार के हाथी घोडे ऊट बारहसिंग, जिराफ गडे तथा कई और जानवरो की पत्थराई हुई हड्डियाँ शिवालक के पहाडो म मिलती है। जिराफ और दरियाई घोडे अफ्रीका के वनो म से भारत म एक धरती के पुल द्वारा आए थे जो बाद म डूब गया। सिबा थीरियम नामक एक अत्यन्त विचित्र पशु जो ग से भी बडा था। और जिसके चार सीग और एक थूथनी हुआ रती थी शिवालक क जगलो म पाया जाता था। इस जीव की नस्ल अब समाप्त हो चुकी है। मनुष्यो की तरह चलत फिरते बनमानुष भी इन वनो म हुआ करते थे, जिनकी मनुष्य से बडी समानता होती थी। इस प्रकार शिवालक जिसका रेतीला भू भाग होशियारपुर के किसानो के लिए एक मुसीबत बना हुआ है किसी ज़माने म एक नदी की तली था, और आजकल के हिमालय की पहाडियो की सबसे नई कडी है।

कडी गगा और यमुना का अलगाव शायद ऐतिहासिक काल म कभी हो पाया हो। इससे पहले यमुना का पानी पश्चिम की ओर बहता रहा होगा, और फिर कभी गगा मे कभी सिंधु म या फिर सूख चुके उस दरिया म जा मिलता होगा जिसके निशान अभी भी राजपूताना म मिलते है। दिल्ली के उत्तर म कही करनाल के पास यमुना नदी, और आजकल की घग्घर नदी, किसी जमाने म बीकानेर के नगर सूरतगढ के समीप मिलकर बहती थी और हाकरा नाम स बहावलपुर मे से होकर सिंधु मे जा मिलती थी। घाघरा अथवा छोटे घग्घर का सूखा तल अभी भी कही-कही देखने को आता है, और उत्तरी राजपूताना और दक्षिणी पजाब के मानचित्रो मे दिखाया गया होता है। यमुना ने अब अपनी तली को मैदानो से बहुत गहरा कर लिया है और अब इसका रुख और नही बदल सकता तथा मजबूर होकर यह गगा की एक सहायक नदी ही बनी रहेगी।

शिवालक के पुराने जानवरो की हड्डिया आजकल के शिवालक पहाडो की मिट्टी में पत्थराई हुई मिलती है। कोई दस लाख वर्ष हुए शिवालक के जगलो और दलदल में कई प्रकार के जीव जन्तु होते थे। कोई तीस प्रकार के हाथी घोडे ऊट, बारहसिंगे, जिराफ गडे तथा कई और जानवरो की पत्थराई हुई हड्डियाँ शिवालक के पहाडो म मिलती है। जिराफ और दरियाई घोडे अफ्रीका के वनो म से, भारत म, एक धरती के पुल द्वारा आए थे जो बाद मे डूब गया। सिबा थीरियम नामक एक अत्यन्त विचित्र पशु जो गडे से भी बडा था। और जिसके चार सीग और एक थूथनी हुआ करती थी शिवालक क जगलो म पाया जाता था। इस जीव की नस्ल अब समाप्त हो चुकी है। मनुष्यो की तरह चलते फिरते वनमानुष भी इन वनो म हुआ करते थे, जिनकी मनुष्य से बडी समानता होती थी। इस प्रकार शिवालक, जिसका रेतीला भू भाग होशियारपुर के किसानो के लिए एक मुसीबत बना हुआ है, किसी जमाने मे एक नदी की तली था और आजकल के हिमालय की पहाडियो की सबसे नई कडी है।

नूरपुर

शिवालक की पहाड़ियों की सुन्दरता का आनन्द लेते और उनमें पथराई जा चुकी हुई प्रकृति का अनुमान लगाते हमने चक्की नदी को पार किया और पठानकोट-कांगड़ा सड़क पर पहुँच गए। इस सड़क के दोनों ओर शीशम के पेड़ हैं और आस-पास सन्तरे और आमों के बाग-ही-बाग दीखते हैं। यहाँ से हमें नूरपुर का किला दिखाई देने लग गया। यह किला खड्ड के किनारे पर बना हुआ है। इस खड्ड में बहता नाला चक्की दरिया की एक उपनदी है। नूरपुर के वन विभाग का डाकबंगला शहर से एक मील दूर है। यहाँ से धौलीधार की बर्फीली चोटियों का दृश्य दिखाई देता है। वृक्षों की ओट में बर्फीले पहाड़ों का एक अर्धगोलाकार-सा बनता है, धौलाधार जिसके दाईं ओर है और जम्मू में पीर पंचाल बाईं ओर। नूरपुर का इलाका जो पहाड़ी पर फैला हुआ है, किले पर जाकर खत्म हो जाता है।

नूरपुर का डाकबंगला बड़ा रमणीक है। यहाँ से पहाड़ों के बर्फीली शिखरों के दृश्य भी खूब दिखाई देते हैं। पर यहाँ खाने-पीने को कुछ नहीं मिलता। यह कस्बे से दूर है और कोई मकान-दुकान भी पास नहीं। अगर मेरा मित्र और सहपाठी पंजाबसिंह पठानिया न मिल जाता तो बड़ी कठिनाई होती। हम बंगले के बरामदे में से पगडंडी की ओर देख रहे थे और हमारी आँतें मारे भूख के कुलबुला रही थीं। इतने में क्या देखते हैं कि एक नौजवान साइकिल पर खाना लादे चला आ रहा है। पास आया तो यह पंजाबसिंह निकला। ऐसे अवसरों पर ही मित्रों की परख होती है। जो प्यार और स्नेह पंजाब के ग्रामीण लोगों में है शायद ही दुनिया के दूसरे भागों में हो। अपने कष्ट को तो कष्ट समझते ही नहीं और आवश्यकता पड़ने पर सब-कुछ न्यौछावर करने को तैयार हो जाते हैं। पंजाबसिंह की हिम्मत देखकर मेरा दिल प्यार से भर आया और मैं उससे कसकर लिपट गया।

नूरपुर शहर का इतिहास बड़ा रोचक है। यह एक पुरानी राजपूत रियासत की राजधानी था। यह रियासत आजकल की नूरपुर तहसील, पठानकोट, गुरदासपुर में शाहपुर कंडी और रावी के पश्चिम की ओर जम्मू में लखनपुर तक

फैली हुई थी। नूरपुर का पुराना नाम धरमेडी था जो गूलरनाम के वक्ष से लिया गया लगता है। नूरपुर म गूनर बहुत पाया जाता है। इस वक्ष को पहले दुम्बर कहते थे और फिर इसको धरमेडी का नाम दे दिया गया। इसस हम पुरातन हि दुआ के वक्षा के प्रति प्यार का पता चलता है।

नूरपुर के किले को १५८० से लेकर १६१३ इसवी तक राजा वासू न एक पत्थर की चट्टान पर बनवाया। राजा वासू न भगवान श्रीकृष्ण का एक मन्दिर भी बनवाया। अब इस मन्दिर की केवल नीव ही बची है। इन नीवो पर श्रीकृष्ण और गोपियाँ चित्रित की गई हैं। राजा बासू वक्षा का बडा प्रेमी था और उसन दुग के निकट माओकोट मे आमो का एक बाग भी लगवाया। यह बाग नूरपुर से चार मील की दूरी पर है। इसको अब भी राजा का बाग कहते हैं।

जगतसिंह जा राजा वासदेव के बाद १६१६ म गद्दी पर बैठा, नूरपुर का सबसे प्रसिद्ध राजा हुआ है। वह बारह साल तक चम्बा के राजा से लडता रहा और १६२३ मे चम्बा को अपनी रियासत मे मिलाकर, बीस वष तक उसने राज्य किया। राजा जगतसिंह न १६१४ म भूपतपाल को हराकर बसोहली को विजय किया। १६३४ म शाहजहाँ ने इमे मनसबदार की पदवी देकर तीन हजार पदल और दा हजार घुडसवार सनिक रखने की आज्ञा भी दे दी। १६४० म इसने शाहजहाँ के विरुद्ध बगावत कर दी। और माओकोट, तारागढ और नूरपुर के दुर्गों को १६४१ म विजय कर लिया तथा जगतसिंह और उसके पुत्र तारागढ के किले म जाकर टिक गए। तारागढ नूरपुर स १२ मील की दूरी पर है। तारागढ का किला एक पहाडी पर बना हुआ है, जिसके तीन ओर गहरे खडड हैं। मुगल सनाओ ने यहाँ भी जगतसिंह का पीछा किया। बडा घमासान युद्ध हुआ और आक्रमणकारियो मे स बहुत-से मारे गए। नूरपुर और तारागढ के दुग मुगलो ने तोड फोड दिए। आखिर जगतसिंह और उसके पुत्र ने शाहजहाँ से क्षमा माग ली और बादशाह न अपने विशाल हृदय का प्रमाण देते हुए जगतसिंह को फिर वहा का राजा नियुक्त कर दिया।

१६४७ म जगतसिंह को बदखशाँ म उजबको के विरुद्ध एक अभियान मे भेजा गया। इसके पास १४ हजार राजपूत सनिक थे और इन्होने खूब वीरता का परिचय दिया। नूरपुर के एक कवि गम्भीर राय ने इस अभियान का वणन अपनी कविता म किया है इसे आज तक मेला म गाया जाता है

जगत राजा भगता राजा वास देव का जाया
सिन्धु मारे सागर मारे हिमाचल डेरा लाया
आकाश को अरवा कीता तॉ जगता कहाया।

बदखशाँ की विजय के बाद राजपूतो का बडा नाम हो गया। इस अभियान के बारे म एलफिनस्टन कहता है राजपूता की वीरता जसी इस युद्ध म देखी गई

इससे पहले कभी किसी ने नहीं सुनी थी। पहाड़ी नदियों को पार कर शत्रु को रौंदते, अपने लिए स्वयं ही रास्ता खोदकर उन्होंने उनके छक्के छुड़ा दिए। लोगों ने इस युद्ध में राजा जगतसिंह को भाला पकड़े शत्रु को स्वयं हराते देखा। उसकी सेना ने जिस प्रकार इस बर्फीली प्रदेश में शत्रु पर धावा बोला, उसे देखकर हर कोई दाँतों तले उँगली दबा रहा था।'

जगतसिंह के राज्य में बादशाह जहाँगीर कांगड़ा की घाटी में आया। जहाँगीर के साथ उसकी बेगम नूरजहाँ भी थी। कहा जाता है कि नूरजहाँ को यह स्थान इतना पसन्द आया कि उसने बादशाह को वहाँ एक महल बनाने के लिए कहा। किले के सामने पहाड़ी पर महल खड़ा करने के लिए एक जगह चुनी गई और राजा जगतसिंह, जिसने बादशाह को निमन्त्रण पत्र भेजा था, महल बनाने की तैयारियों में जुट गया। पर मन ही मन उसे यह बात अच्छी नहीं लगी। उसने समझा कि अब उसे सदा मुगल बादशाह के साये तले रहना पड़ेगा। एक दिन नूरजहाँ बेगम जब निर्मित हो रहे उस महल का निरीक्षण करने गई, उसने देखा कि सब मजदूरों और स्त्रियों के गलों पर घेंघे हैं। उसके पूछने पर बताया गया कि नूरपुर का जलवायु कुछ इस तरह का है कि लोगों को यह बीमारी हो जाती है।

राजा जगतसिंह की चतुराई काम कर गई। बेगम ने वहाँ महल बनवाने का विचार त्याग दिया और बादशाह के साथ कश्मीर चली गई। नूरपुर के वासी आज तक खड्ड के पार इस महल की नींवों के खण्डहरों की ओर इशारा करके यह कहानी सुनाया करते हैं। महल तो चाहे न खड़ा हो सका परन्तु धरमेड़ी के खण्डहरों में अभी तक मुगल बादशाह नूरुद्दीन जहाँगीर की याद गूँज रही है। इस कारण ही इसका नाम धरमेड़ी से नूरपुर हो गया।

नूरपुर का अन्तिम राजा वीरसिंह (१७८९ से १८४६ ई०) बड़ा अभागा था। उस समय महाराजा रणजीतसिंह ने पंजाब में अपना राज्य स्थापित कर लिया था और धीरे धीरे अपना साम्राज्य पहाड़ी प्रदेश की ओर बढ़ा रहा था। किसी न किसी बहाने वह पहाड़ी राजाओं को समाप्त करता जा रहा था और वीरसिंह भी उसकी चपेट से बच न सका। महाराजा रणजीतसिंह ने १८१५ ई० में स्यालकोट में एक दरबार बुलाया। वीरसिंह इस दरबार में नहीं गया। महाराजा रणजीतसिंह ने चालीस हजार रुपया जुर्माना कर दिया। वीरसिंह ने अपना कुल बचा-खुचा रुपया, अपने परिवार के अमूल्य आभूषण और सोने-चाँदी का अन्य सारा सामान इकट्ठा किया किन्तु दंड की रकम फिर भी पूरी न हुई। इस पर रणजीतसिंह ने उससे राज-पाट छीन लिया और एक जागीर देकर अलग रहने की आज्ञा दी। वीरसिंह जिसको आत्मसम्मान का ख्याल था, जागीर को ठुकरा कर चम्बा के प्रदेश की ओर निकल गया। वहाँ उसने कुछ लोग अपने साथ मिला लिए पर सिक्खों की विशाल सशस्त्र सेना के मुकाबले में वह बिलकुल न टिक सका

और वह भेस बदलकर शिमला के निकट अरकी नामक रियासत की ओर भाग खड़ा हुआ। यहाँ वह दस साल तक छिपा रहा।

१८२६ म वीरसिंह भेस बदलकर नूरपुर वापस आया और उसन किले का घेरा डाल लिया। महाराज रणजीतसिंह न देसासिंह मजीठिया के नेतृत्व म एक टुकडी भेजी और वीरसिंह चम्बा की ओर भाग निकला। चम्बा क राजा न जो उसका साला था उस पकडकर रणजीतसिंह के हवाले कर दिया। महाराजा रणजीतसिंह न अमृतसर स्थित गोविन्दगढ़ के किले म सात साल तक उसे बन्द रखा। वीरसिंह की पत्नी चम्बा के राजा चडडतसिंह की बहन थी और वह अपन भाई के पास ही रहती रही। अपनी बहन के कहने पर आखिर चडडतसिंह ने पच्चीस हजार रुपये दड भरकर वीरसिंह को छुडा लिया।

इतिहासकार बानज राजा वीरसिंह के सम्बन्ध मे,पच्चीस हजार की एक और जागीर का भी उल्लेख करता है। यह जागीर राजा ध्यानसिंह के द्वारा दी जानी थी। जम्मू का राजा ध्यानसिंह उन दिनो सिख राज्य का प्रधानमन्त्री था। ध्यानसिंह चाहता था कि वीरसिंह अपन को जयदिया कहे और वह फिर उसे जागीर का प्रमाणपत्र दिलवाए। पर वीरसिंह ने ऐसा करन से इन्कार कर दिया। वीरसिंह खानदानी राजा था। ध्यानसिंह तो महाराजा रणजीतसिंह का बनाया हुआ एक सरदार मात्र था। एक खानदानी राजपूत अपनी आन को इस प्रकार कसे मिट्टी म मिला देता। इसे कहते हैं राजपूती हठ। आर्थिक हानि चाहे हो गई आन पर बट्टा तो नही लगन दिया।

विवश होकर उसे फिर जगलो म वास करना पडा और वह डमठाल आश्रम म जा छिपा। इस आश्रम म कई अत्याचार पीडितो को आश्रय मिला था। वीरसिंह और उसका बच्चा चम्बा म ही रहते रहे। उनकी गुजर बसर के लिए राजा न पाच सौ रुपये प्रतिमास का भत्ता बाध दिया था। १८४६ म जब अग्रेजो ने सिखो को पहली बार पराजित किया तब वीरसिंह न एक बार फिर कोशिश की कि वह अपनी रियासत पर अधिकार कर ले। उसने नूरपुर के दुर्ग पर घेरा डाल लिया पर आयु भर क दुखों और कष्टों के मारे वीरसिंह न किले की दीवारो के बाहर ही प्राण दे दिए।

वीरसिंह के बाद उसका एक नाबालिग बेटा जसवन्तसिंह रह गया। यह बच्चा रामसिंह पठानिया के सरक्षण म था। रामसिंह एक बहादुर राजपूत था जो नूरपुर की रियासत की पुरानी शान को फिर से स्थापित करने के सपने देखा करता था। १८४८ म रामसिंह न जम्मू मे कुछ सेना इकट्ठी की। इस इस बार उसन नदी पार करते हुए शाहपुर के किले पर अधिकार कर लिया। यहाँ उसन जसवन्तसिंह को नूरपुर का राजा तथा स्वय को उसका मन्त्री घोषित कर दिया। शाहपुर मडी का छोटा सा कस्बा जो आजकल क्षीण हो गया है अठारहवी और

उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में व्यापार का एक बड़ा केन्द्र था और बड़े बड़े काफिले इधर से गुजरा करते थे। रावी के किनारे मुकेश्वर नामक स्थान पर पांडवों से सम्बन्धित कई मंदिर हैं, जो चट्टानों और कन्दराओं में बनाए गए हैं। इनके स्तम्भों और दीवारों में बने चित्र बहुत प्राचीन जान पड़ते हैं। कहा जाता है कि इस स्थान पर गांडीवधारी अर्जुन के चरण पड़े थे।

नदी के ऊपर की ओर पहाड़ी में एक खाई है जिसको अर्जुन चूल्हा कह कर पुकारते हैं। यह जगह डलहौजी की ओर जाने वाली सड़क पर से कोई एक हजार फुट की ऊंचाई से दिखाई देती है। शाहपुर का किला जो अब एक खंडहर मात्र है रावी नदी के बाएं किनारे पर है। इसकी बहुत-सी बुर्जियां आदि ढह चुकी हैं किन्तु एक बुरजी जिसका मुख नदी की ओर है अभी तक वैसी-की वैसी खड़ी है। इसमें डाकबंगला बना दिया है। डाकबंगले के काठ के झरोखे से जो नदी की ओर है पहाड़ियों के अद्वितीय दृश्य का आनन्द लिया जा सकता है। यहां नदी के टेढ़े मेढ़े घुमाव भी भली प्रकार से दीखते हैं। वर्षा ऋतु में यह जगह बड़ी सुहावनी लगती है विशेषकर उस समय जबकि ठंडी हवा चल रही हो।

जब अंग्रेजी सरकार को रामसिंह के विद्रोह की सूचना मिली तो उसने होशियारपुर से एक सेना शाहपुर के किले का घेरा डालने के लिए भेजी। मगर रामसिंह और उसके साथियों ने एक रात में किले को खाली करके नूरपुर से नीचे जंगलों में अपने मोर्चे लगा लिए लेकिन अन्त में रामसिंह पठानिया की पराजय हुई और वह गुजरात की ओर भाग गया। सिख फौजों ने उसको आश्रय दिया। जनवरी १८४९ में रामसिंह दो सिख सैनिक टुकड़ियों के साथ फिर लौटा और उसने डल्ल दी धार नामक शिवालक की एक पहाड़ी पर आकर अपने मोर्चे लगा लिए। यह पहाड़ी रावी के किनारे शाहपुर के उत्तरपूर्व की ओर है। अंग्रेज जरनल व्हीलर के अधीन लन्दन वाले गोरों की बहुत हानि हुई, किन्तु रामसिंह को फिर भागकर कांगड़ा की ओर जाना पड़ा जहां उसे एक ब्राह्मण ने शरण दी। पर कुछ दिनों बाद उसने रामसिंह को अंग्रेजों के हाथ बेच दिया। रामसिंह को अब देश निकाला देकर सिंगापुर भेज दिया गया और वहीं अन्त में उसकी मृत्यु हुई। रामसिंह की वीरता के कारनामों की कविताएं अभी तक पहाड़ी भाट गा गाकर लोगों को सुनाते हैं कि किस प्रकार रामसिंह ने फिरंगियों के साथ डल्ल की चोटियों पर युद्ध किया किस प्रकार ढोल बजे तोपें गूंजी और किस प्रकार रक्त से पहाड़ियां रंगी गईं।

मियां कर्तारसिंह के पास जो रामसिंह पठानिया का पड़पोता है और नूरपुर के बासा-वजीरां नामक ग्राम में रहता है वह जिरहबक्तर है जो रामसिंह पठानिया पहना करता था। उसके पास रामसिंह के चित्रों का एक संग्रह भी है। जब रामसिंह के घर को फिरंगियों ने आग लगाई तो यही चित्र जलने हुए घर में से

कुछ स्त्रिया बचा पाइ। कहा जाना ह जब रामसिह को अपने चित्रो की इस बरबादी की सूचना मिली तो वह बहुत रोया और दुखी हुआ।

चित्रा के इस सग्रह म तीन शैलियाँ, बसोहली, राजस्थानी और कागडा दिखाई देती है। सबसे पुराने चित्र बसोहली शैली के है। इनके किनारे गहरे लाल और बाकी रग बहुत शोख हैं। ये चित्र अय बसोहली चित्रो की तरह कुरूप नही हैं। इन चित्रो का काम बडा बारीक है विशेषकर इनम बनी स्त्रियो के नयन नक्श बडे तीखे है। इस शैली के चित्रो म राजस्थानी तथा मुगल प्रभाव विशेप रूप से दिखाई देता है। इन चित्रो म स्त्री पुरुषा के मुह की बनावट प्राय अण्डा कार होती है। इस सग्रह मे कई चित्र हैं। एक चित्र म राजा वीरसिंह काले घोडे पर सवारी करता हुआ दिखाया गया है। उसके दाए हाथ पर बाज है। मत्री रामसिह तथा मत्री शामसिह के चित्र भी हैं। एक चित्र म रामसिह के पीछे जोधा नामक उसका वफादार अदली जाता हुआ दिखाया गया है। जोधा लाहौर से नूरपुर तक एक दिन मे पहुँच जाया करता था।

कागडा शैली के चित्रों म कुछ तो धार्मिक चित्र है और कुछ ऐसे हैं जिनको शृङ्गार रस की कृतियाँ कहा जा सकता है। य चित्र कागडा शैली के अय चित्रो से सवथा भिन्न हैं। इनमें रगो का चुनाव शोख है और इनके कलाकारा ने लाल, नीले पीले रग का बहुत प्रयोग किया है। कुछ चित्र, जो ज़िन्दगी के शोख पहलुओ को दर्शाते हैं, रगा के चयन के कारण शृङ्गार रस के अतिसुन्दर नमूने बन पडे है। इन चित्रा मे स्त्रिया के पहरावा के रग लाल या पील है जिनम उनके गुलाबी चेहरे और चमेली के समान कोमल अग निखर उठन है। इन चित्रो मे पुरुष प्राय हट्टे-कट्टे और जवान होते हैं और स्त्रिया मोहक कामिनिया।

धार्मिक चित्रा म कबीर, रविदास धन्ना और गुरु नानक क जीवन को दर्शाया गया है। कई चित्रो म कबीर साहब अपनी पत्नी लोई के साथ बठे है। कबीर साहब खड्डी चला रहे है और लोई सूत अटेर रही है। हरिजना के गुरु रविदास को जूते बनात हुए दिखाया गया है और उनके पास उनकी पत्नी बठी हुई कात रही है। राजस्थान के जाटो म उत्पन्न प्रसिद्ध भक्त, धन्ना एक चित्र म एक तालाब के किनारे बैठा है। उसके सिर और शरीर पर काली कम्बली है, एक हाथ मे मक्की की रोटी और साग है दूसरे हाथ मे लस्सी का कटोरा है और उसके पीछे उसकी भस खडी है। गुरु नानक के चित्र म उनके पास मर्दाना बैठा सितार बजाता हुआ दिखाया गया है। गुरु नानक ने पीला चोगा पहना हुआ है और उनके कधा पर फकीरा वाली कई रगो की गुदडी है। मर्दाना ऐसा लगता है जसे ईश्वर के ध्यान म मग्न हो। उसके चेहरे पर एक मस्ती है और बाबा नानक उसके सगीत को बडे प्यार स सुन रह हैं। कहा जाता है कि बाबा नानक सगीत की इन लहरियो के द्वारा अलौकिक प्रकाश मे लीन हो जाया करते थे।

बाबा नानक जी के इस चित्र की पृष्ठभूमि मे आम का पड है जिस पर लताए चढ रही हैं। इस प्रकार के वातावरण का चित्रण कागडा के अधिकाश चित्रो म किया गया है विशेषकर श्रीकृष्ण जी के चित्रो म।

मिया कर्तारसिंह के चित्रा के सग्रह को देखकर हम नूरपुर के किले की ओर चल पडे। किले के खडहरा मे एक पाठशाला है जिसकी कक्षाएँ बाहर वृक्षा के नीचे लगाई जाती हैं। ऐसा लगता है कि पाठशाला म स्थान बहुत कम है। पाठशाला से आग जाकर हमने एक चारदीवारी म प्रवेश किया जिसके चारा ओर मौलश्री के छतरादार वृक्षा न घेरा डाला हुआ है। मन्दिर के भित्तिचित्रा पर श्रीकृष्ण की जीवन लीलाओ के कई दृश्य अकित किये गए है। द्वारा पर गोपियोके अति सुन्दर चित्र बनाए गए है। कहा जाता है कि यहा पर स्थित श्रीकृष्ण भगवान् की काली सगमरमर की मूर्ति चित्तौड स मगवाई गई है। यह वही प्रसिद्ध मूर्ति है, *जिसकी मीराबाई पूजा किया करती थी।*

नूरपुर की पहाडिया खुश्क और वीरान है। वर्षा के कारण भूमि कट-कटकर बह गई है और भीतर से लाल चट्टानें नगी हो गइ हैं। इन पर झाडिया या चीड कनेड ही होत हैं। यहा का वातावरण प्राय रसहीन-सा है कहा-कहा चीड कनेर और शीशम मिलता है।

यहाँ का एक और आकषक स्थल पानी का एक चश्मा है। यह चश्मा कोटला से एक मील के अन्तर पर है। यहा ट्रका और लारिया क ड्राइवर इजन ठडा करन के लिए पानी लते हैं और आते-जात यात्री अपनी प्यास बुझाते है। इस चश्मे के पास एक बहुत मनोरम मन्दिर है। चूने के पत्थरा की इस गुफा म चूने की बनी बत्तिया को लाग शिवलिंग समझ कर पूजते है। गुफा की छत म से चूने का पानी रिसता रहता है। चूने न बत्तिया का रूप धारण कर लिया है। मन्दिर क बाहर बडे-बडे पत्थरा की चट्टानें हैं जिनको *हाथिया की आकृति म* तराशा गया है। इन हाथिया की सूडा को किसी बुत शिकन न तोड दिया है। जब हमने गुफा म प्रवेश किया तो क्या दखत हैं कि एक जटाधारी साधु आलथी पालथी मारे भाँग के नशे म मस्त बठा हुआ है। पुल की महराब स नीचे खडड का अति रमणीक दृश्य देखा जा सकता है। विशेषकर शीशम के हरे कोमल पत्ते बहुत सुन्दर प्रतीत हात हैं।

नगरोटा

धूप फूट चुकी थी। धौलीधार की पष्ठभूमि म सूरज का प्रकाश दिखाई देने लगा। धीरे धीरे सूरज पहाडो की चोटियो के पीछे ऊँचा होने लग गया। बरानी किनफारी हल्की सलेटी जसी हो गई। चीड के वक्ष धुंध मे घिरे हुए बडे प्यारे लगत थे। धुध म खच्चरो की घटिया की आवाज पहाडो के एकान्त की शान्ति का और भी बढा रही थी। मैंने अपने साथिया को जगाया। आचर तथा मुल्कराज आँखें मलते हुए बडी मुश्किल से उठे, तयार हुए और हमने कोटला का रास्ता पकडा।

शाहपुर से आगे प्राकृतिक दृश्य सुदर होने जाते हैं। हमने कागडा की तहसील म प्रवेश किया। सडक के किनारे शाहपुर नामक एक खासा बडा गाव है। यहा का डाक-बगला ऊचे ऊँचे पीपला से घिरा हुआ है। उत्तर की ओर धौलीधार की चमकीली वफ से ढकी हुई अद्वितीय दीवार खेतो की सीढियो के लहरा की तरह बिखरे हुए किनारो को एक अतिसुदर पष्ठभूमि प्रदान करती है।

कई कूलें जिनका जन्म स्थान धौलीधार है यहा के खेतो को सीचती हैं। खेता की सीढिया एकसार बढती जाती है और ऐसा प्रतीत होता है, जैसे घाटी एक प्रकार का खुला मदान ही हो। खेतो की ढलान साधारण है और किसानो के कोठे जगह-जगह फले हुए हैं। सडक की उत्तरी ढलान चट्टानो और टीला से अटी है। चट्टाना और टीला का सलेटी रग लाल-सी मलकार मारता है और कही कही ऊपर काई के पीले धब्बे भी पडे होते हैं। ये आगे के करीब धरती मे दवे हुए पत्थर जिनके गिद घास जमी होती है कागडा की घाटी का एक विशेष दश्य है। गग्गल एक और सुदर गाव है जिसके पास स एक टेढी मेढी नदी गुजरती है। गग्गल से धौलीधार का अति सुदर दृश्य दिखाई देता है। खडड के तल पर ऊँचे-ऊँचे टीले और पत्थर है और किनारा की ढलानें आमों के वृक्षो से ढकी हुई हैं। पष्ठभूमि म हैं—धौलीधार की शानदार चोटियाँ।

नगरोटा के आस पास पहाडिया पर पीपल के वक्ष छतरिया की तरह फले हुए हैं। इन पेडो को कई साल पहले यहाँ के चरवाहो ने धूप से बचने के लिए

लगाया था। यहां की सड़क लगभग सीधी ही चलती है। मोड़ बहुत कम है। इससे आगे पहाड़ियों चीड़ के सघन जंगलों से भरी पड़ी हैं जिनमें चाय के बागान हैं। चाय की झाड़ियां छंटाई करके बौरस कराई गई हैं। आईने जैसे स्थिर वृक्ष भी अब कहीं कहीं दिखाई देने लग जाते हैं।

नगरोटा में हमारा मित्र विश्वम्भरदास है। उसने कांगड़ा चित्रकला की खोज में मेरी बहुत सहायता की थी। उसकी बड़ी इच्छा थी कि हम उसके यहां खाना खाएं। हमारा इरादा पालमपुर पहुंचने का था। हमने कहा कि हम चाय पीकर ही छुट्टी मिल जाय तो बड़ा अच्छा हो पर वह न माना। शाम का समय हो गया था और डूबते सूरज की किरणें धौलाधार को सुनहरी रंग में रंग रही थीं। कायस्थवाड़ी के निकट ही नगरोटा का नदी गड्ड है और पीछे धौलीधार।

खड्ड बड़े-बड़े पत्थरों से भरा हुआ है और इसके दोनों ओर हरे भरे खेत हैं। ऊंची सी जगह पर मैं एक धान के खेत के किनारे बैठ गया, और खूब जी भर कर धौलीधार की सुन्दरता का आनन्द लिया।

प्रकृति की सुन्दरता पहाड़ों का मौन दुनिया के सब झगड़े झमेले भुला देता है और आदमी महसूस करता है कि वह महान् शक्ति जिसने यह सारा खेल रचाया है पहाड़ों तथा वनों की शान्ति में ही बसती है। हमने इस सूक्ष्म आत्मा को, गुरुद्वारों मन्दिरों से लाउडस्पीकर के शोर के कारण दूर भगा दिया है जैसे लोग ताली बजाकर मुंडेर से कव्वे को उड़ा देते हैं। धर्मांध इस पवित्र सुन्दरता को गिरजाघरों मंदिरों तथा मसजिदों की चारदीवारी में बन्द करने की कोशिश करते हैं पर इसे प्राप्त नहीं कर सकते।

इन विचारों में पहाड़ों की शान्ति का आनन्द लेते हुए मुझे यह भी भूल गया कि रात हो गई थी। पूर्णिमा का चांद अब आकाश को सुशोभित कर रहा था और चांदनी में सफेद बर्फ और भी मनमोहक लगती थी।

विश्वम्भरदास मेरे लिए चाय केतली में ही ले आया। मैं पहाड़ों को देखता जाता और साथ ही-साथ धीरे धीरे चाय का मजा भी लेता जाता। जैसे बर्फ से ढकी पहाड़ों की चोटियों की सुन्दरता का आनन्द एकान्त में ही लिया जा सकता है वैसे ही चाय का मजा भी खामोशी और शान्ति में ही आता है। जब मैं चाय की प्यालों पर लोगों को चिड़िया कव्वों की तरह शोर मचाते देखता हूँ तो बड़ा हैरान होता हूं। हमारे बड़ों ने गलत नहीं कहा कि खाते समय मूक ही बोला करते हैं। दो काम एक साथ कभी नहीं चल सकते। खाने का स्वाद और बातों का मजा। शौक से खाने का स्वाद लो और इससे निबटकर बातें कर लो।

चाय का तो धुंध और शान्ति से विशेष सम्बन्ध है। इस बात को हम पंजाबी लोग पूरी तरह नहीं समझ सकते। क्योंकि हम दूध और लस्सी पीने वाले हैं,

और चाय के पूरी तरह अभ्यस्त नही हैं। अभी तक हममे से बहुत से इस भ्रम मे है कि चाय गर्मी और खुश्की करती है। कोई तीस वष हुए मेरा भी यही विचार था और मैं भी चाय का शराब और तम्बाकू की तरह एक व्यसन ही समझता था। १९३२ ३४ तक, जब कि मैं इग्लड ही मे था, जब कभी किसी पार्टी पर जाता, दूध ही माँगता और अग्रेज दोस्तो को परेशानी म डालता। वे सोचते कि यह कसा आदमी है जो चाय तक नही पीता। मुझे चाय की आदत मेरी धमपत्नी ने १९३५ म डाली, और अब तो मुझे चाय बहुत ही अच्छी लगती है। बाहर से थके हारे आओ, चाय का प्याला पीते ही थकान उतर जाती है और एक सरूर-सा आ जाता है।

जब मैं सफर करता हूँ विशेषकर दक्षिण तथा उत्त री भारत का तो मैं चाय अथवा नारियल का ही पानी पीता हूँ। हरा नारियल गर्मिया म बड़ा स्वादिष्ट लगता है, और किसी बीमारी का भी कोई डर पदा नही होता। यह पानी सूरज ने कन्दीद करके खोप मे भरा होता है और मोहर लगाकर बन्द किया होता है। सफर खत्म होने पर मैं केवल चाय ही पीता हूँ। गम पानी से कीटाणु मर जाते हैं और गले म जो धूल मिट्टी गई होती है वह भी साफ हो जाती है।

चाय के पौधे का जन्म स्थान दक्षिणी चीन है। पहले इसको दवाई के तौर पर इस्तेमाल कियाजाता था और आम धारणा थी कियह बुखारदूर करती है थकान दूर करती है, रूह को ताजगी देती है और आखो को लाभ पहुँचाती है। चौथी शताब्दी म ही इसका।यगसिक्याग की घाटी मआम रिवाज हो गया। टँग साम्राज्य मे आठवी शताब्दी के मध्य म लूवू नामक सन्त कवि ने चाय पीन का विशेष ढग निकाला और चाय पर ग्रन्थ लिखा, जिसम विस्तार से बताया कि चाय कसे पी जाय, बतन कैसे हो और मन को कसे एकाग्र किया जाय। चाय के छह सात प्याले पीना कोई बडी बात नही समझी जाती थी। लोटन नामक चीनी कवि लिखता है 'चाय अमृत है। पहला प्याला मेरे होठो और गले को गीला करता है। दूसरा मेरा अकेलापन दूर करता है। तीसरा मेरी आत्मा में जाता है। चौथे स थोडा पसीना आता है और सारे पाप घुलकर पसीने के रास्ते बाहर निकल जाते हैं। पाँचवाँ मुझे पवित्र कर देता है तथा छठा मुझको स्वग के देवी-देवताओ म पहुचा देता है।"

जेन बौद्ध मत ने चाय पीने की रीति शुरू की। अपने गुरु की मूर्ति के सामने सारे सन्त बठ जाते और एक ही प्याले मे से बारी-बारी गम्भीरता और भक्ति भाव से चाय पीते। यही जैन रीति, पन्द्रहवी शताब्दी मे जापान पहुच गई और धोगन अशीकागा योशी मासा के नेतत्व मे चाय पीना एक रस्म के रूप म चल निकला। फिर यह जीवन-कला का एक अग बन गया। चाय पीने का कमरा एक शान्ति का मन्दिर बन गया। और जो इसम दाखिल होना वह जीवन

की चिन्ताओ झगडे झमेला को भुलाकर प्रवश करता। इसका मतलब यह था कि सब नम्रता स ऊंच-नीच का विचार छोडकर अन्दर दाखिल हो। ताक म केवल एक चित्र होता या फूल पत्तिया की सादी सी सजावट।

जेन शब्द, ध्यान से निकला है और महात्मा बुद्ध ध्यान पर बड़ा जोर देत थ कि इसके द्वारा ही मन को शान्ति मिलती है। यही सन्देश बौद्ध धम छठी शता दी म भारत से चीन लेकर आया और वही जापान म पहुँचा। सोलहवीं शताब्दी म रिकीओ ने चाय पीने की रस्म को शान्ति और पवित्रता का नमूना बताया। अतिथि चुपचाप चाय के कमरे म आते और सिवाय उबलत पानी की आवाज के कुछ सुनाई न देता। सब एकाग्र चित्त स बैठत। मन, मन स बातें करता और सब ताक की तस्वीर या फूला की, दिल ही दिल म प्रशसा करत।

चाय पीने का कमरा बडा साफ किन्तु सादा होता। इतनी सफाई होती कि क्या मजाल जो जरा-सी मिट्टी भी दिखाई दे जाय। पत्थरो स जडा हुआ माग, जो चाय के कमरे को मकान से जोडता खास तौर पर साफ किया जाता। पर इस सफाई म भी जापानी सन्तो की कलापूण रुचि का परिचय मिलता। जो सत चाय पीने की रस्म का प्रधान होता उसको चाय गुरु कहा जाता। रिकीओ एक प्रसिद्ध चाय गुरु हुआ है। चाय पीने की तयारी हो रही थी और कुछ प्रमुख व्यक्तिया के आने की प्रतीक्षा थी। रिकीओ का लडका सोआन बाग का रास्ता धोकर साफ कर रहा था। एक घटा भर सफाई कर चुकन के बाद पिता के पास आया और कहा 'पिताजी अब सब ठीक है। रास्त के पत्थर तीन बार धोये है। पत्थर की लालटेनें और पेडो के पत्ते भी फव्वारे स धोये हैं और रास्ते म कोई तिनका-पत्ता नही है।' 'अरे मूख' चाय गुरु कडककर बोला, बाग के रास्ते को साफ करन का यह तरीका नही। इतनी बात कहकर रिकीओ बाग म आया और एक चिनार की शाखा को हिलाया। रास्ता लाल और पीले पत्ता स सज गया, और एसा लगा जैस पतझड का कमखाब हो। रिकीओ केवल सफाई ही नही चाहता था, साथ म प्राकृतिक सुदरता का भी इच्छुक था।

चाय मनुष्य को चतन्य करती है, और चित्त को एकाग्र करती है। इसी कारण ही बौद्ध सत भक्ति करत हुए चाय जरूर पीते जस हमारे सत ठडाई पीते हैं। चाय पीने की रस्म ने रहन-सहन और लोगा क जीवन को भी प्रभावित किया और चित्र-कला और बागबानी की कला को बहुत बढावा दिया।

चाय १६१० म डच ईस्ट इडिया कम्पनी यूरोप म लाई। यह १६३८ म फ्रास १६३६ म रूस और १६४० म इग्लड पहुँची। जब कोई नई वस्तु किसी देश म बाहर स आती है तो लोग उसक बारे म तरह तरह की बातें करते हैं। १७५६ म एक अग्रेज सज्जन ने लिखा कि चाय पीने वाल पुरुषा का कद नाटा रह जाता है

और स्त्रिया की सुदरता कम हो जाती है। ऐसी बातो के बावजूद चाय का इस्तेमाल बढता गया, और अठारहवी शताब्दी म चाय का आम रिवाज हो गया। बडे-बडे लेखक,—एडीसन, स्टील, समुअल जानसन और चारस लैम्ब सब चाय के प्रेमी थे। लम्ब न लिखा कि सबस मजदार काम किसी का गुप्त भला करना होता है। जापानी कलाकार ओकाकूरा ने चाय पीने की कला का नाम चायवाद रखा था। वह कहता है—चायवाद सुन्दरता का छिपाने की कला है ताकि आप उसको ढूढ सकें। लैम्ब की गुप्त भला करने की खोज भी चायवाद का ही एक रूप है।

मैं इन विचारो म ही मस्त चाय पी रहा था कि कायस्थ बाडी की ओर से एक पहाडी गीत की आवाज आई—

कुर्यों ते उगमी काली बदली
आए मुडिया प्रियी सिंघा
कुथा तो उगमिया ठडा नीर ओ।

गान वाला ऐसे करुणा से भरे स्वर म गा रहा था मानो सचमुच वह किसी घायल दिल की पुकार हो।

इतनी देर म खाने के लिए बुलावा आ गया। हमारे मेजबान न गद्दी लडके और लडकिया की टोली इकट्ठी की हुई थी। उन्होने गीता की एक झडी-सी लगा दी और खूब समा बाधा। हमारे मित्रो का सारा परिवार ही खाना परास रहा था और उनका स्नेह देख देखकर मेरे शहरी साथी चकित हो रहे थे।

मैं कई बार सोचता ह कि हमम और पश्चिमी लागो म कितना अन्तर है। हमारे लोग स्नेही हैं और अतिथि सत्कार म इनका कोईमुकाबला नहीकर सकता। कभी भी बाहर के आदमी को गाँव से भूखा नही जाने देंगे चाह स्वय कितने ही गरीब क्या न हा।

इनके मुकाबले म पश्चिमी गोरे स्वार्थी और कोरे हैं, और पैसा ही इनका मा बाप है। चाहे कितने ही धनी हा बिना मतलब के कभी आँख नही मिलायेंगे। इनके चेहरे गोर और हृदय वज्र स कठोर। हमारे गरीब किसाना ने चाहे फटे चिथडे ही पहने हा, पर कितने मिलनसार है, और अपना काम छोडकर भी मेहमान को सिर-आँखो पर बिठाते हैं।

अपने मित्रो का धन्यवाद करके हमने पालमपुर का रास्ता लिया। ओई के काल वक्ष चाय-बागानो म स्थिर और शान्त खडे थ। सडक साप की तरह बल खाती हुई धीरे धीरे ऊँची हाती जा रही थी और आधे घटे म ही पालमपुर की बस्तिया दीखने लग गइ। बाजार मे से गुजरते हुए हम सैशन हाउस नामक बगल म पहुँच गए।

पालम घाटी

पालमपुर हिमालय की गोद म एक अनमोल मोती है। इसके सुदर चीड के वक्ष और देवदार की पत्तिया धौलीधार की परछाइ म प्रहरियो की भाँति खडी हैं। यहाँ की चीड के पडा से घिरी खामोश सडकें यहाँ के चाय बागान जिनक निकट हिम जल के निझर है यहा के बगले जिनके चारो आर वक्षा का ऊँचा ऊँचा घेरा है, बडे खूबसूरत लगते है। पालमपुर शाति और सुदरता की एक अनूठी तसवीर है। यहाँ क मकाना और बँगला म सबसे सुदर सदन हाउस नामक बगला है। इसका दश्य अत्यत रमणीक है। इस इमारत की जगह किसी पवतीय दृश्या के प्रेमी ने चुनी मालूम हाती है। इसक बरामदे मे से धौलीधार की सम्पूण झाँकी दिखाइ देती है। धौलीधार की तीन चोटियाँ यहा स ऐसी लगती है मानो रोरिक का कोइ चित्र हो और चीडो के वक्ष उस चित्र का चौखटा। दोपहर को बादल आकर धौलीधार की बर्फानी चोटिया को ढक लेत। बरसात के दिना म बिजली चमक चमक पडती और बादल गरजते नही थकत। बादला की गडगडाहट बदला की घाटी म बार बार गूँजती और ऐसा लगता जसे दवी शक्ति अपने बल का प्रदशन कर रही हा। वर्षा, यहाँ बहुत जोर की होती है। बादल, जसे बरस-बरसकर थकते नही। बँदला खड्ड का दश्य बडा मनोरम होता है और यहाँ कोइ घटो खडा बर्फानी पहाडिया पर काले-नील बादला का देखता, अघाता नही। सदन हाउस का बँगला रग बिरगे फूलो स लदा हुआ है और इन फूला के पीछे चीड के वक्ष अति मनोरजक दृश्य प्रस्तुत करते हैं। बशाख के महीने म तगर के फूला की सुगध स यह क्षत्र महक उठता है।

बँदला गाँव तथा निऊगल खड्ड की सर बडी सुहावनी है। बदला की ओर जान वाली पगडडी के दोना ओर चीड के पडा न घरा डाला हुआ है। हम बदला खड्ड के दाइ ओर स होकर गुजरे। रास्त म किसी किसान का एक अकेला मकान था। इसम सरू का पड लगा हुआ था। खड्ड के दोनो ओर मक्खण क वक्ष लगे हुए हैं जिनके पत्त बगाख म ताम्र क रग क हो जाते है। सीढ़िया की तरह बने हुए खेता म गेहूँ और जौ की फसल लहलहा रही था, जिन्ह ज्यष्ठ मास म काटा जाता था। ज्यष्ठ क मध्य म खेता म फिर हल जोता जाता है। हल चलने के बाद

किसान और उस के परिवार के सब लोग, स्त्रियो और बच्चो सहित मिलकर खेतो म मिट्टी के ढेलो को तोडने का काम करते है। हर किसी ने हाथ म लकडी के लम्बे लम्बे हथौडे उठाए होने हैं। ज्येष्ठ आसाढ के महीनो मे खेतो म पानी-ही पानी होता है जिसको नालियो के द्वारा बाहर निकाला जाता है। पानी के हजारा झरन सुबह की धूप मे चमकते दिखाई देते हैं। पानी से भरे खेत दपण की तरह दमक-दमक पडते हैं, और ऐसा प्रतीत होता है मानो सारी-की-सारी पालम घाटी कोई स्वप्न लोक हो! फिर किसान धान की खेती म जुट जाते है, जो आश्विन म तैयार होने लगती है।

गाँव से जरा बाहर की ओर चमारा के घर है बीच म सूदो के! यही लोग यहाँ के साहूकार और दुकानदार हैं। गाँव के दाएँ हाथ पर एक मदिर है, जिसकी दीवारा पर शिव और पावती के चित्र हैं। य चित्र कागडा कला क चितेरे गुलाबू राम के बनाए हुए है। गाँव की गली पत्थरा की बनी है। इसके एक ओर पानी का झरना बहता है। निमल जल का यह निझर गाँव का एक अनोखी सुन्दरता प्रदान करता है। गाव के उत्तर की ओर पनचक्कियाँ लगी हुई है, जिनके निकट गद्दी लागा की बस्ती है। खेतो क किनारा पर लग वक्षा को, ढोर-डगरो के चारे के लिए बडी बेरहमी से काटा छाँटा जाता है। इन पेडा के ठूठ गद्दियो के घरो पर पड रही एक भयानक परछाइ के समान दीखते है। गद्दी किसानो के घर बडे साफ हैं उनकी दीवारें बाहर से हल्के नीले 'गालू और हल्की पीली 'गाचनो' से रँगी हुई हैं। यह मिट्टी धौलीधार मे से लाई जाती है। कुछ और ऊँचाई पर जाकर निग्गल नामक खडड आता है। यह खडड बहुत गहरा है और इसम पहाड से टूटकर गिरी बडी बडी चट्टानो के टुकडे हैं। खडड के बीच मे साफ सुथरे पानी की एक नदी बहती है। यह नदी धौलीधार से निकलती है। खडड के दाइ ओर एक झरना है जिससे बँदला के चाय-बागानो को पानी दिया जाता है। दूर स देखें तो ऐसे लगता है जसे यह झरना निचान से ऊचान की ओर बह रहा हो। निग्गल खडड के नीचे एक पनचक्की लगी हुई है और दारू निकालने की एक भट्टी है। यहाँ गद्दी लोग लुगडी' पीने के लिए इकटठे होते हैं। खडड क दूसरी ओर गद्दिया का एक और गाँव है जिसके डिब्बियो जसे पीले घर बडे सुन्दर दीखत हैं।

तहसील पालमपुर के गाँव दा भागा म बाटे जा सकत हैं एक भाग म वे गाँव आते है जो धौलीधार के दामन म पालमपुर-बैजनाथ सडक के उत्तर की ओर हैं, और दूसरे मे वे गाँव, जा इस सडक के दक्षिण की ओर ह। धौलीधार के आँचल मे देऊल लनाद कदम्बडी बँदला पकदी और चचिया नामक ग्राम हैं। ये सारे-के-सारे गाँव पहाडी टीलो पर बसे हुए हैं। देऊल के निकट आवा और बँदला के निकट निग्गल नामक खडड है। इन ग्रामा म बफ के ठडे पानी से खेतो

की सिंचाई की जाती है। इन गाँवों के निवासी या तो खेती बाड़ी करते हैं या फिर रेवड़ पालते हैं और शिकार करते हैं। ये लोग बाज और शिकरे पकड़कर पश्चिमी पंजाब में बेचने के लिए भेजा करते थे। पंजाब के बटवारे का एक यह भी प्रभाव हुआ है कि शिकरों और बाजों का व्यापार अब बन्द हो गया है। बड़े बड़े जमींदार जो पहले शिकरे और बाजों के शौकीन हुआ करते थे आजकल धीरे धीरे खत्म होते जा रहे हैं इसलिए इन शिकारी पक्षियों को अब पकड़ा नहीं जाता। बाज शिकारों की संख्या बढ़ जाने के कारण धौलीधार के क्षेत्र में शिकार बहुत कम हो गया है। मुनाल आदि पहाड़ी पक्षी और बर्फानी मुर्गे बहुत कम हो गए हैं और बाज तथा शिकरे संख्या में उतने ही बढ़ गए हैं।

पालमपुर घाटी के चाय उगाने वाले क्षेत्र में प्रसिद्ध गाँव बनूरी सलियाना पट्टी दिउगराऊँ, मनिआरा तिक्कड़ डरोह आदि हैं। चाय की झाड़ियों की खेती इस क्षेत्र में १८४६ में डाक्टर जेमसन ने पहली बार की थी। उसने चाय के पौधे अल्मोड़ा और देहरादून के जखीरों से यहाँ लाकर लगाए थे। आजकल इस क्षेत्र में चाय खूब उगाई जाती है। किसान भी अपने खेतों में चाय उगाते हैं। चाय की पत्तियों को ये लोग छोटी-छोटी भट्टियों में सुखाते हैं और इनकी यह चाय घरेलू उद्योग धंधों को प्रोत्साहन देने वाला को बहुत पसन्द आती है। यहाँ के ग्रामों के मकान आमतौर पर दोमंजिले होते हैं और उनकी छतें सलेट के पत्थर की होती हैं। कई मकानों के दरवाजों और खिड़कियों पर बेल-बूटे बने होते हैं। गत बीस वर्षों से स्वास्थ्य के नियमों की ओर ध्यान दिया जाने लगा है और प्रायः घरों में खिड़कियाँ और रोशनदान दिखाई देने लगे हैं। घरों के साथ ही चरागाह हैं जिनमें छोटी छोटी कान रंग की गउएँ चरती हुई नजर आती हैं।

सलियाना नामक ग्राम बड़ा खूबसूरत है। इसमें डोगरा ब्राह्मण रहते हैं। खेतों के किनारे जंगली गुलाब की बाड़ लगी होती है और वसन्त में इनके सफेद और गुलाबी रंग पालम की घाटी को एक अनोखी छवि प्रदान करते हैं। जंगली नाशपातियों के वृक्ष जगह-जगह पर उगे हुए हैं अप्रैल में सफेद फूलों से लद जाते हैं। इन दिनों में धौलीधार की चोटियाँ भी बर्फ से ढकी हुई होती हैं और पालम की घाटी सफेद वस्त्रों में लिपटी किसी गोरी के समान दिखाई देने लगती है।

जंगली गुलाबों के सफेद और गुलाबी फूलों को देखकर मुझे बड़ी खुशी हुई। यहाँ बहुत से खेतों की बाड़ इन फूलों से सजी हुई है। क्षेत्र के सफेद फूल देखकर जो और भी खुश हुआ। सफेद रंग पवित्रता का प्रतीक है जैसे गुलाबी रंग मनुष्य की प्रेम भावनाओं का चिह्न है।

बसन्त मनुष्यों में नहीं, वनस्पति पशु, पक्षियों और मछलियों तक में खुशी की उमंग करवटें लेती हैं। खुशी की यह उमंग एक बहती नदी की तरह है। जैसे

शरीर को भोजन की आवश्यक्ता है ऐसे ही प्रकृति की सुन्दरता, खुशी की इस उमग का आधार है।

जब गडरिया के बालका को मैंने गुलाब के फूल ताडते देखा तो दिल का बडी ठेस पहुची। हमारे विपरीत जापानी कितने सहृदय है। वे अपने देश के फूलो और वनस्पतिया से कितना प्यार करते हैं। कहन हैं कि एक जापानी लडकी सुबह सबेरे अपन घर की कुइया पर पानी भरने गई। क्या दखती है कि रस्सी के गिद इइकपचे की बल लिपटी हुइ है, और उस पर एक जामुनी रग का फूल खिला हुआ है। लडकी को फूल और बेल की सुन्दरता इतनी भाई कि उसका कुए स पानी निकालने का हौसला न हुआ, और पानी निकालने की रस्सी को वसे ही छोडकर एक पडौसी स पानी माँग लाई।

इसी तरह की कहानी जापान की रानी कोमीओ के बारे म भी प्रसिद्ध है। पूजा का समय था और कोमीआ फुलवारी म फूल चुनने गई। फूला की सुन्दरता देख, तोडने का हौसला न हुआ और बोली, 'अगर मैं इन फूला का तोडती हूँ तो मरे हाथा के स्पश स य अपवित्र हो जायगे। जसे ये फुलवारी म लगे है, मैं एसे ही इनको महात्मा बुद्ध की सवा म भेंट करती हूँ।'

बान्ो, जापान का सत कवि प्रकृति का प्रेमी था। जब चरी के हल्के गुलाबी फूल खिलते हैं तो जापान के लोग बडी खुशिया मनात है, और फूला से लदे वक्षो के नीच बठकर इनकी सुन्दरता का आनन्द लूटते है। पवन का हल्का सा झकोरा भी जाय ज़रा सा ऊँचा शार हो तो चैरी के फूल झडने लग जात है। भिक्षु बाशो घटी बजाता हुआ गुजर रहा था। जब चरी के बाग के पास से गुज़रा तो घटी बजानी बन्द कर दी कि कही शोर से चरी के फूल झड न जाय।

फाल्गुन के महीन मे फाख्ताओ के जोडे की घू घू कैंथ क वक्षा म से आती सुनकर मैंने सोचा कि य जोडे अवश्य ही फूलो की बातें कर रहे होंग! कथ के दूध से सफेद फूल शबनम से भीगे हुए ऐसे लगत थे, जसे तारो के ढुलकते आसू हो।

कई लोग पूछत है फूलो से क्या लाभ हैं? फूलो से न केवल फल और अन्न उत्पन्न होता है, अपितु ये फूल ही है जिन्होने हम वनमानुष से मनुष्य बनाया है। कोई पाच छह लाख वष हुए जब वनमानुष की मादा ने ऊपर नज़र उठाकर चम्पे के फला से लदे वृक्ष की ओर देखा ता उसने साचा कि वह भी वक्ष की सुन्दरता का कुछ भाग ले सकती है, और उसन फूला के गुच्छे उतारकर अपन सिर के बालो म खास लिये। नर वनमानुष न अपनी फूलो से सजी सगिनी की प्रशसा की और उस दिन से ही वे इसाना की श्रेणी म सम्मिलित हो गए। अब भी जब हम अपनी सूक्ष्म भावनाएँ अपनी प्रेमिका को दर्शाना चाहत हैं तो हम फूलो के द्वारा ही अपने प्रेम को प्रकट करत हैं। अगर ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा व्यक्त करते हैं तो यह

भी फूलों के चढ़ावे से ही।

गाँव के बाहर कई मकान इधर उधर बिखरे हुए हैं। अधिकतर किसान अपने खेतों में ही रहना पसन्द करते हैं और कोई ऐसी जगह चुनकर झोंपड़ियाँ डाल लेते हैं जहाँ धूप भी लगे और वर्षा से भी बचाव हो सके। राजपूतों के मकान दूसरे मकानों से स्पष्ट रूप से अलग दीखते हैं। राजपूत प्रायः कोई विशेष अथवा अलग-सी जगह चुनते हैं ताकि उनकी स्त्रियाँ पर्दे में रह सकें। पुराने जमाने में राजपूत अपने इन घरों में अपने आपको अधिक सुरक्षित भी समझते थे क्योंकि ये घर अधिकतर ऊँची पहाड़ियों की चोटियों पर बनाए जाते थे जिन तक पहुँचने के लिए तंग लम्बी-लम्बी पत्थर की सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती थीं। इन सीढ़ियों में कई स्थानों पर से एक घोड़े के निकलने की जगह भी नहीं होती थी।

गाँव के बीच में एक बावड़ी है जिसको पत्थरों से चिना गया है। इस बावड़ी के पत्थरों पर पुरुषों स्त्रियों और बैलों के चित्र अंकित किये गए हैं। जब किसी विवाहित पुरुष की मृत्यु हो जाती है तो उसकी स्मृति में एक पत्थर इस बावड़ी में लगा दिया जाता है। इस पत्थर पर उस पुरुष का चित्र होता है। जब कोई कुँआरा मर जाता है तो उसकी याद में वहाँ एक बैल का चित्र अंकित किया जाता है।

घिरथों के घर आम तौर पर बाँस कचनार तथा तून के झुरमुटों में छिपे हुए होते हैं। ऐसे घर सम्पूर्ण घाटी में पाए जाते हैं। जरा नीचे नगरोटा के पास कल और आम के वृक्ष भी दिखाई देते हैं। उनसे परे बड़े बड़े सम्बल के वृक्ष अपने अंजुली भर भर लाल-सुर्ख फूलों के साथ सिर उठाए खड़े दिखाई देते हैं। इन वृक्षों के पत्ते झड़ जाते हैं और शाखाओं पर केवल फूल ही फूल रह जाते हैं।

सनिमाना ग्राम में मेरा मित्र परमेश्वरीराम बड़ी उत्सुकता से हमारी बाट देख रहा था। अभी हम गाँव से आधा मील दूर ही थे कि क्या देखते हैं कि ढोल बजाते हुए गद्दियों की टोलियाँ हमारी ओर आ रही हैं। बच्चों की भीड़ का तो कहना ही क्या! ऐसा मालूम होता था कि सारा गाँव ही उमड़ पड़ा हो! उन्होंने हमें गेंदे के फूलों से लाद दिया। नरसिंघे और तूतनियाँ बजाते हुए वे हमें स्कूल की ओर ले गए जहाँ पानम के सब मुखिया सयाने मौजूद थे। उन्होंने अपने स्वागत भाषण में मेरी तथा आर्चर साहब की कांगड़ा-कला पर लिखने की प्रशंसा की। इन लोगों के छल-कपट रहित सच्चे ग्रामीणों के प्रेम और प्रशंसा से हमें बड़ी खुशी हुई। हमें यह अनुभव करके और भी प्रसन्नता हुई कि मेरे कांगड़ा-कला प्रेम की बात केवल पढ़े लिखे लोगों तक ही सीमित नहीं बल्कि जो काम मैंने कांगड़ा घाटी की कला साज-सज्जा और संस्कृति की खोज के बारे में किया है उसको साधारण जनता भी जानती है। एक यात्री और लेखक के लिए इससे बड़ी खुशी की बात और क्या हो सकती है!

सलियाना, अदरेटा, अजौगर परिहाल, जडपुरी तथा पपरोला—ये सभी ग्राम प्राकृतिक सुन्दरता से भरपूर है। सलियाना से जरा आगे जाकर एक बगीचा सा आता है, जिसके आगे पीछे मकान और दुकानें बनी हुई हैं। इस जगह वैशाख म प्रतिवर्ष मेला लगता है। मेले के दिनो म यहा कई दुकानदार आकर मिठाई, चूडियाँ, ताँबे के बरतन और घडे आदि बेचते है। पालम घाटी के ब्राह्मणो राजपूतो और घिरतो के अतिरिक्त गद्दी पुरुष तथा स्त्रियाँ भी इस मेले म शामिल होते हैं। ये लोग गरेरन क्षेत्र से आते है, जो धौलीधार के दामन मे है। इनके आने से मेले म बडी चहल पहल और रौनक हो जाती है। नक्कारे की चोट पर गद्दी लोग झूम झूमकर नाचते है। गद्दी स्त्रिया चादी के गहनो से लदी उनके पास खडी होकर उन्हे नाचते हुए देखती हैं। मेला उठ जाने पर यह जगह सुनसान हो जाती है और यहा कुछ काली गऊए ही चरती हुई नजर आती हैं।

अदरेटा

सनियाना से अदरेटा की ओर जाते हुए हमें रास्ते में एक बारात मिली। सबसे आगे नरसिंघे थे। उनसे पीछे ढोल वाले और बाजे में बाराती बड़ी सज धज से जा रहे थे। एक सपाट में चौड़े पत्थर पर दूल्हे का अपने साथियों के साथ बिठाकर मैंने उनकी फोटो खींची। बातचीत करते हुए जब उसको पता चला कि हम कौन हैं तो उसने हमें बारात के साथ दोपहर का खाना खाने का निमंत्रण दिया। हम कुछ हिचकिचा रहे थे और बहाने बना रहे थे कि लड़की वाले भी आ गए। वे मेरे परिचित ही निकले और उन्होंने भी खाने के लिए ज़ोर दिया। हम पहले ही भूख लगी हुई थी और बारात में शामिल होकर हमने भी खाना खाया। घर की छत पर बैठी हुई स्त्रियों की सिठनियाँ सुनकर भी खूब मजा आया। मैं जब पंजाब के ग्रामीण किसानों का अतिथि-सत्कार और प्रेम देखता हूँ तो यूरोप याद आ जाता है। हममें और पश्चिमी लोगों में कितना अन्तर है। इंगलैंड में तो मुझे याद है कोई पानी का गिलास भी मुफ्त नहीं पिलाता और हमारे पंजाबी किसान कितने उदार चित्त हैं। अगर किसी के पास दूसरों से चार पैसे ज्यादा हैं तो उसकी यही इच्छा रहती है कि मेहमानों की जी भरकर सेवा करे। मैंने तो यही देखा है कि हमारा और पश्चिमी लोगों का बड़ा फर्क यही है कि हम खुले दिल वाले लोग हैं और बाँटकर खाना अच्छा समझते हैं किन्तु ये पश्चिमी लोग स्वार्थी हैं। उनमें बाप-बेटे का हिसाब अलग है माँ बेटी का अलग। जिधर देखो मैं मैं की आवाज आती है। यही पश्चिम की बड़ी बीमारी है और यही उनको तबाही की ओर धकेल रही है। विज्ञान ने आराम तो बहुत मुहैया किए हैं पर इंसानी दिलों को और भी संकुचित कर दिया है। तभी तो पश्चिमी देशों में इतनी बेचैनी है। उनमें सुखी और सन्तोषी कोई बिरला ही दिखाई देता है।

कई बार मैं सोचता हूँ कि यह खुदगर्जी की बीमारी पश्चिम वालों को ही नहीं बड़े बड़े शहरों में रहने वाले हमारे लोगों को भी लग गई है। मुझे याद है कि १९२५ में जब मैं मिशन कालेज लाहौर के न्यूटन होस्टल में रहता था मैंने अपने एक लाहौरी मित्र को खाना खिलाया—उड़द की दाल तथा बकरे का महाप्रसाद और उन पर तैरता-तरता घी। उसे खाना बड़ा स्वादिष्ट लगा।

कुछ दिनो बाद अचानक ही वह फिर मिल गया। छूटते ही उसने कहा, यार महिन्दर तू फिक्र मत करना। मैंने तरी रोटी खाई है, तुझे भी एक दिन घर बुला कर खिला दूगा।" मुझे याद तक नही था कि मैंने कब किसे रोटी खिलाई थी और बदला उतारने की कौन-सी बात थी? मुझे उसकी यह बात बडी अजीब लगी। असली बात यह है कि हमारे ये ग्रामीण किसान धरती के बेटे है, प्रकृति मे इनका गहरा सम्बध है, और धरती की उदारता उनके खून मे बस गई है। वे इसी कारण अतिथिया तथा मित्रो को खिले चेहरे से मिलते हैं और अगर कोई मित्र उनके पास खाना खाए तो वे फूले नही समाते।

एक चढाई नीचे उतरकर हमने फिर ऊपर चढना शुरू कर दिया और कुछ बागा म स गुजरकर सामने अदरेटा नामक ग्राम, कथ तथा धान के खेता की सामूहिक सुदरता से सुसज्जित दिखाई दने लग गया। कथ और पद्म के वक्ष गुलाबी तथा सफेद फूला से सजे हुए, चैत-वशाख म अपनी छटा दिखाते हैं।

अदरेटा गाव अकेली सी जगह पर है और यहाँ के चश्मे का पानी बडा निर्मल है। इसी कारण इस गाँव म कई एकान्तप्रिय कलाकार आकर बसे हुए है। पिछले बीस वर्षों स यहा नोरा रिचड्स रह रही है। यहाँ नोरा का वुडलड एसटेट' नामक एक आश्रम है जो पद्रह एकड म फला हुआ है। अब यह आश्रम गाँव का एक अग बन गया है। नोरा, दयालसिंह कालेज लाहौर के प्रोफेसर रिचड स की विधवा पत्नी हैं। कुछ दिन सडक के किनारे बनूरी ग्राम म रहकर नोरा ने अदरेटा को अध्ययन और जीवन की खोज के महान् प्रयोग के लिए चुना। ये प्रसिद्ध अमरीकी कवि वाल्ट विटमन की बडी श्रद्धालु हैं। उसके काव्य-सग्रह 'लीव्ज ऑफ ग्रास' को ये अपनी बाइबल समझती है। शुरू शुरू म नोरा ने अपने आपको ग्राम निर्माण के काम मे लगाये रखा। ग्रामवासियो को ये नाटका द्वारा शिक्षित करती हैं। उन्होने हमारे ग्रामीण जीवन के सम्बन्ध मे कई नाटक लिखे है जिनको रगमच पर गाँव के स्कूलो के अध्यापक प्रस्तुत किया करते थे। बेनीप्रसाद नोरा का बडा प्रशसक है और उसीके पास रहता है। नोरा ने एक छोटा सा ओपन एअर थियेटर भी बनाया हुआ है जिसके मच का काम एक साधारण थापडी से लिया जाता है।

अदरेटा स धौलीधार की अद्वितीय सुदरता का आनन्द लिया जा सकता है। एक दीवार की तरह पहाड खडे हैं। इन पहाडो की चोटियो पर चम चम चमकती बफ आँखो को चुधिया देती है। इस बफ म से बर्फानी नदियाँ ढलकर पहाडियो से नीचे धारा की तरह चल पडती हैं। दोपहर के समय बादल आकर इस सारी सुदरता को अपने आचल म समेट लेते हैं। धूप और बादलो की आँख मिचौनी पहाड की चोटियो पर अद्वितीय दृश्य प्रस्तुत करती है। यह नाटक धौलीधार पर सारा दिन चलता रहता है और कही सन्ध्या को जाकर समाप्त होता है।

सूर्यास्त के समय पहाड़ी चोटियाँ ऐसी लगती है जैसे पिघला हुआ सोना हो। फिर य रग हल्का गुलाबी या भूरा सा होकर रह जाता है। रात को चाँद और चाँदनी म पहाडी चोटियो का खुरदरापन अति कोमल प्रभाव देने लग जाता है और धौली धार के कदमो म सोई हुई पालम की घाटी किसी स्वप्न सुन्दरी की तरह प्रतीत होने लगती है।

नोरा के नाटको म धौलीधार का जिक्र आता है। वुडलड के सामने सडक से पार एक किसान ने अपनी झोपडी डाल ली है जिसके कारण घाटी का दृश्य जरा बिगड गया है। नोरा ने सफेदे के पौधो की एक पक्ति लगाई है ताकि किसान की वह झोपडी आँखो से ओझल हो सके। नोरा अस्सी से ऊपर की हो चुकी हैं और उन्हे आशा है कि सफेदे के इन पेडो के बडे हो जाने पर वह किसान की झोपडी को उनकी ओट मे छिपा हुआ देख सकेगी। नोरा स्वय एक दुमजिले म रहती हैं जिसकी छत सलेट के पत्थरो की बनी है। यह मकान उन्होंने भवन निर्माण के अपने विशेष सिद्धान्तो पर निर्मित किया है। दीवारो को अन्दर बाहर मिट्टी से लीपा गया है और वे बडी साफ-सुथरी दिखाई देती हैं। बाहर वृक्षो के नीचे बैठने का प्रबन्ध किया गया है जहा सन्ध्या को इस आश्रम म ठहरने वाले लोग इकट्ठे बैठ कर चाय पीते है। निचले कमरो म मिट्टी के कई बर्तन और अनाज भरने की मिट्टी की कोठिया है जिनम गेहू और बासमती जमा की जाती है। दीवारो पर पत्तो के बने छाते टगे हुए है। गर्मियो म वह निचले कमरे मे रहती है जिसका द्वार बाहर बगीचे की ओर खुलता है। इस कमरे के दरवाजे और इसके सामने वासा के छप्पर बिसर्टग्या की लताओ से ढके हुए हैं। ग्रीष्म ऋतु म इन बेलो पर गुच्छो की तरह लटकते हुए हल्के जामुनी रग के फल खिलते है। कही कही गुलाब और दूसरे जगली फूलो के पौधे भी इस बगीचे मे लगे हुए हैं। इसका प्रभाव बडा सुखद और शान्तिदायक है। सर्दियो मे नोरा चौबारे म रहती है। इस कमरे म उन्होने अपनी आवश्यकता की सब वस्तुए इकट्ठी की हुई हैं। आम तौर पर वह पलग पर लेटी रहती हैं। दुबल और वृद्ध नोरा लगता है मानो पर्वत की कोई आत्मा हो। पर जब वह उठकर बैठती और बातें करती हैं उसकी आखो म एक अनोखी चमक आ जाती है और उसके मुखडे पर उसके रेशम जैसे बिखरे बाल बडे सुन्दर लगते हैं। प्राय वह सस्कृति तथा शक्ति के सिद्धान्तो पर वाद विवाद करती हैं। तथा शक्ति की होड म दीवानी हो रही इस दुनिया म सस्कृति के गुण गाती है। जहाँ वह बैठती हैं उसके पीछे एक नीले फूलदान म पीले रग के सूरजमुखी के फूल सजाए गए होते हैं। इस जगह नोरा का जयदयाल नामक एक साथी भी रहता है। जयदयाल भी पहले कालेज म ही पढाता था और उसे भी नाटक का बडा शौक है। बहुत देर आराम कर चुकने के बाद जब नोरा को मिल बैठने की आवश्यकता होती है तब वह जयदयाल को भोंपू से जयदयाल! जयदयाल! कहकर

पुकारती है ।

छज्ज के एक आर नोरा का पढन का कमरा है। इस कमरे के पर्दे टाट के हैं। फश पर चटाइयाँ बिछी हुई हैं और फर्नीचर के नाम पर यहाँ केवल एक मज और कुर्सी है। रोशनदानो म शीशो की जगह खादी का कपडा लगा हुआ है। टाट के पर्दे मिट्टी की दीवारों स खूब मेल खात हैं। कई लोग मिट्टी के कच्चे घरा को पसन्द नही करत। अगर कोई कच्चे घरा की सुन्दरता का देखना चाहता है तो वह अद रेटा म नोरा का घर दखे। साफ सुथर मिट्टी से लिपे-पुत घर ऐस लगत हैं जसे धरती माता के बेटे हो। पक्की इटा की कुरूपता यहाँ कही दिखाई नही देती।

अपने घर के चारो ओर नोरा न कई और भवन, झापडिया भी बनाइ हुई हैं। एक ओर बादामी निवास है। यह नाम एक वफादार घाडे की याद म रखा गया है। बादामी निवास म वे अध्यापक रहत हैं जो यहाँ नाटक तथा सस्कृति के अल्पकालीन कोस के लिए आते हैं। उसी ओर एक और कुटिया है, जिसमे एक आइरिश लेखक और उसकी भारतीय पत्नी कुछ दिन हुए रहकर गए हैं। पहाडी के नीचे वेदिया की कुटिया है। इसको बी० पी० एल० वेदी और फरीदा बदी ने बनाया था। किन्तु अब यह ढह गई है। बेदिया के जाने क बाद यह कुटिया नोरा के लिए बहुत देर तक एक सिरदर्द बनी रही है। छत के एक शहतीर को गिरने से बचाने के लिए नोरा ने एक और कमरा बनवाया है और वेले की बुढिया टका सिर मुडाइ वाली बात हो गई है। इसके साथ ही इस आश्रम की चारदीवारी म एक जगह से बाड टूटी हुई है, जिसम से गाव के पशु बुडलड की शान्ति को भग करने अन्दर आ जात हैं।

पजाब के श्रेष्ठ चित्रकार सोभासिह न भी अदरेटा को ही अपनाया और यहाँ अपनी कुटिया बनाई। ऐसा कौन पजाबी होगा जो सोभासिह के नाम स परिचित न हो। उसका गुरु नानक का चित्र, जिसके नीचे नाम खुमारी नानका लिखा हुआ है हर सिख घरान म मौजूद है। उसका सोहनी महीवाल का प्रसिद्ध चित्र तो उत्तरी भारत के हर कला प्रेमी के पास है। सोभासिह को पवत प्रेम तथा कागडा का एकान्त और शान्ति ही अदरेटा म लाई है। वह सारा दिन अपने काम म मग्न रहता है। उसने अपने चित्रा म पहाडी सुन्दरिया की सुन्दरता, लज्जा और भोलापन बडी सुन्दरता स चित्रित किया है। उसन वहाँ मेरी भी एक मूर्ति बनाई है जो एक खिडकी के पास रखी हुइ है। क्योंकि वह मूर्ति भूरे से सीमेंट की है इसको कई भोले पहाडी किसान श्रीकृष्ण की प्रतिमा समझकर फूल चढा जाते हैं। सोभासिह ने मकान के सामने एक गोल तालाब बनाकर उसमे एक ऊचा बास रखा है। स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर वह इस बास पर राष्ट्रध्वज लहराता है। सोभासिह ने अदरेटा मे खूब रौनक लगा रखी है और उसका घर कला प्रेमिया का एक क्लब ही बना हुआ है। पढे लिखे ही नही सीधे सादे किसान भी काफी

मरुया म उसके घर चित्रा को देखन आते है।

सोभासिंह न कागडा की सुन्दरियो के बडे सुन्दर चित्र बनाए हैं। एक नवेली वधू कलीरा पहने रगीन डोल म बैठी पर्दा उठाकर बाहर झाँक रही है। उसके सामने पिटारी है जिस पर पख फैलाए कलोल करता एक पक्षी ऐसा प्रतीत होता है मानो सुदरी पर मोहित होकर अपना प्यार प्रकट कर रहा हो। यह चित्र देखकर कागडा का लोकगीत 'भाभी कुक्कू कीहाँ बोलन्दा' याद आ जाता है। सोभासिंह के कागडा की सुन्दरियों के चित्र भारतीय कला म विशेष स्थान रखते हैं।

अदरेटा की शान्ति और सुन्दरता का हमने खूब आनन्द लिया। मैंने वहाँ अपने मित्र बसन्तसिंह के मकान के ऊपरी बरामदे म डेरा डाल लिया और वहाँ लेटकर धौलीधार के दृश्य जी भरकर देखे। चोटियों पर बादलों की आँख मिचौनी और धूपछाँव बडे अच्छे लगते थे और खेतों म गऊआ तथा भेडों के रेवड बडे मनभावन।

रात को बेनीप्रसाद ने हमें अपने यहाँ खाने पर बुलाया। पहाडी घरों म सामने बाँसो का झुरमुट और पिछवाडे केले के पेड लगाने का आम रिवाज है। मैंने बेनीप्रसाद स पूछा कि केले पिछवाडे म क्यो लगाते हैं। उसने बताया कि जब हवा चलती है तो केले के पत्ते बाहर की ओर झुककर कहते है 'जाओ जी।' पर इसके उलट कागडा वाले महमान नवाज हैं इसीलिए सामने बाँस लगाते हैं और पीछे केले। बाँसों की शाखाए अन्दर की ओर झुककर कहती हैं "आओ जी।"

बाँसो के झुरमुट म से निकलकर हम आँगन म आए और हाथ धोकर खाना शुरू किया। भटूरे उडद माश की दाल भात और देऊदल का अचार बहुत स्वादिष्ट लगा। और हाँ साथ में आमो की लौजी भी थी। खट्टी लौंजी चखकर खाना शुरू करने का रिवाज विज्ञान के उसूल के अनुसार भी है। खटाई जिह्वा की स्वाद-ग्रन्थियो को जिनके कारण हमे स्वाद का भास होता है साफ कर देती हैं।

इसमे मुझे राजा प्रकाशचन्द तथा ससारचन्द की बात याद आती है। एक बार राजा ससारचन्द ने गुलेर के राजा प्रकाशचन्द को ननौण मे खाने पर आमन्त्रित किया। राजा के रसोइए भी साथ आए। वे नही चाहते थे कि ससारचन्द के रसोइया का मान बढे। उन्होने प्रकाशचन्द को सबसे पहले मालपुए खिला दिए। इसके बाद सारा खाना बेस्वाद लगने लगा और राजा को पसन्द न आया। जब ससारचन्द के रसोइया को पता चला तो उन्होंने राजा को लौंजी दिया और इसके बाद खाना उसको फिर स्वादिष्ट लगने लगा। जब प्रकाशचन्द को ससारचन्द के रसोइयो की इस चतुराई का पता चला तो उन्हें खूब इनाम दिया।

कागडा के राजाओं की बातें करते हुए जगली जानवरो की चर्चा शुरू हो गई। बेनीप्रसाद ने बताया कि ये जानवर सर्दियो म कई बार घरो म भी घुस

आन है। पिछले साल उनके पडोसी के घर आधी रात को एक बाघ घुस आया था। पडासी हौमले वाला था। उसने द्वार बन्द कर लिया और अपने भाई के साथ मिलकर लाठिया और कुल्हाडिया से ही बाघ का काम तमाम कर दिया।

कुछ दिन वहा रहकर हमने सोचा कि दूसरे गावा की भी सर की जाय। और हम वहां से चल दिए।

बाजार मे से गुजरते हुए हम अदरेटा ग्राम से बाहर आ गए। बास के जगल को पार करके एक नदी आती है, जिसके एक किनारे पर शिवालय बना हुआ है। इसके बाद तरेल नामक गाव पडता है। इस गाव की विशेषता यह है कि यहा पनचक्कियो से धान कूटा जाता है। इस क्षेत्र के ग्रामो को तुन के वक्षा के झुड, जिनके पत्ते तांबे-जसे होते हैं, एक अनोखी छटा प्रदान करत हैं। यहाँ बास के लचकीले वक्षा के भी अनगिनत झुरमुट दिखाई देते हैं। आवा और पुन्न नामक खडडो के किनारे सेमल के पड हैं जिन पर लाल रग के फूल लगते हैं। सेमल के वक्षो के नीच प्राय पत्थर के चबतर बने होत हैं, इन पर कहीं-कहीं सिंदूर लगा कर लोग पूजा करते हैं।

वैजनाथ

बाज़ार म गुजरत, सूदा की दुकानें दखत हम अदरटा स निकलकर एक आक क जगल म घुस जात है। इसके बाद एक कल-कल करती नदी के दशन होत है।

इस नदी के किनारे पर भगवान शिव का मंदिर है। यहाँ स चलकर हम तरेइल पहुच जाते है। इस गाँव मे धान कूटन की पनचक्कियाँ लगी हुई हैं। इन के वक्ष जिनके पत्ते ताव-जस चमकते हैं कोमल तथा लचकीले बांसा और केलो के झुड इस गाँव को एक अनूठी सु दरता प्रदान करते है।

कागडा घाटी की सुन्दरता इस बात म भी है कि यहाँ के वक्ष और झाडियाँ कागडा कला के समान विपरीत वस्तुओ का समन्वय दर्शाती हैं। जिस प्रकार कागडा कला मे मुगल तथा हिन्दू शलियो का मल है उसी प्रकार कागडा म उष्ण तथा शीत जलवायु के क्षत्रा की वनस्पतियाँ एक साथ पाई जाती है। ऐसा लगता है मानो यूरोप और एशिया का सगम हो रहा हो। यहाँ दोनो प्रकार के वृक्ष मिलते हैं—ऐसे पेड जो अधिक गम प्रदेशो मे होते है और ऐस भी जो ठड प्रदेशो म पाय जाते हैं। यहा बाँस पीपल और आम के वक्ष तथा ओक चेरी और जगली गुलाब पास पास उग हुए है। आवा और पुन नामक खड्डा के किनार सेमल के वृक्ष हैं, जिन पर लाल फूल लगते हैं इन सेमल वक्षो के आलवाल पर बडे बडे चबूतरे बने हुए हैं। इनम स कइ एक की दरारें जिनको देवता समझकर पूजा जाता है सिन्दूर से रगा हुइ हाती है।

खडडे स पार हम पपरोला जा निकल यह गाँव सडक क किनारे पर है। इसके बाजार म बडी चहल पहल रहती है और हम जी भरकर पहाडी रहन-सहन की झाँकी देख सकते हैं। अब यहा बिजली भी लग चुकी है। पपराला से बैजनाथ तक चढाई है। रास्त मे बिनू नामक खड्डु पडती है। इस खड्डु को पुराने आय बिन्दुक के नाम स पुकारत थे। बिन्नू से बजनाथ तक कठिन चढाई है।

बजनाथ की बाहरी सीमा पर स्थित मन्दिरो से ही पता चल जाता है कि अब हम एक प्राचीन कस्ब म कदम रख रहे है। बायें हाथ को यहाँ का डाक बगला है जहाँ से बिन्न खड्ड का दश्य दिखाई देता है। इस जगह हर समय ठडी और तेज

हवा चलती रहती है। जिस स्थान पर डाक-बगला बना हुआ है यही पर कभी बैजनाथ के राजा का दुग था। यह जागीरदार त्रिगत्त के राजा के अधीन था। कोई सौ वष हुए इस कस्बे म महल, मदिर और तालाब था। इनके निशान अब भी मिलते हैं। ताबे के छोटे छाटे पैसे कई बार दब हुए मिल जाते ह।

बजनाथ का पानी हाजमे के लिए बडा उपयोगी है। कहा जाता है कि महा राजा ससारचन्द अपन पीने के लिए पानी यहीं से मँगवाया करता था।

शहर के बाहर खुले मैदान मे हमन एक अदभुत दृश्य दखा। कुछ नौजवान लडकिया रोती-सुबकती नदी की ओर जा रही थी और कई नौजवान लडके नदी के किनारे खडे तमाशा देख रहे थे। आखिर लडकिया न नदी म कुछ मूर्तिया बहाईं। ऐसा करते हुए माना उन्हें बहुत दुख हो रहा था। सब की सब विलाप करने लग गई। नदी के किनारे खडे लडके यह दखकर जोर-जोर से हँसने लगे। हमने इस अनोखे मेले का अभिप्राय जानना चाहा तो पता चला कि यह मला स्त्री जाति की इस हार्दिक आकाक्षा की ओर इगित करता है कि उसे अच्छा वर प्राप्त हो। दुनिया भर की स्त्रिया अच्छे पतिया के लिए याचना करती ह और कागडा घाटी की युवतियो की यह कामना रली की पूजा म अभिव्यक्त होती है।

फाल्गुन के अन्त मे लडकिया एक कौडी का धर म दबा देती हैं और अगल दिन से इस स्थान को पूजने लग जाती है। कोइ पद्रह दिन तक लडकिया यहा इकट्ठी हाकर पूजा करती रहती हैं। फिर पहली वशाख का रली का शकर से विवाह हो जाता है। आधी लडकिया शकर की ओर तथा आधी रली की ओर हो जाती है। रली और शकर की मूर्तिया को ब्याह जाने वाले लडके लडकी की तरह उबटन मला जाता है। फिर एक ब्राह्मण हवन करता है और लडकिया शकर और रली की मूर्तिया क सिर म तल डालती है। शकर का दूल्हे के समान लाल कपडे पहनाए जान हैं। फिर दाना का एक पालकी मे डाल कर नदी की ओर ले जाया जाता है और इन्हें नदी मे प्रवाहित कर दिया जाता है।

इस अनोखी किन्तु सुदर प्रथा की जडें इतिहास मे हैं। कहा जाता है कि एक बार एक ब्राह्मण ने अपनी भरपूर जवान लडकी रली का ब्याह शकर नामक एक छोटे से बालक से कर दिया। जब फरे पड चुके और नववधू अपने बालपति तथा अपने भाई बस्तू के साथ जा रही थी कि माग म एक नदी के किनार उसन डोली को रुकवा लिया। फिर उसन अपन भाइ बस्तू से कहा मरी किस्मत म एक नाबालिग *लडके से ब्याह होना लिखा था लेकिन अब मैं ऐसी जिन्दगी और जीना नहीं* चाहती। पर मेरी याद मे आगे से लडकिया को तीन मूर्तियाँ बनानी चाहिएँ। एक मेरी, एक मेरे पति की और एक तेरी—मेरे भाई बस्तू की। लडकिया को चाहिए कि इन मूर्तिया को चत्र के महीन म पूजती रहें। फिर इनमे स दो का वशाख की पहली तारीख को विवाह रचाया जाय जसे मेरा ब्याह हुआ था। उसके बाद

दूसरे या तीसरे दिन डाली में डालकर इन मूर्तियों को नदी के किनारे लाया जाय और उसमें प्रवाहित कर दिया जाय। ये सब-कुछ मेरी याद में किया जाय मेरे भाई। और जो कोई भी ऐसा करेगा उस लड़की का मेरी तरह असमय ब्याह नहीं होगा। ये कहते हुए रली ने दरिया में समाधि लगा ली और इस तरह हमेशा डूब गई। तब से आज तक रली शंकर और बस्तु की पूजा कांगड़ा के समस्त जिले में हर जगह होती है।

रली का मेला देखकर हमने बैजनाथ के मन्दिर के दर्शन किए। कांगड़ा की घाटी का सबसे सुन्दर ऐतिहासिक भवन बैजनाथ का मन्दिर है। बैजनाथ वास्तव में यहाँ के सबसे बड़े मन्दिर का नाम है जो शिव वैद्यनाथ के निमित्त बनाया गया था। इसी मन्दिर के नाम पर नगर का नाम भी पड़ा मालूम होता है।

इस कस्बे का पहला नाम कीड़ग्राम था। यह बात दो शिलालेखों से प्रकट होती है जो यहाँ से प्राप्त हुए हैं। यह सरल काव्यमयी और सुन्दर संस्कृत कविता में लिखा है। इनमें इस मन्दिर के निर्माण का इतिहास बताया गया है। इस मन्दिर को यहाँ के दो व्यापारियों ने बनवाया था। इनमें कहा गया है

त्रिगर्त में कीड़ग्राम नामक एक सुन्दर गाँव है। इस गाँव में कई सुविधाएं हैं। यहाँ बिंदुक नामक नदी पहाड़ की गोद में से फूटती हुई निकलती है और अठखेलियाँ करती हुई गुज़र जाती है। इस गाँव में राजा लक्ष्मण का राज्य है। यहाँ दो भाई मनुक और आहुक रहते थे। इनके पिता का नाम सिद्ध था। इन भाइयों ने अपनी जायदाद बाँटी नहीं थी। दोनों ही बड़े भक्त मानस थे और इन्होंने शिव का यह मंदिर बनवाया। इस मंदिर के द्वार पर गंगा-यमुना और अन्य देवी देवताओं की प्रतिमाएं हैं आसीक का पुत्र मंदिर को बनाने वाले मिस्तरियों का सरदार था और सुशमण ग्राम से आया था। इसी प्रकार समान का पुत्र नाडक भी उसके साथ काम करता था। इन दो निपुण राज मिस्तरियों के निरीक्षण में शिव का यह मन्दिर बनाया गया। इस मंदिर का निर्माण शास्त्र के विचारों के अनुसार किया गया और उनमें रखी कई गण देवताओं की मूर्तियाँ चमक चमक पड़ती हैं। यह बात बड़ी रोचक है कि इस मंदिर को बनाने वाले दोनों राज मिस्तरी कांगड़ा नगर से आए थे।

बैजनाथ के मन्दिर की रचना कुछ इस प्रकार है। इसके बीच आठ वर्ग फुट का एक पूजा स्थान है जिसका रहस्य हर किसी को नहीं बताया जाता। इसके गिर्द एक मंडप है। इस मन्दिर की छत ढलवां है। इस विशेष पूजा स्थान में वैद्यनाथ नाम का लिंग रखा हुआ है। इसके अन्दर जाने के लिए एक बहुत तंग खिड़की है जिसके चारों ओर स्तम्भ हैं। मंडप की छत चार स्तम्भों पर खड़ी है। इन स्तम्भों पर बनी महराब छत को नौ भागों में बाँट देती हैं। छत पत्थरों से चिनी गई है। मंडप के सामने एक शानदार ड्योढ़ी है। यह ड्योढ़ी भी सात खम्भों

पर खडी है। ये खम्भे सीधे साधे हैं और इनकी बनावट से पता चलता है कि पुराने जमाने के खम्भो से इनमे कोई अधिक अन्तर नही है। इनका चौरस तला, उन पर बढे हुए दो दायरे, इनम खाली जगह ये सब-कुछ पुरानी कला क नमूने हैं चाहे इनको हिदुओ की सजावट न बाद म ढक लिया प्रतीत होता है। मदिर की बाहरी दीवारें बहुत सुदर बनी हुई है। इनम खम्भे लगे है। और दो खम्भा के बीच खाली जगह मे सूय आदि देवा की मूर्तिया रखी हुई है। सूय दव की एक मूर्ति, जसा कि १२४० ई० के एक नागरी लेख स पता चलता है भगवान महावीर की मूर्ति थी। मन्दिर की छत नई बनी मालूम होती है। और यहाँ के पुजारियो के कथनानुसार राजा ससारचन्द के समय इसकी मरम्मत की गई थी। बडे सौभाग्य की बात है कि बजनाथ के मदिर जो १९०५ के भूकम्प म कुछ अधिक हानि नही पहुँची इसके पास ही सिद्धनाथ जी का मन्दिर बिलकुल मलियामेट हो गया था।

बैंजनाथ से जुगिदरनगर तक का प्राकृतिक सौन्दय बजोड है। बजनाथ से जरा ऊपर जाकर पालम की घाटी का अवलोकन किया जा सकता है। धान के लहलहात खता म किसानो की झोपडियाँ, तुन और बामा के झुड, उत्तर की ओर धौलीधार का पवत, दक्षिण मे अदरेटा की ढलान और फिर दक्षिण पश्चिम की ओर जा रही छोटी छोटी अनगिनत पहाडिया।

आसापुरी का मदिर यहा से बहुत अच्छी तरह दिखाई देता है। ऐसा प्रतीत हाते हैं जसे यह मदिर विपत्ति और दुख म पवतवासिया को आशा बँधाता रहा हो। चीड के एक जगल मे स निकलत हुए हम एक सुदर घाटी मे कदम रखने है, जिसके दोनो आर पहाडियाँ है। यहाँ न तो काई खड्ड हैं और न गड्ढे। पहाडियाँ धीरे धीरे सडक तक आ जाती हैं। दक्षिण म एक सुदर जगल है और उत्तर म धान के खेत। खेतो मे किसानो के घर सीढिया के समान ऊपर चढते जाते हैं। बिजली के तार पहाडा की सुदरता पर धब्बे के समान प्रतीत होते हैं।

उल्ल नदा के बिजलीघर के तार प्राकृतिक दृश्य म बाधक बने हुए हैं। ऐसे लगता है कि नई सभ्यता की ये बलाएँ इस घाटी की सुदरता को नष्ट करके रहेगी।

सडक के किनारे दुकानें बडी सजी हुइ हैं। दुकानदारा ने अपनी दुकानो के बाहर सफेद गुलाब की बलें लगाई हैं जिनके फूल चादनी रात म चमकते हैं।

जब हम कोई दो मील और आग गय तो देखा कि एक गद्दी भेडो का रेवड चरा रहा था। भेडें घास चर रही थी और वह चकमक पत्थर स आग सुलगा रहा था। पत्थरा के चूल्हे पर उसने पानी गम किया और ताँबे के माटे गिलास मे चाय डाली। हम देखकर उसने कहा, "आओजी तुम भी चाय पियो!" चाय पूछने के लिए

उसका धन्यवाद करके मैंने कहा, भई तेरी जिन्दगी तो बड़ी अच्छी है। न कोई चिन्ता न कोई गम। भेड़ बकरियाँ चराना उनका दूध पीना और मज़े लूटना।' चाय का गिलास हाथों से लगाते हुए वह बोला वाह भई वाह। जिन्दगी तो आपकी है जो मोटरों में उड़ फिरते हैं। आज कहीं और कल कहीं। हमारी क्या जिन्दगी है? भालुओं की तरह कन्दराओं में सोते हैं। कभी भेड़ें खो गई और कभी बाधा का सामना।' मैंने पूछा तुम रात को कहां रहते हो? उसने एक गुफा की ओर इशारा करके कहा उधर।

बैजनाथ के ऊपर की ओर पाजी धार के आंचल में बीड़ नामक एक ग्राम है। इस गाँव के बाहर ओक का एक बहुत घना वन है। इस वन में एक नाला है। ऊपर जाकर यहाँ के रईस पृथीपाल का घर है। पृथीपाल यहाँ का जमींदार है और इसने चाय बागान लगाये हुए हैं। आए-गए की खातिर करके पृथीपाल बहुत खुश होता है।

होली के दिनों में बीड़ गाँव के जंगल में मेला लगता है जिसमें धौलीधार से गद्दी और कनेर आते हैं। लुगड़ी पीकर ये लोग सारा दिन नाचते-गाते रहते हैं।

कुल्लू के मेले की तरह इस क्षेत्र के लोग भी अपने देवताओं की पालकियां पर मेले में लाते हैं और बीड़ का जंगल इन दिनों में कुल्लू के दशहरे का दृश्य उपस्थित कर देता है। इस मेले में हम लोगों के पहरावे में रंगों के चुनाव को देख सकते हैं तथा गहनों से सजी हुई यहाँ की स्त्रियों को अपलक देखते हुए कांगड़ा के पुराने कलाकारों की भूरि भूरि प्रशंसा कर सकते हैं जिन्होंने अपने चित्रों में स्थान-स्थान पर स्त्री की सुन्दरता का जी भरकर चित्रित किया है। और इस प्रकार न केवल अपनी कला को चमकाया है अपितु आने वाली पीढ़ियों के लिए वे अपनी तूलिका द्वारा पहाड़ी सौन्दर्य और सहजस्वाभाविक प्रेम को सुरक्षित कर गए हैं। मेले में सज धजकर आए लोग अपने खिलखिलाते कहकहों से कदम-कदम पर हमारा ध्यान अपनी ओर आकर्षित करते हैं और हम इसी प्रदेश में रुक रहने की प्रेरणा देते हैं।

कांगड़ा घाटी की प्राकृतिक सुन्दरता का अवलोकन करके और वहाँ के जन जीवन की सुन्दरता का आनन्द लेकर अब हम वापस अम्बाला के लिए रवाना हुए। मैंने अपने पेशकार से, जो हरियाना का एक सीधा-सादा जाट था और सफर में साथ जा रहा था पूछा चौधरी साहब! पहाड़ और जंगल कैसे लगे? कहने को तो उसने कह दिया, कि बहुत सुन्दर है जनाब, पर जब संध्या को हम पालमपुर पहुँचे और परमेश्वरीदास को जो कांगड़ा में मेरा बड़ा मित्र और सहायक है मैंने पूछा कि हमारे चौधरी साहब का क्या हाल है तो उसने बताया कि चौधरी कहता था 'जान बची लाखों पाए।

जहाँ हमारा ध्यान बर्फानी चोटियों और शान्त जंगलों की ओर था चौधरी

का ध्यान गहरे खड्डा और खतरनाक मोडो की तरफ था। प्राकृतिक प्रेम बहुत थोडे लोगा मे होना है। कागडा घाटी की सुदरता का रस कोई रसिया अथवा प्रकृति का पुजारी ही ल सकता है।

मेर गाँव का एक वद्ध यह किस्सा सुनाया करता था कि एक शहर पर स गिद्धा का भुड गुजरा तो उनको केवल शव ही शव दिखाई दिय। एक मुर्गाबिया की पक्ति निकली ता उन्ह सरावर ही दीखे। तितलिया और मधुमक्खिया उधर स उडती हुई गई तो उन्ह बस फूल ही फूल नजर आय।

जसा जिसका स्वभाव हा वसी ही वस्तुएँ उसका दिखाई देती हैं। मरा चौधरी साथी गहरे खडडा से बहुत भयभीत हा गया था, पर मैंन यह यात्रा सुदरता की खोज म की और कागडा के पवता म मानवीय सौन्दय चित्र कला सौदय, और प्राकृतिक सौदय को जी भरकर निहारा।

महाराजनगर

हमारे अन्रेटा के मित्रों ने बताया कि महाराज सावंतसिंह के दुर्लभ चित्र संग्रह का बडा भाग लवागाऊँ के राजा ध्रुवचन्द्र के पास है और राजा आसापुरी के पहाड के नीचे एक जगह रहता है, जिसका नाम महाराजनगर है। हमने चाहा कि इन चित्रों को देखें इसलिए परमानन्द वरीदास को साथ लेकर घोडियों पर चढ़े हम सूरज निकलते ही अन्रेटा से चल पडे। रास्ते में एक छोटा सा गाँव दत्तल आता है। दोनों ओर गुलाब और जंगली चमेली की बाड़ महक रही थी। बसन्ती और पीले फूल मुंह खोले हुए से लग रहे थे मानो जम्हाइयाँ ले रहे हों। जंगली गुलाब और चमेली की प्रशंसा करते हुए हम पाडहा नामक ग्राम में पहुंचे। पाड्डा एक सुन्दर गाँव है। यहाँ कूलें बहती हैं और बड के बहुत वृक्ष हैं। इनके नीचे न केवल यात्री विश्राम करते हैं बल्कि गाँव की गाय बछिया और भेड बकरियाँ को भी छाया मिलती है।

पाड्डा से आगे भौरी नामक गाँव आता है। यहाँ इलाका बिलकुल बदल जाता है। न फूल दिखाई देते हैं न हरियाली। चारों ओर सूखी पहाडियाँ ही नजर आती हैं। इस भाग को चगर कहते हैं। हौले हौले चलते आसापुरी के मंदिर को दूर से देखते हुए हम दरमन नामक गाँव में पहुंचे। यहाँ पाँच सात दुकानों का छोटा-सा बाजार है। सोचा कि यहाँ कुछ सुसताया जाय। एक दुकानदार ने चारपाइयाँ दीं और बड के नीचे लेटकर हमने आराम किया। स्त्रियों की एक टोली भी बड के नीचे चबूतरे पर बैठी थी। औरतें आम के अचार से रोटी खा रही थीं और साथ ही एक कुत्ते को जो बार बार पास आता था दुतकारती जाती थीं। दुकानदार मेरे लिए खट्टी लस्सी नमक और काली मिर्च डालकर लाया और मैंने इसको पतला करके बडे स्वाद से पिया।

दुकानदार का धन्यवाद करके हमने रास्ता पकडा और कोई आधे घंटे में नागवन पहुंच गए। यहाँ हमें कोई नाग दिखाई नहीं दिया। पर कहते हैं कि बरसात में यहाँ बहुत साँप होते हैं। यह बडा घना जंगल है। बेलें चारों ओर रस्सियों की तरह पेडों पर चढ़ी हुई हैं। अमलतास के वृक्ष पीले फूलों से लदे हुए थे और कँटीले बबूलों और पलाशों पर लिपटी हुई लताओं के सफेद फूल

उन्हें एक अलग ही रूप प्रदान कर रहे थे। कांगड़ा चित्रों में प्रायः वृक्षों से लिपटी लताएँ दिखाई देती हैं। लता स्त्री का प्रतीक है और वृक्ष पुरुष का। पुराने जमाने में माधवी लता साधारणतः आम के वृक्ष पर चढ़ाई जाती थी, और माधवी तथा आम का ब्याह भी रचाया जाता था। संस्कृत और हिन्दी कविता में स्त्री की लता से तुलना की जाती है। यही कलाकारों ने अपने चित्रों में भी दिखाया है।

अब हम महाराजनगर पहुँच गए। दिल में सोच रहे थे कि यह कोई बड़ा गाँव होगा, पर यहाँ केवल राजा तथा उसके कर्मचारियों के ही घर थे, और चारों ओर बाँसों का जंगल। मकानों के उत्तर की ओर लोकाट और नाशपातियों का बाग है। हम यह दृश्य देख ही रहे थे कि राजा ध्रुवदेवचन्द और उनका डोगरा मैनेजर हमसे मिलने आ गए। वे हमें एक मकान में ले गए जहाँ हमारे विश्राम के लिए पलंग बिछे हुए थे और तकियों पर अंग्रेजी अक्षरों में वेलकम कढ़ा हुआ था। खाना खाकर हमने कोई घंटा भर विश्राम किया।

तीन बजे के लगभग राजा का मैनेजर हमसे फिर मिलने आया। उसने बताया कि राजा के पिता मेर जयचन्द ने नौ विवाह किये थे। उनके अठारह बच्चे पैदा हुए पर उनमें से एक भी न बचा। एक साधु ने राजा को बताया कि वह लंबागाऊँ के महल को छोड़ दे और जंगल में वास करे—तभी उसकी सन्तान बच सकती है। राजा जयचन्द ने इस कारण ही इस स्थान पर आसापुरी के मंदिर के चरणों में मकान बनवाए और इस जगह का नाम महाराजनगर रखा। यहाँ उसके दो लड़के पैदा हुए। इनमें से ध्रुवदेवचन्द बड़ा है।

हमने डोगरे से कहा कि हम पुराने चित्र दिखाए। पहले वह नायिका भेद की शीशे में जड़ी हुई दो तस्वीरें लाया। ये दोनों ही बहुत सुंदर थीं, और पुस्तक में छापने योग्य थीं। तभी राजा भी आ गया और हमने बातें करनी शुरू की। मैंने बताया कि हम केवल चित्र के फोटो ही खींचना चाहते हैं और माँग कर अपने साथ कुछ नहीं ले जाना चाहते। इससे उसकी शंका दूर हुई। कहते हैं दूध का जला छाछ को फूंक फूंककर पीता है। कुछ वर्ष हुए इस जिले में एक कला प्रेमी अफसर नियुक्त था। जब भी किसी राजा के पास कोई पुराना चित्र देखता, उससे माँग लेता और फिर लौटाने का नाम न लेता। राजाओं को भी चित्र वापस माँगने का साहस न होता क्योंकि वह अफसर वक्त का हाकिम था। आखिर परिणाम यह हुआ कि सारे राजाओं ने अपने चित्र संग्रह छिपा लिए। और अब तक भी सब पहाड़ी राजाओं पर उस कला प्रेमी का आतंक छाया हुआ था। बातचीत से मैंने राजा को विश्वास दिलाया कि मैं केवल कांगड़ा-कला के इतिहास की खोज करना चाहता हूँ, और इसमें उसकी भी नेक-नामी होगी। राजा को मुझ पर भरोसा हो गया और उसने बहुत सारे चित्र दिखाए। इनमें

स कुछ तो महाराज ससारचन्द और अन्य पहाड़ी राजाओं के थे और कुछ बारामासा और नायिका भेद के। कोई बीस चित्र तो और सुन्दर थे। ये चित्र बाल बच्चों की हिफाजत से बेंठे हुए थे और इनसे पूर्व राजा रानियाँ और इनकी सन्तान ही इन्हें देख सकती थीं। इन राजाओं को चित्र-कला में बड़ा प्रेम था। ये जब चित्रों को देखते अत्यन्त आदर भाव दर्शाते। ये चित्र वस्त्रों में लपेटकर लकड़ी के सन्दूकों में साथ में पत्ते डालकर बन्द कर देते। भारत में इन चित्रों को शीशे में मढ़वाकर दीवारों पर टाँगने का रिवाज नहीं था। यह रिवाज उन्नीसवीं शताब्दी में इंगलैण्ड से हमारे देश में आया। क्योंकि ये चित्र वस्त्रों में लिपटे तथा सन्दूकों में बन्द रहते थे और रोशनी में दीवारों पर टाँगे नहीं जाते थे इस कारण इनके रंग वैसे ही चमकीले थे मानो अभी अभी चित्रित किये गए हों।

मैं नूरपूर के वर्णन में बता चुका हूँ कि मियाँ रामसिंह अपने चित्रों के जलाए जाने का समाचार सुनकर कितना रोया था यह पुराने राजपूत भी जापानी समूराई की तरह अपने चित्रों से बड़ा प्रेम करते थे। जापानियों के अपनी चित्र कला से प्यार के बारे में जापानी कलाकार और लेखक ओकाकूरा इस घटना का वर्णन करता है। राजा होसोकावा के महल में सेशन कलाकार का बनाया बोधिसत्व का प्रसिद्ध चित्र सँभालकर रखा हुआ था। लकड़ी के महल को आग लगाई। समूराई पहरा दे रहा था वह यह देखकर बड़ा परेशान हुआ। जलते हुए मकान में फुर्ती से घुस गया और चित्र को उतार लिया। अपना कुरता तलवार से चीरकर चित्र के इर्द गिर्द लपेट लिया। जब देखा कि आग में से निकलना असम्भव है तो तलवार से अपना पेट चीरकर उसने कपड़े में लिपटे चित्र को उसमें डाल दिया और मुँह के बल लेट गया। जब आग बुझाई गई तो समूराई का झुलसा हुआ शव मिला। शव टटोला गया और बोधिसत्व का महान चित्र साबुत ही उसके पेट में से मिला। यह कहानी है तो बड़ी करुणाजनक पर बताती है कि कला प्रेमी जापानी अपनी कला की कितनी कद्र करते थे। जहाँ जापानी और हमारे राजपूत राजा कला और कलाकारों का जितना आदर करते थे उसकी तुलना में हमारे आजकल के उच्चवर्ग का क्या हाल है! खास तौर पर हमारे पूरी कचौरी कोरमा कीमा कोफ्ते और पुलाव खाने वाले पंजाबियों का! मैं पकौड़े, आलू-कचालू और गोल गप्पे खाने वालों का जिक्र नहीं कर रहा जिनका जीवन ही दुकानों में बैठे मक्खियाँ मारते गुजर जाता है बल्कि उस ऊँचे वर्ग की बात कर रहा हूँ जिसके पास पैसा है और जो शाम को व्हिस्की की बोतल खोलकर बैठता है तथा रात्रि को क्लबों में रमी और ब्रिज खेलता और विलायती नाच नाचता है। जितना पैसा ये लोग अपनी औरतों की सज धज गहने-लत्तों पर खर्च करते हैं यदि उसका चौथाई हिस्सा भी किताबों और चित्रों पर खर्च करें तो मैं

केवल साहित्य और कला फूलने फलने लगे अपितु इनकी आत्माएँ भी कोमल कल्पनाओं को ग्रहण करने लगे।

जब रात को मैं चारपाई पर लेटा तो नायिका भेद के चित्रों का ही ध्यान आता रहा और काफी देर तक नींद न आई। नींद आई, तो भी इन चित्रों के ही सपने आते रहे।

अगले दिन हम राजा ने जीप द्वारा जयसिंहपुर और लवगाऊ की सैर कराई। उसने बताया कि वहाँ पहाड़ में बहुत बड़ी गुफा है जिसमें मार धाड़ के दिनों में सिख आकर छिपते थे। जब सिखों का पंजाब पर अधिकार हो गया तो उन्होंने पहाड़ों को जीतकर वहाँ के निवासियों को तंग करना शुरू किया। उस समय पहाड़ी लोग इस गुफा में सपरिवार शरण लिया करते थे। अब यह गुफा चमगीदड़ों का अड्डा बनी हुई है।

जयसिंहपुर में महाराज संसारचन्द का जन्म हुआ था, और यह जगह बीजापुर से दिखाई देती है। बीजापुर एक बड़ा-सा बाजार है और यहाँ जानकीनाथ का पत्थर का बना हुआ मन्दिर है। मन्दिर के पास एक बड़ा चौड़ा कुआँ है। इस कुएँ को देखकर डर लगता है। कुएँ के पास एक चौरस मैदान है जिसमें राजा घोड़ों को कवायद करवाते थे। कहते है, राजा कीरतचन्द का घोड़ा बेकाबू हो गया और कुएँ की ओर दौड़ा तथा एक छलाँग में ही कूदकर कुएँ को पार कर गया।

ग्वाल टीला

महाराज ससारचन्द के शानदार चित्र देख चुके तो हमने टीरा सुजानपुर की ओर प्रस्थान किया जो कटोच राजाओं की राजधानी थी। कांगडा कला जिसने हरिपुर गुलेर में जन्म लिया इसी जगह फूली फली और अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंची। सुजानपुर टीरा की कच्ची सडक पालमपुर से तीन मील नीचे पठान कोट मडी की सडक को काटती है। यह सडक भवारना नामक एक कस्बे में से गुज़रती है, जिसके बाजार में बडी रौनक होती है। इस बाजार मे अधिकाश दूकानें सूदों की हैं। इन दूकानों में काँच की चूडियां दर्पण साबुन कघियां तथा आधुनिक जीवन का और छुट-पुट सामान बिकता है। पहाडी लोग इन चीजों को आजकल बहुत पसन्द करने लग गए है। सडक के बाइं ओर भवारना की कूल बहती है। इसके किनारों पर ब्रद मजन के वृक्ष लगे है। इस कूल से पालमपुर के बहुत-बडे क्षेत्र को पानी मिलता है। इसको राजा भीमचन्द के छोटे भाई कृपाल चद ने १६६० में बनवाया था। यह कांगडा घाटी की सबसे पुरानी कूल है। इसमें बदला गाँव के ऊपर से धौलीधार का हिमजल आकर गिरता है। कृषकों के लिए यह कूल वरदान है और इस घाटी के लोग कृपालचद को आज तक बडे प्रेम और श्रद्धा से स्मरण करते हैं।

सडक पर कोई सातवें मील पर जयम्बिका देवी का मन्दिर है जिसके गिर्द पाँच वट-वृक्ष लगे हुए हैं। इससे कोई एक मील नीचे जाकर धौली धार का मनोरम दृश्य दिखाई देता है। सामने चिवलहार की घाटी है जिसमें धान की खेती होती है। खेतों के पीछे धौलीधार के बर्फ से ढके पहाड सूरज की किरणों में दमक-दमक उठते हैं। सडक के किनारे प्राय आम के वृक्षों के झुड तथा किसानों के घरों के पास बॉसों के झुरमुट दिखाई देते हैं।

धान के खेतों में सारस के जोडे बैठे थे। बार बार ये पक्षी सडक पर चल रही हमारी मोटर को जैसे सन्देह की दृष्टि से देख रहे थे। सडक नीचे उतरती हुई माहल खड्ड तक पहुंच जाती है जिसके परली ओर रूड मुड खश्क पहाडियाँ हैं। इनमें सबसे प्रसिद्ध ग्वाल टीला है। कहा जाता है कि यहाँ एक चरवाहा अपनी गऊएँ चरा रहा था कि उधर से लाल दुपट्टे वाली एक सुन्दरी गुज़री। लडकी की

सुदरता पर मोहित होकर चरवाहे ने कहा 'आर जरारी पार जरारी, लाल घुड़े वाली मेरी लाडी।' यह सुनकर कि एक अजनबी उसको अपनी दुलहन की सज्ञा दे रहा है युवती ने उसके प्रेम की परीक्षा लेनी चाही। उसने कहा "ए बहादुर जवान। अगर तू मेरा वर बनाना चाहता है तो इस टीलेसे छलाग लगा कर दिखा।' नए प्यार के नशे म चरवाहा पहाडी की उस चोटी से कूद पडा और खड्ड म गिरते ही प्राण त्याग दिए। लाल दुपट्टे वाली सुदरी प्रेम की इस अपूर्व अभिव्यक्ति से इतनी प्रभावित हुई कि उसने भी उसी टीले पर चढकर नीचे छलाग लगाकर जान द दी।

इन प्रेमियो की वही समाधि बना दी गई। जो लोग ग्वाल टीला के पास से गुजरते हैं, उनको मुहब्बत की दीवानगी की यह कहानी हमेशा याद आती है जिसमे दो अनजान पहली बार एक दूसरे से मिले और पहली मुलाकात म ही एक-दूसरे पर कुर्बान हो गए। पहली नजर म प्यार की यह एक अजीब कहानी है और कागडा घाटी के लोग इसको अभी तक याद करते हैं— कभी सहानुभूति से कभी सराहना करते हुए और कभी उपहास म।

इससे कुछ मील दूर थुरल नाम का एक गाव है। इस गाव के बाजार म भी बडी रौनक थी। थुरल के बाद सडक और भी खराब थी, जिस पर चलते हुए हम आलमपुर पहुच गए। यह जगह राजा आलमचद ने १६५७ म बसाई थी। यहाँ लक्ष्मीनारायण का पत्थर का बना एक मन्दिर है, जिसको राजा अभयचद ने १७४७ म बनवाया था। मन्दिर के सामने गरुड की एक मूर्ति है जिसकी नाक तोते जसी है और जो घुटने टेककर विष्णु भगवान् को प्रणाम कर रही है।

राजा ससारचद के महल के खडहर व्यास के दाएँ किनारे पर हैं। इनके गिर्द अमराइयो के झुरमट और धान के खेत हैं।

व्यास नदी और उसका मोतिया जसा चमचम करता पानी —अब हमारे सामने बहता हुआ नजर आने लगा। व्यास का जल समीपवर्ती कई पहाड़ियो के रग रूप को और भी निखार देता है। पजाब के दरियाओ म, चिनाब और व्यास से कई किस्से जुडे हैं। हीर राझा और सोहनी महिवाल का प्यार भी चिनाब के निकटवर्ती गाँवो म ही परवान चढा।

व्यास नदी का कागडा के राजपूत इतिहास स विशेष सम्बन्ध है। इस नदी या इसकी उपनदियो के किनारे ही कटोच राजाओ ने अपने किले और महल बनवाए जिनके अवशेष अब तक दिखाई देते हैं। ये किले राईन नदी के किनारे जर्मनी के सम्राटो के सुन्दर किलो की याद दिलाते हैं। व्यास के तटवर्ती गाँवो म ही महाराजा ससारचन्द ने अपना जीवन बिताया। इन्ही गाँवो म कागडा के प्रसिद्ध चित्र जिनम प्रेम की विविध भावनाएँ व्यक्त हैं चित्रित किये गए। कई चित्रो म, महल की खिडकियो म से, बाहर बह रही व्यास नदी दिखाई देती है।

सुजानपुर

व्यास की नौका से पार करके, पत्थर की सीढ़ियां चढ़ते हुए हम टीरा सुजानपुर पहुंचे। यह नगर राजा घमंडचंद ने १७६१ ई० में बसाया था और उसने यहां कई सुन्दर भवन बनवाए थे। फिर इसके पोते संसारचंद ने इस नगर को और भी चार चांद लगाए। नगर के बाहर व्यास के किनारे नरवदेश्वर नामक शिव और पार्वती का मंदिर है। इस मन्दिर को राजा संसारचंद की सुकेतवी रानी ने बनवाया था। इस मन्दिर की दीवारों पर चित्र बने हुए हैं जिन्हें संसारचन्द के दरबारी कलाकारों ने चित्रित किया बताते हैं। कई चित्र संसारचंद और उसकी सुकेतवी रानी के हैं। कइयों में रामायण, महाभारत और भागवत के दृश्य प्रस्तुत किये गए हैं। हाथी, बारहसिंघे, घोड़े और अन्य कई प्रकार के पशुओं के चित्र भी इन दीवारों पर अंकित किये गए हैं। छत और दीवारों के चित्रों में, जिन तक मनुष्य का हाथ नहीं पहुँच सकता, उसका स्वाभाविक रंग ज्यों-का त्यों बना हुआ है। निचले चित्र यात्रियों के स्पर्श से मैले हो चुके हैं। यात्री प्रायः चित्रों को उँगलियों से छूकर अनुभव करने का प्रयत्न करते हैं। मन्दिर में पीले लाल पत्थर की बनी दुर्गा की मूर्ति है। इस मूर्ति में दुर्गा महिषासुर का मर्दन कर रही है। जब हमने इस मंदिर में प्रवेश किया तब एक ब्राह्मण पुजारी अपनी सफेद टोपी में मोरपंख सजाकर देवी की पूजा कर रहा था।

सुजानपुर टीरा की एक विशेषता वहाँ का खुला मैदान है। इतना बड़ा समतल मैदान पहाड़ों में नहीं मिलता। यहाँ पुराने राजाओं की फौजें कवायद किया करती थीं। इस मन्दिर के एक कोने में राजा संसारचंद का बनवाया हुआ श्रीकृष्ण भगवान् का मन्दिर है। यह एक बहुत सुन्दर भवन है। इसमें रखी हुई कृष्ण और राधा की मूर्तियाँ, बंसी और वस्त्र धारण किये हुए बहुत सुन्दर लगती हैं। एक पत्थर की शिला पर नरोत्तम के मिसरू और बकरू दो मिस्त्रियों के नाम अंकित हैं जिन्होंने इस मन्दिर को बनाया था।

राजा संसारचन्द का महल नगर के ऊपर की ओर एक पहाड़ी पर है। इस पर पहुंचने के लिए एक टीले पर से चढ़ना पड़ता है जिसका मार्ग बड़ा पथरीला है। महल की ड्योढ़ी के सामने और प्रहरियों के आकार की खिड़कियाँ बनी हुई

हैं। दाइ आर दरबार हाल है जिसके वाईस द्वार है। यहाँ स व्यास न्दी, और सुजानपुर के बाकी इलाके का सुदर दश्य दिखाई देता है। इस महल की छतें ढह चुकी है, और ऐसा लगता है जसे कुछ ही वर्षों म यह भवन बिलकुल नष्ट हो जायगा।

कहा जाता है कि दरबार हाल के हर द्वार पर एक राजा वठता था। इस प्रकार वाईस राजा, ससारचन्द को सम्मानित करन के लिए एकत्रित हुआ करत थ। दरबार हाल के नीचे एक छोटा-सा तालाब है, जा होली के दिना मे रग से भर दिया जाता था और सुजानपुर टीरा के लोग यहा राजा के साथ होली खेला करत थे। बाएँ हाथ पर गौरीशकर का मदिर है जो १८१० म बनाया गया था। यहाँ शिव और पावती की आदमकद अष्टधातु की मूर्तिया हैं, जिनकी ससारचन्द पूजा किया करता था। कहा जाता है कि शिवजी की मूर्ति, राजा ससारचन्द की आकृति पर बनाई गई है। इस मदिर के भित्तिचित्र अति सुन्दर हैं। मगर खेद से कहना पडता है कि यहाँ भी किसी मूख श्रद्धालु ने बहुत से चित्रा पर सफेदी पोत दी है। मदिर के पुजारी ने हम राजा ससारचन्द के चादी के पूजा पात्र भी दिखलाए।

दक्षिण की ओर चामुण्डादवी का मदिर है, जिसके कलश पर त्रिमूर्ति का चिह्न है। यह चित्र कागडा के बहुत-से प्राचीन मदिरा म देखने को मिलता है। सूय के प्रकाश म यह मदिर खूब चमकता है। यहा से पूव मे, मडी की निजन पहाडिया, और दक्षिण मे हमीरपुर के खुश्क इलाके का दृश्य देखा जा सकता है। यह मदिर सबसे पहला भवन है जिसको राजा घमडचन्द ने बनवाया था। इसकी दीवारो पर ऊटो की कतार जसा, ऊची नीची पहाडी धरती का एक दश्य है। शायद ससारचन्द के चित्रकारा को यह दश्य कलाश से मिलता जुलना दिखाई दता हो।

चामुण्डा देवी के मदिर के नीचे रानिया के महल थे जा अब ढह चुके है। खडहरा मे अब घास उगी हुई है।

कटोच राजाओ का इतिहास भी, बाकी राजपूतो की तरह जो अपना वश चद्र और सूय से जा मिलाते हैं पुरानी कथाओ म खोया हुआ है। कचोट राजपूत अपने-आपको सुशमण के वशज समझते है। सुशमण का उल्लेख महाभारत मे आता है। यह वश, शुरू म मुलतान म था। कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद इन्हे मुलतान की भूमि से हाथ धोना पडा और ये लोग जालधर के जिले म आ बसे, जहा रहते हुए इन्होने कागडा का किला बनवाया। कागडा के पश्चिम की ओर का क्षेत्र भी कटोच कहलाता था। कागडा की घाटी मे तब इसके अतिरिक्त दो और जिले थे—चगर और पालम। चगर और पालम के दक्षिण की ओर वह क्षत्र है जो खुश्क पहाडियो की केवल एक लडी-सी है। पालम के पूव की ओर कागडा और बजनाथ

के बीच एक उपजाऊ क्षेत्र है जिसमें चाय-बागान हैं और चाय की खेती होती है।

महाराज संसारचन्द कांगड़ा का सबसे प्रसिद्ध राजा हुआ है। उसके पिता तेगचन्द ने केवल एक वर्ष ही राज्य किया। उसके राज्य में कोई विशेष घटना नहीं हुई पर महाराजा संसारचन्द का दादा घमण्डचन्द एक बड़ा बहादुर राजा था। मुगल साम्राज्य उस समय पतन की ओर जा रहा था। अहमदशाह दुर्रानी ने जिसका पंजाब पर अधिकार था घमण्डचन्द को जालंधर दुआबे का गवर्नर बना दिया। चम्बा के राजा से उसने पाथमपुर का ताल्लुका भी छीन लिया। एक चित्र में जो लंबागाऊँ के राजा ध्रुवदेवचन्द के पास है राजा घमंडचन्द व्यास के किनारे पूजा करता हुआ दर्शाया गया है। एक कोने में गाने-बजाने वाले ढोल और तूतियाँ बजा रहे हैं। राजा के सामने उसके परिवार के लोग तथा उसके दरबारी बैठे हैं जिनकी दाढ़ियाँ मुसलमानी ढंग से कटी हुई हैं। इनमें उसका पोता संसारचन्द भी बैठा है। घमंडचन्द का चेहरा बड़ा निर्दयी बनाया गया है और कलाकारों ने इस राजा के कठोर स्वभाव और दृढ़ता को बड़ी खूबी से व्यक्त किया है। इन सबकी पृष्ठभूमि में व्यास नदी बह रही है। यह चित्र सुजानपुर में मिलता है और कांगड़ा कला का सबसे पुराना नमूना है।

जब संसारचन्द सिंहासन पर बैठा तब वह दस वर्ष का था। पंजाब में उस समय गड़बड़ मची हुई थी। दुर्रानी अपना आतंक कभी भी जमा नहीं सके थे। सिख मिसलें पंजाब के मैदानों में खुदमुख्तियार हो रही थीं और उनकी नजरें अब पहाड़ी रियासतों की ओर लगी हुई थीं। संसारचन्द ने रोहेलों अफगानों और राजपूतों की एक बड़ी सी सेना इकट्ठी की और सब पहाड़ी राजाओं पर अपनी धाक जमा ली। एक चित्र में जो लम्बागाऊँ के राजा के पास है संसारचंद अपने भाइयों के साथ घोड़े पर चढ़ा हुआ दिखाया गया है। फतहसिंह उसके बाईं ओर है और उससे छोटा मानसिंह दाईं ओर एक छोटे से टट्टू पर सवार है। संसारचन्द और उनके भाइयों के पीछे उनके अर्दली हैं जिनके हाथों में मोरछल के चंवर हैं। संसारचन्द जो बहुत जवान और बहादुर आदमी था अपने भाइयों और अर्दलियों के बीच सरलता से पहचाना जा सकता है।

राजा संसारचन्द कांगड़ा घाटी का सबसे शूरवीर राजा माना जाता है। इतिहासकार बार्नज कहता है कि जो नाम राजा संसारचन्द ने कमाया उसके उत्तराधिकारियों में से कोई भी उसकी बराबरी नहीं कर सका। वह बीस साल तक जो मन में आया करता रहा। जब भारत में मुगलों का राज्य समाप्त हो गया था, उसने पहाड़ी प्रदेश में व्यवस्था और शांति को बनाए रखा। उसके राज्य में, सुख-चैन होने के कारण, कई बुद्धिमान वहाँ आ बसे और ललित कलाओं में विशेष वृद्धि हुई। गुलाम मोहीउद्दीन पंजाब के इतिहास में लिखता है कि संसारचन्द एक बड़ा भाग्यशाली राजा था—बड़ा रहमदिल और अपनी प्रजा से प्यार करने वाला।

लोग, नौशेरवा की तरह उसका आदर करते थे। गुणी लोगों की कद्र करने में वह दूसरा अकबर था। हर प्रकार की योग्यता रखने वाले कलाकार और दस्तकार कांगड़ा में जमा हो गए और महाराज उन सबमें खुशियां बांटता रहता। वे लोग, जो खुश रहते थे और दूसरों को खुश रखते थे वे महाराज खास निकटवर्ती गिने जाते थे, और महाराजा उन्हें लाख लाख बख्शिशें देता रहता था। गायकों और भाटों की, उसके दरबार में बहुत बड़ाई होती थी। कई लोग उसे 'हातिम' कहकर याद करते थे, और कई 'रुस्तम' कहकर पुकारते थे।

कांगड़ा घाटी की इस शांति को १८०४ में गोरखों के आक्रमण ने भंग कर दिया। अमरसिंह थापा ने चालीस हज़ार सैनिक लेकर घाटी पर चढ़ाई की। गोरखों ने संसारचन्द को महल मोरिया नामक स्थान पर पराजित किया और राजा संसारचन्द अपने परिवार को लेकर कांगड़ा के किले में जा छिपा। गोरखों के आक्रमण से इतनी गड़बड़ फैली कि सारे क्षेत्र में अनाज का एक दाना भी किसी ने नहीं बोया। नगरों की गलियों में घास उग आई, और नदौण के बाजारों में बाघ आकर दहाड़ने लगे। संसारचन्द ने महाराजा रणजीतसिंह की सहायता मांगी। १८०६ में सिखों की सेनाओं ने गोरखों को मलियामेट कर दिया। इसके बाद कांगड़ा के दुर्ग में संसारचन्द की सेना के साथ, सिख फौज भी रहने लगी और संसारचन्द रणजीतसिंह को खिराज देने लग गया। वर्ष में एक बार वह लाहौर जाकर, महाराजा से मिल आता था। किले पर अधिकार करने पर वहाँ के कई चित्र सरदारों के हाथ लगे। इनमें से कुछ आजकल अलावलपुर के सरदार सन्तप्रकाशसिंह के पास है। इनमें से एक चित्र में राजा संसारचन्द महाराजा रणजीतसिंह के दरबार में बैठा दिखाया गया है। संसारचन्द की दाढ़ी अब सफेद हो गई है और उसके चेहरे पर, वह पुरानी शान नज़र नहीं आती।

एक अंग्रेज सैलानी विलियम क्राफ्ट ने उन्नीसवीं शताब्दी के आरम्भ में कांगड़ा घाटी का मनोरंजक वर्णन लिखा है। विलियम मूर क्राफ्ट पशुओं का चिकित्सक था। इसको ईस्ट इंडिया कम्पनी ने बंगाल में फौजी घोड़ों की देख भाल के लिए नियुक्त किया था। १८२० में वह रणजीतसिंह के दरबार में आया और उसने महाराजा को कुछ अंग्रेजी पिस्तौल भेंट किए। महाराजा को ये हथियार बहुत पसन्द आए और मूरक्राफ्ट को हिमालय की सैर करने की आज्ञा दे दी। मूर क्राफ्ट, टीरा सुजानपुर में कुछ काल तक रहा, और फिर मंडी तथा कुल्लू से होता हुआ लद्दाख की ओर निकल गया। उसने सुजानपुर टीरा में महाराजा संसारचन्द के साथ सन १८२० ई० में काफी समय बिताया। संसारचन्द के छोटे भाई फतहचन्द को उसने एक भयानक रोग से बचाया, और ये दोनों इतने कृतज्ञ हुए कि मूर क्राफ्ट को उन्होंने सरोपा दिया, और उसके नाम एक जागीर लगा दी। यही नहीं, बल्कि फतहचन्द, मूर क्राफ्ट का पगड़ी-बदल भाई बन गया।

मूर क्राफ्ट इस घटना का उल्लेख इस प्रकार करता है "जब यह सब समाप्त हो गया तो उसने मेरे टोप से अपनी पगड़ी बदल ली। उसने अपनी पगड़ी मेरे सिर पर रखी और मेरे टोप को अपने सिर पर ओढ़ लिया। फिर हम दोनों ने हाथ मिलाए। फिर हमने एक दूसरे के सिर पर से कुछ रुपए वार कर नौकरों में बाँट दिए गए। उसने मुझे थोड़ी-सी दूब भी दी और इस प्रकार जाति-पाँति और रंग रूप की परवाह न करते हुए मुझे संसारचन्द के परिवार का ही एक सदस्य बना लिया। इस सबका अर्थ और चाहे कुछ भी न हो पर इतना अवश्य है कि उसने अपनी कृतज्ञता का प्रमाण अनुपम ढंग से दिया।

मूर क्राफ्ट ने संसारचन्द के वंश और उसके दैनिक जीवन के बारे में बहुत कुछ लिखा है "सन्ध्या को बुलाने पर मैं उससे मिलने गया। राजा अपने पुत्र और पोते के साथ एक कुंज बाग में सैर कर रहा था। राजा संसारचन्द लम्बा और हृष्ट-पुष्ट है। उसकी आयु कोई साठ वर्ष के लगभग होगी रंग साँवला है पर नक्श बहुत ही तीखे और कोमल हैं। उसका पुत्र राय अनुरुद्धचन्द बहुत खूबसूरत है। उसके चेहरे का रंग गोरा है और उसका शरीर कुछ अधिक मोटा है। कुछ काल तक संसारचन्द सतलुज से लेकर रावी तक सबसे अधिक शक्तिशाली राजा था। सतलज नदी से लेकर कश्मीर तक के सब राजा इसे खिराज देते थे। इसके धन का कोई ठिकाना नहीं था। कोई पैंतीस लाख रुपया इसको वार्षिक करों से मिलता था। अब यह राजा गरीब हो गया है और डर है कि महाराजा रणजीतसिंह इसके पूरे राज्य को हड़प कर जायगा। इसकी सब मुसीबतें इसकी अपनी खड़ी की हुई हैं। जैसे जैसे इसका ह्रास हो रहा है वैसे-वैसे इसके पड़ौस में महाराजा रणजीतसिंह जोर पकड़ता जा रहा है।

राजा के दैनिक जीवन के बारे में लिखते हुए मूर क्राफ्ट कहता है "राजा संसारचन्द प्रभात का समय पूजा-पाठ में बिताता है। फिर कोई दस से बारह बजे तक अधिकारियों और दरबारियों से मिलता है। मेरे लौटने से कई दिन पहले एक छोटे से बंगले में यह समय काटता रहा जिसे उसने मेरे रहने के लिए खाली किया था। यह बंगला बाग के बाहरी ओर है। दोपहर को राजा दो या तीन घंटे के लिए आराम करता है। इसके उपरान्त वह कुछ देर के लिए शतरंज खेलता है और फिर रात्रि का नाच गाने की महफिल गर्म होती है। गाने वाले प्रायः ब्रज भाषा में श्रीकृष्ण भगवान की स्तुति के गीत गाते हैं। संसारचन्द स्वयं भी चित्रकला का शौकीन है और उसने अपने दरबार में कई कलाकार रखे हुए हैं। उसके पास चित्रों का एक बहुत बड़ा संग्रह है। इनमें कुछ चित्र अर्जुन के भी हैं, और कुछ दूसरे चित्रों में महाभारत के दृश्य प्रस्तुत किए गए हैं। इस संग्रह में पड़ौसी राजाओं और संसारचन्द के पूर्वजों के भी चित्र हैं। इनमें दो चित्र सिकन्दर के भी थे इनमें से एक चित्र राय अनुरुद्धचन्द ने मुझे दिया है। चित्र में सिकन्दर बहुत

सुन्दर नयन-नक्शा वाला सेनापति दिखाया गया है। उसकी लाल, भूरी घुंघराली लटें उसके कंधों को छू रही हैं और सिर पर लोहे का टोप है जिसके गिर्द मोती लगे हुए हैं। सिकन्दर का बाकी पहरावा एशियावासियों-जैसा है। राजा को यह मालूम नहीं कि उसके पास यह चित्र कहां से आया ? ऐसा लगता है कि यह चित्र उनके यहाँ पीढ़ी-दर पीढ़ी चला आ रहा था।'

राजा संसारचंद के महलों के निशान आलमपुर में अब तक मिलते हैं। नदी के किनारे एक चबूतरा, जिस पर बैठकर राग रंग होता था अभी तक मौजूद है। महल लगभग गिर चुके हैं। वह बंगला जिसका ज़िक्र मूरक्राफ्ट ने किया है अभी तक खड़ा है।

यह बात अभी तक समझ में नहीं आई कि महाराजा संसारचन्द के चित्रों का इतना बड़ा संग्रह इतनी देर कहां पड़ा रहा ? महाराजा रणजीतसिंह ने जब कांगड़ा घाटी को जीता तो संसारचंद के दरबार की सारी शान जाती रही। संसारचंद की मृत्यु के बाद उसका चित्र संग्रह, तीन परिवारों में बांट दिया गया। कुछ चित्र संसारचंद के भाई फतहचन्द के हिस्से में आए, जो लम्बा गाऊँ में रहने लग गया था। कुछ चित्र संसारचंद के पुत्र जोधवीर को मिले। जोधवीर, संसारचंद का एक गद्दी सुन्दरी से जन्मा पुत्र था। नदौण वालों ने अपने चित्रों को अमृतसर और बम्बई के कई व्यापारियों के हाथ बेचा, और वहां से ये चित्र हिन्दुस्तान से बाहर के देशों के अजायबघरों में पहुँच गए। डाक्टर कुमार स्वामी ने इनमेंसे कुछ बहुत बढ़िया चित्र अमृतसर के व्यापारी राधाकिशन भरानी से खरीदे, और अब ये चित्र बोस्टन के कला-संग्रह में रखे गए हैं। इनमें से कुछ बनारस के भारतीय कला भवन में, कुछ इलाहाबाद के नगरपालिका अजायबघर में, कुछ लाहौर के अजायबघर में कुछ लन्दन के विक्टोरिया एण्ड एल्बर्ट म्यूज़ियम में और कुछ पेरिस में पहुँच गए हैं।

कुछ चित्र कई व्यक्तियों के घरों में भी हैं। इनमें से बम्बई के ज० डी० मोदी अहमदाबाद के कस्तूर भाई लालभाई, पटना के राधाकृष्ण जालान कलकत्ता के गोपीकृष्ण कनोडिया आदि कुछ प्रसिद्ध नाम हैं। कांगड़ा के एक प्रमुख वकील श्री मार्तचन्द उप्पल ने नदौण के घराने से कुछ चित्र प्राप्त किए। श्री उप्पल के संग्रह में एक ईरानी ढंग का छोटा चित्र है जो अपनी सुन्दरता और कोमलता के लिए अपना उदाहरण स्वयं है। इससे प्रतीत होता है कि संसारचंद के चित्रकार मुगल कलाकारों के काम से परिचित थे।

कांगड़ा चित्रों का सबसे बड़ा संग्रह मियाँ रामसिंह के पास है। मियाँ रामसिंह रणवीरसिंह का पड़पोता है। कांगड़ा की पराजय के बाद संसारचंद अधिकतर आलमपुर की बारहदरी में रहा। कहा जाता है कि पहाड़ी की चोटी पर बने सुजानपुर वाले महल को उसने अपने हाथों से गिरवाया था ताकि रणजीतसिंह

उस पर अधिकार न कर सके। महाराजा रणजीतसिंह ने इस महल की शान की बड़ी प्रशंसा सुन रखी थी। यह बात ज्यादा संभव जंचती है कि संसारचन्द ने टीरा के महल को इसलिए छोड़ा कि वहाँ की चढ़ाई बड़ी दुर्गम थी, और वहाँ आना जाना कठिन था। यही कारण है कि संसारचन्द व्यास के किनारे आलमपुर में एक समतल से स्थान पर रहने लग गया। संसारचन्द का १८२३ में स्वर्गवास हुआ और उसका उत्तराधिकारी अनिरुद्धचन्द बना। महाराजा रणजीतसिंह का प्रधान मंत्री राजा ध्यानसिंह अपने पुत्र हीरासिंह के लिए अनिरुद्धचंद से उसकी बहनों का रिश्ता माँगता था। चाहे जान बचाने के लिए अनिरुद्धचन्द ने हां कर ली पर इस बात में उसने अपनी बड़ी हेठी समझी और नादौण लौटते ही वह अपना तथा बहनों का साज-सामान और कुटुम्ब को लेकर सतलुज पार अंग्रेजों के क्षेत्र में चला गया। अपने साथ वह बहुत सारे चित्र भी ले गया। आखिर वह टिहरीगढ़वाल पहुंचा जहाँ उसने अपनी दोनों बहनों को राजा से ब्याह दिया।

चार साल हरिद्वार में रहने के बाद अनिरुद्धचंद का टिहरी गढ़वाल में स्वर्गवास हुआ। उसके बाद उसके दो पुत्र रणबीरचंद और प्रमोदचन्द रह गए। अंग्रेजों के लुधियाना स्थित एजेंट के कहने सुनने पर महाराजा रणजीतसिंह ने रणबीरचंद और प्रमोदचन्द को पंजाब बुला लिया और महलमोरियाँ में उनको पचास हजार की जागीर बख्श दी। ये दोनों भाई करटिन नामक गाँव में रहने लगे। यहीं उनको १८३८ में एक अंग्रेज यात्री वीन मिला। प्रमोदचंद बिना किसी संतान के मर गया किन्तु रणबीरचंद के एक सिर तोड़ा था। सिर-तोड़ा राजा का वह पुत्र होता है जो दासी के पेट से जन्म ले। इसका नाम प्रधानचंद था। कांगड़ा के सबसे अधिक चित्र प्रधानचंद के पोते रामसिंह के पास हैं। कहा जाता है कि जब बार्नेज को उनकी जागीर का फैसला करना था तो प्रधानचंद ने कहा मुझे संसारचंद का हुक्का, पूजा पात्र और चित्र दे दें फिर चाहे जागीर दूसरे पक्ष को सौंप दी जाय। रामसिंह का पिता भवानीसिंह आलमपुर में संसारचंद के महल में रहने लग गया। पर गरीबी के कारण उसके पुत्र रामसिंह और देवीसिंह वहां से, सुजानपुर चले आए क्योंकि संसारचंद के महल की मरम्मत भी इनसे नहीं करवाई जा सकती थी। रामसिंह बड़ा गम्भीर और समझदार आदमी था। उसको अपने खजाने की कीमत की पूरी जानकारी थी। उसने अपने चित्रों को बहुत संभालकर रखा था। उसके पास कोई ११० चित्र, कुमारसंभव पर आधारित शिव और पार्वती के थे। १७४ चित्र 'दुर्गा सप्तशती' पर आधारित थे तथा २६ चित्र राजा संसारचंद के दरबारी जीवन के बारे में थे। इस संग्रह के बारे में मुझे प्रमुख पंजाबी कलाकार सरदार सोभासिंह ने बताया।

रामसिंह के पास रामपुर के नवाब कल्बअली खां का एक चित्र भी है

जिसका दा । गुलाम मुहम्मद खाँ महाराजा ससारचद के पास पनाह लेने आया था। नवाब कलबअली खाँ ने मियाँ प्रधानचन्द को २०० रुपये मासिक की एक जागीर बख्शी थी, यह जागीर अभी हाल ही में टूटी है। जागीर के टूटने के बाद मियाँ रामसिंह अपने चित्रों के सग्रह को बेचने पर मजबूर हो गया था। शिव पार्वती और दुर्गा के चित्र, पजाब सरकार ने चडीगढ के कला केन्द्र के लिए खरीद लिए हैं। इस प्रकार कागडा-कला का सबसे बडा सग्रह पजाब में हो रहा ताकि पजाबी इससे उत्साहित हो और कागडा कला का जी भरकर आनन्द ले सकें।

हम सुजानपुर से वापस आ रहे थे कि हमने देखा कि सारी सडक ही बारातों से भरी हुई है। रास्ते में हमें कोई पन्द्रह बारातें मिली। डोलियों का यहाँ अब भी रिवाज है, और नथों वाली बहुएँ बडे ध्यान से हमारी ओर देख रही थीं, विशेष कर आर्चर साहब की ओर कि यह विदेशी कौन है? रग बिरगे कपडे पहने अपने सुदर मुखडों को नथों से सजाए स्त्रियों की टोलियों से सारी सडक भरी पडी थी। ऐसे लगता था, जैसे कागडा घाटी की युवतियों की सुन्दरता इकट्ठी होकर बाढ की तरह हमारे सामने आ गई हो। कई सुन्दर चेहरे, तीखे नाक गोल ठोडियाँ और शर्मीली आखें तथा सरू जैसे कद देखकर कागडा-कला की सुदर नायिकाएँ याद आ जाती हैं। इन-जैसी सुन्दरियों को देखकर ही कागडा के चित्रकारों ने नारी-सौन्दर्य के मन को आकर्षित करने वाले चित्र बनाए होंगे। कागडा की बाँकी नारियों ने न केवल घाटी को ही सजाया है अपितु कला को भी वह देन दी है जो रहती दुनिया तक अमर रहेगी।

गुलेर चित्र-कला की खोज

अभी पौ फट ही रही थी कि पठानकोट के स्टेशन से हम छोटी सी रेल गाड़ी में सवार हो गए। गाड़ी ने धीरे धीरे मैदानों को छोड़कर कांगड़ा की सुन्दर घाटी में प्रवेश किया। वैसे सड़क का सफर सुहाना है किन्तु इस मार्ग का कुछ और ही मजा है। दोनों ओर आनन्द लेते चलिए। नालों और नदी-नाली पहाड़ियों और कगारों पर गए हैं। किसी किसी भाग में गहरे और ढलान के बाग हैं और अधिकांश में मक्की और ज्वार की फसल लगी है या (धान) चढ़ रहे हैं। दोनों में मचानों पर लड़के और लड़कियाँ गोफिया से कभी ढोर तोते उड़ा रहे थे जो मक्की की फसल को बड़ी हानि पहुँचाते हैं। यही मार्ग जिस पर अब रेल की पटरी है किसी ज़माने में एक कच्चा रास्ता थी और मुगल तथा सिक्ख सेनाओं ने इसी रास्ते से इस क्षेत्र पर आक्रमण किया था।

रेल के डिब्बे की सीखचों वाली खिड़कियों में से कभी-कभार चोटी की बर्फ का भी दृश्य दिख जाता था। यदि इस प्रकार के सुन्दर दृश्य यूरोप के किसी देश में होते तो वहाँ का रेल विभाग अवश्य ही शीशे-यह कांच के डिब्बे बनाता जिससे पहाड़ स्पष्ट दिखाई देते। यहाँ न कोई चोर न डाकू फिर भी मालूम नहीं किस अफसर ने अंधाधुंध सलाखों की नकल करते हुए सब डिब्बों की खिड़कियों में सीखचे क्या गाड़ दिए हैं।

रेल की पटरी धीरे धीरे ऊँची होती जा रही थी और गाड़ी साँस खींचती हाँफती हुई, गुलेर के छोटे से स्टेशन पर पहुँची। एक बार तो मन में अचरज हुआ कि क्या यही गुलेर का प्रसिद्ध स्थान है जहाँ कांगड़ा कला का जन्म हुआ? गाड़ी से उतरकर देखा तो हरिपुर का किला अपनी पूरी आन बान और शान से पहाड़ों की चोटी पर बान गंगा नदी के किनारे, पूरे क्षेत्र पर छाया हुआ प्रतीत होता था। किले को देखते ही यह अनुभव होता है कि पिछले जमाने में यह स्थान *अवश्य ही अत्यन्त प्रभावशाली रहा होगा।*

बान गंगा एक नाले की तरह चौड़ी है। बरसाती नदी है और इसमें पानी नहीं था। बड़े बड़े पत्थरों को लाँघते हुए हम हरिपुर के कस्बे में पहुँच गए। गुलेर का राजा बलदेवसिंह जरी का चोगा, सफेद चूड़ीदार पाजामा और सिर पर

बनारसी पगडी बाधे हमारी प्रतीक्षा कर रहा था।

उसके पीछे दस बारह नौकर खडे थे। विश्वम्भरदास ने मेरा तथा आचर साहब का परिचय राजा से करवाया। हमने उससे मिलकर प्रसन्नता प्रकट की। आचर ने उसकी तरफ देखकर कहा कि उसकी शक्ल राजा गोवधनचन्द से मिलती है। यह बात बिलकुल ठीक थी। राजा गोवधनचन्द उसका पूर्वज था यह सुनकर राजा बडा खुश हुआ।

अब हम गोल पथरों की पगडडी पर चलते हुए कस्बे की ओर बढ रहे थे। चारों ओर पीपल और वट वृक्षों ने खूब छाया की हुई थी, और हर पेड के इर्द गिर्द पथरों का गोल चबूतरा बना हुआ था। मकानों की दीवारें भी गोल सफेद और सलेटी रंग के पत्थरों की बनी हुई थीं। हरिपुर एक बडा खामोश-सा कस्बा लगता है, जैसे रिप वन विंकल का स्वप्निल वातावरण लिये हुए हो। एक बडा सा तालाब आता है और इसके साथ बाजार की दुकानें। मार्ग में कई पुराने मंदिर भी आए। बाजार में से गुजरकर हम सब चौडे मैदान में पहुंच गए, जहां राजा लोग पोलो खेला करते थे। इस मैदान के एक कोने की ओर डाक बंगला है और तीन कोनों में प्राचीन मन्दिर हैं।

अब हम किले के पास पहुंच गए। इस किले की दीवारों में बडी बडी दरारें पडी हुई थीं जिनमें पीपल के पौधे उग आए थे। यह भी पता चला कि १९०५ ई० के भूकम्प ने किले को बडी क्षति पहुँचाई। किला चाहे काफी ढह चुका है पर अब तक भी ऐसा लग रहा था मानो हरिपुर के कस्बे पर राज कर रहा हो। हमने घोडे खडे करके यहां से कस्बे का दृश्य देखा। सामने पहाड की चोटी पर दुर्गा का मन्दिर है। मन्दिर के बाहर एक शेर की मूर्ति है। मंदिर तक बडी कठिन चढाई है और जावट वाले व्यक्ति ही मंदिर तक पहुँचते हैं। प्रायः नव विवाहित जोडे या वे लोग जिन्होंने कोई मन्नत मानी हो अपनी आकांक्षाओं की पूर्ति होने पर यहाँ चढावा चढाने आते हैं।

किले के बाहर एक द्वार है जहाँ से बानगंगा का दृश्य बहुत अच्छा दिखाई देता है। इस किले के ध्वस्त महलों को देखकर हम लोग उन मकानों में पहुंचे जहाँ आजकल राजा बलदेवसिंह रहता है। राजा ने हमारे ठहरने का एक खुले से कमरे में प्रबन्ध किया था। फर्श पर कालीन बिछा हुआ था और ऊपर गाव तकिए और सफेद चाँदनी (चादरें)। हम जूते उतारकर कालीन पर बैठ गए और विश्वम्भरदास से कहा कि राजा से चित्रों का संग्रह मँगवाएं। राजा ने कहला भेजा कि खाना खाइये फिर चित्र दिखाए जाएंगे। खाना खाकर हमने कुछ देर आराम किया पर मन में पुराने चित्रों को देखने की बडी उत्कंठा थी। तीन बजे के लगभग राजा ने चार बडे से लाल बस्ते भेजे। राजा कला का प्रेमी है, और चित्रों के इतिहास के बारे में अच्छी जानकारी रखता है। हर चित्र के पीछे उसने उर्दू में संवत् और

चित्र के विषय का उल्लेख किया है। बहुत सारे चित्र राजाओं और रानियों के ही थे। इनमें राजा गोवर्धनचन्द के सबसे अधिक थे। इससे प्रतीत होता था कि इस कला को बढ़ाने प्रोत्साहित करने में इस राजा का काफी हाथ था। इस प्रोत्साहन से ही कलाकारों को इतना काम करने का प्रेरणा मिली। कुछ चित्र राधाकृष्ण की रासलीलाओं के भी थे। हम ये चित्र देख ही रहे थे कि विश्वम्भर दास टिक्का साहब का संदेश लेकर आया कि कुछ चित्र ऐसे भी हैं जिनमें मनुष्य के उन्मुक्त और निर्बाध प्रेम की झांकियां प्रदर्शित की गई हैं और ये भी हमें अवश्य देखने चाहिए। टिक्का साहब स्वयं तो मदिरा के नशे में औंधे पड़े एक अलग कमरे में बन्द थे और राजा नहीं चाहता था कि हम उसे इस दशा में मिलें। कुछ देर बाद राजा ने एक और बस्ता भेज दिया जिसमें वे चित्र थे जिनके बारे में कुंवर साहब ने सूचना भेजी थी। जितने चित्र कला की दृष्टि से सुन्दर थे उतने चुनकर मैंने आचर का पकड़ाए और उन सब चित्रों के दाम का हिसाब जोड़कर हमने राजा को बताया। राजा ने ये दाम स्वीकार कर लिए और हमने वे चित्र पंजाब म्यूजियम के लिए खरीद लिए।

इन चित्रों को देखने से पता चलता है कि वैष्णव धर्म के अतिरिक्त पंजाब की प्रेम कथाओं ने भी चित्रकारों को बड़ा प्रभावित किया है। इनमें हीर रांझा मिर्ज़ा साहिबां और सोहनी महिवाल सबके चित्र मिलते हैं। मिर्ज़ा हाथ में नेजा थामे घोड़े पर सवार जा रहा है और साहिबां सखियों में बैठी चरखा कात रही है। मिर्ज़ा को देखकर पूनी सखियों के हाथ में ही रह जाती है और वह मिर्ज़ा को देखकर इस तरह मुग्धा हो जाती है जैसे सपेरा सांप को वश में कर लेता है। सोहनी चनाब में तैरती दिखाई गई है और दरिया के दूसरे किनारे पर महिवाल भैंसें चरा रहा है और अलगोजा बजाकर अपना जी खुश कर रहा है। एक बड़े सुन्दर किन्तु करुणाजनक चित्र में एक प्रेम-कथा अंकित है। पार्श्व में बर्फ से ढके पहाड़ हैं और सामने एक राजकुमारी चादर के पर्दे की ओट में नहा रही है। चादर बारीक है और राजकुमारी का सुन्दर शरीर उसमें से दीख रहा है। एक कोने में डोमों का लड़का राजकुमारी की ओर टकटकी लगाए देख रहा है। कहा जाता है कि डोम लड़के और राजकुमारी में प्रेम हो गया और वह राजकुमारी को भगाकर ले गया। उस डोम पर फिर क्या बीती यह सब चित्र के दूसरी ओर दिखाया गया है। राजा के सिपाहियों ने प्रेमियों का पीछा किया और तीरों से दोनों का अन्त कर दिया। राजा एक चबूतरे पर बैठा यह करुणाजनक दृश्य देख रहा है और अपनी बेटी की मृत्यु पर उसके मन में शोक भी है, लेकिन उसका करतूत पर क्रोध भी है। क्षोभ और क्रोध के मिले-जुले भावों को चित्रकार ने बड़ी निपुणता से चित्रित किया है।

हमने राजा से पूछा कि क्या इससे पहले भी किसी ने उनका चित्र-संग्रह देखा

है ? उसने बताया १९०९ ई० में मिस्टर फ्रेंच यहाँ आया था और वह पहला कलापारखी था जिसने कला प्रेमियों को इन गुलेर चित्रों के बारे में अपनी पुस्तक हिमालयन आर्ट द्वारा जानकारी दी । उसके बाद पंजाब का एक फाइनेंशल कमिश्नर लतीफी यहाँ आया और राजा ने कुछ चित्र उसको भेंट किये । फिर तो ये चित्र लकड़ी के बड़े सन्दूकों में बंद कर दिए गए और किसी आदमी को नहीं दिखाए गए । यही कारण था कि ये अभी तक गुलेर में मौजूद थे ।

चित्रों को देखकर हम ऊपर की बस्ती देखने चले गए । यहाँ घरों में केले उगाने का आम रिवाज है और गुलेर के अधिकतर चित्रों में केले के पेड़ प्रायः चित्रित होते हैं । ऊपर जाकर एक बड़ा तालाब है जिसके किनारों पर मन्दिर और चारों ओर बड़ और पीपल हैं । यहाँ से घाटी का अच्छा दृश्य दिखाई देता है । पहाड़ी की गोद में सलेटी रंग के मकान और नदी के किनारे पनचक्कियाँ हैं ।

सूरज डूब चुका था और पहाड़ अंधकार में छिप गए थे । रात को विश्राम के लिए हम डाक-बँगले में पहुँच गए । हमारे हरिपुर आने का समाचार कस्बे में पहुँच चुका था और बहुत-से आदमी और स्कूल के लड़के बरामदे में बैठे हमारी प्रतीक्षा कर रहे थे । उन्होंने हमें कहा कि किसी जमाने में हरिपुर के कस्बे को पहाड़ का काशी माना जाता था—और यहाँ विद्वान पंडित और कलाकार राजाओं की सरपरस्ती में रहते थे । अब यह कस्बा दिन प्रतिदिन उजड़ रहा है । कला के बारे में तो इन्हें कोई दिलचस्पी नहीं थी पर अपने कस्बे की माँगें अवश्य मेरे सामने रखना चाहते थे । उनकी माँग यह थी कि यहाँ एक कालिज खोला जाय और बाण गंगा पर पुल बनाया जाय, क्योंकि बरसात में दूसरी ओर जाने में बड़ी कठिनाई होती है । इतनी छोटी जगह में कालिज तो असम्भव था पर इतना ध्यान मुझे अवश्य आया कि एक अच्छा पुस्तकालय और एक छोटी सी आर्ट गैलरी यहाँ होनी चाहिए । पुस्तकालय में कांगड़ा से सम्बंधित जितनी पुस्तकें निकल चुकी हैं रखी जानी चाहिएँ । और आर्ट गैलरी में जो चित्र किताबों में छप चुके हैं फ्रेम कराकर लगाने चाहिएँ । इस प्रकार यहाँ की जनता को भी पता चले कि कांगड़ा-कला है क्या !

इनकी माँगें सुन चुके तो हमने भी उनसे पहाड़ी गीत सुनाने का अनुरोध किया । एक लड़के ने गीत गाया जिसमें एक माँ अपने मुन्ने को जागने के लिए कहती है कि सूरज निकल आया है और वह जी लगाकर पढ़े । पढ़कर वह मंत्री बने या विमानचालक । स्वतन्त्रता ने लोगों के मन में क्या क्या उमंगें और आकांक्षाएँ सँजोई हैं । आजादी से पहले तो यहाँ लोग फौज में भरती होने के अतिरिक्त और कुछ सोच भी नहीं सकते थे । अनपढ़ लड़के बरतन माँजने या रोटियाँ पकाने के धंधे को छोड़कर और कुछ कर भी नहीं सकते थे । स्वतन्त्रता ने शिक्षा और ज्ञान फैलाया तथा बहुत-से नये काम धंधों का मार्ग

प्रारम्भ किया। इसके कारण अब कांगड़ा की जनता भी विश्राम-योजनाओं का पूरा लाभ उठा रही है।

हरिपुरवासियों से अवकाश पाकर हमने खाना खाया और सोने की तयारी की। गर्म पानी की बाल्टी में पैर डुबाकर दिन भर की थकावट दूर हो गई और मैं पाँव और टाँगें पोंछकर रजाई ओढ़कर लेट गया। कितनी गर्मी और आराम पहुँचा। रजाई! कम्बलों के बीच सोने वाले भला क्या जानें रजाई का मज़ा! मुझे तो कम्बल बहुत चुभते हैं और जो गर्मी और आराम रजाई में मिलता है कम्बलों में कदापि नहीं चाहे वे किसी भी देश के बने हुए हों। लंदन की सर्दी में मुझे रजाई बहुत याद आई।

मुझे अंग्रेजों पर भी बड़ी दया आती थी। मैं सोचता था कि ये कितने मूर्ख हैं जो कम्बलों के साथ चादर जोड़कर और उनको गद्दे के नीचे दबाकर एक लिफाफे में घुसकर सो जाते हैं। मुझे तो पूरा विश्वास है कि हम पंजाबी ग्रामीणों का इन लोगों से खाना और सोना तो अवश्य ही अच्छा है। इन विचारों में खोया तथा चित्रों के बारे में सोचता विशेषकर उस चित्र के— डाम और राजकुमारी की कल्पना करता हुआ मैं गहरी नींद में सो गया।

गुलेर चित्र-कला इतिहास

इन चित्रो को समझने के लिए गुलेर के इतिहास को जानना आवश्यक है। राजा हरिचंद ने १४०५ ई० म गुलेर की राजधानी को स्थापित किया। राजा हरिचंद कांगडा का राजा था जहा से वह बडी विचित्र-परिस्थितियो मे चल दिया। कहा जाता है कि राजा अपने साथियो के साथ शिकार खेल रहा था। एक जंगली सुअर का पीछा करते हुए वह बहुत दूर निकल गया। अंधेरा होने पर वह रास्ता भूल गया और अपने घोडे सहित एक अंधे कुए म जा गिरा। कुछ दिन बाद खच्चरो का काफिला लिये एक व्यापारी उधर से गुजरा, उसने उसे कुए से बाहर निकाला। राजा के इस प्रकार अलोप हो जाने पर राजा के छोटे भाई ने सिंहासन सँभाल लिया और राजा की रानिया सती हो गइ।

जब हरिचन्द को यह सब मालूम हुआ तो उसने लौटकर कांगडा जाना उचित नही समझा। वह सीधा हरिपुर आ गया और नई राजधानी का निर्माण किया। कहा जाता है कि जहाँ किला है वहाँ एक ग्वाला गउएँ चराता था। एक बार ग्वाले ने देखा कि एक चश्मे पर एक बाघ और बकरी एक साथ पानी पी रहे हैं। हरिचन्द वहा पहुँचा तो ग्वाले ने वह स्थान उसे दिखाया। जब कोई बडा भवन या विशेषकर किला बनाया जाता तो बलि अवश्य दी जाती। कहा जाता है कि वहा ग्वाले की बलि दी गई और नींव म उसका सिर दबाया गया। इसी कारण गुलेर का पहला नाम ग्वालेर पडा।

हरिचंद के बाद उसके कई उत्तराधिकारी हुए जिनके राज्य मे कोई विशेष घटना नही घटी। सत्रहवी शताब्दी के आरम्भ म हम फिर गुलेर तथा उसके राजाओ के बारे म सुनना शुरू करते हैं। रूपचंद से विक्रमसिंह तक गुलेर राजाओ का मुगल सम्राटो से बहुत अच्छा सम्बन्ध रहा। रूपचन्द (१६१० ई०) ने सम्राट जहाँगीर की मुगल सेना की कांगडा के दुर्ग पर आक्रमण करने पर सहायता की। मुगल सम्राट ने एक हाथी तथा एक घोडा उपहारस्वरूप उसे भेंट किया। इसके पश्चात इस राजा ने जहाँगीर की नौकरी कर ली और उसने उसे दक्षिण की ओर एक अभियान म भेज दिया। जहाँगीर के बाद शाहजहाँ ने रूपचंद को १६३४ ई० म गढ़वाल पर चढाई करने के लिए भेजा और इसी हमले मे उसकी मृत्यु हो

गई। रूपचन्द के पुत्र मानसिंह (१६३५ ई०) ने भी शाहजहाँ की नौकरी की और उत्तर-पूर्वी क्षेत्र के अभियानों में लड़ता रहा। फिर वह औरंगजेब की सेना में भी रहा और १६४७ ई० में कंधार के आक्रमण में उसने भाग लिया। इसका पुत्र विक्रमसिंह बड़ा हृष्ट पुष्ट था। कहा जाता है कि वह नारियल को उँगलियों से दबाकर तोड़ देता था।

दिलीपसिंह के काल में हिंदू कलाकार जो पहले मुगल दरबार में काम करते थे नादिरशाह के हमले के कारण इधर उधर बिखर गए और उनमें से कई पहाड़ी रियासतों में भी आ गए। मुगल साम्राज्य जर्जर हो चुका था। नादिरशाह ने हमले ने १७३२ में राजधानी दिल्ली में बड़ी अशांति फैला दी। हजारों नागरिकों की हत्या कर दी गई। बहुत से राजस्थान और पंजाब के पहाड़ों तथा दूसरी ऐसी ही जगहों पर भाग गए। इनमें कुछ हिंदू कलाकार भी थे। इन प्राचीन कलाकारों में से पंडित सेऊ और उसके पुत्र ननसुख तथा माणिक के चित्र मिलते हैं। यह अनुमान लगाया जाता है कि कांगड़ा-कला का शुभारम्भ इन्हीं कलाकारों ने हरिपुर गुलेर में किया। ननसुख १७८८ ई० में जम्मू चला गया। वहाँ उसने राजा बलवंतदेव की नौकरी की। एक चित्र में राजा विक्रमसिंह मुगल काल के अनुरूप हाथी पर सवार हैं। यह चित्र आजकल पंजाब म्यूज़ियम चंडीगढ़ में है। एक और चित्र है जिसमें राजा दिलीपसिंह पोलो खेल रहा है। राजा और उसके साथी मुगलों के पहरावे में दिखाए गए हैं। उन्होंने चोगे पहने हुए हैं और उनकी पगड़ियाँ सीधी हैं। इस चित्र में राजा अकबर जैसा लगता है।

घुड़सवारों तथा घोड़ों के चित्र बड़ी कुशलता से बनाए गए हैं। ये चित्र पोलो के खेल का एक उत्कृष्ट नमूना हैं। खिलाड़ियों के चेहरे पर आगे बढ़कर गेंद को पीटने की कोशिश स्पष्ट झलकती है तथा घोड़ों के पुट्ठों से यही प्रतीत होता है जैसे उनमें बड़ी फुर्ती और शक्ति है। इस चित्र में वे सब विशेष गुण हैं जो मुगल काल में पाए जाते हैं।

एक और चित्र राजा गोवर्धनचन्द का है जिसमें राजा मुगलिया अन्दाज में हाथी पर सवार है। हाथी को बहुत बढ़िया ढंग से सजाया गया है और महावत की दाढ़ी मुगलिया ढंग में कटी हुई है। यह चित्र विषय वस्तु तथा चित्रण दोनों दृष्टियों से मुगल काल का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

गोवर्धनचन्द (१७४० १७७३ ई०) के जमाने में गुलेर में जो चित्र बनाए गए उनमें कांगड़ा-कला का विकास स्पष्ट दृष्टिगोचर होता है। गुलेर का मैदानी क्षेत्र के निकट होना तथा यहाँ के राजाओं का मुगलों से सम्बन्ध इस काम में बहुत सहायक हुआ। इसलिए कांगड़ा-कला का जन्म स्थान गुलेर ही है और कांगड़ा के सबसे पुराने चित्र गुलेर में ही चित्रित किए गए। मि० विलियम आर्चर

न ठीक कहा है 'गुलेर पहाडी-कला के अडतीस केन्द्रो मे केवल एक नही बल्कि पजाब की पहाडी-कला की एक विशेष शैली का जन्म स्थान भी है।' गुलेर ने स्थानीय कला मे कोमलता पैदा की उसे समथ बनाया और १७६० ई० म जब यही कला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँची तो कागडा-कला के नाम से प्रसिद्ध हो गई।

अब हम उन चित्रो का उल्लेख करेंगे जिनको कागडा कला के चित्र कहा जाता है। एक तस्वीर राजा गवोधनचन्द की है। राजा केसरी रग के कपडे पहने हुए अपने प्रसिद्ध घोडे पर बैठा हुआ है। चित्र की पष्ठभूमि लाल रग की है। गोवधनचन्द के इस घोडे को जालन्धर केनवाब अदीना वेग ने बहुत पसन्द किया। गोवधनचन्द ने घोडा देने से इनकार कर दिया। दोनो मे युद्ध हुआ जिसमे अदीना वेग की हार हुई और यह घोडा गोवधनचन्द के पास ही रहा। उस जमाने म घोडो की बडी कद्र होती थी। रणजीतसिंह अपनी घोडा लली को जान से भी प्यारा समझता था। उसने तीस लाख के हीरे-जवाहरात से उसकी काठी को सुसज्जित किया था।

राजा गोवधनचन्द का एक और सुन्दर चित्र है जिसमे राजा सगीत की महफिल मे बैठा है। इस चित्र की विशेषता है रगो का सुन्दर चयन और चित्रण की कोमलता। इसकी चित्रण शैली म सादगी है। राजा बाण गगा के किनारे एक चबूतरे पर बैठा हुक्का पी रहा है। दरबारियो म से एक तिब्बत के भिक्षुओ-जसा लगता है। राजा बलदेवसिंह के कथनानुसार यह दरबारी पिंडारी का महन्त था। राजा ने केसरी रग का चोगा पहना हुआ है और दरबारियो के चोगे अलग अलग रगो के हैं। शहनाई और नगाडे बजाने वालो के पहरावे भी रगीन हैं। नगाडो पर भी रग बिरगे गिलाफ चढे हुए है। चबूतरे के नीचे हरे वक्षो का झुरमुट इस चित्र को एक अनूठी सुन्दरता प्रदान कर रहा है। राजा सगीत सुन रहा है और ऐसा प्रतीत होता है मानो हवा मे एक मादकता सी छा रही हो। यह चित्र मुगलकालीन चित्रो के सर्वोत्तम नमूने से टक्कर ले सकता है। इसमे एक कोमलता है, एक आध्यात्मिक रग है—जो मुगल-कला म कही दिखाई नही देता। इस जमाने के कागडा चित्रो मे रगो का चुनाव बहुत आकषक है। कागडा-कला के हाथो म जसे उषा की स्वर्गीय लालिमा और इन्द्रधनुष के आकाशीय रग छलक-छलक पड रहे हो।

एक और चित्र म राजा गोवधनचन्द जरा बडी उम्र का है। उसके पास उसकी रानी और बच्चे है। राजा अपने बच्चे कँवर प्रकाशचन्द को मिठाई देता हुआ दिखाया गया है। दरी पर दो सिरतोडे बठे हैं। सिरतोडा वह बच्चा होता है जो किसी दासी की कोख मे जन्म लेता है। राजा गोवधनचन्द की रानी बसोहली रियासत की थी यह बात कागडा-कला के विकास की दृष्टि से बहुत महत्त्वपूर्ण है क्योंकि बसोहली १६७८ ई० से राजपूत-कला का केन्द्र था। वहाँ यह कला

राजा कृपालचन्द के समय (१६७८ ई०) में आरम्भ हुई और मन्नीपाल (१७२५ ई०) के काल में अपने चरम शिखर पर पहुंची। गुलेर के गुरु नूरू के चित्रों में बसोहली-कला का रंग-ढंग प्रधान है।

कांगड़ा-कला तथा मुगल कला की पहचान क्या है? रेखाओं की बारीकी तो दोनों में एक जैसी है किन्तु कांगड़ा-कला में पहाड़, नदियाँ और जंगल दिखाये गए हैं और मुगल-कला में उत्तरी भारत के समतल मैदान ही दीखते हैं। जो प्रकृति प्रेम कांगड़ा-कला में दिखाई देता है वह मुगल-कला में नहीं। कांगड़ा-कला का मुख्य लक्षण यह है कि यह हिन्दू कला है। इसमें वैष्णव धर्म और श्रीकृष्ण की रास लीलाओं की झलक पाई जाती है। श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम और भक्ति भाव ने कांगड़ा-कला को बहुत आकर्षक बना दिया है। मुगल कला में मुगल सम्राट और उनके दरबारी ही नजर आते हैं। दरबारी कला कभी भी ऊंची कला नहीं हो सकती क्योंकि इसमें खुशामद की गन्ध आती है। कलाकार तभी ऊँचे दर्जे की कला को जन्म दे सकता है जब उसका मन स्वतन्त्र हो और सिवाय अपना जी खुश करने के दिल में दूसरा कोई मतलब न हो। गुलेर की चित्र-कला में यह सुन्दरता स्पष्ट दिखाई देती है और इन चित्रों की रेखाएं ऐसे बनती हैं मानो संगीत की सृष्टि कर रही हो।

प्रकाशचन्द १७७३ ई० में गुलेर का राजा बना। एक चित्र में जो कदाचित् गोवर्धनचन्द के राज से सम्बन्ध रखता है प्रकाशचन्द अपने भाई रूपचन्द के साथ दिखाया गया है। प्रकाशचन्द के राज्य में गुलेर की कला बहुत विकसित हुई और इस काल के चित्रों का स्तर बहुत ऊंचा है। कई चित्रों में राजा के घरेलू जीवन को दर्शाया गया है। एक चित्र राजा प्रकाशचन्द की चम्बा की रानी श्रीमती अनन्तदेवी का है। रानी अपने पुत्र भूपसिंह को खिलौना दे रही है। सरोवर के किनारे दो मीरजादियाँ (मिरासिनें) सितार और ढोलक बजा रही हैं। फव्वारे से एक बन्दर पानी पीता हुआ दिखाया गया है। सफेद और पीले फूल तथा स्त्रियों के रंगीन परिधान इस चित्र को एक विशिष्ट सौन्दर्य प्रदान कर रहे हैं। राजा प्रकाशचन्द बड़ा फिजूलखर्च था। कहा जाता है कि उसका मुख्य मनोरंजन कपड़ा के टुकड़े फाड़ कर प्रजा में बाँटना था। उसको कपड़ा के चिर से फटने की आवाज में बड़ा मजा आता था। उसका व्यय आय से सदा अधिक होता और उसे प्रायः साहूकारों से उधार लेना पड़ता था। हरिपुर का अवतार नामक ब्राह्मण उसका एक प्रमुख ऋणदाता था। एक चित्र में राजा प्रकाशचन्द अवतार साहूकार के घर बैठा दिखाया गया है। सफेद दाढ़ी वाला राजा हुक्का पी रहा है और अवतार का बेटा राजा प्रकाशचन्द के पुत्र भूपसिंह को लड्डू दे रहा है। कहा जाता है कि राजा तथा साहूकार का हिसाब करते हुए झगड़ा हो गया। राजा ने निर्णय किया कि उस तथा साहूकार को पीपल के तने से बाँधा

जाय। दोनो पीपल के तन से बाँधे गए। रात के समय पीपल की एक भारी शाखा टूटकर साहूकार के सिर पर गिरी और वह वहीं ढेर हो गया। इससे यह सिद्ध हो गया कि राजा सच्चा था और साहूकार बेईमान।

राजा प्रकाशचन्द का मंत्री ध्यानसिंह विवेक और कार्यकुशलता के लिए बडा प्रसिद्ध था। राज पाट का काम उसने सभाला हुआ था। प्रकाशचन्द के राज्य के अन्तिम काल मे बहुत से चित्रो मे ध्यानसिंह ही मंत्री दिखाया गया है। एक चित्र मे ध्यानसिंह धनुष उठाये भूपसिंह के साथ जा रहा है। भूपसिंह ध्यान सिंह के साथ अपने पिता की रियासत के दौरे पर निकला है। जुलूस के आगे आगे चोबदार झडे उठाये हुए चल रहे है। राजा एक ग्राम के निकट पहुँचा है और नगारची नगाडे पीट पीटकर इस सूचना का एलान कर रहे हैं। भूपसिंह के पीछे एक कर्मचारी मोर-पखो का चँवर लिये खडा है। उसके पीछे भी कई कर्मचारी हैं, जिनके हाथो पर बाज हैं।

एक और चित्र मे मंत्री ध्यानसिंह भूपसिंह के साथ शिकार खेलता हुआ दिखाया गया है। ध्यानसिंह ने एक मृग के पीछे बाण छोडा है और भूपसिंह का साला नौरग पटियाल एक जगली सुअर का अपने खड्ग से वध कर रहा है। पृष्ठ भूमि मे कई नौकर जगली सुअरो को मारकर अपने कधो पर डाले फिर रहे है। यह चित्र बडा मनोरजक है।

राजा प्रकाशचन्द से कोई बदमज़गी हो जाने के कारण मंत्री ध्यानसिंह ने १७८५ मे गुलेर छोड दिया। कोटला के दुर्ग पर इस मंत्री ने अधिकार कर लिया और खुदमुख्यार होकर राज्य करने लगा। ध्यानसिंह इतना शक्तिशाली हो गया कि ससारचन्द अपने चरमोत्कर्ष मे भी कोटला के किले को जीत न सका तथा कई वर्षों तक ध्यानसिंह इस पर अधिकार किये रहा। अन्त मे कोटला का किला सरदार देवासिंह मजीठिया ने ध्यानसिंह के भतीजे किशनसिंह से छीन लिया। महाराजा रणजीतसिंह ने मीखन सहित २७ ग्रामो की एक जागीर किशन-सिंह को बख्शी। किशनसिंह के सबसे छोटे पुत्र अमरसिंह को, जिसे दाढी वाला भी कहते हैं महाराजा रणजीतसिंह ने आठ आने रोज़ का भत्ता उसकी सुन्दर तथा लम्बी दाढी के लिए देना स्वीकार किया। इसी प्रकार तराशी हुई मुगल ढग की दाढियो का रिवाज घटा और लम्बी दाढियो का रिवाज बढ़ा। गुलेर के पुराने चित्र, जो राजा गोवर्धनचन्द के काल के है एव भूतपूर्व सैनिक अधिकारी कप्तान सुन्दरसिंह के पास थे जो मंत्री ध्यानसिंह के खानदान से है। अब ये चित्र पजाब म्यूज़ियम चडीगढ मे है।

भूपसिंह १७९० ई० मे राजा बना। वह गुलेर का अन्तिम राजा था। इसके कई चित्रो से प्रतीत होता है कि अपने पिता के समान यह राजा भी कला का बडा कद्रदान था और दिल खोलकर कलाकारो की मदद करता था। एक सुन्दर चित्र

में भूपसिंह अपनी रानी तथा पुत्र शमशेरसिंह के साथ बैठा है। राजा और रानी मूढ़ा पर बैठे हैं। भूपसिंह की गोद में उसका पुत्र है। पिछवाड़े में केले लगे हुए हैं जो गुलेर के चित्रों में प्रायः दिखाये जाते हैं। १८१५ ई० के बाद के गुलेर के चित्र प्रायः सिख शैली के अनुरूप हैं। इन चित्रों में लोगों की लम्बी दाढ़ियाँ हैं और पगड़ियाँ भी खास तरह की हैं। १८१२ ई० में महाराजा रणजीतसिंह ने गुलेर पर अधिकार कर लिया। *महाराजा ने भूपसिंह को पठानों के विरुद्ध सहायता के* लिए कहा और जब गुलेर खाली हो गया तब उसने भूपसिंह को लाहौर बुलवा लिया। केसरसिंह मजीठिया को दस हजार सिख सेना के साथ गुलेर पर अधिकार करने के लिए भेज दिया। राजा को उसने व्यय के लिए बीस हजार रुपये की जागीर दी। भूपसिंह के राज्य के अन्तिम दिनों में एक चित्र स्पष्ट रूप से सिख शैली का प्रभाव लिये हुए देखा जा सकता है। भूपसिंह एक चबूतरे पर बैठा है। नीचे बाण गंगा बह रही है और उसके सामने मंत्री घटा खत्री (क्षत्री) दर्शाया गया है। सबके पहरावे सिखों-जैसे हैं।

भूपसिंह के बाद शमशेरसिंह ने १८२६ ई० में राज-पाट सँभाल लिया। एक चित्र में शमशेरसिंह अपने मामा के साथ खेलता हुआ दिखाया गया है। मामा घोड़ा बना है और भानजा उस पर सवार है। इस चित्र से पता चलता है कि राजाओं के पुत्र किस तरह दुलराये जाते थे। अंग्रेज़ों से पहली लड़ाई में सिखों की जब हार हुई तो शमशेरसिंह ने उनकी सेना को अपनी रियासत में से निकाल बाहर किया। यह राजा १८७३ ई० में परलोक सिधारा।

क्योंकि शमशेरसिंह कोई पुत्र छोड़कर नहीं मरा था इसलिए उसके पश्चात उसका भाई जयसिंह सिंहासन पर बैठा। राजा शमशेरसिंह के काल से सम्बंधित एक चित्र में जयसिंह अपनी माता के साथ दिखाया गया है। इसकी माँ चबियाल रानी एक यज्ञ में भाग ले रही है। यह यज्ञ दरबार के दर्जी ने करवाया है। दर्जी *हवन-कुंड के पास बैठा आहुति दे रहा है और ब्राह्मण पुरोहित सफेद* वस्त्र धारण किये पास बैठा है। उसके हाथ में एक ग्रंथ है जिसमें से वह कुछ मंत्रों का पाठ कर रहा है। सामने कुछ मीरजादियाँ (मिरासनें) बैठी गा रही हैं। पुरुष तथा स्त्रियों के समूचे चित्र अत्यन्त कोमलता तथा कुशलता दर्शाते हैं और ऐसा लगता है कि इस राजा के दरबारी कलाकार भी पुराने कलाकारों-जैसी योग्यता रखते थे। एक और चित्र में राजा जयसिंह की बारात का चित्र अंकित है। इस चित्र में सिख शैली का प्रभाव स्पष्ट झलकता है। एक और चित्र में राजा जयसिंह एक मुजरे में बैठा है। नाचने वाली वेश्याओं के चित्र अत्यन्त स्वाभाविक हैं मानो सजीव हों। एक अन्य चित्र में राजा जयसिंह अपने पुत्र टिक्का रघुनाथसिंह के साथ चित्रित किया गया है। यह चित्र गुलेर-कला का सर्वोत्तम नमूना है। राजा उसके पुत्र तथा नौकर चाकर सबकी पोशाकें बहुत शानदार हैं और उनकी पगड़ियों में मोती जड़

है। इस सारे ठाठ बाट मे इस कला का ह्रास दष्टिगोचर होने लगता है। ऐसा मालूम होता है कि इस समय से ही गुलेर की कला पतनोन्मुख होती जाती है।

१८९० ई० के पश्चात गुलेर म यह कला समाप्त हो गई। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका कारण काल तथा परिस्थितिया का परिवतन तथा लोगो के मूल्या में अन्तर था। जागीरदारी मे चाहे लाख दोष हो पर इसमे इकार नही किया जा सकता कि जागीरदारी के जमाने म अद्वितीय एव अतिसुन्दर कला का निर्माण होता रहा है। जागीरदारी के समाप्त होने के कारण राजाओ का सरक्षण कम होता गया और कागडा कला भी धीरे धीरे मिटनी शुरू हो गई।

जिन लोगो ने इतने सुदर चित्र बनाये आखिर वे कौन थे? राजा बलदेव सिंह के कथनानुसार ये लोग जाति के ब्राह्मण बढई और सुनार थ तथा इनका सतान अभी तक हरिपुर मे मिलती है।

इन समकालीन चित्रकारो म कला की वह पुरानी सूक्ष्मता तथा सूझ-बूझ नही, और ये लोग अपनी जीविका दरवाज खिडकिया आदि चित्रित करके ही चलाते हैं।

जस एक आदमी बचपन, जवानी, अधेड अवस्था तथा बुढापे मे से गुजरता है इसी प्रकार कागडा की कला भी चार स्पष्ट पडावो को पार करती हुई दिखाई देती है। सबसे पहला प्रयोग का काल है, जबकि कलाकार एक नया ढग अपनाने का प्रयास कर रहे हैं। गुलेर म इस काल की अवधि १६६१ ई० से १६६५ ई० तक (विक्रमसिंह से दिलीपसिंह के राज्य-काल तक) मानी जाती है। १७४० ई० से १७९० ई० तक जबकि गोवधनचद और प्रकाशचद का राज्य था, गुलेर म कागडा कला अपने शिखर पर पहुँच गई थी। गोवधनचद के काल म आरम्भिक चित्रो मे एक असाधारण सादगी और खूबसूरती है। गोवधनचन्द के अतिम दिनो म श्रीकृष्ण और गोपिया के अत्यधिक चित्र बनाये गए। इस अवधि को कागडा-कला के वसन्त का नाम दिया जा सकता है। प्रकाशचद के राज्य म गुलेर की कला पूरी तरह से निखर चुकी थी। १७९० से लेकर १८७८ तक गुलेर की कला म सिख शैली की प्रधानता है। यह काल भूपसिंह से लेकर जयसिंह तक का है। अब कला पक्ष मे अधिकाधिक रूप सज्जा तथा बाह्य शृगार का समावेश होता गया, किन्तु रचना म दिनोदिन कठोरता आती गई। मनुष्यो के विकास म भी अत्यधिक शृगार तथा तडक भडक पतनोन्मुखता की द्योतक होती है। यह काल कागडा कला का पतझड का काल है, और इसका ह्रास होता दिखाई देता है। कला तथा साहित्य के विकास म भी एक खास शिखर तक पहुँचने के बाद बुढापे के चिह्न दिखाई देने लग जाते हैं। किसी विशेष काल म कला क्या फलती फूलती है और किसी अन्य काल म उसम पतन क्या होने लगता है? यह बात इतिहास की एक समस्या है और कोई इसका सन्तोषजनक उत्तर नही दे सकता।

कागडा

सन्ध्या को मीटरगेज रेल पथ ने हम कागडा मदिर के रेलवे-स्टेशन पर पहुँचा दिया। कोई आध घटा चलने के पश्चात हम कागडा पहुच गए। यह नगर पुराने वक्ता म कटोच राजाओ की राजधानी था। ग्यारहवी शताब्दी के आरम्भ म रावी तथा सतलुज के बीच के क्षेत्र पर जिसम आजकल के गुरदासपुर, होश्यार पुर और जालधर के जिले तथा व्यास घाटी का समूचा भाग सम्मिलित है त्रिगत्त अथवा जालधर के कटोच नरेशो का राज्य हुआ करता था। पद्म पुराण की एक कथानुसार दुआब का क्षेत्र किसी काल म समुद्र हुआ करता था। जलधर नाम भी इस क्षेत्र के पानी के नीचे होने के कारण है। यह भी हो सकता है कि इस कथा का सकेत माइआसीन सागर की ओर हो जो किसी काल म पजाब तक फैला हुआ था। व्यास की निचली घाटी का कदाचित् त्रिगत्तका नाम इसलिए दिया गया कि वहाँ हरिपुर गुलर के कस्बे म व्यास की तीन उप नदियाँ बाण गगा कुराली तथा नीगल आकर मिलती हैं तथा सिब्बा के किले के सामने व्यास दरिया म शामिल हो जाती हैं।

महाभारत के युद्ध म कटोच राजाओ के प्राचीन वश का एक राजा सुशर्मा कौरवो की ओर स लडा था। बडे घोर युद्ध के उपरान्त सुशर्मा से मुलतान का क्षेत्र छिन गया और वह कागडा की घाटी म जाकर बस गया। यहाँ उसने कागडा का किला बनाया।

कागडा का किला अत्यन्त मनोरम स्थान पर बनाया गया है। इस पहाडी के एक ओर बाण गगा बहता है दूसरी ओर माझी नदी। किले म जाने के लिए एक तग-सा रास्ता है जिसको कई दरवाजो म सुरक्षित किया गया है। इन दरवाजो के नाम इस किले को जीतने वाले कई योद्धाओ के नामो पर हैं—एक का नाम जहाँगीरी दरवाजा है दूसरे का नाम रणजीतसिंह दरवाजा है तथा एक अन्य का अग्रजी दरवाजा। आजकल यह किला बस एक खण्डहर बनकर रह गया है। १८४० ई० म एक अग्रज चित्रकार द्वारा बनाए गए चित्र के अनुसार यह किला एक शानदार इमारत थी। १६०५ ई० के भूकम्प म इसकी मीनारे और फसीलें ढह गई थीं।

कई द्वारो म से गुजरकर हम भीतरी प्रागण म पहुचे, जहाँ किसी जमाने म राजाओ क महल होत थ। य महल भी अब ढह चुके हैं। इस प्रागण म पत्थरा से वन लक्ष्मीनारायण तथा अम्बिकादेवी क मदिर हैं। यहाँ एक छोटा-सा जन मदिर भी है, जिसम आदिनाथ की एक मूर्ति है। आजकल इन भग्नावशेषा पर बड क पुराने वृक्ष राज्य करते हैं।

उत्तर की ओर धौलीदार के हिममडित पवत हैं। दक्षिण की ओर एक ऊँची पहाडी पर जयन्ती देवी का सफेद मदिर है। यह किला बहुत दिन उपेक्षित पडा रहा। यहाँ कागडा के नौजवान प्रेमी भ्रमण के लिए आया करते थे। फिर इसका प्रबन्ध पुरातत्त्व विभाग ने सँभाल लिया। अब इसके दरवाजे रात होते ही बन्द कर दिए जाते हैं और कागडा के नौजवान वाके प्रेम का खेल नही खेल सकते।

कागडा दुग स उत्तरी भारत का बहुत-सा इतिहास सम्बन्धित है महमूद गजनवी ने १००९ म इस किले को विजय किया—यह उसका चौथा आक्रमण था। महमूद गजनवी ने जयन्तीदेवी की पहाडी स अपनी तोपो द्वारा गोला बारी की। इतनी ऊँची पहाडी पर तोपो को ले जाना कितना कठिन काम रहा होगा। कहा जाता है कि महमूद गजनवी ने सात लाख स्वण मुद्राएँ, सात सौ मन सोने व चाँदी के बरतन दो सौ मन शुद्ध सोना, दो सौ मन कच्ची चाँदी, बीस मन सच्चे मोती, जिसमे हीरे-जवाहरात और पन्ने सम्मिलित थे, यहा से लूटे। उन दिनो इसे भीम-पाण्डव के नाम पर भीमनगर कहा जाता था। मुहम्मद तुगलक ने १३३७ ई० म इस किले पर अधिकार किया। बदरेचाच इस किले का वर्णन इस प्रकार करता है

"यह किला दो नदियो के मध्य म इस प्रकार बनाया गया है जसे दो पलको म आख सुरक्षित होती है। इस किले ने अपनी आन को हमेशा बनाए रखा है, और न तो सिकन्दर और न दारा इस दुग पर अधिकार कर सके। यह किला कई शूर वीरों और सुन्दर ललनाओ का निवास स्थान है।

१६६२ मे स्वय जहागीर सिब्बा तथा गुलेर से होता हुआ कागडा की घाटी की ओर आया। कहा जाता है कि जहाँगीर इस घाटी की सुन्दरता पर इतना मोहित हुआ कि उसने गर्मियो म यही आकर ठहरने के लिए एक महल बनवाने का निश्चय किया। कागडा के निकट गगरी नामक ग्राम मे महलो की नीवें भी खोदी गई पर फिर बादशाह को कश्मीर इससे ज्यादा पसन्द आ गया, जिस कारण यह महल पूरा न हो सका। उस महल के लिए निश्चित किये गए स्थान पर आज कल बिजलीघर बना हुआ है।

शाहजहाँ के काल म मसीरुलउमरा नामक एक इतिहासकार ने भी लिखा है

"कागडा का किला एक पहाडी की चोटी पर स्थापित है। यह किला बडा पक्का है। इसमे २३ बुर्जियाँ और ७० द्वार हैं। भीतरी प्रागण एक कोस से भी

ज्यादा म फैला है। किले म दो तालाब हैं। '

यह किला १७८३ तक मुगलो के अधिकार म रहा। जयसिंह कन्हैया ने तब सेदुल्ला खाँ स जो मुगलो का इस क्षेत्र म राज्यपाल था यह किला छीन लिया। ससारचन्द ने महावीरसिंह तथा जस्सासिंह रामगढ़िया को अपनी सहायता के लिए बुलाया किन्तु फिर उसकी जयसिंह स सधि हो गई। जयसिंह ने किला ससारचन्द के हवाले कर दिया और इसके बदले पहाड़ी का इलाका जो ससारचन्द ने विजय किया था उससे ले लिया। इस प्रकार ससारचन्द सारे-क सारे कांगड़ा का अधिपति हो गया। मियाँ रामसिंह के पास चित्रों का जो सग्रह है उसमे कांगड़ा के किले पर आक्रमण का भी एक चित्र है।

१९०५ म सवेरे ६ बजे जिस भूचाल से कांगड़ा का समूचा नगर नष्ट हो गया यह इस क्षेत्र की सबसे बड़ी तबाही थी। कांगड़ा के एक बहुत बूढ़े निवासी ने भूचाल का आँखो-देखा हाल सुनाते हुए बताया कि वह सुबह बड़ी शान्त और प्यारी सी थी। फिर बडे ज़ोरदार धमाके से सारा का-सारा नगर दहने ही-ध्वस्त ढहकर मिट्टी का ढेर हो गया। बहुत से लोग अभी सो ही रहे थे। इसलिए जन हानि काफी ज्यादा हुई। चट्टानो के कटने और दीवारो तथा छतो के गिरने से एक विचित्र, भयानक-सा शोर मच गया। हर दूसरे-तीसरे घण्टे के बाद जोरदार झटका आता और ऐसा लगता मानो तोपें छूट रही हो। एक भी घर खड़ा न रहा। मंदिर के सुनहरी कलश धराशायी हो गए। केवल एक छोटे-से मन्दिर को छोड़कर शेष सभी धर्म स्थान धूल धूसरित हो गए क्योंकि यहाँ ढोर डगर भी रात को मकानो म बाँधे जाते हैं इसलिए उनका भी बहुत भारी नुकसान हुआ।

भूकम्प प्राय भूमि मे दरार पड़ जाने के कारण पहाड़ो की हलचल से पैदा होते हैं। शिमला कुल्लू तथा धौलीधार हिमालय की पुरानी पहाड़ियाँ हैं किन्तु मण्डी धर्मशाला और कांगड़ा अभी नई पहाड़ियाँ है। इसलिए इनके नीचे की भूमि अभी कच्ची है। जब तक ये पक नही जाती इस क्षेत्र म भूचालो का आना कोई अनोखी बात नही। एक और कारण यह है कि धौलीधार से नीचे आने वाली मिट्टी रेत और बडे बडे पत्थर इस क्षेत्र की धरती पर भार को बढ़ा देते हैं और इस वजन के ज्यादा हो जाने के कारण नीचे की भूमि पिचकती और डोलती रहती है।

किले के अतिरिक्त नगरकोट का पुराना शहर वज्रेश्वरी देवी के मंदिर के कारण भी बड़ा प्रसिद्ध था। वज्रेश्वरी देवी को लोग माता कहकर याद करते हैं। यहाँ के बासमती चावल भी मशहूर है। इन चावलो म एक विशेष सुगंध होती है। यहाँ का गुड़ भी बड़ा स्वादिष्ट होता है। यहाँ नाक बनाये, बिधाये जाते थे और नेत्र रोगो की चिकित्सा भी होती था। प्लास्टिक सर्जरी पश्चिम की कोई अलग से देन नही। कांगड़ा का इतिहास बताता है कि कई शताब्दियो से यहाँ

नाक बनाने के लिए आपरेशन होते थे। कहा जाता है कि अकबर के समय में यहाँ इस प्रकार के आपरेशन शुरू हुए। उस जमाने में चोरों और डाकुओं के नाक और हाथ काट दिए जाते थे। आजकल भी क्रोध में आकर कई पति अपनी पत्नियों की नाक काट देते हैं, ताकि उनकी सुन्दरता नष्ट हो जाय। अंग्रेज यात्री वीन, बुधिया नाम के एक जर्राह को कागडा में मिला और उसने नाक के आपरेशन का तरीका एस बयान किया है मरीज को पहले बहुत सी अफीम भंग या शराब पिलाई जाती है, जिससे कि वह बेहोश हो जाय। फिर माथे की चमडी में छाला डालकर उसे नीचे की ओर खींच दिया जाता है। इसके बाद चमडी को सीकर घाव पर मरहम पट्टी कर दी जाती है। जर्राह लोग अपने मरीजों की अज्ञानता से लाभ उठाकर उनसे य कहते थे कि ये सब-कुछ देवी की कृपा से होता है, इसलिए कांट कागडा से बाहर शल्य चिकित्सा का इस प्रकार का प्रयोग नहीं हो सकता। मैंने कई लोग देखे जो इस प्रकार की नाक बनवाकर खुशी खुशी घर जा रहे थे, चाहे ये नाक प्राकृतिक नाक के बदले में एक भौडी सी चीज थी। कागडा के लोग अपनी इस कला में बडे निपुण थे। इस बात पर उन्हें बडा गर्व था चाहे उनकी बनाई हुई नाक में सूंघने की शक्ति नहीं होती थी। यहां के लोक गीत में सुहाँजना, जिसको पहाड में सुनना कहते हैं को सबोधित करके कहा जाता है, 'हम उबले हुए चावलों में सुनना के पत्ते डालकर खायेंगे। अगर हमें छींक आई तो अपनी नाक कटवा लेंगे। कागडा में नई नाक तो बन ही जाती है।"

नाक के जर्राहों के खानदान को कगेडा कहते हैं। ये लोग आजकल अपने बाप दादाओं का धंधा नहीं करते।

शक्ति के पुजारी वज्रेश्वरी देवी को बहुत मानते हैं। इस मंदिर में देश भर से श्रद्धालु लोग अपने चढ़ावे लेकर आया करते थे। इसलिए इस मंदिर में अनगिनत माया इकट्ठी हो गई। इसी कारण महमद गजनवी की ललचाई हुई नजर इस पर पडी और उसने १००६ ई० में इस मन्दिर को लूट लिया। महमूद के जाने के बाद १०४३ में हिंदू राजाओं ने फिर इस मन्दिर को बनवाया। १३३७ में मुहम्मद तुगलक ने इस मंदिर को फिर लूटा और बरबाद किया। महाराजा ससारचन्द प्रथम ने १४४० में दुबारा इस मन्दिर को बनवाया। शेरशाह सूरी के एक सेनापति खुमसखान ने १५४० में इस मन्दिर को पुन नष्ट किया और पुन एक बार अकबर के राज्य में इसका निर्माण किया गया। कहा जाता है कि अकबर ने देवी पर सोने का एक छत्र भी चढ़ाया। कागडा के सिख राज्यपाल सरदार देसासिंह मजीठिया ने इस मंदिर को सिख भवन निर्माण-कला शैली के अनुसार बनवाया और इसके बडे मीनार पर रानी चन्दकौर ने सोने का कलश चढ़ाया। महाराजा रणजीतसिंह इस मंदिर में दो बार आया। पहली बार महाराजा ने मंदिर में अपनी सोने की एक मूर्ति चढ़ाई, जिसमें महाराजा केवल एक कच्छा

पहनकर देवी की उपासना कर रहा है। यह अमूल्य मूर्ति अभी तक मन्दिर मे सुरक्षित रखी है। दूसरी मूर्ति एक सोने के पत्तर पर अंकित है। इसमे महाराणा रणजीतसिंह देवी का प्रणाम करता दिखाया गया है। सन् १६०५ के भूचाल म यह मन्दिर फिर गिर गया और आजकल का मन्दिर सन १६३० मे फिर से खड़ा किया गया।

मन्दिर तक पहुचने के लिए टेढे मेढे बाज़ार से गुजरना पडता है। दूकानो मे मालाए यज्ञोपवीत धूप कई प्रकार की सुगंधियां तांबे के बरतन और देवी की मूर्तियां मिलती हैं। चौक म गद्दी स्त्रियां ऊन के कम्बलो का अच्छा खासा व्यापार कर लेती हैं। ये कम्बल प्राय यात्रियो द्वारा ही खरीदे जाते हैं। मन्दिर की ड्योढी की दीवारो पर दुर्गा के चित्र हैं जो गुलाबराम ने बनाए हैं। मन्दिर के बाहर एक खुला आँगन है इसमे तराशे हुए पत्थरो के स्तम्भो का एक चबूतरा खडा है। इस चबूतरे म एक संगमरमर का पत्थर है जिस पर लोग मन्नतें मानते हैं। कहा जाता है कि कई लोग अपनी जिह्वाओ को काटकर देवी की भेंट चढ़ाते थ। अबुलफज़ल इस अदभुत रिवाज के सम्बन्ध म लिखता है

नगरकोट पहाड़ पर एक शहर है जिसमे कांगड़ा नाम का एक किला है। इस शहर के बाहर की ओर एक और ऊची पहाडी पर महामयी नामक एक स्थान है, जहाँ बहुत दूर-दूर से यात्री अपनी मनोकामनाओ की पूर्ति के लिए आते हैं। अचम्भे की बात यह है कि यहाँ देवी के श्रद्धालु अपनी जीभ काट लेते हैं जो फिर दो-तीन दिन म बन जाती है और कई बार कुछ घण्टो म ही पूरी की पूरी बन जाती है। देवी की भेंट म जिह्वाओ के टुकड़े चढाने की प्रथा अभी तक समाप्त नहीं हुई। जो पति अपनी पत्नियो के बातूनीपन से तंग आ जाते है। वे अब भी उन्हे इस बात के लिए प्रेरित करते हैं कि वे अपनी जिह्वाएँ देवी की भेंट चढ़ा दें। अभी मैं कांगडा म ही था कि रोहतक के एक जाट किसान ने अपनी जीभ काटकर देवी को भेंट की। उसका बहुत-सा खून बहा और वह लगभग गूंगा ही हो गया। मनुष्य के शरीर म जिह्वा एक ऐसा अंग है जो सबसे जल्दी फिर बढ जाता है। इस प्रकार यात्रियो की जिह्वा म कुछ न कुछ बढोत्तरी अवश्य हो जाती है जिसको लोग देवी का चमत्कार समझते हैं।

किले और मन्दिर के बाद यहाँ के मिशन हस्पताल से मैंने इस क्षेत्र के हरे भरे खेतो का दृश्य देखा। फिर मैं कांगडा कला के नमूने देखने के लिए चल पडा। मानचन्द उप्पल यहाँ के प्रमुख वकील हैं। उन्होने कांगडा भर के वे सब चित्र जो बाकी बच गए थे मेरे देखने के लिए एक जगह एकत्रित किए हुए थे। व्रजेश्वरी देवी का एक महन्त दो चित्र लाया। दोनों के चौखटे मढ़े थे और चित्रो पर मिट्टी धूल जमी हुई थी। एक चित्र अभिसारिका नायिका का था और दूसरे चित्र म गोवर्द्धन धारण की दन्त-कथा चित्रित थी। ये दोनो चित्र उन्नीसवीं शताब्दी के

अत म बनाए गए प्रतीत होते है। एक बूढी विधवा के पास हिन्दू देवियो के पाँच-छ चित्र हैं। ये सब भद्दे तरीके से बने हुए थे। इनम से हर एक के लिए इसकी मालकिन न सन्देश भेजा कि वह पाँच सौ रुपये से एक पाई कम न लेगी। कागडा म मतलब के चित्र केवल मानचन्द उप्पल के पास थे। उनके पास दस तात्रिक देवियो के चित्र और एक हस्तलिखित दुर्गापाठ था। यह हस्तलेख ससारचन्द का बताया जाता है। मानचन्द उप्पल के पास यह हस्तलेख कुवर खगेन्द्रसिह से जो नदौण के राजा राजेन्द्रचन्द का तीसरा पुत्र था, वकालत की फीस के रूप म प्राप्त हुआ।

दुर्गापाठ का हस्तलेख जो श्री उप्पल न फीस क रूप म स्वीकार कर लिया, कला का एक सुदर नमूना है और श्री उप्पल की सूझ बूझ बुद्धिमानी तथा कला की कद्रदानी दर्शाता है। यह हस्तलेख अलग अलग कागज के टुकडा पर है, और इसकी जिल्द के लिए पेपरमैशो के गत्ता का उपयोग किया गया है। ऊपरी गत्ते पर दुर्गा का चित्र है। दुर्गा शेर की सवारी कर रही है। ग्रथ का हर काण्ड नील पीले, हरे-लाल आदि रगा स रँगे हुए कागजो पर लिखा गया है। पन्ना के कान नील रग से रँगे हुए हैं। इस काण्ड के आरम्भ म दुर्गा का एक चित्र है। इसकी चित्रकारी का काम साफ सुथरा है और कलाकार की योग्यता और आत्म विश्वास का प्रतीक है। इसम कोई सन्देह नही कि य चित्र किसा अच्छे दरबारी चित्रकार के बनाए हुए हैं। ग्रन्थ, कागडा के एक सुन्दर कढे हुए रूमाल मे बँधा हुआ था। रूमाल के चित्र की दुर्गा एक सिहासन पर बैठी हुइ थी उसके साथ उसके चार सवक हैं। रूमाल के किनारा पर केले के वक्ष और मोर कढे हुए हैं। चाहे कितना समय बीत चुका है, रेशम के लाल, नीले पील और हरे रग आज तक वसे के वसे ताजे लगते है।

कागडा के एक पुराने चित्रकार पूणचन्द न हमे बताया कि विलियम आचर न राधा-कृष्ण का जो चित्र कागडा कला क अपन सग्रह मे प्रकाशित किया है उसके मामा नन्दलाल का बनाया हुआ है, जा कोई दस वष हुए पिचासी वष की आयु भोगकर मरा। वह कहता है कि उसक पास इस चित्र का एक खाका अभी तक है। उसन हम यह भी बताया कि कागडा के बहुत से पुरान चित्र सन १६०५ के भूकम्प म नष्ट हो गए। यह बात कहा तक ठीक है इस सम्बन्ध मे कुछ नही कहा जा सकता, क्योकि इन दाना बातो का हमारे पास कोई प्रमाण नही।

कागडा शहर मे खोज बीन करके मैं इस परिणाम पर पहुँचा हूँ कि कागडा कला का कागडा के शहर स कोइ सम्बन्ध नही। इसके एतिहासिक कारण भी हैं। दलीपसिंह (सन् १६६१ से १६६५) के राज्य म कागडा-कला का गुलेर मे जन्म हुआ और गोवधनचन्द तथा प्रकाशचन्द (१७२० १७६० ई०) के राज्य म यह कला परवान चढी। इसके अनन्तर इसे ससारचन्द न सुजानपुर टीरा मे अपना

सरक्षण दिया। कागडा पर ससारचद का अधिकार बहुत थोडी देर रहा और इतने समय म बहुत थोडे चित्रकार कागडा के पुराने नगर म आ पाए होग। कागडा शहर यहाँ के जिले का भी नाम है और यहाँ की घाटी का भी, चाहे जिले का मुख्यालय धमशाला म है और कागडा केवल एक तहसील है।

यह जानकर कि कागडा कला के चित्रकार खास कागडा नगर म कोई नही, बल्कि गलर सुजानपुर आलमपुर और नदौन-जस इद गिद के नगरा म हैं मैंने निणय किया कि इस कला के समकालीन चित्रकारा स मिलना चाहिए। कागडा के तहसीलदार ने गुलाबराम और लछमनदास को सिमलोटी म बुलवा लिया। य दोनो कागडा की आधुनिक कला के सबसे बडे चित्रकार हैं। सिमलोटी कागडा स कोइ पाँच मील की दूरी पर एक सुदर ग्राम है। लछमनदास साधारण-सा दिखने वाला एक पहाडिया है। वह एक गठरी म अपने वशजा के बनाए हुए कई चित्र बाधकर लाया था। वह अपने आपको गुलेरी मराठा बताता है और कहता है कि तीन पीढी पूव उसके बडे बूढे गुलेर से सिमलोटी आए थे। उसका लकड दादा जिसका नाम बलिया था अपने समय का एक श्रेष्ठ चित्रकार था और उसने महाराजा ससारचद के कई चित्र बनाए थे। ये चित्र पुरुषाकार और वास्तविकता के बहुत निकट हैं। बलिया के पुत्र पदमू ने महाराजा रणजीतसिंह का एक चित्र बनाया। इस चित्र म रणजीतसिंह अपने सरदारा के साथ दिखाया गया है। महाराजा और उसके सरदारा के चेहरे तो वास्तविकता के समीप हैं किन्तु टाँगो म अनुपात का ध्यान नही रखा गया। पदमू के शेष चित्र इतने सुदर नही। हजूरा जो मिस्टर फ्रेंच को उसकी यात्रा म मिला था लछमनदास का पिता था। लछमनदास के पास हजूरी के कई चित्र हैं। इनम स एक चित्र म कृष्ण को गोपियो के साथ होली खेलता हुआ दिखाया गया है। पुराने उस्तादो के मुकाबले म यह चित्र जरा कमजोर है। ऐसा लगता है हजूरी बहुत शीघ्र काम करता था और लोग प्राय अपने परिवार के चित्र उससे बनवाया करते थे। एक चित्र मे टीरा सुजानपुर का एक डाकिया भी दिखाया गया है जिसने काली पगडी बाँधी हुई है लाल कोट पहना है गले मे डाक का थैला लटक रहा है और वह एक स्त्री को चिट्ठी पकडा रहा है। एक और चित्र कागडा तहसील के एक स्याह्-नवीस का है। स्याह्-नवीस अपने पिता के साथ एक खाट पर बैठा है। उसकी पत्नी पुत्री तथा पुत्र उसके सामने हैं। क्योकि डाकिये तथा तहसील के उस मुहर्रर ने पैसे नही दिए इसलिए ये चित्र लछमनदास के पास ही रह गए। हजूरी ने लाहौल के एक परिवार का एक अत्यन्त सुन्दर चित्र भी बनाया था। इस चित्र म लाहौल के लोग पहाडी चोटियो के पाश्व म खडे हैं। एक स्त्री एक पुरुष को चाय का प्याला दे रही है। पुरुष के हाथ म प्रार्थना चक्र है। एक और पुरुष चाय पी रहा है एक लडका हुक्का गुडगुडा रहा है और इन सबके आगे घर का सामान है। यह

चित्र मेरी राय मे बडा मनोरजक है।

एक और चित्र म श्री राम लक्ष्मण तथा सीता की वापसी दिखाई गई है। यह चित्र गुलाबूराम के दादा चन्द्रू का बनाया हुआ है। आजकल य चित्र सिमलौटी के लाला दीवानचन्द के कब्जे म है। पुष्पक विमान, जिसमे श्री रामचन्द्र लक्ष्मण सीताजी बैठे है, बादलो मे दर्शाया गया है और अयोध्या के लोग नगरी के बाहर इस विमान को विह्वल होकर देख रहे हैं। इस चित्र मे आकाश का ऐसा अनुपात रखा गया है जो कागडा के अन्य किसी चित्र म देखने म नही आया।

गुलाबूराम एक लोकप्रिय चितेरा है। उसने वज्रेश्वरी देवी के नए मन्दिर को जो कागडा म बनवाया गया है दुर्गा तथा असुरों के चित्रो से सजाया है। उसने रास मण्डल के चित्र भी बनाए है जिनम कृष्ण गोपियो के साथ एक घेरे म नाच रहे है। बदला तथा घघरौला के मन्दिरो को भी इसी कलाकार ने सजाया है और कागडा का धनिक वग प्राय इसे अपने घरो को सजाने के लिए बुलाता है। गुलाबूराम का काम बहुत साधारण है और इसम वह सफाई नही जो कागडा के प्रसिद्ध चित्रकारो म पाई जाती है।

पुरानी कलम का एक और चितेरा राजोल का लछमनदास रना हम मिला। उसका लक्कडदादा निवमा गुलेर से राजा शमशेरसिंह के राज्य म राजाल म आ बसा था। लछमनदास गुलेर के प्रसिद्ध चित्रकार ननसुख के वश मे से था। लछमनदास ने प्राचीन कथाओं के अतिरिक्त आधुनिक जीवन के भी कुछ चित्र चित्रित किए हैं। एक चित्र मे, एक अग्रेज को शिकार खेलते हुए दिखाया गया है। इस चित्र म शिकारी की लगन का चित्रण बहुत खूब हो पाया है। शिकारी ने अपनी बन्दूक को एक वृक्ष की दुफाड मे रखा हुआ है और वह एक काले मृग को निशाना बना रहा है। उसके पीछे उसका एक कमचारी बारूद भर रहा है और दूसरा एक नगी तलवार कधे पर रखे हुए खडा है। उसीके एक और चित्र म पठान साहूकार का चित्रण है, जिसम कबाइली साहूकारो की निममता झलकती है। जिस प्रकार दो भूखे गिद्ध हो—कुछ इस तरह साहूकार पठानो को अपने शिकार की तलाश म जाते हुए दर्शाया गया है। एक और चित्र मे कुछ बगाली नाच और गा रहे हैं। एक बगाली बडे आवेग मे बीन बजा रहा है। उसके दाएँ हाथ पर एक नाग लिपटा हुआ है। एक अन्य करताल बजा रहा है। उसके साथ का, जिसने खडाऊँ पहनी हुई हैं ताली बजा रहा है। चौथा साथी, सफेद चोगा पहने एक ढोल बजा रहा है। एक अन्य चित्र म इस चित्रकार ने एक स्त्री और पुरुष को छनावे मे छले जाते हुए दिखाया है। ये पुरुष और स्त्री, जोकि पति पत्नी लगते है, एक सन्ध्या को सडक पर जा रहे है। माग मे एक नाग मिलता है कुछ आगे जाकर वे देखते हैं कि नाग लोमडी म बदल गया है। कुछ और आगे य लोमडी एक कुत्ते म परिवर्तित हो जाती है जो भाग रहा है। और फिर उनके

आश्चय की कोई सीमा नही रहती कि कुछ देर बाद कुत्ता एक चुडल बन जाता है जिसक दांत बाहर निकल हुए है। पुरुष जो हिम्मत नही हारता स्त्री को सात्वना देने की कोशिश कर रहा है।

पर इस प्रकार क साधारण चित्र कागडा की कला के नमूने नही माने जा सकत इनका स्थान कला के इतिहास म चाहे कुछ भी हो। कागडा के जितने भी चित्रकार है सब यही शिकायत कर रह थे कि अब उनका कोई सरक्षक नहा है। और उनके उदास चेहरा और भूखी नज़रो स मुझे लगता था कि जो कुछ वे कह रहे हैं गलत नही। फिर भी इन लोगो म बडा आत्म विश्वास है। उनका कहना है कि यदि उनको भी वहा अवसर दिय जाय जो उनके पुरखा को मिल थे तो वे भी उन-जसा काम कर सकते हैं। व अपन मुख से चाह कुछ भी कहें पर इस बात स इकार नही किया जा सकता कि आजकल क चित्रकारो का काम पुरात चित्रकारो की अपक्षा निकृष्ट है। मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि इन चित्र कारा क चित्र कागडा-कला की अतिम कडी हैं तथा इनकी कला के रूप म यही विशेषता है कि ये चित्र इस महान् शली का अधोगति का उदाहरण है। ऐसा लगता है कि आश्रय का अभाव ही इस पतन का कारण बना है।

ज्वालामुखी

जब हम कागडा के डाकबगले से चले तो पौ अभी फूट ही रही थी। सूर्य बाण गगा को पार करने के बाद निकला। बाण गगा से पार कागडा के किले का अद्भुत दृश्य देखा जा सकता है। सडक बडी सँकरी है और नागिन की तरह बल खाती हुई चली जाती है। यहा से रेल की पटरी भी नजर आती है और हमने देखा कि कुछ यात्री रेलवे-स्टेशन से ज्वालामुखी की ओर चले जा रहे हैं। आखिर हम रानीताल पहुँचे। यहाँ एक थाना है। पहाडी के ठीक ऊपर डाक बगला है। यहाँ से धौलीधार का मनोहारी दृश्य देखा जा सकता है।

डाकबगले के निकट एक टीले पर बाबा फत्तू की समाधि है। बाबा फत्तू, सोढी गुलाबसिंह का शिष्य था। सोढी गुलाबसिंह ने बाबा फत्तू को अपनी गुरु यायी बख्शी थी। कहा जाता है बाबा फत्तू के चमत्कार से मसारचन्द का भाई फतहचन्द फिर से जी उठा था। बाबा फत्तू को पहाडी लोग अभी तक मानते है और उसकी सौगन्ध खाते हैं। इसकी समाधि पर बैसाखी के दिन मेला लगता है, जहाँ पर लोग, दूर और निकट से मुरादें माँगने आते हैं। कई लोग अपनी मनो कामनाएँ लिखकर पेश करते है और मनौतिया मानते हैं। समाधि का पुजारी बाबा फत्तू की समाधि पर प्रार्थना करता है। जब किसी की मनोकामना पूरी हो जाती है तो वे लोग चढावा चढाने के लिए आते हैं। कागडा तहसील म लाज नामक ग्राम मे इस प्रकार की एक और दरगाह है, जिसको बाबा भूपत के नाम से सम्बोधित किया जाता है। वहा भी लोग इस तरह की मुरादें लेकर जाते हैं। कई लोग जो कचहरियो म मुकद्दमा की फीसें नही भर सकते बाबा भूपत की शरण लेते हैं। अत्याचार-पीडित तथा अनाथ इस समाधि पर आकर शत्रुओ को कोसते हैं। यदि कभी ऐसे ही किसी शत्रु को कोई रोग घेर ले, अथवा उस पर कोई विपत्ति टूट पडे तो वे सोचते हैं कि यह बाबा भूपत के शाप के कारण ही हुआ है। इसी डर के मारे या तो वे राजीनामा कर लेते हैं अथवा दूसरे का हर जाना भर देते हैं।

रात रानीताल के बगले मे काटकर अगली सुबह हम ज्वालामुखी की ओर चल पडे। रानीताल से ज्वालामुखी तक सडक यात्री दलो के कारण धूल मिट्टी

से अटी रहती है। हमने देखा अनगिनत यात्री, कोई पैदल कोई घोड़ों पर ज्वाला मुखी के मन्दिर की ओर जा रहे हैं। सड़क के किनारे पहाड़ी उच्च यात्रियों से बख्शीश माँगने के लिए सड़क के दोनों ओर जगह-जगह खड़े हैं। कई तो यात्रियों के पीछे ही पड़ जाते हैं तथा 'दूजा लाला पैसा देजा लाला पैसा' कहते हुए दूर तक पीछा करते हैं और तब तक नहीं हटते जब तक कि उसके पल्ले में कुछ झाड़ न लें।

आखिर ज्वालामुखी का पावन ग्राम दिखाई देने लग गया। यह गाँव पहाड़ी के एक ओर बाज के घोंसले की तरह बसा हुआ है। ज्वालामुखी के मन्दिर का सुनहरी कलश सफेद रंग के चौरस मकानों में स्पष्ट दिखाई दे रहा था। ग्राम जाने से पहले हमने निश्चय किया कि पहले देवी के दर्शन किये जायं। आठ सौ वर्ष हुए इस मन्दिर के स्थान को एक ब्राह्मण ने खोजा था। कहा जाता है कि दूर दक्षिण के वासी एक ब्राह्मण को देवी ने दर्शन दिया और आदेश दिया कि वह कांगड़ा की पहाड़ियों में जाय जहाँ उसे जंगल में आग की लपटें जलती दिखाई देंगी। ब्राह्मण आज्ञानुसार यहाँ आया और उसे यह पवित्र स्थान मिल गया। उसने यहीं एक मंदिर बनाया। मन्दिर तक पहुंचने के लिए कई सीढ़ियाँ हैं। सीढ़ियों के दोनों ओर दुकानें हैं जिनमें नारियल मिठाइयाँ धूप दीप और चाँदी के छत्र बिकते हैं। ये चीजें यात्री लोग खरीदकर चढ़ाते हैं और पुजारी फिर इनको दुकानदारों के पास बेच देते हैं और इस प्रकार ये वस्तुएं दुकानों से मन्दिर और मंदिर से दुकानों में घूमती रहती हैं। जब ज्वालामुखी पर कोई यात्री आकर रुकता है तो उसका कोई पंडा घेर लेते हैं। ये लोग उसके पुरखों के नाम पते बताते हैं जो कभी इस मन्दिर में आए थे। ये पंडे यात्रियों के रहने तथा उनके भोजन का प्रबन्ध करते हैं। ज्वालामुखी के पुजारियों को भोजकी कहते हैं क्योंकि इनका मुख्य धंधा देवी को भोग लगाना होता है जिसका अभिप्राय अपना पेट भरना होता है। जिस यात्री की कोई मुराद पूरी होती है वह देवी के निमित्त चाँदी की एक छोटी-सी छतरी कृतज्ञता-स्वरूप भेंट करता है।

बाजार यात्रियों से भरा हुआ था। हम पंजाब तथा उत्तर प्रदेश के कई स्थानों से आए स्त्री पुरुषों में टकराते बचते कठिनाई से देवी के मंदिर में पहुंचे। सिंहद्वार पर अपने जूते उतारकर हमने मन्दिर में नंगे पाँव प्रवेश किया। यात्री गण देवी का पसीना चखते हैं। कई श्रद्धालु पत्थर की मूर्तियों के मुंह में हलवा डालते हैं। संगमरमर का फर्श फिसलना सा हो रहा था और बड़ी घिन आती थी।

सबसे बड़े मन्दिर के कलश सुनहरी हैं जो डूबते सूरज की रोशनी में चमक रहे थे। मन्दिर के भीतर पहाड़ियों में से गैस निकलती है जिसको पुजारी तीली से जला देते हैं और इस प्रकार धमाके से पैदा हुई नीली लपटें यात्रियों को चकित कर देती हैं। ऊपर की ओर और कई छोटे मंदिर हैं जिनमें भगवा वस्त्रों में

जटाधारी साधू बठे हुए दिखाई देते हैं। ज्वालामुखी के निकट छट ग्राल है। इस स्रोता म नमक और पाटाशियम आयोडाइड के रूप म आयोडीन मिलती है।

कहा जाता है कि ज्वालामुखी जलधर नामक दानव का मुख है। कथा इस प्रकार है कि जलधर दानव को शिवजी महाराज ने एक पवत लुढ़काकर कुचल दिया। ज्वालामुखी उस दानव का मुह है। उसकी पीठ दुआबा का ऊपरी भाग है जिसको आजकल जालधर कहा जाता है। इस क्षेत्र मे कई प्रसिद्ध मदिर हैं बैजनाथ म शिव का मन्दिर तथा जुरगल म नदी केसर का मन्दिर, जो टाढ के सुन्दर बँगले के सम्मुख है। इस दानव के पाव मुलतान तक फैले हुए हैं। जलधर की कथा कागडा घाटी के पहाडा का, माइयासीन समुद्र म से उभरना भी प्रमाणित करती है। इस तथाकथित सागर की एक भुजा, वतमान अरब सागर से रोइयापुर के शिवालक पवता तक फली हुई थी। भगवान शिव का सागर पुन जलधर को हराना एक प्रकार स समुद्र का पीछे हटना और उसम से पहाडा के उभर आने का एक प्रतीक मालूम होता है।

इस मन्दिर म कइ प्रसिद्ध व्यक्ति आ चुके हैं। इनमे से एक सम्राट अकबर भी था। अब भी पुजारी लाग एक कल की आर इशारा करत है जो ऊपर की ओर किसी चश्म से निकलता है और कहत हैं कि अकबर न यह कूल अग्नि को शान्त करने के लिए बनवाया था पर उसको इस काम म सफलता नही मिली तथा ज्योतिया ज्या-की-त्या जलती रही। यह देखकर सम्राट अकबर देवी का उपासक बन गया और उसन सोन का एक छत्र देवी के निमित्त चढ़ाया। यह भी कहा जाता है कि सम्राट अकबर ने अपन बहुमूल्य चढावे की आर अहकार भरी दृष्टि म देखा तो सान का छत्र तावे का बन गया। इस प्रकार की अनेका किवन्तिया हरएक मन्दिर स जुडी हुई हैं और इनके द्वारा धार्मिक वग अपन धम की महानता प्रकट करता है।

महाराजा रणजीतसिह इस मन्दिर म १८०९ म आया। ससारचन्द के अनुराध पर महाराजा रणजीतसिह ने गाग्खा का पराजित किया और उन्हे व्यास के पार धकेल दिया था। ससारचन्द रणजीतसिह को ज्वालामुखी म मिला और इस पावन स्थान पर सधि पत्र तयार किया गया, तथा मोहरें लगाई गइ। महाराजा रणजीतसिह न कागडा के किले का अपन अधिकार म कर लिया और निकटवर्ती गाँवा की जागीर ससारचन्द को दे दी गई।

अफगानो का हराकर रणजीतसिह जब लौटा ता शुकरान क तौर पर देवी मन्दिर के कलश पर साने का पत्तर चढ़वाया तथा दरिद्र-कगाला का बहुत-सा दान दिया। कहत हैं कि महाराजा रणजीतसिह ज्वालामुखी की ज्योतिया पर इतना मुग्ध हुआ जस भ्रमर दीपक पर आता है। रणजीतसिह के पुत्र खडगसिह न देवी का चाँदी के द्वार भेंट किए। इन द्वारा पर चित्रकारी का बहुत शानदार

काम किया गया है। यहाँ के पुजारी इन द्वारा को बडे गव से दिखाते हैं।

इस यात्रा म मेरी धमपत्नी इकबालकौर भी हमारे साथ थी। हमारे दल के खान पीन का प्रबन्ध उसीके जिम्मे थे। इकबाल आचर मुल्कराज मुल्कराज की पत्नी गौरी और मेकटी डौना मेरे बिना मन्दिर गए। उन्होंने जो देखा, वह इकबाल की जबानी सुनिए

रानीताल से ज्वालाजी के बीच स होते हुए हमारा नदौण जाने का कायक्रम था। सुबह के चाय पानी के बाद दोपहर का खाना हम सदा साथ साथ बाँध लिया करते थे। जहाँ कहीं खाने का समय हो जाता और जगह भी खूब सूरत होती वहीं भोजन के लिए रुक जाते। सब मिलकर खाना गम करते और इकट्ठे बैठकर खाते। सफर की बातें भी साथ साथ चलती रहती। फिर थोडी देर विश्राम करके चीजें इकट्ठी करके अगले पडाव के लिए तैयार हो जाते।

ज्वालाजी जाने की खुशी खास तौर पर मुझे इसलिए भी थी कि उस जगह को मैंने बचपन में भी देखा था। उसकी धुंधली सी याद अभी तक मेरे दिमाग में थी। जब भी हम उधर की ओर जाते यह याद मुझे कचोटती कि इस स्थान के फिर दर्शन किये जायें। मुझे इतना भर याद है कि उन दिनों यह रास्ता खच्चर घोडों पर तय किया जाता था। बहुत तंग सी साँप की तरह बल खाती हुई पथरीली सडक दिखाई दिया करती थी। इस सफर को लोग दिन में ही सूरज छिपने से पहले खतम कर लिया करते थे क्योंकि प्रायः जंगली जानवर जंगल में से निकलकर सडक पर मिल जाया करते थे और कई बार हमला भी कर देते थे।

मुझे अभी तक याद है कि वहाँ के पंडों ने हमें कई स्थानों पर घुमा फिरा कर लपटें दिखाई थीं और कहा था कि यहाँ देवी प्रकट हुई है। और तभी हमारी आँखों के सामने ही श्रद्धालु भक्त खाँड के आध आध सेर के पेडे प्रसाद के रूप में ज्वाला देवी के आगे रखकर माथा टेकते। इसीलिए मुझे ज्वालाजी का मन्दिर फिर से देखने की उत्कट अभिलाषा थी।

जब हम ज्वाला जी पहुँचे तब मन्दिरों में तो कोई विशेष अन्तर दिखाई नहीं दिया पर मन्दिर को जाने के लिए जिस बाजार में से होकर गुजरना पडता था उसकी सडक अवश्य चौडी हो गई थी। रास्ते में हम सबने बाजार में से चीजें खरीदीं। हमारे मित्र आचर को काँच की रंग बिरंगी चूडियाँ बहुत पसन्द आईं और उसने अपनी बच्ची के लिए चार पाँच जोडे खरीदे। हममें से किसी ने आम की लकडी के बने हुए चमचे और वहाँ के कूंडे तथा आटा गूंधने के लिए लकडी की परात खरीदी जो कि वहाँ के लोगों ने खास सफाई से बनाई हुई थी। इनके अलावा हमने बहुत सारी धूप और अजवायन जो कि कडवे तूम्बों में भरी रक्खी थी खरीदी, और मन्दिर की ओर चल पडे जहाँ पुजारी कतार में इस ताक में बैठे थे कि कोई ज्यादा पैसा चढाने वाला आये और उसके पीछे लग जायें।

'मंदिर की सफाई की ओर इनका कोई ध्यान नहीं था। न ही कोई भक्ति-भाव उनके चेहरों पर झलकता था। समीप के गांवों के स्त्री और पुरुषों की एक टोली, जोकि शायद किसी मन्नत के हो जाने पर वहां आई थी एक जगह बैठकर कृष्ण भगवान के गुण गा रही थी। पुरुष ढोलक और घंटियाँ बजा रहे थे तथा स्त्रियाँ, सखियां बन बनकर नाच रही थीं, और जो नाचने से सकुचाती थी, उनसे कह रही थीं, तुम भी नाचो! भगवान के सामने नाचने में लज्जा कैसी! इस तरह बारी बारी एक स्त्री तो दूसरी नाचने लग जाती। कुछ देर तक हम उनको देखते रहे। इसके बाद हमने देखा कि एक गहरी-सी जगह पर भूमि में से कुछ आग की लपटें निकल रही थीं, और वहां के पंडे सबको साथ ले जा रहे थे और बता रहे थे कि इस जगह में देवी प्रकट हुई हैं!

'इस तरह की और भी लपटें, थोड़े थोड़े फासले पर निकल रही थीं। जिन लोगों को इसका कारण ज्ञात नहीं था, वे भगवान की लीला देख देखकर चकित हो रहे थे, पर किसी का ध्यान मन की सफाई की ओर नहीं जाता था। ज्वालादेवी को पेड़े, बताशे और हलवा भेंट करके, तथा लोगों ने अपने पैर धो धोकर इतना कीचड़ कर रखा था कि वहां खड़ा होना मुश्किल हो रहा था। हमारे मित्र आचार्य को भय था कि परों को किसी रोग के कीटाणु न छू जायें। उसने नाक पर रूमाल रखा और सब-कुछ झटपट देखकर नीचे उतरने में शीघ्रता की। हम भी उसके पीछे-पीछे चल पड़े।'

ज्वालामुखी की यात्रा में हमारे साथ लोक गीतों का एक संग्राहक भी था। सुंदर दाढ़ी, लम्बे लम्बे बाल और फोटोग्राफी का शौकीन! और फोटोग्राफी भी इतने कमाल की कि फोटो में जान डाल देना। जब मैं मंदिर से लौटकर आया तो देखा कि जीप के पास बहुत भीड़ है। पता चला कि मेरा मित्र, एक पहाड़ी औरत की फोटो खींचने के लिए, उसे घूंघट ऊपर-नीचे करने का निर्देश कर रहा था कि इतने में उसका पति आ धमका। शोर मच गया कि एक पाकिस्तानी फकीर हिंदू औरतों की तसवीरें खींच रहा है। फिर क्या था। किसी ने बाँह पकड़कर, किसी ने कोट पकड़कर खींचा-तानी शुरू कर दी।

भारत में, विशेषकर पंजाब में अपरिचित स्त्रियों की फोटो खींचना बड़ा जोखिम है। और कुछ नहीं तो इतना कहने से नहीं टलती अगर फोटो खींचनी है तो अपनी मां की खींच अपनी बहन की खींच! तुम्हें हमसे क्या लेना है? हमने अपने मित्र को बड़ी मुश्किल से बचाया। अगर थानेदार मौके पर न आ जाता तो अनिश्चित कांगड़ावासी न जाने उसकी क्या गत बनाते? उनको समझाया गया कि ये पंजाब के टगोर हैं इन्होंने लोक गीतों का संग्रह करके पंजाबी साहित्य की बड़ी सेवा की है और फोटोग्राफी भी सांस्कृतिक दृष्टिकोण से ही कर रहे थे तथा इनकी कोई बुरी नीयत नहीं थी। उन सीधे सादे पहाड़ियों को भला क्या

मालूम कि अब कागडा म एस उच्च स्तर के यात्री भी आन लगे है। उन्ह तो अभी तक पजाबियो की जार जबरदस्ती का ही अनुभव था जा उनकी सुन्दर स्त्रिया का बहकाकर मदानो म ले जाते थे।

अगर अकली हो ता बहुत सी स्त्रिया फोटो खिचवाने स मना नही करती किन्तु उनके पुरप कही आस पास हा तो फोटो खाचना खतरे से खाली नही। एक बार हम शिमला से नारकडा जा रहे थे। जब हम फाग के निकट पहुच तो देखा कि एक अत्यन्त सुन्दर पहाडी युवती कठा पहन सिर पर गहरा पीला रूमाल बाधे तथा नाक म लौंग डाले जो डूबते हुए सूरज की रोशनी म जगमगा रही थी, ठुमक ठुमक करती सडक पर जा रही थी। मरे साथी शोरी को जो फोटोग्राफी के नने की मस्ती म धुन था एसा अवसर कहा मिल सकता था? झट कमरा खोल कर किलक किलक शुरु कर दी। पल भर म ही ऊपर से उस स्त्री का पति छतरी घुमाता आता हुआ दिखाइ दिया और छूटते ही बोला बाबूजी! क्या कर रहे हो? बाबूजी की सिट्टी पिट्टी गुम हो गई और कमर का लज एक वक्ष की ओर घुमाकर कहना पडा जगल की तसवीर खीच रहा हू।

नदौण

ज्वालामुखी स नदौण जाने वाली सडक वडी रमणीक है। इसके दोना ओर आमा क वक्ष लगे हुए ह। कोई पाच मील के वाद व्यास नदी दिखाई देन लग जाती है और सामन एक ऊचे टीले पर नदौण का कस्बा है, जिसके सम्बन्ध म कहा जाता है 'आयगा नदौण, जायगा कौन ?'

नदौण मे प्रवेश करने से पहले हमने सोचा, उस मिट्टी धूल का झाड लिया जाय, जो पहाडो माग मे चलन हुए जम गई थी। मरे लोक-गीतो के सग्राहक मित्र की दाढी धूल से विलकुल अटी हुई थी, और वह हिमालय पवत का एक तपस्वी प्रतीत हो रहा था। हमन एक झडे से सजी नौका म बठकर नदी पार की। दूसरे किनारे पर नदौण के कुछ निवासी हमारे स्वागत के लिए बैठे थे। इनम एक ठिगना-सा आदमी था। खिजाव से काली की हुई लम्बी मूछा वाला यह भद्रपुरुष रेशमी अचकन पहने, वडी सी पगडी सजाए और हाथ म चादी की मूठ वाली छडी पकडे खडा था। जान पहचान हुई तो पता चला कि यह नदौण का राजा राजेन्द्रसिंह है। वह हमे घाट की सीढियो की ओर ले गया। नदी के किनारे एक बारात उतरी हुइ थी। डोली, गहरे लाल रग के पर्दों म लिपटी हुई थी, और इसके आग पीछे रग बिरगे कपडे पहन बाराती, एक अत्यन्त सुदर दृश्य प्रस्तुत कर रहे थे। अमतर पहुचे, जहा रात्रि को राजा के मेहमानखाने मे हमने विश्राम किया। यहाँ से व्यास नदी दिखाई दती है।

नदौण कागडा के राजाओ का पुराना निवास स्थान था। सुजानपुर टीरा और आलमपुर तो इससे बहुत बाद मे बने थे। पुराने राजाग्रो के बार म कई तरह की कहानियाँ प्रचलित हैं।

नदौण के निकट गीदड बहुत हैं जो रात को खूब भरवी अलापते है। पौष का महीना था और राजा अमतर के महला म सोया पडा था। आधी रात हाने को आई तो गीदडा ने खूब कालाहल मचाया। अगला सुबह राजा न मत्री को बुलाया और पूछा, "रात का गीदड क्या रोत है ?" मत्री बाला, 'सरकार ! पौष का महीना है कडाके की ठड पडती है बचारे सर्दी के मारे चिल्लात हैं।

राजा ने आज्ञा दी कि उन्ह कम्बल बाँटे जायें। उसी रात ही कमचारियो ने

जहा-जहा गीदड रहते थ कुछ कम्बल डाल दिए और बाकी अपन घरा का ल गए। रात हुई तो गीदडो का चीत्कार पुन आरम्भ हो गया। राजा ने अगले दिन मत्री से फिर पूछा मत्री गीदड अभी तक रोते ह। क्या इनकी सर्दी दूर नही हुई ? मत्री ने उत्तर दिया सरकार ! ये आपका धयवाद कर रहे है कि आपने इन्ह सर्दी स बचाया है।

अमतर का शाब्दिक अथ है—आम तले घाट। यह नाम एक बहुत बडे आम के पड क कारण पडा है जिसक नीच घाट है। इस जगह स पहाडी लोग मशको पर नदी पार किया करते थे। अमतर म ससारचद के वे महल थ जिनकी खिडकिया म से वह व्यास नदी का दश्य देखा करता था। ये महल कब के ढहकर पानी म बह चुके ह। उनकी निशानी पत्थरो का एक रास्ता ही बाकी है और यह भी आजकल मिटता जा रहा है। कहा जाता है कि इस महल म महाराजा ससारचद अतिम दिनो म अपनी प्रेयसी नाची जमाला के साथ रहा करता था *जमाला के महल के खण्डहर मकान के निकट अब भी दिखाई देते है।*

ससारचद के राज्य म नदौण म बडी रौनक थी। लुहार बढई दरी कालीन बुनने वाले दस्तकार कई गायक और कथाकार और दो सौ के लगभग वश्याए नदौण म रहती थी। जो कोई इनके प्रेम-जाल म फस जाता निकल नही सकता था।

१७६० स लेकर १८०५ ईसवी तक ससारचद का सितारा बुलन्द था किन्तु गोरखा क युद्ध ने इसकी सनिक शक्ति छिन्न भिन्न कर दी। यदि रणजीतसिंह उसकी सहायता को न आता तो उसको और भी क्षति पहुचती। गोरखा के चले जाने के बाद ससारचद रणजीतसिंह की दया पर निभर था। वस कहा जाता है कि जब ससारचद की शक्ति चरमोत्कष पर थी तो वह अपने को रणजीतसिंह स कम नही मानता था। उसके चाटुकार दरबारी जब उसको प्रसन्न करना चाहते तो कहते आपको लाहौर प्राप्त हो। लाहौर तो क्या प्राप्त होना था कागडा का दुग भी हाथ स जाता रहा। घोर निराशा ने उसकी कमर तोड दी और जमाला को लेकर वह अमतर के महलो म रहने लगा। दरबारियो को आज्ञा दी गई कि वे उसके आराम म विघ्न न डालें। महलो के द्वार के सामने एक कमल का वक्ष था। ससारचद के आदेशानुसार उसके दरबारी और सरदार इस कमल वृक्ष को ही जय दिया करके वापस लौट जाते। कामल की जय दिया अभी *तक कागडा म प्रसिद्ध है।*

राजा के महल की चारदीवारी म सबसे पुराना चारमजिला भवन ससारचद के छोटे बेटे राजा जोधवीरचन्द का बना हुआ है। वह मकान जहाँ राजा की फौज कवायद किया करती था आजकल बहुत छोटा सा रह गया है। स्थानीय गवनमेंट हाई स्कूल के विद्यार्थी यहाँ फुटबाल खेलते है।

नगर मे पाच मदिर और एक गुरुद्वरा है। घाट के बाइ ओर एक शिवालय है जिसके भित्तिचित्र कागडा कला के उत्कृष्ट नमूने है। जब मैं माच १६६० म, फिर से नदौण गया तो क्या देखा कि किसी मूख श्रद्धालु ने इन चित्रा पर कूची फेर दी। पूछनेपर पता चला कि इस मनुष्य को गोपियो क न न शरीर जो चीर हरण के चित्र म दिखाए गए थे, अच्छे नही लगे। बाल्टियो म पानी मँगवाकर मैंने सफेदी को धुलवाया, और बडी कठिनाई स कुछ चित्र दुवारा देखने योग्य हुए। हमारा देश कसे-कैसे मूख व्यक्तियो से भरा पडा है। अगर इनका बस चले तो बहुत सा सुदर साहित्य भागवत पुराणकी रास लीला गीति गोविन्द' और कवि केशव की रसिक प्रिया की भी वही दुदशा हो जो नदौण के भित्तिचित्रा की हुइ।

भगवान कृष्ण के मदिर के पास गहरा कुआ है जिसमे स अभी तक लोग पानी भरते ह। इसमे आगे जाकर श्री गुरुगोविन्दसिंह जी के निमित्त बनाया गया एक गुरुद्वारा है जिससे सरदार बसाखासिंह ने पठानकोट कागडा रलवे के बन जाने पर बनवाया था।

आजकल नदौण, कागडा घाटी की उपराजधानी न होने के कारण अपना प्राचीन गौरव तो खो बठा है, पर फिर भी यह कस्बा सुदर है और जब तक इसके चरणा म व्यास नदी बहती है इसकी रमणीयता बनी रहेगी। वापस मण्डनो मे लौटकर नदी की एक मीठी याद—उसके किनारे चर रही गऊए भाति भाँति के लाग मुख पर एक जादू सा कर देत है, और मुझे यह दश्य भुलाए नही भूलता। इधर जुलाई के शुरू मे, मदाना म बैठे, बरसात के पहले छीटे मुझे याद दिलाते ह कि नदौण के बागा म आम पक गए होगे, दरिया पूरे जोवन म बह रहा होगा, और ज्वालामुखी की पहाडी पर काले बादल घिर आए हाग। बरसात म काले काले बादल जब उमड घुमड पडते हैं तो नदौण के पास व्यास का दश्य और सुहावना हो जाता है। काल मघा म ज्वालामुखी की पहाडियो पर चमक रही बिजली की छटा बहुत आकर्षक लगती है। बिजली की चमक म नदी पिघल हुए सोने की तरह दिखाई देती है। इसक विपरीत ज्वालामुखी के पहाडा का रग और भी गहरा हो जाता है। तो इस प्रकार इस उक्ति मे रच मात्र सदेह नहीं कि आयगा नदौण जायगा कौन ?' एक बार जो नदौण चला जाय लौटने को उसका जी नही चाहता। नदौण की मीठी याद कभी भुलाई नही जा सकती।

नदौणके मदिर, महल और चित्र देखते हुए मेरी पत्नी इकबाल डाक्टर आनद तथा उनकी श्रीमती और सक्रेटरी डौली न सुझाव दिया कि नदौण से गोपीपुर की यात्रा नौका द्वारा की जाय। मुझे और मिस्टर आचर को तो नौका विहार का इतना चाव नही था इसलिए हमने उनके इस सुझाव को स्वीकार करते हुए, स्वय कार से ही गोपीपुर पहुँचने का निणय किया। फिर हम सब राजा के अतिथि निवास म सो गए।

चाँद की चाँदनी में धवल गिरि में बहती हुई व्यास नदी बड़ी ही रमणीक दिखाई सरोवर के समान दिखाई देती है। पूर्णिमा का पूरा चाँद आकाश में था। वह जल पानी का छिड़काव कर रहा था। वह स्वयं अपनी सम्पूर्ण कलाओं में था। इससे यह और भी सुन्दर लग रहा था। नदी के किनारे एक वृक्ष के पत्ते शीशे के टुकड़ों की तरह चमक रहे थे। यह वृक्ष पीपल का था जिसके नीचे के रंग के सामने पत्ते चाँद की चाँदनी में अगणित ज्योतियों की तरह ठीक रहे थे। पर हिन्दू धर्म में ठीक ही कहा है कि पीपल की जड़ में ब्रह्मा का वास है इसके तने में विष्णु रहता है और शंकर हर पत्ते पर बैठा है। हिन्दू धर्म के इस कथन की सचाई को स्वीकार करते हुए मैं महमानखाने के आराम में सो गया।

अभी आँख लगी ही थी कि आकाश में बिजली कड़क उठी। इन पहाड़ों की आवाज़ हुई और सारे पहाड़ काँप उठे मानो इन्द्र नाराज़ हो रहे हों। पानी से भरे नाले उछल उछल कर बह रहे थे और कल-कल करते हुए व्यास की ओर भागे जा रहे थे मानो कोई विरहिणी व्याकुल होकर अपने प्रियतम को खोज रही हो। मैं नदौण-नरेश के महमानखाने में बैठा था और मन में यह सोच रहा था कि अगले दिन आकाश खुल जाए तो अच्छा हो।

भोर होते ही मैं उठा और देखा कि बादल छितरा गए थे और धौलाधार स्पष्ट दीख रहा था। थोड़ी देर में ही चमकते हुए सूर्य के लाल लाल गोले ने उस पीपल के पीछे से सिर बाहर निकाला। सूरज के प्रकाश में अब उसके पत्तों का रंग तांबे जैसा सुनहरी हो गया था। मैंने अपने साथियों से कहा कि वे भी पहाड़ों के नज़ारों का लुत्फ़ लें परन्तु वे तानों में मस्त थे। गुरुराज ने कहा कि यह बाहर के नज़ारों के मुकाबले मन के भीतरी नज़ारों को ज़्यादा दिलचस्प मानता है। मैंने सोचा कि अगर यह बात ठीक है तो इतनी दूर आने का कष्ट करने की क्या जरूरत थी? मन के नज़ारों की कल्पना तो बम्बई में बैठकर भी की जा सकती थी।

कार में बैठकर आचर और मैंने डेहरा गोपीपुर की ओर प्रस्थान किया। हमारे बाकी साथी नौका में बैठकर नदी के मार्ग से आए। नदी पार करके हमने गुग्गा का मन्दिर देखा। गुग्गे की मिट्टी की प्रतिमा बड़ी कुशलता से बनाई गई है और उसका घोड़ा फर्राटे भरता हुआ पूँछ ऊपर उठाए दौड़ता हुआ-सा प्रतीत होता है।

जब हम एक ऐसी घाटी में से गुजर रहे हैं जिसके दोनों ओर नाटी-सी शुष्क पहाड़ियाँ हैं। यहाँ पानी की कमी लगी है। फिर एक वीरान किला, जो राजपूती शान का एक प्रतीक है दिखाई देने लग जाता है। इस स्थान से हरिपुर गुलेर को जाने वाली सड़क दाएँ हाथ को मुड़ जाती है। यह सड़क पक्की नहीं और हमारी

कार धूल मिट्टी के बादल उडाती हुइ हरिपुर पहुँच गइ।

हमारदूसरे साथिया न व्यास म नौका का जा सर की उसका तथा नदौण की कुछ और घटनाआ का वणन मेरी पत्नी इक्बाल न किया है जो ज्या का त्या अगल पष्ठा म दिया जा रहा है।

व्यास की सैर

रधावा साहब डॉ० आनन्द मिस्टर आचर के बाद नदौण नरेश का परिचय डॉक्टर आनन्द की श्रीमती तथा उनकी सेक्रेट्री डौली से करवाया गया। परिचय करवाते हुए आनन्द साहब ने कहा यह है मेरी पत्नी शीरीं भारत की प्रसिद्ध नर्तकी। इन्होंने बम्बई में बच्चों को नृत्य सिखाने के लिए स्कूल खोला है। यह सुनकर राजा साहब के चेहरे पर रौनक आ गई और खुश होकर बोले बहुत खूब! आपकी भी कला देखने का अवसर प्राप्त होगा! फिर उनकी डौली से भेंट हुई जोकि बड़ी खुशमिजाज और फोटोग्राफी में माहिर थी। उसके चुस्त पहराव को सिर से पाँव तक देखकर राजा साहब बड़े प्रसन्न हुए।

राजा साहब का मकान नदी के किनारे बना हुआ है। एक ओर तीन चार कमरे हैं जोकि राजा साहब ने हमारे आने की सूचना मिलते ही लिपवा पुतवा कर साफ करवा रखे थे। ये कमरे उनके मुंशी ने हमारे लिए खोल दिए। जो कमरे नदी की ओर खुलते थे अच्छी रोशनी वाले थे और जो दूसरी ओर थे उनमें दिन में भी बत्ती के बिना कुछ दिखाई नहीं देता था।

इन कमरों के आगे एक लम्बा-सा बरामदा था जिसको कि हमने दरियाँ और चटाइयाँ बिछा कुर्सियाँ तथा चारपाइयाँ डाल बैठने योग्य बना लिया ताकि आराम से बैठकर नदी की सुन्दरता का आनन्द ले सकें। इसके बाद हमने अपना सामान उठाकर कमरों में लगा दिया। इतनी देर में राजा के कंवर साहब भी आ पहुंचे। कंवर साहब की आयु सात वर्ष की होगी गोरा रंग, और मोटी मोटी आँखों में सुरमा डाल रखा था। जरी की अचकन और रियासती ढंग की सलवारी पगड़ी में कंवर साहब बहुत जँच रहे थे।

तभी भोजन का समय हो गया। राजा साहब ने बड़ी मेहनत से कई प्रकार का महाप्रसाद तैयार करवाया था। थाल सजकर खाने के लिए आ गए। इनमें सजा हुआ था दस्तरखान हमारे मित्र आचर साहब ने तो गुलाब और पनीर से ही निर्वाह किया। अन्य सभी ने खाने की बहुत प्रशंसा की। यह खाना राजा साहब के खानदानी रसोइये ने बनाया जोकि पुराने राजाओं के समय के पकवान बनाना जानता था। इसके बाद आराम करके घूमने पर शाम को राजा साहब के

साथ हम उनके पूर्वजों के प्राचीन महल देखने गए जोकि बहुत बड़ी बड़ी चट्टानों पर बने हुए थे, और जिनके नीचे से नदी का पानी बहता था। एक प्रकार की प्राकृतिक सुरंग जैसी बनी हुई थी जिसमें महलों के बीच में से ही रानियों का नहाने को जाने का रास्ता था। उसके बीच में से नदी का पानी प्रवाहित होता था। चाहे पुरानी इमारत का इस समय कोई नामोनिशान बाकी नहीं फिर भी सुनने से पता चलता है कि उन्होंने अपने मनोरंजन के लिए प्राकृतिक चट्टानों का बड़े अनोखे ढंग से लाभ उठा रखा था।

जब हम पहुँचे तो उस समय पानी की जगह रेत ही रेत दिखाई देती थी जिससे अनुमान लगाया जा सकता है कि कभी पानी भी इधर से बहता होगा। तब कितनी चित्ताकर्षक जगह होती होगी। कुछ देर हम बड़ी बड़ी चट्टानों पर बैठकर वहाँ की सुन्दरता और कुछ दूर पर बह रही नदी का दृश्य देखते रहे। वहाँ के बीते जीवन के बारे में बातचीत करते रहे। फिर वहाँ से उठकर राजा साहब के निजी महल की ओर चले गए जोकि अंग्रेजी ढंग के पुराने सोफों और कुछ दीवारों पर लगे शीशों से सजाया हुआ था। कहीं कहीं दीवारों पर कांगड़ा के चित्रकारों की बनी तसवीरें लगी हुई थीं। इनमें से कुछ पुराने चित्रकारों की कृतियाँ थीं। यह सब देखकर हमने अपने स्थान पर लौटकर चाय पी।

इसके बाद रधावा साहब तो दालान में बैठकर प्रकृति के दृश्यों को निहारते रहे और अपनी पुस्तक लिखने की कल्पनाओं में खो गए। बाकी सबका विचार हुआ कि नीचे उतरकर, नदी की ओर चला जाय। डॉक्टर आनन्द और आचर साहब का विचार था कि नदी में तैरा जाय, इसलिए वे तो कुछ देर तैरते रहे और हम किनारे पर बैठे रंग बिरंग पत्थरों को देखते रहे जिनमें से कुछेक तो अनोखे ही रंगों के थे। इस तरह सैर करते करते ध्यान आया कि अगली यात्रा नौका द्वारा की जाय और एक नाविक से सुबह नौ बजे के लगभग चलने का तय हो गया।

जब वापस आए तो रात हो चुकी थी। खाना खाने के बाद कोई नौ बजे पहाड़ियों के पीछे, वृक्षों के बीच में चाँद दिखाई दिया। देखते ही देखते, उसकी चान्दनी, सारे दरिया और आस पास के क्षेत्र को जगमगाने लग गई। जी चाहता था, कि ये दृश्य आँखों से ओझल न हों। यह निश्चय किया गया कि फिर कभी गर्मियों के दिनों में कुछ दिन छुट्टी ले यहाँ आकर इस रमणीक स्थल के एकान्त और शान्ति का आनन्द लिया जाय।

अगली सुबह तैयार होकर नाश्ते के बाद हमने अपना कर्तव्य समझते हुए सोचा कि हम रानी साहिबा से भी मिल लेना चाहिए और राजा साहब की खातिरदारी के लिए धन्यवाद भी करते जाना चाहिए। पर्दे के कारण शायद रानी साहिबा हमारे पास न आ सकती हों। मैं शीरी और डोली तीनों, उनके

हम नौका म बठकर थाडी दूर गए तो ाइ ओर एक मन्दिर दिखाई द रहा था। वहां क्या देखन है कि बहुत म लाल पील नील दुपट्टे दूर स नजर आ रह है। नौका वाल स पूछने पर पता चला कि वहा भी मला लगा हुआ है और रली को प्रवाहित करके लडकिया मंदिर हाती हुई अपन अपने घरा को चली जाती हैं। चिलचिलाती धूप और लम्बा सफर होन के कारण हममे स किसी की हिम्मत न हुई कि वहा की रौनक भी देखन चल। फिर नज़रें बार-बार उनकी रग बिरगी पाशाका पर जाती थी। दूर तक हम उनकी आर दखते रहे। चार बज क लगभग नाव गोपीपुर आकर किनारे लगी। वहां स कुछ अन्तर पर डाकबगला है। जब हम वहां पहुच ता दोनो साहब चाय पीत हुए हमारी बातें कर रहे थ कि नाव वाल अभी तक नहीं पहुच सही सलामत तो हैं ! इतन मे हम पहुच गए और उन्हें इस चिन्ता स मुक्त किया। हमने भी गम गम चाय पीकर दिन भर की थकावट दूर की।

डेहरा गोपीपुर

डेहरा गोपीपुर इलाके की तहसील है। यहा का बाजार बेतरतीब-सा बिखरा बिखरा है। बडी इमारतें तहसील थाना और स्कूल हैं। दरिया के किनारे डाक बगला बना है। जब हम बगले मे पहुचे तो देखा कि पजाब सरकार का एक एक्जीक्यूटिव इजीनियर बगला सँभाले बैठा था। जब उसने बँगला खाली करने की कोई इच्छा प्रकट नही की तो मैं उसके पास गया और उसके चीफ इजीनियर के पत्र दिखाए। वह इस इशारे को भी न समझ सका। हम अब समझे कि अफसरी शान इसीका नाम है! अपने-आपको तीसमारखाँ समझना और दूसरा को जैसे व कोई चीज ही नहा! इस अफसरी शान की चमक देखकर हमारी आखें चौधिया गइ। इतनी देर म एक नायब तहसीलदार, जो मुझे जानता था, उधर आ निकला। मैंने उसे बताया कि वह इजीनियर को समझाए कि इग्लैण्ड के प्रसिद्ध लेखक डब्ल्यू० जी० आचर जो पजाब सरकार के अतिथि हैं, तथा भारत के प्रसिद्ध उपन्यासकार मेरे सग हैं। इतना झझट करने पर इजीनियर ने बडी मुश्किल से बगला खाली किया। इस अफसर की खुदगर्जी साफ बताती है कि ये अफसर साधारण जनता की भला क्या भलाई करते होंगे जबकि हमारे साथ ही उनका ऐसा बर्ताव है। बीविया को सजा धजाकर डाक-बगला म गुलछर्रे उडाते फिरते हैं। न आस-पास से कोई दिलचस्पी, न जनता से कोई लगन! इसी तरह की अफसर श्रेणी ही जनता और सरकार के बीच घृणा का कारण बताई है।

सामान टिकाकर तथा अपने साथिया को कमरा मे आराम करते छोडकर, मैं बाहर आ गया। क्या देखता हूँ कि सडक पर धूल दिखाई दे रही है। इतनी देर म एक स्टेशनवगन आकर रुकी। बीच म स पजाब का एक बडा अधिकारी निकला जो मेरा परिचित था। यह अफसर लम्बा ज्यादा था चौडा कम। तबीयत इतनी खुश्क, कि उसे देखते ही भूख मर जाती। मेरी कविता की आत्मा उसे देखते ही विदा हो गई। मालूम हुआ कि साहब केवल चाय पीने के लिए ही आध घटा रुकेंगे। रैन बसेरा दरिया के पार भखाड के बगले म होगा। हम दोनो बरामदे म कुर्सिया पर बैठ गए। उसने मुझसे पूछा आप यहाँ क्या करने आए है? छुट्टी लेकर कागडा चित्रा की खोज कर रहा हूँ। अभी अभी नदौण के

राजा और मियाँ दलीचन्द के चित्र-संग्रह देखे।

यह कांगडा चित्र क्या बला है जिसकी खोज में आपने इतना कष्ट किया है ? मैं आपकी जगह होता तो छुट्टी बम्बई जैसे शहर में काटता जहाँ बड़े बड़े थियेटर और सिनेमाघर है। यहाँ उजाड़ में क्या रखा है ?

मैं भीतर गया और अपनी कांगडा-कला की पुस्तक लाया। इसमें कांगडा कला के चालीस चुने हुए रंगीन चित्र थे। कला प्रेमियों में इस पुस्तक की बडी चर्चा हुई थी। यह किताब मैंने अफसर को दी। उसने हाथ में लेकर जल्दी जल्दी इस तरह पन्ने पलटे जैसे कोई ताश के पत्ते उलट रहा हो। पाँच ही मिनट के बाद उसने पुस्तक लौटा दी। यह किताब मेरी पाँच साल की खोज और मेहनत का परिणाम थी तथा उसमें नायिका भेद और बारहमासा के इतने सुन्दर चित्र थे जिनको प्राप्त करके मैंने बड़ी खुशी मनाई थी। इनमें से कुछ चित्र तो इतने सुन्दर थे कि उनके ध्यान में कई रातें मैंने आँखों में काटी थीं। ये चित्र बार-बार मेरे सपनों में आते और मुझे खुशियों से भर देते। ऐसा होता भी क्यों न ? इन्हें बनाने वाले कलाकारों ने अपने हृदय के तूफानों और सच्चे भावों को इनमें चित्रित किया है। टालस्टाय का कथन है कि वास्तविक कला वह है जो लेखक अथवा चित्रकार की हार्दिक भावनाओं को अभिव्यक्त करे तथा इन्हें देखने वाले भी उन्हीं भावों को महसूस करने लग जायें जिनको कलाकार ने अपनी कृति में सजाया है। कांगडा चित्र देखकर हम नारी के प्यार भरे दिल और उसके सच्चे प्रेम को उसके वास्तविक रूप में अनुभव करते हैं।

कांगडा-कला वास्तव में सच्ची और महान कला है। परन्तु क्या बात थी कि इन चित्रों को उसे दिखाना ऐसे ही था जैसे भैंस के आगे बीन बजाना ! असली बात यह है कि कला को वही इन्सान महसूस कर सकता है जिसका हृदय कोमल हो। एक महान चित्र रबाब के समान और हमारी आत्मा सारंगी के समान। जब सौन्दर्य और आत्मा का एकाकार हो जाता है तब संगीत की उत्पत्ति होती है। यह है कला की कसौटी का मापदण्ड। इससे मुझे एक चीनी कहानी याद आती है। लुगमन की घाटी में एक बहुत बड़ा वृक्ष था जो ऐसा लगता था मानो जंगल का सिरमौर हो। उसका शिखर तारों से बातें करता था और उसकी जड़ें पाताल को छूती थीं। इस वृक्ष को काटकर एक जादूगर ने हार्प (स्वर मंडल) बनाया और चीन के सम्राट को भेंट किया। जादूगर ने कहा इस हार्प को वही बजा सकता है जो सबसे बड़ा संगीतकार हो। बड़े बड़े गायक और वादक कलाकार आए पर हार्प में से कुरान स्वर ही निकले। जब सब हार चुके तो पीव जो सबसे बडा संगीतकार था आया। उसने हार्प को बड़ी श्रद्धा और आदर भाव से उठाया और इस तरह चूमा जैसे कोई घुड़सवार किसी जंगली को पुचकारता है। उसने मौसम तथा ऊँचे पर्वतों के बहते झरनों के गीत गाए और वृक्ष की पुरानी स्मृतियाँ लौट आईं। हार्प की

धुन इतनी सुरीली थी कि देखते-ही देखते मौसम ने कई रग पलटे। एक बार फिर पुरवया वृक्ष की शाखाओ म से प्रवाहित हो उठी। निर्झर, फूलो और कलियो से बातें करने लग गए। फिर बौछार की आवाज, और झींगुर का राग, कोयल का आलाप और वर्षा की रिमझिम। सुनो! अब सिंह की गर्जना सुनाई दी जो पर्वतो मे गूज उठी। फिर पतझर का मौसम आया और चाँद पत्रहीन सूखे से पेडो म से झाँका। फिर शहर आया और पर फडफडाती कूज्जा की आवाज आई। और ओले तड-तड करते हुए गोली की तरह पेड की शाखाओ से जा टकराए।

पीवू ने फिर स्वर बदला, तथा प्यार का नगमा छेडा। वृक्ष खुशी से झूमा। उधर से एक चमकती हुई बदली गुजरी जसे अपने रूप के गर्व मे कोई युवती, झूमती, इठलाती जा रही हो। बदली ने पहाड पर लम्बी काली-सी परछाइ डाली, और पीवू ने फिर राग बदला। अब उसनेयुद्ध का गीत गाया तो घोडो के टापो की ध्वनि आई, और तलवार भाले टकराने का शब्द सुनाई दिया। पहाडो म बिजली जोर से कडकी और बर्फ का पहाड सरका। सम्राट ने पीवू से उसकी सफलता का रहस्य पूछा। उसने कहा 'अन्नदाता! बाकी सगीतज्ञ इसलिए असफल हुए क्योकि वे अपना-अपना राग ही अलापते रहे। मैं मस्ती म था। मैंने हाप को अपना राग आप ही चुनने की छूट दी। फिर मुझे याद नही रहा कि पीवू हाप है या हाप पीवू है।

सच्ची और ऊँची कला पीवू है और हम लुग मैन की हाप हैं। जब सुन्दरता का जादू हमारे दिल के छिपे हुए तारो को छेडता है तो आत्मा गदगद होकर सारगी के समान सगीत उत्पन्न करती है और हम विभोर होकर सातवें आसमान पर पहुँच जाते हैं। मन मन से बातें करता है, और दिल दिल से मिलता है। भूली हुई यादें फिर ताजी हो जाती हैं। आशाएँ और उमगें उभर आती हैं। हमारा मन वह कागज है जिस पर कलाकार अपने रग भरता है। और उसके रग हैं—हमारी उमग और दिल के तूफान! इस प्रकार एक महान् चित्र खुद हमारा अपनापन है जसे हम इसके एक अग हो। एक महान चित्र का समझना हो तो उसी भाव से देखना चाहिए, जिसमे हम किसी महापुरुष को मिलते हैं! हमारे हृदय म प्यार और नम्रता होनी चाहिए। कागडा-कला के चित्र तो खास तौर पर एक शर्मीली सुन्दरी की तरह हैं। यदि अक्लमदी शराफत और प्यार की भावना से इनकी ओर देखो तो ये खुशी देते हैं। वास्तव मे एक महान चित्र की पहचान यह है कि सुशील स्त्री की तरह हम दिन-पर दिन, इसकी ज्यादा कद्र करते हैं और इसे देखते हुए ऊबते नहीं। इसी तरह कागडा चित्रो को बार बार देखने को जी चाहता है और जब देखो कोई नई छिपी हुई सुन्दरता ही इनम मिलती है।

कागडा चित्रो की सुन्दरता के बारे इस अफसर की नासमझी की ओर बहुत

ध्यान न देते हुए मैं दरिया के किनारे पर उगी हुई घास पर जा बैठा। सांझ की वेला हो चुकी थी, और धीमी धीमी पवन इठला रही थी।

मैं नदी किनारे एक ऊची सी जगह घास पर बैठा डूबते सूरज के लपटा की तरह दहकते जोबन का आनन्द ले रहा था। देखते ही देखते अंधेरे ने पहाडो को अपनी काली चादर म लपेट लिया, और चारो ओर एक खामोशी का राज्य छा गया। फिर धीरे धीरे पवत की चोटी के पीछे स उजाला सा हुआ और एक ऊची चोटी पर चन्द्रमा की फांक दिखाई दी। आकाश म असख्य तारे आंखमिचौनी खेल रह थे और तारा म चांद ऐसा लग रहा था जसे गोपिया म कान्हा हो।

एक ओर स बांसुरी की आवाज आई, इतनी मनमोहिनी कि दिल की तहो तक उतर गई। ठहरी हुई रात और पहाडो की शान्ति म कितनी प्यारी लगती है बांसुरी की आवाज! इसम अवश्य कोई जादू है। यदि जादू न होता तो इस सुनकर गोपिया को सुध बुध क्या भूल जाती? यह है वह ईश्वरीय स्वर जिसको सुनकर उसके बन्दे उस छिपी हुई शक्ति का अनुभव करते हैं जो सवव्यापी है और जल थल वन पवत और वनस्पति म समा रही है। बासुरी ने खूब समां बांधा। अब भी जब मैं इस गोपीपुर क बारे म सोचता हू तो दरिया की लहरें जो चांद की चांदनी म झिलमिला रही थी मेरी आंखो के सामने आ जाती है और कानो म सुनाई पडती है *बांसुरी की जादूभरी आवाज।*

बांसुरी की इस सुरीली आवाज का आनन्द लेता हुआ मैं चारपाई पर लेट गया। बांसुरी की आवाज मुझे अब भी सुनाई दे रही थी और इसे सुनते-सुनते न जाने मैं कब गहरी नींद म सो गया।

डाडा सिब्बा

टन टन, टन घटियो की आवाज ग्राई और मेरी आख खुल गई। अभी मुह अँधेरा ही था, और किसान बला को हल म जोतकर हाँकते हुए, खेतो की ओर ले जा रहे थे। भोर का तारा सामन पहाड की चोटी पर चमक रहा था और उसके इद गिद धीमी धीमी रोशनी का दायरा था जो ऐसा लगता था जसे नक्षत्र परिवार हो। मैं उठकर नदी-तट पर गया। वर्फानी पहाडा से ठडी हवा के झोके आ रहे थे जिससे कँपकँपी छिड गई। कूजो की एक पक्ति मदाना की ओर उडी जा रही थी और उनकी आवाज वडी भारी लगती थी। खेतो की ओर से सारसा की आवाज आई,जस ऑरगन वज रहा हो। कितनी शुभ है सारसा की आवाज! यह है सच्चे प्रेमिया की आवाज जो आयुपयन्त इकट्ठे रहते हैं और कभी भी एक-दूसर से अलग नही होते। पुगरने की ऋतु थी। हवा गना के फूलो की महक से भरपूर थी। धीरे धीरे सूरज निकला और उसकी किरणा ने पीपल की कोपलो पर सोने का झोल चढा दिया। घास पर शबनम के मोती, सूरज की रोशनी म दमक-दमक पडते थे। व्यास नदी, सफेद पत्थरा मे घिरी, वडी शान्ति से मैदानो की ओर जा रही थी, और किनारे पर टटीरिया और चहे कल्लोल कर रहे थे।

प्रात काल के दश्य का आनन्द लेकर मैंने अपने साथियो को जगाया! इकबाल ने झट-पट सामान वाँध चाय और उबले हुए अडे सबको बाटे। रसीलसिंह ने फुरती से कार म सामान लादा और हम तयार होकर अगली मजिल के बारे मे सोचत हुए नदी की ओर चल पड। जब उतराई खत्म हुई ता कार म बैठ गए। हम नौकाओ के पुल पर से नदी पार कर रह थे तो दो मत्रियो स अचानक भेंट हुई। एक के माथे पर रोली का टीका था, जिसम चावला के सफेद दाने जडे हुए थे। दूसरे के माथे का साइन बाड और भी खूबसूरती से सजा हुआ था मत्री परिषद् के डावाँडोल होने के कारण इनके हृदयो म ज्वालामुखी की दवी के प्रति श्रद्धा और भी वढ गई थी, जो आखिरकार काम नही आइ। इन दोना महानुभावो की ज्योतिपिया मे भी विशेष श्रद्धा थी और काई भी काम उनसे पूछे विना नही करते थे। इसम इन वेचारा का क्या दोष था! काई भी इन्सान जब दुविधा म पडा हो तो आसरा ढूढता है और ढाढस बँधाने के लिए ज्योतिपिया से भविष्य

पूछता है। सयाने ज्योतिषी भी वही हैं, जो दिल को खुश करने वाला भविष्य ही बतलायें।

हमारी कार जब गोल गिट्टों और पत्थरों पर से टन-टन करती हुई गुजर रही थी, जो नदी नालों के पाट पर बिखरे हुए होते हैं। बारह मील लम्बी डाडा सिब्बा की सड़क के दोनों ओर हरड़ और आमों के घने पेड़ हैं। इनके अतिरिक्त चौड़े-चौड़े पत्तों वाले बहेड़े और अर्जुन के वृक्ष अपनी छाँव से यात्रियों का स्वागत कर रहे थे। आखिर हम डाडा खड्ड नामक एक पहाड़ी नाले पर पहुँचे। यह खड्ड बहुत चौड़ा है। इसका पाट गोल गिट्टों से भरा हुआ है। हम कुछ देर आम के पेड़ के नीचे सुस्ताए जहाँ से डाडा सिब्बा के पुराने महलों का सुन्दर दृश्य देखा जा सकता है। बारहदरी और राजा का महल, जो डाडा नामक गाँव पर पहाड़ की गोद में बने हुए हैं बहुत आकर्षक प्रतीत होते हैं। खड्ड पार करने के बाद हम एक अति रमणीक वन में से गुजरे जिसमें अमलतास, बहेड़ा और बाँस के वृक्षों के झुंड थे। कोमल बाँसों से ढकी पहाड़ियाँ प्यारी लगती हैं। बारहदरी जो किसी समय राजाओं का निवास स्थान थी अब ढह गिर चुकी है। आजकल इसकी छत नहीं है और दीवारों के चित्र जो किसी जमाने में बड़े सुन्दर होंगे अब अधिकतर मिट चुके हैं। बारहदरी के खंडहर देखकर हम राजा की एक बूढ़ी रिश्तेदार रानी हबरौल से मिले। इसके घर के बरामदे में कांगड़ा के कई पुराने चित्र दीवार से लगे हुए थे जिनके रंग बहुत हल्के पड़ चुके थे। इससे यह प्रमाणित होता है कि कांगड़ा के चित्रों के रंग तब तक ही बने रह सकते हैं जब तक वे बस्तों में बँधे रहें।

मैंने रानी से पूछा कि मुझसे पहले भी किसी सज्जन ने उनके चित्रों के दर्शन किये हैं? रानी बोली दो साल हुए एक सिख अफसर आया था और वाह गुरुजी का खालसा और वाहि गुरुजी की फतह वाले सारे चित्र जिनमें सुन्दर दाढ़ियाँ और सीधी पगड़ियाँ दिखाई गई थीं, उसको बहुत पसन्द आए थे। क्योंकि वह समय का हाकिम था और बड़े जमादार हाकिम इलाका को हमेशा खुश करने की कोशिश करते थे इसलिए हो सकता है रानी ने अपनी इच्छा से ही वे चित्र उसको भेंट कर दिए हों।

भारत देश खुशामद के लिए प्रसिद्ध है और खुशामद मुगल-साम्राज्य से ही यहाँ प्रचलित है। मुगलों का प्रसिद्ध कथन है कि जब बादशाह दिन को रात कहे तो लोगों का कर्तव्य है कि कहें बादशाह सलामत! तारे बहुत तेजी से चमक रहे हैं। इससे मुझे रायबरेली की एक घटना भी याद आती है। मैं १९४० में रायबरेली में डिप्टी कमिश्नर था और मुझसे पहले डाक्टर एस० एस० नेहरू जिनको पौधों पर बिजली से प्रयोग करने का बड़ा शौक था इस जिले के डिप्टी कमिश्नर थे। जब कोई पटवारी की शिकायत लेकर उनसे मिलता वे पानी की

बोतल लेते, जिसमे बिजली लगाई हुई होती। बहुत सारे मरीज उनकी जिना कचहरी के कर्मचारी ही थे, जो हमेशा यही रिपोर्ट देते कि बिजली के पानी ने उन्हें बड़ा लाभ पहुँचाया है। एक बार डाक्टर नेहरू ज्वार पर बिजली के पानी का परीक्षण कर रहे थे। जगह छह इंच ही ऊँची हुई थी कि उन्हें चौदह दिनों के लिए कहीं बाहर जाना पडा। जाते समय तहसीलदार बावर मिर्जा से कहते गए कि ज्वार के पौधों का ध्यान रखे, और प्रतिदिन बिजली का पानी डालता रहे। दसवें दिन माली की लापरवाही के कारण एक गाय ज्वार का सफाया कर गई। जब तहसीलदार ने शाम को देखा तो बड़ा परेशान हुआ। यह तहसीलदार बड़ा मँजा हुआ प्रशासक था। अगली सुबह ही खेतों से चार चार फुट ऊँची ज्वार ले आया, और चरे हुए खेत मे उसको गड़वा दिया। जब डाक्टर नेहरू वापस आए तो देखा कि ज्वार चार-चार फुट ऊँची हो गई है। उन्होंने तहसीलदार से कारण पूछा। वह बोला, "कुछ बिजली के पानी ने काम किया, कुछ हुजूर के इकबाल ने असर किया और ज्वार इतनी ऊँची बढ गई।" इससे प्रकट होता है कि हुजूर का इकबाल इस देश में बड़े चमत्कार कर सकता है। स्वतंत्र भारत मे भी हुजूर का इकबाल अभी तक काम करता है। जब गवर्नर या कमिश्नर किसी गाव का दौरा करते हैं तो सफाई करवा करवाकर लोगों के जीवन का भूठा चित्र प्रस्तुत किया जाता है।

रानी से विदा लेकर हम डाडा सिब्बा के नौजवान राजा से मिले जो नए ढंग के बने मकान में रहता था। सिब्बा की रियासत गुलेर रियासत का एक भाग थी। १४६० में राजा गुलेर के छोटे भाई स्वर्णचन्द ने खुदमुख्तियार रियासत स्थापित की, जिसको उसके नाम पर सिब्बा कहा जाता है। यह स्थान व्यास के बाएँ तट पर है। जहांगीर १६२२ में कांगड़ा जाता हुआ यहाँ से गुजरा था। १८०८ में गुलेर के राजा भूपसिंह ने सिब्बा को फिर अपनी रियासत मे मिला लिया और १८०९ मे गुलेर और अन्य पहाडी रियासतें महाराजा रणजीतसिंह के अधिकार में आ गईं। सिब्बा इस कारण बरबाद होने से बच गया, क्योंकि महाराजा रणजीतसिंह के मंत्री राजा ध्यानसिंह ने सिब्बा की दो राजकुमारियो से विवाह कर रखा था। यहाँ के राजा गोविन्दसिंह का १८४५ में स्वर्गवास हुआ। उसके बाद राजा रामसिंह गद्दी पर बैठा, और सिखों की दूसरी लड़ाई में उसने इनको यहाँ से बाहर निकाल दिया। १८६५ मे रामसिंह ने डाडा में एक मंदिर बनवाया।
इस मंदिर में होशियारपुर के हरियाना नामक कस्बे के कलाकारों के बनाए कुछ भित्तिचित्र हैं। मन्दिर मे श्रीकृष्ण, शिव तथा दुर्गा की उपासना होती है। भित्ति चित्रों के रंग अभी तक ताजा हैं। इनमें कई दिलचस्प भी हैं। इन चित्रों में से एक चित्र में स्त्रियों की तसवीरों को जोड़कर एक हाथी बनाया गया है जिस पर श्रीकृष्ण राधा के संग सवारी कर रहे हैं। एक और चित्र मे श्रीकृष्ण कालिया

नाग का मदन कर रहे हैं। एक अन्य चित्र म श्रीरामचन्द्र, शिव धनुष को तोड़ते हुए दिखाए गए हैं। एक भित्तिचित्र राजा रामसिंह का भी है। राजा रामसिंह की १८७४ म मृत्यु हुई पर वह मंदिर के कारण आज तक अमर है। सिब्बा का किला जो अब खाली पडा है, एक खडहर-सा बनता जा रहा है।

हम डाडा सिब्बा के मंदिर के भित्तिचित्र देखकर परिक्रमा म बठे ही थे कि एक नई ब्याही पहाडी वधू नाक म नथ डाले सिर पर लाल दुपट्टा ओढ़े घूँघट काढे मंदिर की ओर आई। उसके पीछे उसका पति कोई बीस एक साल का लडका काली छतरी हाथ म लिये बेल-बूटा वाला रेशमी कोट पहने हुए आ रहा था। हरिकृष्ण गोरखा ने, जो कि इस यात्रा म हमारा साथी था इस जोडे की फोटो खीचनी चाही। अब दखिए कि गोरखे ने किस चतुराई स उसका चित्र खीचा। पहले तो दोनो को पास खडा कर लिया और एक फोटो ली। वे दोनो बडे खुश हुए कि मुफ्त म फोटो बन रही है। फिर उसने स्त्री का घूघट उठवाया और फोटो खीची। फिर पति परमेश्वर को कुछ फासले पर खडा कर दिया और एक फोटो खीची। पतिदेव यही समझ रहे थे कि उनकी भी साथ म फोटो खिच रही है। जब एक के बाद एक, युवती के तीन चार फोटो खीचे जा चुके तो उसका सकोच जाता रहा और उसने बड सुदर और सजीव फोटो खिचवाए। पहाडिनो की सफल फोटोग्राफी अगर किसी ने की है तो वह है हरिकृष्ण गोरखा। लम्बा तडगा और बाँका जवान हमेशा खिला रहने वाला चेहरा तीखे नक्श और जहा जाता है रौनक लगा देता है। मिलनसार इतना कि झट लोगो म घुल मिल जाता है। गोरखा की खीची तसवीरो म पहाडिनो का भोलापन और सौन्दय छलक छलक पडता है।

फोटोग्राफी को कई लोग कला नही मानते। पर जब कमरा गोरखा के हाथ म आ जाता है तो लगता है जस किसी प्रसिद्ध कलाकार के हाथ म तूलिका हो। इसने मानवीय भावनाओ को इस चतुराई स अपनी तसवीरो म उभारा है कि व जीती-जागती और मुह स बोलती नजर आती हैं। निश्चय ही यह फोटोग्राफी का वास्तविक कलाकार है।

सन्ध्या का समय हो चला था और भूख भी करारी लगी थी। और तो खाने को कुछ न मिला किन्तु एक हलवाई की दूकान से चाय का गिलास और गम गम जलेबिया अवश्य प्राप्त हो गइ। मैं जलेबी को मिठाइयो की रानी समझता हूँ। रस स भरी हुई जीभ पर रखते ही स्वग का झाटा देती है।

१९३० म अपने गाव म शीशम की छाह-तले कुरसी डालकर मैं पढा करता था। एक दिन पडौसी गाव बेरछा का एक रावल मुसलमान चरवाहा, पास ही भैस चरा रहा था। मुझे देखकर वह निकट आ गया और बोला 'सरदार जी! आपने सोलह जमातें तो पढ ली अब और भी पढ़ते जाओगे!

मैंने उत्तर दिया, "फज्जू ! आजकल नौकरी बनी मुश्किल मे मिलती है।'

"सरदार ! गप्पियाँ को देख, उनके दो पटवारी और एक कानूनगो हैं। क्या तू कानूनगो नही बन सकता ? और नही तो मुच्छलाँ के लडके की तरह बका का इसपैक्टर ही वन जा !"

मैंने कहा, "अच्छा साचेंगे ! '

'सरदार ! असल बात ता यह है कि तेरे चाचा को चाहिए कि रुपया की टोकरी भरकर किसी बडे अफसर को दे आवे। आजकल वसीले के विना कोई नही पूछता।

मैंने बात टालते हुए कहा, "फज्जू ! इस तरह की हिम्मत तो मेरी खातिर तू ही कर ! चाचा तो बडा कजूस है।"

"सरदार ! हम तो गरीब आदमी ठहरे। यह तो अमारो का खेल है। अमीर तो जरूर रोज जलेबियाँ ही खाते होग।"

बैसाखी के मेले म हमारे गुरुद्वारा गरना साहिब के सामने दमूहा के हलवाई, मिठाई की दूकाने सजाते और लड्डू और जलेबियो के सजे हुए थाल देखकर जाट उन पर टूट पडते। लड्डू, जलेबी के सिवा इनको और किसी मिठाई का नाम तक न मालूम होता ! फज्जू न भी जलेबिया के थाल इस मेले मे ही देखे थ, और उसके विचार म जलेबी खाना ही दुनिया म सबसे बडा आनन्द था। इस बारे म मैं फज्जू से पूरी तरह स सहमत हूँ, चाहे नौकरियो के बारे में वह ठीक सलाह न दे सकता हो।

देश

किसान

कागडा की घाटी म जीवन गति, अक्तूबर मास मे धान के लहलहाते खेता की लय अथवा किसाना के आगन म मस्ती से झूमते बासो से मेल खाती है, और या फिर अनगिनत बर्फानी नदियो की धीमी मीठी चाल से चलती है। लोग प्रकृति के अति निकट रहते हैं और यहा के निवासियो तथा आस-पास के वातावरण म एकसूत्रता दिखाई देता है। इसम स देह नही कि किसी देश की जनता का आचरण उसके आस-पास के वातावरण पर निभर करता है। यह वातावरण प्राकृतिक भी हो सकता है, सामाजिक भी तथा धार्मिक भी। कागडा की घाटी म अधिकतर हिंदू बसते है जिनम शुद्ध हिंदू सस्कृति के चिह्न पाए जाते हैं। दैनिक जीवन की गतिविधियो के अतिरिक्त कागडावासियो का जीवन यहा के विचित्र रीति रिवाजा के कारण अति मोहक बन जाता है। पहाडिया की चोटी पर मदिर है अथवा राजाओ के पुराने महल और किले। इनसे घाटी का अत्यन्त मनोरम दश्य निहारा जा सकता है। हिमालय की खुली हवाओ म मन्दिरा के असख्य झडे लहराते हैं जिनके द्वारा कागडा के वासिया की प्राथनाएँ मानो आकाश की ओर पहुचती रहती हैं। नाटी-नाटी पहाडियाँ और हरी भरी उपत्यकाएँ जिनको बर्फानी नदियाँ आ-आकर सीचती हैं और जो विराट धौलीधार की अलौकिक छाया मे इन लोगा का पालन पोषण कर रही हैं जो सचाई, सज्जनता, वीरता और साहस के लिए प्रसिद्ध हैं।

यहा के लोग वसे ही बडे सुन्दर होते हैं किन्तु उनका सव-सामान्य जीवन इस सुन्दरता को और भी आकषक बना देता है। मेल मिलाप म यह लोग हृदय के सरल और प्रसन्नचित्त है। वफादारी और लिहाज़दारी, इनके दो और गुण हैं। शहर के रहन-सहन की तडक भडक से अनभिज्ञ हाने के कारण कई बार इनकी स्पष्टवादिता किसी को न भाए पर कागडा के लोग जान-बूझकर किसी का दिल दुखाना पसन्द नही करत। इन लोगा म हमारे ग्रामीणो जैसा अल्हडपन और सादगी है। इन पर कोई उपकार करे तो बड प्रसन्न होते है, और यदि अन्याय अथवा कठोरता का व्यवहार करे ता उतने ही अप्रसन्न। एक मीठा बोल जहाँ उन्हें समूचा खरीद सकता है वहाँ एक वक्रदृष्टि अथवा कडवा बोल उन्ह कोसा दूर ले

जा सकता है। किसी कमचारी का क्रोधी स्वभाव चाहे वह अपने काम मे कितना ही निपुण क्या न हो लागो की नजरो मे उस गिरा देता है। कागडा के निवासी बड़े सकोची और मदु स्वभाव के होते हैं। कोई मामूली सकेत ही इह अतर रखन के लिए पर्याप्त होता है।

पाकिस्तान से उजडकर आए किसान ज़मीदारो मे जब मुसलमाना द्वारा पीछे छोडी हुई भूमि की बाट हो रही थी, तो मैंने देखा कि कागडा के लोग मदाना के सिख किसाना की तरह लगन और दढता से अपन अधिकारा की माग नही कर सक्त थे। कोई कटु स्वभाव का अफसर ज़रा भी फटकारता तो यह झट पीछे हटकर बठ जाते और निराश होकर पहाडा को लौट जाते। इस अधिकारी वग म उजडड ऊत किस्म के कई अफसर थे। एक का नाम तो लोगा ने रावण रखा हुआ था। मुझ केवल दो ही ऐसे कागडावासिया का अनुभव है जिन्हें कागडा के प्रतिनिधि कहा जा सकता है। इनम से एक तो सलिआना का परमेश्वरीदास था जो बडी बुद्धिमानी से अपनी ही नहीं दूसरे मेजबाना की भी परखी करता। दूसरा नूरपुर का एक किसान था जिसने अपना नाम वधावा बताया। उसके स्वभाव का नमूना पेश किय बिना मैं नही रह सकता। जालधर-सचिवालय म सध्या के समय मैं शरणार्थिया की ज़मीना की अलाटमट के सम्बाध म शिकायतें सुन रहा था। क्या देखता हूँ कि एक छिनरी हुई खगखशी दाढी और झुरिया भरे चहरे वाला बूढा-सा आदमी चिक उठाकर अदर आ रहा है। मैंने पूछा बाबा क्या बात है ?

बात क्या है। मुझे जमीन गाँव से पद्रह कोस दूर अलाट कर दी गई है। बूढा शरीर वहाँ तो चार आदमी अर्थी उठाने के लिए भी नही मिलते।

मैंने कहा बाबा ! काम मुश्किल है पर देखते हैं तेरे गाँव के नजदीक कोई जमीन खाली भी है या नही।

वह बोला पता नही जमीन अलाट करन की स्कीम बनाने वाला है कौन ? हस्पताला म पदा होने वाल होटला म रहन वाल क्या जानें कि गाँव के भाईचारे जात बिरादरी, एक-दूसरे का दुख-सुख मिल-बाँटन का मतलब क्या होता है ?'

मुझे हँसी आ गई। मैंने कहा बाबा अफसरा क बार म ऐसी बातें नही का करनी।

बूढे ने उत्तर दिया मालियाँ वाल। मरी बात का गुस्सा न करना तू गाँवा का रहन वाला है सारी बात समझता है। और हाँ, तरा नाम है रघावा और मरा है वधावा मेरा काम तो तुझे करना ही होगा।

मुझ बूढे की खरी-खरी बात पर बडी हँसी आई और झट पटवारिया को बुला जमीन का पता लगाकर वधावा को अलाट कर दी।

जब तक कागडावासियो को बुलाकर सान्त्वना न दी जाय, वे बात करते झिझकते है। प्राय यह लोग शकालु होते हैं, और बाहर वालो का भरोसा नही करते। बाहर वाला के सामने ज्यादा खुलते भी नही और जहा तक बन पडे किसी *नए अफसर के पास तक नही जाते जब तक उसके स्वभाव की उन्हें अच्छी तरह* जानकारी न हो जाय और जब एक बार खुल जाते हैं, तो इनकी कोई सीमा नही होती। शुरू-शुरू मे ये जितनी झिझक से काम लेते है, बाद म वे उतने ही आदर और स्नेह का परिचय देते है। ये लोग प्यार करने वाले और स्वभाव के मीठे हैं। मुकद्दमेबाजी की, इनको लत-सी पड गई है। छोटी छोटी बात के लिए कचहरी जा चढते हैं। इनकी विशषता इनका सच्चा, साफ-सुथरा जीवन है। झूठी गवाही, य शायद ही कभी देते हैं। सच्ची बात छिपाते नही। अपने दनिक व्यवहार म भी *ये लोग इसी ईमानदारी से काम लेते हैं। इकरारनामे, बहुत कम लिखित रूप म* लाए जाते हैं। प्राय दूसरे को जबान पर किसा सकोच के बिना, विश्वास कर लिया जाता है।

सचाई के इस गुण के साथ साथ ये बडे इमानदार है और अपने स्वामी के लिए इनके दिल मे बडा दद होता है। छोटी-मोटी चोरिया चाहे पहाडी इलाको मे कभी-कभार हा जाती हैं पर यह जुम अति निम्नवग के श्रमिक कामगरा आदि तक ही सीमित होते है। सिख-साम्राज्य के दिना म सिख सरदार भी पहाडी लोगो की ईमानदारी की कद्र करते थे और वे केवल इन्ही लोगा को दायित्व के पदा पर नियुक्त करते थे।

नौकरी म सदा सावधानी बरतते हैं और मालिक की वचन करते हैं। कोई लोभ इनको विचलित नही कर सकता, केवल अपने श्रम की कमाई लेकर घर लौटते हैं

अन्य पवतीयो के समान य अपने प्रादेशिक पवता के बडे रसिक हैं और नीचे मैदानों म आकर नौकरी करना कम ही पसन्द करते है। इनम ऐसे विरले ही होंगे जो मदानो की गर्मी सहन कर सकें।

ये मेला के बडे शौकीन है। गाना बजाना पसन्द करते है। चत-वैशाख के महीना म मेले-*दगला का खूब जोर होता है। मेला म स्त्रिया सज धजकर आती* हैं और उनकी रग बिरगी पोशाकें कागडा घाटी का मानो शृङ्गार कर देती हैं। कई मेलो म स्त्रिया ऊचे टीला पर बठती ह और पुरुष नीचे खेतो पर हाथ रख कर लम्बी लम्बी तानें लेकर गाते ह। अब पसे और बर मारने की प्रथा नही रही, लेकिन कुछ वष पहले तक यह प्रचलित थी। छोटे बच्चे पीपनियाँ बजाकर लड्डू पेडे खाकर बहुत खुश होते थे और स्त्रिया कपडे लत्ते पहन, चूडियाँ कघे दपण और ऐसा ही छुट पुट सामान खरीदकर फूली नही समाती। निश्चय ही कागडा के मेला मे बडी रौनक होती है। लोगा के हँसते चेहरे देखकर ऐसा लगता है

मानो प्रसन्नता का सागर ठाठें मार रहा हो।

कांगड़ावासी वहमी और अंधविश्वासी भी हैं और जादू टोना में इनका बड़ा विश्वास है। अगर कोई साधारण सी घटना भी हो जाय किसी की मृत्यु हो जाय, किसी की भैंस का दूध सूख जाय ये सोचते हैं कि किसी शत्रु ने टोना कर दिया है। बच्चों को बुरी नज़र से बचाने के लिए, उनके माथे पर कालिख लगा देते हैं। अगर कोई नया मकान बनवाते हैं तो उसके सामने लाल जीभ लगाकर काली हांडी लटका देते हैं और इस तरह नज़रबट्टू-सा बनाकर कुदृष्टि का निवारण करते हैं। कुछ गाँवों के लोग डायनों और चुडैलों में भी विश्वास रखते हैं। निःसंतान विधवा स्त्रियों को बहुत मनहूस माना जाता है और यदि राह चलते या किसी शुभ कारज में वे सामने मिल जायें तो समझ लिया जाता है कि काम बिगड़ कर रहेगा। चाहे मामूली से काम के लिए बाहर जाना हो पंडित से ज़रूर पूछ लेते हैं कि मुहूर्त ठीक है या नहीं। वे ज्योतिषियों, प्रश्न फल बताने वालों में अब भी बड़ा विश्वास रखते हैं।

देवी में भी इनकी बड़ी आस्था है और पहाड़ों की बहुत-सी चोटियों पर दुर्गा के मंदिर बने हुए हैं। ज्वालामुखी भी देवी का ही रूप है। दुर्गा ने दैत्यों का किस प्रकार संहार किया इसकी कथा सुनाई जाती है और इस प्रकार लोगों में शौर्य भावना का संचार किया जाता है।

विज्ञान के नए विचारों तथा पुराने विश्वासों का द्वन्द्व आजकल पूरे भारत में हो रहा है और पर्वत भी इससे अछूते नहीं रह सके हैं। वे लोग जो नए ढंग से रहते हैं यद्यपि वे रेडियो बजाते है और बिजली का उपयोग करते हैं तथापि पुराने विचारों से पूरी तरह मुक्त नहीं हो पाए हैं। मुझे याद है कि जब हम सुकेत नरेश से मिलने उसके घर सुन्दरनगर गए तो उसका राजकुमार अपनी देवी का मंदिर भी दिखाने हमारे साथ गया।

क्या देखते है कि देवी के मंदिर के साथ एक ग़ुसलखाना है जिसमें पश्चिमी ढंग का नहाने का टब रखा है और पास ही लकड़ी की खड़ाऊँ साबुन और तौलिया राजकुमार ने बताया कि इसमें देवी स्नान करती हैं और प्रातःकाल तौलिया गीला हुआ मिलता है। इस प्रकार की घटना वृन्दावन में भी देखी। वहाँ एक वाटिका है जहाँ कहा जाता है कि कृष्ण जी ने गोपियों के संग रास रचाई थी। पंडे ने बताया कि रात को जब वाटिका तथा मंदिर के कपाट बन्द कर दिए जाते हैं तो लड्डू और एक दातुन मन्दिर के सामने रख देते है। रात को कृष्णजी प्रकट होते हैं और प्रायः दातुन की हुई पाई जाती है और लड्डुओं का चूर चूर मिलता है और यदि कोई वाटिका में रह जाय और उसे भगवान के दर्शन हो जाय तो उसका अन्त हो जाता है। वहाँ हमें एक सिख साधु मिला जिसने बताया कि वह एक रात वाटिका में रहा था और सारी रात जपजी का पाठ करता रहा, पर

उसे तो कुछ दिखाई नहीं दिया।

कागडा के राजपूत अपने आपको राजाओं के वंश में से समझते हैं। उनके पूर्वजों में ठाकुर और राजा हुआ करते थे, जो किसी जमाने में छोटी मोटी रियासतों में राज्य किया करते थे। मध्यकालीन योरप की तरह इनके दो ही काम हुआ करते थे—प्रेम और युद्ध। किन्तु कागडावासियों का प्रेम उनके पति पत्नी के प्रेम में अभिव्यक्त होता था और सेना में भर्ती होकर ये अपने लडाकू स्वभाव की तृप्ति कर लेते हैं। पहले जमाने में ये लोग राजाओं की फौज में भरती होते थे, आजकल भारत की राष्ट्रीय सेना में भरती होते हैं।

जो लोग कागडा से परिचित हैं वे राजपूतों के घरों को एकदम पहचान सकते हैं इनके घर प्राय अलग-अलग सी जगह पर बने होते हैं। किसी पहाडी की चोटी पर जहा दोनों ओर से सुरक्षा का प्रबन्ध किया हुआ होता है। या फिर किसी जगल के ऐसे भाग में रहते हैं जहा इनको कोई बढिया ओट मिल सके। जहा प्राकृतिक आड न हो वहा ये लोग पेड उगाकर परदे का प्रबन्ध कर लेते हैं। इनके घरों के सामने कोई पचास कदमों की दूरी पर एक डयोढी होती है जिसके आगे पराया आदमी नहीं जा सकता। यहा तक भी ऊँची जाति के खानदानी लोग ही आ सकते हैं। मिस्टर बार्नज ने इस अलगाव और परदे की एक विचित्र कहानी का उल्लेख किया है। मडी के एक क्षेत्र में कटोचा के एक घर में दिन दहाडे आग लग गई। घर के पास कोई ऐसा जगल नहीं था जिसमें औरतें भागकर छिप सकतीं। इस प्रकार घर की स्त्रिया घर में बन्द की बन्द जल गइ। पर बाहर आकर उन्होंने अपनी बेपरदगी नहीं होने दी।

लडकिया मा बाप से मिलने के लिए भी पालकियों में बैठकर आती हैं। जो बहुत गरीब होती हैं वे अधिकतर रात को सफर करती हैं और उन मार्गों में से होकर जाती हैं जो अनात हो या फिर जगलों और खण्डों में से होकर जाते हों।

राजपूत लोगों ने अपने-आपको दो श्रेणियों में बाटा हुआ है। ऊँची श्रेणी के लोग मिया कहलाते हैं। ये लोग बाईस राजाओं में से है। इन सबका, कोई-न-कोई पूर्वज उत्तर भारत में किसी न किसी स्थान पर, कभी-न-कभी राज्य करता था। निचली श्रेणी के लोग ठाकुर कहलाते हैं। इनकी बेटिया मिया राजपूतों से ब्याही जाती हैं किन्तु इनके लडके स्वय राठियों की लडकियों को ब्याहते हैं। एक मियाँ अपनी आन और नाम को बनाए रखने के लिए चार बातों का विशेष ध्यान रखता है वह कभी हल नहीं चलाता अपनी बेटी को नीची जाति में विवाह नहीं करता स्वय अपने पद से बहुत नीचे वाले से शादी नहीं करता। अपनी बेटी के रिश्ते के लिए धन नहीं लेता, और उसके घर में स्त्रियाँ सख्त पर्दा करती हैं। हल चलाने के विरुद्ध इनकी भावना कदाचित् अत्यन्त बलवती है। अगर कोई हल चलाना शुरू कर दे तो वह एकदम अपने पद से गिर जाता था और निम्न वर्ग

का राजपूत गिना जाने लगता था। कोई मियाँ अपनी पुत्री का ब्याह उससे न करता और उसे नीची जातियों में से लड़की ढूँढनी पड़ती। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उसका तिरस्कार किया जाता। पारिवारिक समारोहों तथा विवाहों में ऊंचे पद के राजपूत ऐसे आदमी के साथ मिलकर बैठना और भोजन करना पसन्द नहीं करते थे। उसको हल चलानेवाला कहकर लज्जित किया जाता और कुछ लोग इस हेठी से बचने के लिए कभी किसी समारोह में न जाते। कृषि के विरुद्ध यह भावना उतनी ही पुरानी है जितना हिन्दू धर्म। कुछ लोग कहते हैं कि धरती माता को हल से घायल करना घोर पाप है। कुछ का यह विचार है कि पाप इस बात में है कि हल चलाने का काम गऊ माता के जायों से लेते हैं। मिस्टर बार्नज जो उन्नीसवीं शती के अन्त में भारत आया लिखता है—

बड़े खेद की बात है कि राजपूत अपनी मध्ययुगीन जीवन की परिपाटी में अभी तक चिपटे हुए हैं। उनके बुझे बुझे चेहरों और बड़े मामूली घटिया किस्म के कपड़ों से पता चलता है कि ये लोग अपनी गले पड़ी सादगी और बड़ाई को कायम रखते हुए कितने पिछड़ गए हैं। पहाड़ी क्षेत्र में अभी तक परती पड़ी धरती पर जो लोग कड़ी मेहनत करते हैं वे तो रोटी कमा लेते हैं पर राजपूतों में से अगर कोई हल पकड़ता है तो उसे बिरादरी में से बाहर कर दिया जाता है। इस लिए ये लोग चाहे दूसरे लाख धन्धे कर लें खेती बाड़ी नहीं करते। इनमें से कई पहाड़ियों की चोटियों पर बाज पकड़ने के लिए जाल बिछाए रहते हैं। कई-कई दिन खाली गुज़र जाते हैं। और ये लोग बेर खाकर अथवा शिकार पर निर्वाह करते हैं। और जब कोई बाज फंसता है तो उसको नीचे भेज देते हैं जहाँ उसे सिधाया जाता है और फिर बेच दिया जाता है।

प्राय राजपूत बेकार रहते हैं। अधिकतर वे बाज का शिकार करते हैं। यदि साधन-सम्पन्न हों तो बन्दूक लेकर बाहर निकलते हैं। एक राजपूत झाड़ियों को झकझोरता है और दूसरा बाज थामे हुए इस बात की प्रतीक्षा में रहता है कि जब कोई पक्षी उड़े तो बाज को वह उसके पीछे छोड़ दे। इस प्रकार किए हुए शिकार से नाम के भोजन का काम चला लेते हैं। जिनके पास बन्दूक होती है वे जंगली सूअर का शिकार करते हैं और शिकार का बखान कर अपना निर्वाह करते हैं पर जो कुछ मिस्टर बार्नज ने लिखा है आजकल सत्य नहीं और राजपूत भी बाकी लोगों की तरह खेती और अन्य कामों में दिलचस्पी लेने लग गए हैं।

राजपूत लोग बड़े उदार और अतिथि-सत्कार करने वाले होते हैं। उनके घर में प्राय कई नौकर होते हैं—जिनके पास करने के लिए कोई विशेष काम नहीं होता। कई निर्धन सम्बन्धी भी आकर वर्षों तक टिके रहते हैं और घर के स्वामी को चूंट चूंटकर खाते रहते हैं। ब्याह शादियों में रुपया पानी की तरह बहाया जाता है। सम्बन्धियों तथा मित्रों को दावतें दी जाती हैं और दिल खोलकर

आतिशबाजी छोडी जाती है। पिछले वक्तो म मुजरे भी कराए जात थ। आजकल य रिवाज लगभग समाप्त हो चुका है। इसके दो कारण है, एक तो इन लोगो की धार्मिक अभिरुचि, दूसरा इन लोगो की निधनता। राजपूत लोग मासभक्षी हैं और इनकी स्त्रियाँ भी मास खाती हैं। ब्याह शादियों मे लोग पक्तिबद्ध होकर बैठते हैं और इस प्रकार बठते हुए रुतबे और हैसियत का खयाल रखा जाता है। कई बार इसी दर्जे को लेकर आपस मे झगडा खडा हो जाता है और कई समारोहो का रग भग हो जाता है।

राजपूत लोग सुन्दर होते हैं। रग प्राय गोरा होता है, नयन-नक्श कोमल मानो साँचे म ढले हो। राजपूत हाथ का काम नही करते। बहुत थोडे लोग खेती-बाडी करते हैं। जिन्होने दरिद्रता से तग आकर खेती-बाडी शुरू कर दी है वे भी बहुत सम्पन्न नही है।

क्योकि राजपूत स्त्रिया पर्दे मे रहती हैं इसलिए व अपन पुरुषो को कोई सहायता नही दे सकती। उनम बहुत-सी तो बावली से पानी तक भरकर नही लाती। एक राजपूत स्त्री के घर का काम भी अन्य स्त्रियो के समान ही होता है। वे चक्की पीसती खाना बनाती, चर्खा कातती और उपले पाथती हैं। पर क्योकि राजपूत स्त्री पर्दे म रहती है वह खेती बाडी के काम म पुरुष की सहायता नही कर सकती और न ही राठणी घिरतणी की तरह घर से बाहर कोई और परिश्रम कर सकती है। खेती बाडी की दृष्टि से राजपूत स्त्रिया धरती पर एक व्यय बोझ के समान ही हैं। एक बन्दोबस्त के अफसर न ठीक ही कहा था, 'राजपूत छत्ता एक अजीब सस्था है, इसम काम करने वाले तो थोडे हैं खाने वाले और आराम करने वाले बहुत होते है।' मदानो म ब्राह्मण और राजपूत स्त्रिया मास के नाम से घबराती हैं, पर पहाडी इलाका मे विधवाओ को छोडकर सब स्त्रिया मास खाती हैं। ऊँचे खानदान की पर्दे म रहने वाली स्त्रिया को छोडकर कागडा की सभी औरतें दुख सुख म शरीक होती हैं और मेला उत्सवा म आती जाती हैं। इनका पहरावा सादा किन्तु सुन्दर होता है उनका आभूषण बालू या बेसर होता है। बेसर केवल विवाहित स्त्रियाँ ही पहनती है।

प्राय राजपूत सेना अथवा नागरिक विभाग के कार्यालया म नौकरी करते हैं और अपन घर पसे भेजत रहते है। खेती के नये कानूनो ने जिनके अनुसार जमीन हल चलाने वालो की अपनी हो जाती है राजपूतो को झझोडकर जगा दिया है और ये लोग अपनी पुरानी मान्यताओ को छोडते हुए खेती बाडी का धधा शुरू कर रहे हैं।

इस इलाके मे कोई एक लाख ब्राह्मण हैं और ये लोग कुल जनसख्या का सातवा भाग हैं, सब के-सब ब्राह्मण अपन आपको सारस्वत ब्राह्मण बताते हैं? और इनकी कई जाति उपजातियाँ बन गई है। एक बडा अन्तर ब्राह्मणो मे यह है

कि उनकी एक श्रेणी हल चलाती है और दूसरी बिलकुल नहीं चलाती। हल चलाने वाले ब्राह्मण को निम्नकोटि का समझा जाता है। पहाड़ी ब्राह्मण मैदानी ब्राह्मणों के साथ उठते-बैठते नहीं हैं और न एक-दूसरे के हाथ का पका हुआ खाते हैं। पहाड़ी ब्राह्मण तथा उनकी स्त्रियां भी मांस खाती हैं किन्तु मैदानी ब्राह्मण इसका नाम तक नहीं लेते। औरंगजेब के राज्य में जब हिंदुओं पर बड़े अत्याचार होते थे और बेचारे हिंदुओं को जबरदस्ती मुसलमान बनाया जा रहा था तो बहुत से हिंदू अपना धर्म बचाने के लिए पहाड़ों में आबाद हो गए। यही लोग भी उन्हीं दिनों लाहौर से आये थे। कश्मीरी ब्राह्मण भी औरंगजेब के काल में ही कांगड़ा आये थे। तथा गुलेर कोट कांगड़ा अगल बगल के ग्रामों में बस गये।

राठी और घिरत कांगड़ा घाटी के किसान हैं। खेती बाड़ी का सारा बोझ इनके सिर पर है। राठी पालमपुर तथा हमीरपुर की तहसीलों में ज्यादा हैं। जो हैसियत पूरब में कनेता की है वही स्थान कांगड़ा के किसानों में राठियों और घिरतों का है। जहां जहां भी भूमि समतल और उपजाऊ है वहां घिरत बसते हैं और पहाड़ों की ढलानों पर जहां परिश्रम अधिक करना पड़ता है और उपज कम होती है वहां प्रायः राठी बसते हैं। जिस प्रकार कोई राठी कभी पहाड़ियों के आंचल में देखने में नहीं मिलता उसी तरह कोई घिरत पहाड़ियों के ढलानों पर दिखाई नहीं देता। दोनों जातियों अलग अलग बसने के कारण और अलग अलग क्षेत्रों में काम करने के कारण आकृति और आचरण में भिन्न भिन्न हो गई हैं।

राठी प्रायः स्वस्थ और सुन्दर होते हैं। उनका रंग गोरा और उनके पुट्ठे अच्छे गठे हुए होते हैं। उनके अच्छे स्वास्थ्य का कारण उनका कड़ा परिश्रम है जो उन्हें अपना निर्वाह करने के लिए करना पड़ता है। इनके विपरीत घिरत काले होते हैं। उनका कद नाटा होता है और शरीर कमजोर दुबला पतला सा। गिल्लड़ (घेघा) की बीमारी प्रायः इनमें पाई जाती है। जिससे ऐसा लगता है कि चाहे धरती खूब उपजाऊ हो चाहे देश विपुल सम्पदा सम्पन्न हो किन्तु यह आवश्यक नहीं कि लोगों का स्वास्थ्य भी अच्छा रहे। राठी पहाड़ियों में सबसे भले लोग माने जाते हैं। यह सरल और शान्त स्वभाव के होते हैं और अपनी खेती-बाड़ी के काम में लगे रहते हैं। आवश्यकता पड़ने पर हथियारों का उपयोग भी कर लेते हैं। राठी ईमानदार मेहनती और वफादार भी हैं।

घिरत मर्द प्रायः कद के नाटे हैं और अधिकतर गिल्लड़ रोग से पीड़ित होते हैं। गिल्लड़ (घेघा) स्त्रियों को भी हो जाता है। इन लोगों के मंगोलतातार कबीलों के नयन-नक्शों में मिलते-जुलते हैं। घिरतों में कोई विरली ही सुन्दरी दिखाई देती है। [illegible] कुछ मात्र जवान औरतों को सुन्दर कहकर खुश हो लें। यह लोग परिश्रमी कृषक हैं।

घिरतों की जातियां अनगिनत होती हैं। जिला होशियारपुर में तहसील दसूहा

के मुकेरियां स्थान के घिरत 'चांग' कहलाते हैं ऊना तहसील के घिरत बाहती कह जाते है। य लोग स्वय को दक्षिण से आए हुए बतलाते हैं। जिस देवता का यह विवाह शादियो के अवसर पर पूजते हैं, वह हाथ जोडे दक्षिण की ओर देख रहा होता है। ये लोग नाग के उपासक हैं और हर मोहल्ले मे इन्हान अपना पूजा स्थान बनाया होता है। हर वष श्रावण की पचमी को नाग देवता की विशेष पूजा की जाती है।

घिरत, अधिक्तर पालम, कागडा और रेहलू की घाटी मे मिलत हैं। दूलदून और हरिपुर की घाटी म भी बसे हुए हैं। इनकी जमीनें आम तौर पर सबसे ज्यादा उपजाऊ और सपाट होती हैं। घिरतो की स्त्रियां खुले मुह खेता म काम करती हैं और उनके मद मजदूरी करके पसे कमाते है। घिरत अनथक परिश्रमी हैं। इनके उपजाऊ खेतो म वष मे दा बार फसल होती है और सारे-का-सारा साल वे खेती-बाडी के किसी-न किसी धधे मे लगे रहते हैं। जब बरसात का मौसम होता है तब ये धान बोत हैं। धान बाने के लिए कम-से-कम एक फुट गहरे कीचड मे काम करना पडता है। इस काम म महिलाएं अधिक योग दती हैं। सारा सारा दिन वे अपने लहगो को ऊपर खासकर घुटन घुटने पानी मे खडी रहती हैं। धान की खेती बडी मेहनत मांगता है। जब फसल तैयार हो जाती है उसके बाद भी घिरत स्त्रिया फसल की सार-सँभाल म पूरा-पूरा हाथ बटाती हैं। अभी यह काम खत्म नही हाता कि सर्दिया का बुआई शुरू हो जाती है और फिर वही चक्र आरभ होना है। वसे सर्दियो की बुआई को इतना कठिन नही समझा जाता। खेता म काम करने के अतिरिक्त घिरत स्त्रियां लकडी सब्जी आम और दूध आदि कई सौदो को मडी मे ले जाकर बेचती हैं। इससे पता चलता है कि घिरत लोगा का जीवन कोई सरल जीवन नही है, ये लाग बडे पुरुषार्थी और कठोर परिश्रमी होते हैं, तथा कागडा की खेती का भार उनके कधा पर है।

चरवाहे

गद्दी लोग धौलीधार की पहाड़ियों के निवासी हैं। ये लोग प्राय चरवाहे होते हैं। कहीं-कहीं पर वे कृषि भी करते है। इन लोगों के गाँव धौलीधार के दोनों ओर कांगड़ा तथा चम्बा में बसे हुए हैं। इनकी इस निवास स्थली को गधेरन कहा जाता है। इनके घर साफ सुथरे और दूर से देखने पर बड़े सुन्दर लगते हैं। दीवारों पर गाचनी का लेप इनकी प्रमुख विशेषता है। ये लोग प्राय ४००० से लेकर ८००० फुट की ऊँचाई तक रहते हैं। इनके रेवड पहाड़ों की उचानों पर भी चरते हैं और आवश्यकता पड़ने पर निचानों में भी चले जाते है।

धौलीधार की दक्षिणी भुजा जो कांगड़ा घाटी की ओर उन्मुख है एकदम सीधी खड़ी है। यहाँ इस पर्वत के आँचल चरणों में चीड़ और बाँस के वन है। ऊँची चोटियाँ प्राय खाली-खाली और बर्फ में ढकी रहती हैं। जो ऊँची चोटियाँ वास्तव में एकदम तीखी नोकदार होती हैं उन पर बर्फ टिक ही नहीं सकती। धौलीधार की उत्तरी भुजा जो चम्बा घाटी की ओर उन्मुख है घास और फूलों से भरपूर है। इस ओर पहाड़ धीरे धीरे ढलता हुआ रावी नदी के तट तक पहुँच जाता है। यहाँ चम्बा के गद्दी बसते हैं। इन स्थानों पर बुरांस के लाल फूलों की झाड़ियाँ दिखाई देती हैं और सतरंगी पींग आकाश और पर्वत का मिलन कराती प्रतीत होती है। इस-जैसी सुन्दर धरती पर इन जैसे सुन्दर लोग किसका मन नहीं मोह लेंगे!

गद्दी किसान और चरवाहे चाहे चम्बावासी हों चाहे कांगड़ावासी दोनों ही जगह खुश रहते हैं। इनमें से अधिकांश के दो घर होते हैं एक पर्वत की उत्तरी ढलान पर और एक पहाड़ की दक्षिणी ढलान पर। एक घर से दूसरे घर की ओर वे प्राय आते जाते रहते है। यह आना जाना केवल उन दिनों में बन्द होता है जब धौलीधार के ऊँचे दर्रे बर्फ से ढक जाते हैं। एक ओर के गद्दियों के विवाह-सम्बन्ध प्राय दूसरी ओर के गद्दियों से होते रहते हैं। एक गीत में एक गद्दन चम्बा की ओर अपने श्वसुर के घर रहती हुई अपने बाबुल को याद करती है—जो कांगड़ा की ओर रहता है। इस गीत में माँ-बाप से बिछुड़ी यह लड़की पर्वत शिखर से विनती करती है कि वह झुक जाय ताकि वह अपने बाबुल के घर को एक नजर

देख सके। ये विचित्र प्रकार के लोग, जो शेष पहाड़िया से अलग प्रतीत होते है, पजाबियो को यह सुनकर हैरानी होगी कि मूल रूप म पजाबी है जो कुछ शताब्दी पूर्व वहा से उजडकर पहाडो की ओर चले आए थे। गद्दी से अभिप्राय है कि जो सब जातियो से विकसित हुए हो। ये लोग मूल रूप मे ब्राह्मण, क्षत्रिय राजपूत और हरिजन है। पर अधिकतर इनम क्षत्रिय ही है। इनम पजाब के क्षत्रियो की जातियाँ भी आम होती है। धौलीधार न उन तमाम लोगो को शरण दी जो अपने समय के शासको की क्रूरता से भयभीत होकर उसकी ओर भाग आए। प्राय यह माना जाता है कि गद्दी लोग औरगजब के काल म लाहौर से उन दिनों उजडकर आये, जब औरगजेब हिदुओ को बलात मुसलमान बना रहा था। इन लोगो ने सोचा कि इस्लाम कबूल करने से यह अच्छा है कि अपना घर-बार छोड कर धौलीधार के शैल-श्रृगो म जा छिपें। गद्दी लोगो ने अपनी सभ्यता को सँभाल सभालकर रखा है और नई रोशनी का उन पर अभी तक प्रभाव नही हुआ। अपन साधारण जीवन की निजी आवश्यकताए ये स्वय ही पूरी कर लेते हैं। उनका पहनावा उनका अपना है। उन्होंने अपनी प्रथाओ को, जो पजाब म अबतक समाप्त हो गई हैं अभी तक सुरक्षित रखा हुआ है।

ये लोग प्राय सीधे सादे और सज्जन होत है। इनकी सचाई पर कभी भी सन्देह नही किया जा सकता। सरल इतन है कि अग्रेज़ी राज्य के आरम्भ मे यदि किसी को कागडा के राज्याधिकारियो की ओर से जर्माना होता तो वह चम्बा के खजाने मे भी उतना ही जुरमाना जाकर भर देता क्योकि ये लोग घाटियो के निवासी गिने जाते है।

वन विभाग के आदेशो की ओर पहाडी लोगो से प्राय लापरवाही हो जाती है, पर इसके अतिरिक्त ये लोग कभी कभी जुर्म के दोषी सुनने मे नही आते। प्राय गद्दी हसमुख और प्रसन्न चित्त होते हैं और मेला-उत्सवो पर इकटठे लुगडी पी कर खूब नाचते हैं।

गद्दियो का पहनावा बाकी पहाडी लोगो स बिलकुल निराला होता है। ये लोग एक ढीला-सा ऊनी चोगा पहनत हैं, जिसको वे कमर पर काली ऊन की डोरियो से बाधते हैं। इनके सिर पर एक ऊँची टोपी होती है, जिनको यह सर्दी मे कानो तक खीच लेत हैं। टागें ये प्राय नगी ही रखते है। अपने चोगो मे ये हर प्रकार की वस्तुएँ सँभाल लेते है कई बार भेडो के नवजात मेमने इनके चोगो म से सिर निकालकर मासूम नजरो से बाहर झाँक रहे होत हैं। चोगो मे ये चमडे के थलों म अपनी रोटी और आलू आदि लपेटकर रखते हैं। गद्दनो का चोगा पुरुषो के चोगे से भिन्न होता है, जिसको ये मर्दों से कुछ अलग तरीके से पहनती हैं। इनके चागों पर प्राय लाल फूल कढे हुए होत हैं।

गद्दी लोग अपने पुराने पहनावे को बहुत पसन्द करते हैं इसलिए उन्होंने

अभी तक अपना पहनावा नहीं बदला। एक गद्दन लड़की अपने गीत में कहती है—
सलवार रानियों को भले ही अच्छी लगे, पर हम पहाड़ियों को अपने ही वस्त्र शोभा देते हैं।"

गद्दनें रंग बिरंगे रूमालों की बहुत शौकीन हैं जिनको ये बड़े चाव से दिखाती फिरती हैं। गद्दनें अपने मर्दों को भी उनके चोगों और टोपियों में ही देखकर खुश होती हैं।

गद्दियों के गीत भावनाओं की दृष्टि से पंजाब के पहाड़ी गीतों में सबसे सुन्दर हैं। यहाँ के शुद्ध जलवायु ने यहाँ के दूध दही ने और यहाँ के लोगों के परिश्रमी जीवन मूल्यों को बहुत सुरुचि प्रदान की है। इनका मुक्त स्वच्छन्द जीवन इनके लोक गीतों में झलकता है। बाहर चरागाहों में प्रायः नौजवान लड़के-लड़कियाँ मिलते हैं और उनमें प्रेम हो जाना कोई अनहोनी बात नहीं।

गद्दी लोगों के विवाहों में लड़के लड़की की स्वीकृति ली जाती है। यदि लड़की की इच्छा के विरुद्ध किसी अन्य लड़के से उसकी सगाई हो जाय तो कई बार लड़की अपने-अपने प्रेमी के साथ चली जाती है। ऐसे विवाह झाड़ फूँक कहलाते हैं। ऐसे विवाह पर न किसी पुरोहित की आवश्यकता पड़ती है न किसी सगे सम्बन्धी की। झाड़ियों को आग लगाकर लड़का लड़की आग के चारों और आठ बार परिक्रमा करते हैं जिसके पश्चात् वे पति पत्नी बन जाते हैं।

ब्राह्मणों को छोड़कर गद्दियों में विधवाओं के पुनर्विवाह हो जाते हैं। विधवा स्त्री को प्रायः अपने पति के बड़े अथवा छोटे भाई से विवाह करने के लिए प्रेरित किया जाता है ताकि वह पवित्र जीवन व्यतीत कर सके। जब किसी विधवा का विवाह होता है तो जोड़े को उनके एक कम्बल पर बिठाया जाता है। उनके सामने एक दीपक जल रहा होता है। पानी का कलश होता है जिस पर पान आड़ू के पत्ते और दूब रखी होती है आस-पास गूगल की सुगंध फैल रही होती है। कलश को कुम्भ कहते हैं। लड़का लड़की दोनों पूजा करते हैं। लड़का विधवा के सिर पर चुटीलना रखता है। एक स्त्री उसके बालों में कंघी करती है और उस चुटीलने से उन्हें गूँथ देती है। इसके बाद लड़का लड़की के हाथ पर नथ रखता है और ब्याहता लड़की नथ को नाक में डाल लेती है। इसके बाद सगे सम्बन्धियों और अतिथियों को दावत दी जाती है। इस रस्म के लिए भी किसी पुरोहित की *आवश्यकता नहीं होती।*

गद्दियों में विवाह की साधारण रस्म बहुत लम्बी चलती है। ब्याह से पहले लड़के के शरीर पर उबटन मला जाता है। उसकी दाहिनी कलाई पर तीन काले ऊनी डोरे बाँधे जाते हैं, ताकि उसे नज़र न लग जाय। लाल दुपट्टे में ढककर उसकी माँ उसे आँगन में ले जाती है जहाँ उसे नहलाया जाता है। नहलाने के बाद काले डोरे उतार दिए जाते हैं और लड़का एक सकोरे में सुलगते कोयलों को

अपने पर से उलट देता है, ताकि अगर कोई बुरी परछाई आँगन में उस पर पड़ गई हो तो उसका प्रभाव जाता रहे। फिर पुरोहित मौली बाँधता है, जिसको कँगना कहते हैं—इसके साथ ही लड़के को घी और गुड़ खाने को दिया जाता है। इसके बाद लड़के को योगियों के वस्त्र पहनाए जाते हैं। कानों में चार बालियाँ, कमर में धोती और कंधों पर भिखमंगों जैसी झोली डाल लेता है। फिर पुरोहित उसके हाथ और पैरों को पानी में धोता है, उसके मुँह पर भी पानी के छींटे मारता है। इस प्रकार लड़के का बदरीनारायण त्रिलोकीनाथ और मणिमहेश के तीर्थ धामों का स्नान हो चुका समझा जाता है। इसके बाद लड़का अपने सम्बन्धियों से भिक्षा माँगता है। ये लोग उसे रोटी के टुकड़े देते हैं और अपने-अपने वित्त के अनुसार उसको भेंट-बकरियाँ आदि देने का वचन देते हैं। फिर लड़के को एक टोकरे में बिठाकर उसके सिर पर सूखी घास रखकर उस पर एक छुरी रखी जाती है। लड़के का मामा सरसों के तेल का एक बरतन थाम लेता है जिसमें से तेल लेकर लोग लड़के के सिर पर डालते हैं। फिर वह एक बाण लेकर धनुष पर उसको चढ़ाता है और धनुष उठाकर एक मरी हुई बकरी के सिर का निशाना बाँधता है। इसके बाद फिर उसको गुड़ और घी दिया जाता है और अब वह सिर पर एक सफेद पगड़ी बाँध लेता है और सफेद ही कुरता पहनता है। लाल चादर अभी तक उसके पास होती है। लड़के वालों की ओर से लड़की के लिए उपहार जिनमें कपड़े, कंघी, छुहारे, किशमिश, बाजरा और चावल होते हैं, एक जुलूस की सूरत में लड़की के घर ले जाए जाते हैं। लड़के की भाभी लड़के की आँखों में सुरमा डालती है और उसके सिर पर सहरा बाँधती है। ब्राह्मण पुरोहित एक थाली को जिसमें ज्योतियाँ जल रही होती हैं, तीन बार लड़के के सिर पर से घुमाता है, लड़के की माँ तीन रोटियाँ, उस पर वारकर तीन दिशाओं में फेंकती है। लड़का फिर आँगन में रखी हुई पालकी में बैठ जाता है यहाँ बेटे की माँ उसे अपना स्तन चूसने को कहती है। पालकी को चार कुम्हार उठाकर लकड़ी के एक खोने के पास ले जाते हैं। लड़का, लड़के की माँ और पुरोहित इसकी पूजा करते हैं। यहाँ एक कलश लड़के के सामने रखा जाता है। लड़का इसमें पैसे डालता है और फिर बारात लड़की के गाँव की ओर चल पड़ती है। बारात में मित्र और सम्बन्धी होते हैं। बारात के आगे तूतनिया और ढोल बज रहे होते हैं।

लड़की के गाँव के किसी घर में सुस्ताकर बारात फिर एक पुरोहित के साथ ससुराल वालों के यहाँ विराजती है। लड़की की माँ घर की ड्योढ़ी पर स्वागत करती है, वह जल रही ज्योतियों की थाली को सात बार लड़के के सिर पर से वारती है और आँगन में तीन रोटियाँ फेंकती है। इसके बाद सास चली जाती है और श्वसुर आकर दूल्हे के गले में एक सफेद कपड़ा डालता है। और उसके पाँव पकड़कर उसकी पूजा करता है। ब्राह्मण पुरोहित जो साथ होते हैं, एक

पत्ते म चावल अखरोट और फूल आदि रखकर दी है और मड़क को साम। बरामदे म ले जाया जाता है जहाँ उस लड़की के सामने बिठा लिया जाता है। अब पुरोहित लड़के तथा लड़की का गठन स पकड़कर उनके कंधा का तीन बार आपस म टकराता है। फिर लड़के लड़की का बता लिया जाता है, जिसका य एक-दूसर पर उछालते हैं। लड़के-लड़की के दोनों ओर ज्योतियाँ प्रज्वलित हो रही होती हैं। फिर लड़की, लड़के को चमली की सात टहनियाँ पकड़ाती है। लड़का चमेली की इन कोमल टहनियों को एक एक करके अपने पाँव-तर कुचल देता है। इस प्रकार लड़के लड़की की एक-दूसरे स जान-पहचान करवाई जाती है।

इस प्रकार लड़के-लड़की को बिठाकर लड़की का पिता अपनी बेटी का लड़के के हवाले कर देता है फिर वह लड़की और लड़के के पाँव पड़ता है। इसके बाद गणेश, ब्रह्मा, विष्णु कुम्भ तथा एक जननी ज्योति की उपासना की जाती है। लडका, लडकी की चादर पर लाल रग डालता है पंडित चार पत्ते अखरोट थोड़ी सी दूब फूल तथा कुछ चावल लड़की की अंजुलि म देता है। लड़का अपना हाथ लड़की के हाथों पर रखता है। फिर पुरोहित लड़के का अंगोछा लड़के और लड़की दोनों के हाथों पर लपेट देता है। इसके बाद लड़के को अन्दर ले जाते हैं और दोनों को कामदेव की तस्वीर के सामने बिठाकर लड़की की माता और बहनें उस कंघी करती हैं। बाल बाहती और साथ-साथ गीत भी गाती जाती हैं।

इसके बाद लडके के अँगोछे स लडकी की चादर का कोना बाँध लिया जाता है और लड़की को उसका मामा उठाकर एक चबूतरे के नीचे ले जाता है जहाँ हवन द्वारा ब्याह-संस्कार किया जाता है। यहाँ लड़की का पिता एक बार फिर लड़के-लड़की के पाँव पड़ता है और गणेश ब्रह्मा विष्णु कुम्भ चार ऋषियों तथा चार वेदों आदि की पूजा की जाती है। फिर भुने हुए जौ एक छाज म डाले जाते हैं। लड़का एक मुट्ठी जौ लेकर उनको तीन ढेरियों म रखता है। लड़की का भाई अपने दाएँ हाथ स उन ढेरियों को एकदम गिरा देता है। यह रस्म इसलिए की जाती है कि लड़के-लड़की का यदि कोई पूर्व सम्बन्ध हो तो उसे इस घड़ी के बाद से समाप्त समझा जाय। इसके बाद लड़का और लड़की पवित्र अग्नि के चारों ओर दाए से बाए चार फेरे लेते हैं। जब लड़का लड़की फेरे ले रहे होते हैं पास खड़े स्त्री-पुरुष गाना शुरू कर देते है।

जब यह रस्म पूरी हो जाती है तो लड़का लड़की को डोली म बिठाकर अपने घर ले जाता है और साथ ही उसका दहेज भी ले जाता है। जब दुल्हन दूल्हे के घर पहुँचती है तो कई रस्मों और गीतों स उसका स्वागत किया जाता है।

लड़के की माँ नए ब्याहे जोड़े की पूजा करती है। इसके बाद कामदेव की मूर्ति के सामने रखे मिट्टी के दीपक के पास एक पानी का घड़ा, एक चूटीलना और अनार रखे होते हैं। यहाँ पुरोहित लड़की का घूंघट उठाता है और लड़के तथा

लडकी की कलाइयों पर बँधे डोरे दो व्यक्तियों से ढीले करवाये जाते हैं जो उसी क्षण से लडके-लडकी के धर्म भाई बन जाते हैं। इसके बाद सम्बन्धी और मित्र लडके लडकी को उपहार भेट करते हैं। लडकी का घूघट उठवाई भी दी जाती है। इसके बाद दावत होती है और गाना होता है, गद्दियों के एक लोक-गीत म दूल्हे को 'काहू' कहकर बुलाया गया है, और उसको समझाया गया है कि अब वह आवारों की तरह न घूमे बल्कि गृहस्थ-जीवन की जिम्मेदारियों को सँभाले।

गद्दियों म कुछ किसान और कुछ चरवाहे हैं। उनकी सम्पत्ति भेड और बकरियाँ ही होती हैं। सर्दियों मे यह अपने रेवड को कागडा और सुकेत की घाटी मे चराते हैं और गर्मियों म ये लोग धौलीधार को पार करके चम्बा तथा लाहौल की ओर चले जाते हैं। कइयों की भूमि पर्वत के दोनों ओर है। वे सर्दियों म गेहूँ की फसल तो कागडा म उगाते हैं और गर्मियों की फसल धौलीधार के दूसरी ओर भरमौर म जा बोते हैं। गद्दी अपने सीधे-सादे स्वतन्त्र ग्रामीण जीवन को पसन्द करते हैं।

गद्दी लोग शिवजी की उपासना करते हैं। उनका विश्वास है कि शिवजी कैलाश पर्वत मे मणि महेश की चोटी पर रहते हैं। भरमौर क्षेत्र को शिव भूमि भी कहा जाता है। गद्दी लोगों के अनुसार शिवजी छ महीने कैलाश पर रहते हैं और आश्विन म नीचे पियालपुर उतर आते हैं जहा से चैत्र म वे फिर ऊपर चले जाते हैं। यही मशीन है जबकि गद्दी लोग भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर चले आते हैं।

गद्दी लोग, पहाडों जगलों और धरती की कई देवियों की पूजा करते हैं। जब पहाडी इलाके म तूफान आ जाता है यह बर्फ के ग्लेशियर पत्थरों और पहाडों को गिराते हुए चोटियों से चल पडते हैं तो ये लोग समझते हैं कि दैत्यों का आपस म सग्राम छिड रहा है। जब किसी दर्रे म से गद्दी गुजरते हैं तो वे उस दर्रे के देवता की विनती करते हुए जाते हैं, ताकि उनके रेवड कुशलतापूर्वक पर्वत पार हो जायें। दर्रे का देवता एक पत्थरों की बनी टेकरी म रहता समझा जाता है। इस देवता के भय से उधर से आने-जाने मुसाफिर ऊँची आवाज मे बात नहीं करते क्योंकि ऊँची आवाज म बातें करने से उनका विश्वास है कि बर्फ गिरने लग जाती है। मदानों से गए कई यात्री अनजाने म बातें करते हुए यहा बर्फ के नीचे दबकर नष्ट हो गए बताये जाते हैं।

कागडा और चम्बा घाटी के गद्दी-चरवाहे छ महीने लाहौल की घाटी मे रहते हैं। ये लोग बडे सयाने और मेहनती हैं और यात्रा के कष्टों से घबराते नहीं। कागडा से लाहौल पहुँचने म इन्हे एक महीना लग जाता है। चाहे वे अपनी एक एक भेड-बकरी को पहचानते हैं फिर भी कई बार उनकी भेट-बकरियाँ खो जाती हैं। कई बार पहाडों की कन्दराओं म आग जलती दिखाई देती है। ये आग

सुन्ता रह गद्दी चरवाहों की जलाई हुई होती है। ये लोग बाघ भालू आदि को दूर रखने तथा गर्मी से बचने के लिए आग जलाते हैं। ऊन का चोगा पहने और एक कम्बल ओढ़े कई बार ये लोग बर्फ में सो जाते हैं। फिर भी इन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। कई बार ये अपने रेवड़ में जा छिपते हैं। सर्दी से बचने के लिए दो तीन भेड़ों को अपने ऊपर डाल लेते हैं। वर्षा के दिनों में ये लोग पहाड़ों की खोह में घुस जाते हैं। इनकी भेड़ें बड़ी पली हुई होती हैं और कुमाऊ के भोटिया व्यापारी इन्हें कुमाऊ और तिब्बत के बीच माल ढोने के लिए खरीदते हैं। लाहौल में इस तरह के आए रेवड़ के चरने की जगह को सारयाबण्ड कहते हैं। इन स्थानों को अलग अलग चरवाहों के लिए बाँटा गया होता है। हर चरागाह की हद बँधी हुई होती है और कुल्लू के राजा अथवा लाहौल के ठाकुर से ही इनका कब्जा मिल सकता है। आजकल लोगों ने इन जगहों को आगे बेचना भी शुरू कर दिया है और इस प्रकार कई जगहें अपने पहले मालिकों की मिल्कियत नहीं रहीं। पहले मालिकों का चाहे इन चरागाहों पर कोई अधिकार नहीं फिर भी नए मालिकों के रेवड़ आते-जाते हुए पुराने मालिक के खेतों में एकाध दिन ठहरने के कारण भेड़-बकरियों की मेंगनियों के रूप में खाद दे जाते हैं। हर बार गुजरते हुए गद्दी लोग नगी को एक भेड़ लगान के रूप में देते हैं। प्राय गद्दी लोग एक-दो भेड़ें गाँव वालों को भी देते हैं जिन्हें काटकर दावत उड़ाई जाती है।

जगत के वृक्षों में बनबीर बसी हुई बताई जाती है। ये तुन सेमल और अमराट के पेड़ों में रहना ज्यादा पसन्द करती है। कालाबीर और नरसिंह पनियारी की अनुपस्थिति में उनकी स्त्रियों को तंग करते हैं। अगर कभी पति उस समय लौट आये जब बीर मनुष्य के रूप में होता है तो बीर के कहने पर पति की मृत्यु भी हो सकती है। किन्तु इस बीर की उपासना करके टाला जा सकता है। केहलू बीर पहाड़ की चोटियों पर रहता माना जाता है। जब यह क्रोध में होता है तो पहाड़ के पत्थर ऊपर से गिरा देता है। पहाड़ों की ऊँची चोटियों पर बनसयां रहती हैं। ये स्त्रियों की इष्ट होती हैं और ढोर डंगरों की भलाई के लिए इनकी आराधना की जाती है। बनाट, घाना, नदियों तथा जल प्रपातों की अधिष्ठात्री हैं। इनकी अर्चना सिंदूर और चवना आदि चढ़ाकर की जाती है। अगर कहीं किसी अन्य पहली बार हल चलाना होता है तो चार कुवाँरियों को खेतों में ले जाकर पहले उनके पैर धोए जाते हैं फिर उनके माथों पर रोली का टीका लगाया जाता है और उनका मुँह मीठा करने के लिए गुड़ दिया जाता है तथा खेतों की पहली उपज देवता की सेवा में भेंट चढ़ाई जाती है। हर गद्दी घर के सामने बने हुए चबूतरे पर घर के देवता की स्थापना की हुई होती है और वहाँ उसकी उपासना की जाती है। इन देवी-देवताओं के अतिरिक्त नाग देवताओं की भी पूजा की जाती है। इन नागों की उपासना इन्द्रौणों के रूप में की जाती है जिसको हर गडरिया

अपन पास रखता है खास तौर पर जब वह बाहर रेवड चरा रहा हो। अलग-अलग देवी देवताओ की पूजा के लिए अलग अलग दिन नियत होते है।

यदि कृषि करने वाले किसी भी कबीले के जीवन को पूरा पूरा समझा जा सकता है तो वह गद्दियों का है। उनका मुख्य भोजन जौ है जिसे वे स्वय उपजाते हैं। जौ भूनकर वे सत्तू बना लेत हैं। पवतीय यात्राओ मे सत्तू इनके काम आत हैं। चीनी की जगह वह प्राय शहद बरतते है। कभी कभी भेड-बकरियो का मास भी खाते हैं, पर अधिकतर व इनके दूध पर ही निर्वाह करते हैं। गद्दी लोग, मण्डी के क्षेत्र मे गुम्मा की खान का नमक पसन्द करते हैं। अपने वस्त्रा के लिए, भेडा की ऊन पर्याप्त होती है। इस ऊन को उनकी स्त्रिया धुनकर अटेरन पर लपेट लेती हैं। अपने सफेद चोगा और टोपो मे ये लोग बहुत भले जँचत हैं। काले रग के कुत्ते उसके दिन रात के साथी होते हैं और इनमे से कइ कुत्ते बाघा का शिकार भी करते हैं। इन कुत्ता के गले म पडे लाहे के पट्टे बाघो से लडते समय उनकी रक्षा करते हैं।

पजाब के हिमालय गिरि शृ गो मे गद्दी स्त्रिया अपने सौन्दय के लिए विख्यात हैं। सीधा-सादा जीवन दुग्ध-पान और आर्यो का रक्त उनकी सुन्दरता के तीन मुख्य कारण हैं। इनके नयन-नक्श साँचे म ढले से होते हैं—तीखी नाक, चचल नयन, शक्ल-सूरत प्यारी प्यारी और रूप मनमोहक।

पालम घाटी की राजपूत और ब्राह्मण सुन्दरियो की अपेक्षा गद्दी स्त्रिया हँसमुख और चचल होती हैं। इनम से कई तो ऐसे लगती है, मानो पवतो की रानियाँ हो। इनकी सुन्दरता का बखान पहाडो के अनेक गीतों म किया गया है। कागडा कला का विख्यात सरक्षक ससारचद भी एक गद्दी सुन्दरी से प्रेम करने लग गया और उसने उसे अपनी रानी बना लिया।

मेलो त्योहारो म गद्दी लोग नाच गाकर अपना जी बहलात हैं। जब ये नाचते हैं, तो बडे बडे ढोल और नगाडे पीटते हैं। नत्य मे केवल पुरुष ही सम्मिलित होते हैं। स्त्रियाँ पास खडी होकर देखती है। नाच देखने के लिए स्त्रिया अपने आपको गहने आदि से खूब सजाकर आती हैं इसम कोई सन्देह नही कि इस प्रकार स्त्रियो को देखकर मद एक नशे म आकर कितनी देर तक नाचते रहते है। नाचने से पहले पुरुष खूब छककर लुगडी पीते और जी भरकर खाते ह।

कुजू और चचला दो गद्दी प्रेमी हो चुके हैं और आजकल के गीता मे गद्दी लोग उनकी प्रेम-कथा गाते ह। कुजू, चचलो स मिलने के लिए तूफानी नदी और भयानक जगल को लाघकर आया करता था। उसे वन के पशुआ से इतना भय नही था जितना अपन प्रतिद्वन्द्वियो का। चचला अपने प्रेमी को समझाती है, 'तू अँधेरी रातो म बाहर न निकला कर, तेरे शत्रुओ के पास भरी हुई बन्दूकें है। चचलो का एक सपना था कि उसका एक प्यारा-सा घर हो जिसके किवाडों खिडकिया म शीशे लगे हो। यह चाह गद्दी लोगों के कई गीतो म अभिव्यक्त होती है। चचला

को जब पता चलता है कि कुंजू लाहौल घाटी की ओर जा रहा है तो वह चश्मे पर कपड़े धोती हुई, अंजुलि-अंजुलि भर अश्रु बहाती है। चंचलो अपने प्रेमी को कोई निशानी देने के लिए कहती है और कुंजू उसे अँगूठी, निशानी देता है और चंचलो उसके बदले उसे नीले रंग का एक रूमाल देती है।

कुंजू और चंचलो के गान के समान फुलमो और राझू का प्रणय गीत भी गद्दियों में बड़ा प्रचलित है और फुलमो का विलाप गल्ला होइयाँ बीतियाँ बड़े चाव से गाया जाता है।

कई गीतों में भाभी देवर के प्रेम के किस्से भी गाए जाते हैं। हरिसिंह की अपने बड़े भाई की पत्नी से प्रीति प्रायः गीतों में वर्णित की गई है। हरिसिंह पहाड़ की चोटी पर बाँसुरी बजाता है ताकि बाँसुरी की आवाज़ उसकी भाभी तक पहुँच जाय। हरिसिंह सोचता है कि वह पहाड़ की चोटी पर एक घर बनायगा। तूफ़ानी नदी को वह तैरकर पार करता है क्योंकि पुल पर पुलिस का पहरा है। भाभी, हरिसिंह को समझाती है कि तू मेरे विवाहित जीवन को इस तरह बरबाद न कर। किन्तु फिर हरिसिंह के प्रेम में विह्वल सब-कुछ भूल जाती है। अपने प्रेमी को वह भटूरे और खीर खिलाती है और फिर वे दोनों बाहर जंगल में चले जाते हैं।

गाँव की बावली मन्दाना में गाँव के कुएँ की तरह स्त्रियों के मिलन की एक खास जगह है जहाँ स्त्रियाँ मिल बैठती हैं और गप्पें हाँकती हैं। इसलिए नौजवान लड़कियाँ खुशी-खुशी पानी भरने के लिए बावली पर जाती हैं।

धौलीधार के हिममंडित शिखरों का उल्लेख बार-बार गद्दी-गीतों में आता है। गद्दी लोग धौलीधार की सुन्दरता और महानता से परिचित हैं। ये लोग धौलीधार को माता कहकर सम्बोधित करते हैं क्योंकि इसकी ढलानों पर इनकी भेड़-बकरियों की खुराक पैदा होती है। और इसमें से फूटने झरनों के स्वच्छन्द जल से घाटी की खेतियों को सींचा जाता है। और झरनों का कल-कल करता पारे-जैसा पानी घाटी के रूप को एक अनूठी सुन्दरता प्रदान कर देता है।

फुलमो और राँझू

फुलमा, चम्बा के वधेरन क्षेत्र के एक ग्राम की सु दरी था। सोलह वप की आयु, चमचम करता रूप चहकती और दहकती जवानी! जब भेडो का रेवड लेकर निकलती तो एक बार सब उसके मुह की ओर ताकते और उसके रूप की सराहना करते। काले-काले लम्बे बाल चाद-जैसा माथा और खजन की तरह नाचती हुई आखें! तीखी नाक, लाल होठ, गोल ठोडी और सेब-जसे गुलाबी गाल। ऊँची सुराहीदार गदन, उभरा हुआ वक्ष, एक लम्बी, दुबली पतली नार। गले म बँधी काली डोरी, उसके रूप को और भी चार चाँद लगा दती। जब लचक-लचक चलती, तो लगता जसे कोइ हसिनी चली जा रही हो और उसका रूप चारो ओर अपनी महक बिखेर रता।

एक दिन फुलमो, बावली पर पानी भरने गई। उसने घडा पानी मे डुबोया और कल-कल शब्द हुआ। पानी से भरा घडा उठाने को ही थी कि देखती क्या है कि एक बाँका जवान कसीदा की हुई बेल बूटो वाली टोपी पहने बासुरी हाथ म लिये उसकी ओर आखें फाड फाडकर देख रहा है। एक-दूसरे को देखते ही दोना मे प्रेम हो गया। मुह से कोई बोल न निकला बस आखो ने ही वह सब कह दिया जो उनके मन म था। ऐसा लगा जैसे चाद और सूरज की जोडी मिल गई है। फुलमा न घडा उठाया पर पाव मन मन के हो गए और चलने से इकार करने लग। उसे लगा जस शरीर मे बिजली कौंध गई हो। अपनी यह दशा देखकर, उसने आस पास देखा कि कही किसी और ने तो उसकी इस हालत को नही देखा? उसके पग धीरे धीरे बढ रहे थे किन्तु मन पीछे को खीच रहा था। जब झूमती हुई वह अपने घर को चली तो लग रहा था जस काम की लहरें उमड रही हो। उसकी मोटी मोटी नशीली आँखें ऐसी चमक रही थी जस बहार म किसी हिरनी की चमकती हैं। उसने मुडकर उसको देखा, वह अभी तक बावडी के पास बैठा था। दोना के नयन फिर बिखरे और वह गोपन सन्देश जो हृदय, हृदय को भेजता है एक ने दूसरे को दिए।

फुलमा को पता चला कि यह नवयुवक साथ वाले गाँव के नम्बरदार लछमन का लाडला बेटा राभू है। इसक बाद तो, जहा फुलमा की भेडें चरने जाती, वही

राँभू अपनी बाँसुरी के साथ आ धमकता और मधुर धुनों से उसे मोहित करता। वायु बाँसुरी के मधुर संगीत से भर भर जाती। नीली घटनाओं में बगुले बड़े सुन्दर लगते हैं पर जिसने अपनी प्रेयसी की काली-काली आँखों की गहराइयों में झाँका है उसके लिए घटनाएं क्या चीज हैं। दोनों ने एक दूसरे को वचन दिए सौगन्धें खाई कि मरेंगे तो एक साथ जियेंगे तो एक साथ।

फुलमा के पड़ोस में एक तेली का घर था। एक दिन राझू सरसों लेकर तेली के यहाँ तेल निकलवाने आया। क्या देखता है कि फुलमा त्रिंजन में बैठी चरखा कात रही है। लड़कियों में बैठकर वह त्रिंजन की रानी लग रही थी। उसकी गोरी गर्दन पर बंधा काला डोरा बड़ा जंच रहा था! और जब वह हँसती, उसके मोतियों-जैसे दाँत ऐसे लगते जैसे बाग में चम्पा खिली हो। राझू को देखकर उसको कातना भूल गया और पूनी हाथ में ही रह गई। तेली समझ रहा था कि यजमान सरसों की पिलाई देख रहा है पर उसकी आँखें तो फुलमा के चेहरे पर गड़ी हुई थीं! दोनों एक-दूसरे की ओर देखते पर बोल कुछ न पाते कि कहीं प्रेम का भेद खुल न जाय। लज्जा के मारे फुलमा का मुँह लाल हो गया। एक रंग आता एक जाता।

एक बार दोनों की दाने भुनवाने के भाड़ पर भेंट हो गई। फुलमा की सहेली इन्दरदेई मक्की के दाने भुनवाने हुए कहारी से कह रही थी कि खीलें जरा और करारी भून दे। इतने में दानों की डलिया उठाए राझू भी आ गया और कुछ देर बाद फुलमा भी। चाहे दाने भुनवाने की बारी राभू की थी पर उसने कहा कि अभी वह और रुक सकता है कोई जल्दी नहीं। इस बहाने उसे फुलमा को देखने का और अवसर मिल गया और भाड़ पर से तभी गया जब सब लड़के-लड़कियाँ दाने भुनवा चुके।

फुलमा के गाँव में एक कृष्ण जी का ऐतिहासिक मंदिर था। पूनो अमावस्या और संक्रान्ति पर वहाँ बड़ा मेला लगता और आस-पास के गाँवों से स्त्री-पुरुषों की टोलियाँ ढोल और चिमटे बजाती हुई आतीं। राँझू कभी भी इस मेले को देखे बिना नहीं रहता था। गाँव का विद्वान् पंडित संतराम बड़े रस से भागवत पुराण की कथा कहता था। दरी के एक ओर स्त्रियों की टोली बैठती बीच में पंडित जी सामने लड़के और पुरुष। बुजुर्ग लोग तो आँखें मींचकर ईश्वर का ध्यान करते तथा कथा का रस लेते किन्तु लड़के तो लड़कियों की ओर ही ताक-झाँक करते। राँझू की टिकटिकी तो फुलमा पर ही लगी रहती और दोनों को कुछ सुध-बुध न रहती कि पंडित जी क्या उच्चार रहे हैं।

इश्क मुश्क छिपे नहीं रहते। गाँव में राँभू तथा फुलमा के प्रेम की चर्चा अब हर किसी की जबान पर थी। लोग राँभू को बार-बार फुलमा की गली में देखते। कभी वह भेड़ों का मोल करने आ जाता, और कभी दूध खरीदने के बहाने,

चाहे उसके घर दुधारू बंधे रहते थे और दूध घी की कोई कमी न थी। रांझू के पिता को पता चला तो उसने लडके को समझाने की कोशिश की कि फुलमा एक गरीब गडरिये की लडकी है, और वह उससे शादी नही करने देगा। इसमे उसके खानदान की हेठी है। वह नम्बरदार है बीस बीघा का स्वामी, और फुलमा का बाप भेडें चराने वाला, जिसके पास हैं कुछ पचास भेडें, एक गाय और बस एक झोपडी, जिसमे कुटुम्ब रहता है, इसके सिवा एक फूटी कौडी भी नही। लछमन ने धमकाया कि यदि रांझू अपने निश्चय से न टला तो वह अपनी जायदाद उसके छोटे भाई के नाम कर देगा। इस बात का भी रांझू पर कोई प्रभाव होता न देख, उसने जल्दी-जल्दी, एक दूसरे गाँव की लडकी देखकर उसका रिश्ता तय कर दिया। रांझू की सगाई हो गई। इतना ही नही, उसने रांझू के ब्याह की तारीख भी पक्की कर ली।

बाप की डांट फटकार, और धमकियाँ सुनकर रांझू दुविधा मे पड गया। एक ओर खानदान की इज्जत और जायदाद, और दूसरी ओर उसके सपनो की रानी। यदि बाप की मानता है तो अपनी प्रेमिका को छोडना पडता है, और यदि अपने दिल की माने तो खानदान और घर-बार छूटता है। उसको अपनी बासुरी भी भूल गई और चिन्ताओ के सागर मे डूबा, वह खेतो की ओर निकल गया।

मक्की के भुट्टे पक रहे थे, और उनके सूत काले हो चले थे। सरकंडा के सफेद ममना जैसे फूल हवा मे झूम रहे थे जैसे हजारो चँवर डुल रहे हो। प्रेम की मारी फुलमो भी रांझू की तलाश मे नदी की ओर चल पडी। वहाँ के वृक्ष लाल किरमची फूलो से लदे हुए थे। मधुमक्खियो का जोडा एक फूल पर बैठा था। दोनो इकट्ठे शहद पी रहे थे। एक भवरा घू घू करता हुआ फूलो पर मडरा रहा था। एक पेड पर फाख्ता का जोडा बैठा था और वे चोच से चोच मिलाकर आपस मे प्यार कर रहे थे। इनको देखकर फुलमो को याद आई। मोर जोर से बोला, पर कोई मोरनी उसके पास नहीं थी। मोर की आवाज सुनकर फुलमा की उदासी और भी बढ गई। आखिर उसको रांझू एक पेड के नीचे बैठा दिखाई दिया। उसके चेहरे पर भी उदासी छाई हुई थी और उस पर चिन्ताओ के बादल मँडरा रहे थे। फुलमो के बहुत कहने पर उसने अपनी उदासी का कारण बताया।

फुलमा बोली 'ए मेरे सिरताज! हृदय के स्वामी! चल यहा से निकलकर अमृतसर चले जाय। वहा तू कोई नौकरी कर लेना। मै तेरे लिए रोटी बनाऊँगी। जब तू थककर आयेगा मैं तेरी सेवा किया करूगी।'

'मुझसे शहरो की नौकरी नही हो सकेगी, शहरो की तग गलियाँ, और शोर गुल मे तो मेरा दम घुटता है।'

'मैं तेरे बिना नही रह सकती। जब तू मेरे पास नही होता मुझे सब सूना सूना लगता है, और मेरा जी नही लगता।" इतना कहकर प्रेम की मारी फुलमो

मुरझाकर लुढक गई, जस चम्पा की कली वर्षा मे भीगकर भूमि पर गिर जाय।

फुलमा को यही लगता कि उसके प्रेमी के मन म कोई अन्तर आ गया है। जब राझू ने उससे विदा ली, वह कुछ बोलना चाहती थी, पर बोल न सकी। उसका दिल गम से भरा हुआ था। उसने दोना हाथा से अपना मुह ढाप लिया और जी भरकर रोई। जब मन कुछ हल्का हुआ तो गिरती-पडती घर लौट आई।

भोर होत ही फुलमो की पडोसिन सतो आई, बाली अरी फुलमा क्या तुझे मालूम है कि राँझू के ब्याह की तयारियाँ हा रही है, और आज उस उबटन लगाया जायगा। यह सुनत ही फुलमा को लगा जस उसे साप सूध गया है। उसस कुछ कहते न बना। जब ढालक की आवाज़ आई तो दौडी-दौडा नम्बरदार के घर गई। क्या दखती है कि लछमन के घर म ब्याह की तयारिया हो रही हैं और राझू को उबटन मला जा रहा है। राझू की ताई चाची, भाभिया और पडोसिनें उबटन मल रही थी और गा रही थी। फुलमा भी वहा पहुच गइ। मा बाप की दिन रात की सीख स वश म किया हुआ राँझू उसका दखकर खिसिया गया और बाला फुलमा! खडी खडी क्या देखती है। मुझे उबटन क्या नहीं लगाती? यह सुनकर फुलमा के कलेजे म जसे छुरी चुभ गई। प्रम को अन्त तक निभाने के व पहल वचन सब झूठे सिद्ध हुए। उसन सोचा मद ठीक ही धोखे बाज़ हात हैं। कच्च-कुवारा स प्रीति नही बढानी चाहिए। उसकी सुदरता को लूट जवानी बरबाद कर अब कहता है कि तू भी उबटन क्या नही लगाती। उसका चाँद-सा चेहरा कुम्हला गया और शरीर पसीना-पसीना हो गया। वह बाली राँझू! उबटन लगाएँ तुझे तरी चाचियाँ और ताइयाँ, जिनके दिल म तरे ब्याह का चाव है मैं क्या लगाऊँ? अपन प्रेमी की बेवफाई पर उसकी आत्मा काँप उठी और रोती रोती वह अपने घर आ गई।

स्त्री का हृदय गुलाब की पखुरियो की तरह अत्यन्त कोमल होता है जसे ज्येष्ठ आषाढ की तपती लू गुलाब क फूला को झुलसा दती है उसी प्रकार विरह की अग्नि स्त्री क कोमल हृदय को जला देती है। फुलमा को न कवल वियोग की आग झुलसा रही थी उस बवफी और निराशा की काली आँधी भी दिखाई देती थी। उसन अनुभव किया कि यह प्रम नही मात्र दिल बहलावा था। जसे एक बालक किसी खिलौने पर मोहित हो जाता है पर चार दिन खेलकर उस फेंक दता है और किसी नय खिलौने की तलाश करन लगता है। राँझू का व्यवहार भी ऐसा ही निकला।

उसकी घबराहट और करुणा को दखकर पहाड भी रो उठे और वक्षा ने सहानुभूति म अपन पत्ते गिरा दिए। उसकी भेडें भी उस दखकर उदास हो रही थीं और घास की आर मुह नहीं द रही थी। छत क शहतीर म चिडिया का एक जोडा रहता था जो प्रतिदिन कल्लोल किया करता था। फुलमों को हताश दख

कर आज वे भी चहचहाना भूल गई और वे ऐसे बैठ गईं जैसे शोक मना रही हों।

फुलमा को बड़ा आघात पहुँचा था और उसकी सब आशाएं मिट चुकी थीं। उसे अँधेरा-ही-अँधेरा दिखाई देता था। घुप अँधेरी रात और उसमें रह रह कर उल्लू की भयानक हूक उसके मन में और भी भय जगा रही थी। जैसे आकाश से चाँद छिन जाय और वह सूना सूना दिखाई दे वैसी ही उसके मन की दशा थी। ए आकाश के तारो! तुम मेरी गवाही देना कि मैं आखिरी दम तक सच्ची रही। ए पक्षियो और वृक्षो! तुम मेरे गवाह हो कि मैंने अपना धर्म निभाया है। इन विचारों में डूबी फुलमा ने दिए पर फूंक मारी। दिया बुझ गया और उसके साथ ही उसकी सब इच्छाएँ आकांक्षाएँ भी बुझ गईं। नींद क्या आती, भूखी प्यासी, रोती और सुबकती, कच्चे फर्श पर लेट गई और काला कम्बल ऊपर ओढ़कर मुँह ढक लिया।

अगले दिन सूर्य का लाल गोला पहाड़ के पीछे से ऐसा निकला मानो तपता हुआ तवा हो। दूर से नरसिंग की आवाज और ढोल की ढमक-ढमक सुनाई दी। राँझू सेहरा बांधे पालकी में बैठा, आगे आगे जा रहा था, पिता और सम्बन्धी पीछे पीछे चल रहे थे। ढोल की आवाज में एक उदासी झलक रही थी, और ऐसा लगता था जैसे कोई भयानक घटना घट चुकी हो। राम्न् क्या देखता है कि चार जने एक अर्थी को उठाए 'राम नाम सत्य है' कहते जा रहे हैं। ध्यान से देखा तो उसने पहचाना कि फुलमा का पिता और भाई हैं। इनको देखकर वह हक्का-बक्का रह गया और चेहरे पर हवाइयां उड़ने लगीं। उसका पुराना दबा हुआ प्यार फूटकर बाहर आ गया। कहारों से कहा कि पालकी नीचे रख दो। इतनी देर में फुलमो की अर्थी चिता पर रख दी गई। राँझू ने कफन उठाया और अपनी प्रेमिका का चेहरा देखकर धाड़ मारकर रोने लगा। उसने फुलमो की चिता में आग लगाई, और पास बैठकर फफक फफककर रोता रहा।

लपटें आसमान से बातें कर रही थीं और उसकी प्रेमिका की काया तिल-तिल जल रही थी। राम्न् से रहा न गया, उसने सेहरा उतारकर आग में फेंक दिया और स्वयं भी जलती चिता में कूद पड़ा। लोगों ने देखा मानो आग की लपटों में फुलमा का चेहरा खुशी से खिलखिलाकर हँस रहा था। जैसे कह रहा हो, मुझे बड़ी खुशी है कि हम दोनों फिर इकट्ठे हो गए।

गीत

गीतो के मुख्य लक्षण

यदि आध्यात्मिक वाणी अलौकिक कही जा सकती है, ता लोकगीत, धरती मे जन्मे पले होते हैं। किसी भी देश के लोकगीत, उस दश की भूमि की अन्तरात्मा माने जा सकते ह। लोकगीतों म, वहा के निवासिया की भावनाएँ, उनकी आशाएँ तथा निराशाएँ ब रोक टोक उभर आती है। लोकगीता म मातभूमि की पुरानी से-पुरानी और नई-से-नई कविता के नमून मिलते हैं। इनमे लोक मानस का स्वा भाविक और गहन स्वर मुखरित होता है। कइ बार यह स्वर इतना प्रखर हो उठता है कि इसका आवेग रोका नहीं जा सकता।

दुनिया भर के लोकगीता की तरह, कागडा के लोकगीता म भी, यहा के जन-जीवन को चित्रित किया गया है। जहा मध्य पजाब के लोकगीतो म मैदानो का चित्रण है, वहाँ कागडा क लोकगीतो मे पवतो की सुन्दरता का वणन है। पहाडो मे निमल जल से भरे गहरे गहरे खडड, कल-कल करने झरने, धान के सुन हरे खेत, मीलो तक चले गए जगली फूलो की छटा, सघन कुञ्जो की छाह, और अलगोजा बजाते हुए चरवाहे, इन सबका विवरण है। 'जीणा पहाड़ाँ दा जीणा' गाते हुए यहा के निवासी अपनी जन्मभूमि के प्रति अपना अपार प्यार दर्शाते हैं और हम मदाना म रहने वालो को पवतो म पयटन का निमत्रण देत हैं। पहाडी युवतिया शहरो की रगीन सभ्यता को, कच्चे रगा से रँगी हुई मानती है, और इसी कारण शहरो के छल कपट के गीत गाकर पवतीय जीवन की सराहना करती है।

कागडा के निवासी पहाडा मे रहकर खुश है। उनको पहाडा की सर्दी भाती है। उन्हें पहाडा का एकान्त प्रिय है। उन्हे पहाडो की नदियाँ पसन्द हैं, और पहाडा का वह आचरण पसन्द है जो बेईमानी, छल और कपट से अछूता है।

इस पहाडी जीवन की सुन्दरता, पवित्रता और महानता म ज्वालामुखी तथा अनेक दूसरे मदिरो ने और भी अभिवद्धि कर दी है। वह धरती, जिसको ज्वाला मया ने अपनी निवास-स्थली बनाया हो, जहाँ देवी का प्रकाश अभी तक प्रज्वलित होता है जहाँ दूर-दूर से यात्री दशनों के लिए आते हो, जहाँ हिमाच्छादित धौलीधार-जसे पवत चँवर डुला रहे हो उस धरती के वासी अपने प्रदेश को वकुठ कहें, तो कोई अतिशयोक्ति नही है।

कागडा के धार्मिक लोकगीतो म अद्भुत रस है। इनम धर्म के साथ-साथ, हल्के हल्के रूमान ने इनको और भी आकर्षक बना लिया है। इन लोकगीतो म श्रीकृष्ण का विशिष्ट स्थान है। एक गीत म गोपियाँ श्रीकृष्ण को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए 'असाँ कन कियाँ सरमावें बलिआ' का चुभता हुआ व्यग्य कसती हैं। घर जाकर युवतियाँ अपनी माताओ स उस नटखट की चर्चा करती हैं, जो नदी के किनारे बैठा है।

कागडा के इस रगीन वातावरण म पलकर जवान हुए छल छबील युवक लावण्यमयी युवतियाँ गद्दी तथा उनकी बाँकी ललनाएँ अपने सच्च पवित्र और सहज प्रेम के गीत निश्चिन्त होकर गाती हैं। इनम कभी प्रमी अपनी प्रेयसी को किसी बरोट की ठडी छाँह-तले सुस्ताने के लिए बुलाता है, और कभी कोई विरह पीडिता, दूर परदेश म बस अपने कन्त को काग तिलियर और कूञ्जा के द्वारा सन्देश भेजती है। कभी कोई अपने बालम को एक बात सुनने के बहाने रोकना चाहती है और उसकी यह बात उसकी लाख शिकायतो मजबूरियो और हृदय मे गहरे उतर चुकी कसक की अभिव्यक्ति बन जाती है। उसको परदश म बसे अपने प्रियतम पर भरोसा नही रहता और वह डरता है कि उसका मन न जाने कब भरमा जाय। स्त्री के मन म अनन्त काल स बसी हुई ईर्ष्या का वर्णन कागडा के प्रणय-गीतो का मुख्य अग है।

वियोग के ये गीत कागडा के युवको के नौकरी की खोज म बाहर चले जाने के कारण जन्म लेते ह। कागडा भी मध्य पजाब के समान सूरमाओ का देश है। नौजवानो के लिए यह कत्तव्य-सा हो जाता है कि वे घर-बार छोड युद्ध म लडने के लिए सेना म भरती हो जाय। मुगल-काल म भी कागडा के नवयुवक, राजपूत राजाओ की सेनाओ म भरती हुआ करते थे। इस प्रकार कागडा की नारी का जीवन वियोग की एक लम्बी कहानी बनकर रह जाता है। जाने वाला जाते समय हील करता है लाख सान्त्वनाएँ देता है, और अपने दिल की रानी को कागडा के फूलो बागो, ऊची-ऊची चोटियो और गहरी गहरी नदियो के जीवन दायी जल के साथ सुख पूवक रहने का सन्देश देता है, और यह सब कुछ कागडा के प्रेम-गीतो का शृगार बनता है।

परदेस गए साजन की नव विवाहिता को उसकी सास और भी सताती है। वह तान देती है और घर का काम अत्यन्त कठोरता पूवक करवाती है। इस दुखिया नारी को श्वसुर का घर जहर-सा लगने लगता है और वह जली जाए सहुरियाँ दे देस का गीत जाकर अपना कलेजा ठडा करती है।

घर भर म सब लोग इस दुखियारी के वरी नही होते। साधारण परि स्थितियो म पति का छोटा भाई उसके दु खो को बाँटने लगता है जिसके परिणाम स्वरूप इस दुखिया का प्यार अपने इस देवर स हो जाता है। कागडा के लोक

गीता मे भाभी-देवर का इस सहमी झिझकती प्रीत क अनेको उदाहरण मिलत है। और फिर उस याचनाएँ करन वाली, औसियाँ डालन वाली तथा मिन्नतें मानन वाली का साजन घर लौट आता है। चाहे दिल म अनेका शकाएँ हो, चाहे कितन गिले हो, फिर भी प्रियतम के वियोग मे अपन सतीत्व, अपन प्रियतम की धरोहर को सुरक्षित रखने वाली यह नारी कुए पर पानी के एक घूट के लिए तरसते किसी ढोल सिपाही पर मोहित नही हो जाती, चाहे बाद म वह उसका पति ही क्या न निकल आय। कुए पर पानी भरती एक ऐसी स्त्री का गीत, कागडा के लोकगीता का सिरमौर है।

कागडा के लोकगीता मे अतरजातीय विवाह के सकेत भी मिलत हैं। किसी राजपूत मियाँ ने जाति की चमारिन का ही ब्याहकर अपन घर बसा लिया। इसी से सम्बधित एक गीत कई रूपा मे मिलता है। यह गीत इस बात का साक्षी है कि प्रेम कभी जात पाँत या छाटे-बडे का अन्तर नही मानता।

ऐसे प्रेम-वणन के साथ साथ ऐसे कथानक भी गीतो म सुनन का आए जो चिनाब नदी के आशिक माशूक वाला तथा माहिया की तरह कागडा के कुज चचलो गगी-मोहणा तथा फुलमा राझू के प्रेमाख्याना पर आधारित हैं। इन गीतो की पष्ठभूमि मे एक इतिहास होता है और इन गीतों के साथ हमारी ऐसी साझ स्थापित हो जाती है कि उनकी समस्याए हम अपनी समस्याए प्रतीत होन लगती हैं और उनके एक एक बोल के पीछे कई-कई स्मृतियाँ उभर आती हैं।

राँझू और फुलमो की कहानी, यहाँ की प्रतिनिधि कहानी है, इसलिए मैंने इस प्रेम-कथा का गद्य म, विस्तार से वणन किया। इसमे कागडा के समूचे जीवन की झाकियाँ प्रस्तुत की गई हैं। गीत म राँझू बेवफा आशिक दिखाया गया है। बेवफाई एक अक्षम्य पाप है जिसको मेरा हृदय सहन नही कर सकता। इसलिए मैंने अन्त में राँझू को भी वफादार बना दिया है।

पजाब की 'सट्टाँ' की तरह, जिनको हमारे मिरासी लम्बी-लम्बी तान लकर गाया करते थे कागडा के ढोलरू भी कम महत्त्वपूण नही और ये ढाल पर डके की चोट के साथ पूरे स्वर-ताल में गाए जाते हैं।

कागडा के निवासी शूरवीर भी है। रामसिह पठानिया-जसे वीर-गान क समान और बहुत-स शौय-गान, रणभूमि म जूझत सनिका की दढता और साहस का जीता जागता प्रमाण हैं।

समय की गति के साथ साथ कई नवीन विषय और नई मा यताएँ भी गीतो का अग बन गई हैं। जसे किसी गीत की गोरी अपन रँगरूट के गीत गाती है और किसी अ य गीत की गोरी समतल मैदान मे बगले के किनार किनारे बगीची लगाती, और अपने बच्चो को स्कूल म जाने की प्रेरणा देती तथा उनसे पढाई का वचन लेती है।

कागड़ा के लोकगीतो म गद्दियो के गीतो का एक विशिष्ट स्थान है। हमारी तरह यही लोग भी विवाह, सगाई, जन्म मुण्डन या मेले पर्व और तीज-त्योहार के समय लोकगीतो का आश्रय लेते हैं। अपने इन गीतो के ससार का रस लेते हुए ये सारे सासारिक झमेलो से मुक्त हो जाते हैं और इनकी आत्मा मस्ती म झूमने लगती है। इन लोगो के जीवन की तरह इनके गीत भी सच्चे सुन्दर और भाव पूर्ण होते है। उन्मुक्त वातावरण म रहने तथा परिश्रमी जीवन व्यतीत करने के कारण, इनके गीतो म भी उन्मुक्तता और हर्षोल्लास का प्रधानता है। हर्षोल्लास के समान ही कागड़ा निवासियो के जीवन म रूमान भी समाया हुआ है। वन पक्षियो के समान वनस्थलियो और चरागाहो में स्वच्छन्द विचरण करते हुए लड़के लड़कियो में एक बहुत ही पवित्र सा प्रेम सम्बन्ध स्थापित हो जाता है जिसका वर्णन इनके गीतो की सुन्दरता और रस प्रदान करता है।

रूखा सूखा खाने, मोटा झोटा पहनने, और रात दिन के परिश्रम के बावजूद, ये लोग अपने जीवन से इतने सन्तुष्ट हैं कि इस पर राजभोग और शीश महलो का आवास न्यौछावर कर देते हैं। एक लोकगीत म बताया गया है कि महाराज ससारचद एक गद्दी सुन्दरी को अपने महलो म रख लेता है पर वह सुन्दरी अपनी भेड बकरियो को याद करती है और अपने 'गद्दी' को नही भूलती।

घरेलू जीवन के बाद इन गद्दियो को अगर किसी से प्यार है तो वह चम्बा शहर है--उनका अपना शहर, जहाँ का चौगान और रावी की साँय साँय इनके गीतो मे सास लेती है। कागड़ा के पर्वतो के हिम धवल शिखर निर्मल जल के शीतल निर्झर, सफेद फूलो से लदे कैथो के वृक्ष जगली गुलाबो की चारो ओर फैली बाड कचनार के गुलाबी फूल नदियो के तट पर कल्लोल करते हुए सारसो के जोड और समूचे परिवेश की सुन्दरता यहाँ के निवासियो के चेहरो पर ही नही बल्कि इन लोगो के गीतो म भी झलकती है।

इस प्रकार कागड़ा के लोकगीत वहाँ के लोक जीवन का दर्पण हैं। इनका सहज प्रवाह और सगीतात्मकता बताती है कि कागड़ा के युवक और युवतियाँ भी एक प्रकार की कोमलता और सगीत के स्रष्टा हैं। इनकी बोल चाल म सगीत जैसी लचक, इनके चेहरो पर गीतो जसी कोमलता इनके हृदय निर्मल जल के समान स्वच्छ तथा इनका समूचा जीवन बहते पानी सा पवित्र होता है।

इन गीतो म पर्वतवासियो की सभ्यता मनोभाव स्वप्न और उमगें फूट फूट पडती है। कागड़ा के गीतो म निहित इस अछूती सादगी और सौन्दर्य के सागर पर जितना गर्व किया जाय थोड़ा है। लोकगीतो की कविता एक महान् कविता है। इस कविता म भावनाओ की बहुलता और सचाई विशेष गुण हैं।

ये गीत लोगो की साधारण बोल-चाल की भाषा म रचे होते हैं। इनम उनकी अपने-जैसी ताजगी और स्वच्छता होती है। कागड़ा के लोकगीतो की पजाबी दुआब

की पजावी स मिलती-जुलती है। कुछ एक शब्दो का उच्चारण तो बिलकुल दुआवी सा है। यदि अन्तर है तो कवल इतना कि इन गीता को ऊँचे और टीप के स्वरा मे गाने के कारण, शुरू और आखिर क कई शब्द खीचकर लम्बे किय हुए होन हैं। ह्रस्व मात्रा को दीघ बोले जाने से इन शब्दा म एक अनाखा रस भर जाना है जा शायद दूर दूर पर वन पहाडी मकाना म रहने वाल लागो की वाणी म आ जाना कुछ स्वाभाविक है और कुछ आवश्यक भी । कागडा के लोकगीतो की बोली सच्ची और मीठा पजाबी है। इन गीता म बिलासपुर मडी सुकेत और चम्बा के गीत भी सम्मिलित है। इन सबकी भापा पजाबी है और कई बार यह जानना कठिन हो जाता है कि ये गान कागडा के है अथवा इन रियासती इलाको के ?

जन मानस की पीढी दर पीढी चली आ रही इस धरोहर को सगठित रूप म प्रस्तुत करते हुए मुझे वडा आनन्द आया है। इन गीता की ताजगी और सजीवता हम इनको बार-बार पढन क लिए प्रेरित करती है। य गीत ताजे और अछूते है। इनकी आभा को समय की प्रचण्ड धूल मिट्टी भी नहीं ढक सकेगी।

मैं आशा करता हू कि प्रेम वीरता आशा निराशा की इन लय धुना के द्वारा सब दिल वाले अपनी खामोश मोहब्बत की समाधि पर श्रद्धा के फूल चढात रहग। इन गीतो की गुञ्जार प्यार करन वालो की सूनी राता को ही नही भरगी बल्कि वनक बोल वेना और नदिया क किनारे पर भी गूजत रहगे, गूजत रहगे।

कागडा देश

कागडा देश निआरा

ती मेरा कागडा देस निआरा

डुघी डुघी नदीआँ ते सली सली धारां
आ सैली सैली धारां
छले छले गभरू त बाकीआ नारा
ओ बाकीआं नारां
बोलण बाल पिआरा
नी मेरा कागडा देश निआरा

चिव चिव चिव चिव चिडवा जा करदा
ओ चिडवा करदा
उडी उडी डाली डाली बहिंदा
ओ डाली डाली बहिंदा
बोले बोल पिआरा
नी मेरा कागडा दस निआरा

जवाला जी माता

त कागडा धौलीधार माता त बकुठ बनाइआ

पान सुपारी मईआ ध्वजा ल नरेला
पहिलडी भट चढाइया मईया
त बकुठ बनाइआ है कागडा धौलीधार माता

सूहा सूहा चोला मईआ अग वराजे
केसरी तिलक चढाइआ मईआ
त बैंकुठ बनाइआ है कागडा धौलीधार माता

नगी नगी परी देवा अकबार आइआ
सोने दा छतर चढाया मईआ
तें बकुठ बनाइआ है कागडा धौलीधार माता

पहाडा दे विच बिच

जोणा पहाडा दा जीणा

पहाडा दे विच विच नदीआ जा वगदी
लाई तारी लग्गी जाणा
जीणा पहाडा दा जीणा

पहाडां दे विच विच कुकू जो बोल
असा सुणी जली जाणा
जीणा पहाडा दा जीणा

पहाडां दे विच विच हर देहे बूट
देखी कने दिल लाणा
जीणा पहाडा दा जीणा

जीणा पहाडां दा जीणा

पहाडा दा रहिणा चगा

पहाडा दा रहिणा चगा ओ राजिआ
पहाडां दा रहिणा चगा आ

शहिरां शहिरां विच नालू जो वगदे
पहाड़ां 'च वगदीग्रां गंगा ग्रा

झिक्ले शहिरां विच गरमी जा हुँदी
पहाड़ां दा सीत ना जांदा ग्रो

शहिरां शहिरा विच ग्रफसर रहिंदे
पहाड़ां 'च कोई नहीं आउंदा ग्रो

झिक्ले शहिरा विच माटरां त गडडीग्रां
पहाड़ां 'च टट्टू नहीं जादा ग्रो

शहिरां 'च हुंदीग्रा वडीग्रां धाखराजीग्रां
पहाड़ा दा धरम ही चगा ग्रो

पहाड़ा दा रहिणा चगा ग्रा राजिग्रां

झिक्के दे माणू इत्थे आई रहुदे

चलदी पुरे दी ठंडी ठंडी वा ग्रा
मन भांदा खाओ ते जग भांदा लाग्रो
सज्जणे आस ते दुशमणे भों ओ
दौड लोई पट्टू गरडू मरीना
जीणा पहाडे दा जीणा

पहाड वूटी क ने जगमग करदा
दिक्खी दिक्खी मनगी छल उच्चे लगदा
ठंडे नाडे पाणी छ छ वगदा
जाई करी छम्वा पाणी घुटा घुट्ट पीणा
जीणा पहाडे दा जीणा

झिक्के दे म्हाणू इथे आई रहुदे
तन ओदे उजले ते मन ओदे गदे
उह् वे जानण पैसे दे बंदे
फट्टे दा चोला कीआ करी सीणा
जीणा पहाडे दा जीणा

जीणा पहाडाँ दा जीणा

ठडी-ठडी हवा चलदी
बरफाँ दा पाणी पीणा
जीणा पहाडा दा जीणा

होरना दी बागी सब फुल्ल फुलदे
मेरे बागे फुल महिंदी
राजी रही ओ अडी ओ जुग-जुग जीओ
दुनीआ ईहा ही कहिंदी
जीणा पहाडा दा जीणा

होरनाँ दी बागी सब फुल्ल फुलदे
मेरे बागे फुल्ल गोभी
खूब कमाणा रज्जी के खाणा
होणा किसे दा नही लोभी
जीणा पहाडाँ दा जीणा

होरना दी बागी सब फुल्ल फुलदे
मेरे बागे खटनालू
डुगीआँ खडाँ ते निरमल पाणी
अक्खी बक्खी दो कुआलू
जीणा पहाडाँ दा जीणा

देसाँ विचो देस कागड़ा

सारिआँ देसाँ विचो देस कागड़े दा
सारिआँ देसाँ विचो देस कागड़े दा
लगदा असाँ जो पिआरा हो

पाणी हवा सारे देस दी ठंडी
पर पठानकोट ते सिर इस दा मंडी
दखशण दिशा विच वसदा हमीरपुर
उतर दिशा धरमसाला हा

चीला ते वणा जंगल इस विच
दूधे दहीएँ दे डंगर इस विच
बिजली ते गोमे दी खान जे इस विच
सला दी खान धनिआरा हा

बजनाथ चौमडा दा मंदर
बजदमेशरी चिंतपूरनी दा मंदर
जवालामुखी जीआ मंदर इस विच
आसापुरी जेही धारा हो

सारिआ देसा विचा देस कागड़े दा
लगदा असाँ जो पिआरा हो

वे कागड़े दा टीला

कागड़े दा टीला वे अड़िया
मुड़णा साडा देस कागड़े दा टीला

जवाला माई एथे वसदी
कुल्लू वसदे महेश वे कागड़े दा टीला

कुल्लू वसदे महेश के अडिग्रा
दूर हो जादे कलेश वे कागडे दा टीला

बरफा दी टापी पहिन खडोती
खडी है धौलोधार वे कागडे दा टीला

खडी है धौलीधार ने अडिआ
सम नू दसदी पिआर वे कागडे दा टीला

नदीआँ ते नाले एथे वगदे
एथे वगदी विआस वे कागड दा टीला

एथे वगदी विग्रास वे ग्रडिआ
सम दी बुझाँदी पिग्रास वे कागडे दा टीला

कागडे दा टीला वे अडिग्रा
सुहणा साडा देस कागडे दा टीला

पलमा दा चिलके पाणी

ग्रो धारा चिलके पत्थर गाटीग्राँ
ओ पलमा दा चिलके पाणी

ओ वरीग्रा ते डरना प्रीत कीग्राँ लाणी
ओ वरीआ ते डरना प्रीत कीग्राँ लाणी

ओ वोढड वाले ते भरना प्रीत कीआ लाणी
ग्रो बोढड वाले ते भरना प्रीत कीआँ लाणी

ओ ठडे लोगी वागा ते डेरा काशी रामाँ
ग्रो छोरीआ ते भरना घसीट कीग्राँ लाणी

आ रडे नोही गर्गा ते पेरी रागी गर्मा
आ वरीआं ते भरना प्रीत वीआं लाणी

लोकी कागडे दी पिआरी

जाती धरम दा रखवारा
जग जाणदा है सारा
कोई कोई जमदा
दुनीआ नूरपुरे दी पिआरी
लोकी वागड दी पिआरी
तेरे वच्चिआं जु सारी वच्चा वच्चा मनदा

शिमला सपाटू घूम आइओ रे

घूम आइग्रो घूम आइओ घूम आइओ रे
शिमला सपाटू घूम आइग्रो रे

घूम ग्राई मैं तो ननीताल आ
शिमला सपाटू की ऊँची ऊँची पहाडिआ
फिरे इठलाती नई नवेली
घूम आइआ घूम ग्राइआ घूम आइआ रे
शिमला सपाटू घूम आइओ रे

घूम ग्राइओ मैं ता ननीताल ग्रा
ननीताल लाके ताल सुहाने
फिरन इठलाते छल छबीले
घूम ग्राइआ घूम आइआ घम ग्राइओ रे
शिमला सपाटू घूम ग्राइआ रे

प्रेमगीत

गल्ला होई बीतीआ

बाडूए सुगाडूए तू कजो झावदी
झखा कजो मारदी
दो हत्थ वटणे दे लाइग्रा फुलमो
गल्ला होई बीतीआ

वटणा लवाण तेरी ताई चाचीआ
राभू सकी भावीग्रा
जि हा दे मना विच चाग्रो राभू
गल्ला होई बीतीग्रा

कुणी बाह्मणे तेरा विआह लिखिग्रा
राभे विग्राह निखिआ
उस दी ना पाए प्रमेशर पूरी
गल्ना हाई बीतीआ

फुल दे परोहते मेरा विग्राह लिखिग्रा
फुलमा विजाह निखिआ
वापू कीनी कुडमाई फुनमा
गल्लां होई बीतीआ

बाहरे बाहरे राभू दी जानी चली
भाईग्रो डोला चलिआ

वाहरे वाहरे फुनमो ली नाश नवी
गल्लां होई वीतीआं

रक्खो ते क्हारा मेरी पालकीआं
रक्खो पालकीआ
फुलमो जो दाग लगाणा जानी
गल्लां होई वीतीआं

बाएँ हत्थे राझू चिता जा चिणी
राझू चिता जो चिणी
दैहणें हत्थे लाइआ लातू भाइआ
गल्ला होई वीतीआ

दोस्ती नी लाणी फुनमो वच्चिआ की
जानी कवारिआ क्ने
विआही करी हुंदे वेईमान सेईओ
गल्लां होई वीतीआ

बाबू रामा रेंजरा

चल घेरिआ वदलीआ मच्छी घरी जाले
तू घेरिआ मूसुआ वणा दे नाले

बठी लणी कावन्री वीजी देणा कोदा
लाई लैंगी ममता बठी लणा गादा

शिमले दे साहब जतोधी दे गारे
तौं माही रानूआ जादू दे जोर

अगणे ओ आई गद्दी जा घुमारीए
गोदीआ बालक निआणा
ओ तेरी सौ गोदीआ बालक निआणा
ता हुण मिजो छोड दे बीरो

ना अज गल्लां कीतीआं घुमारीए
मुने दा ना चुकिआ चाओ
ओ तेरी सौ मुने दा ना चुकिआ चाओ
तां हुण मिजो छोड दे बीरो

असां तुमा राजी रहिणा वो घुमारीए
जली जली मरदे लोकी
ओ तेरी सौ जली जली मरदे लोकी
तां हुण मिजो जाणी दे बीरो

राजा हेडे चढिआ

नगारे चुकी राजा हेडे ते चढिआ ई
गद्दण तमाशे जो आई
मेरिआ बाकिआ गद्दीआ

बाहां पकड गद्दण अदर कीती
भितलू ता दिता चढाई
मेरिआ बाकिआ गद्दीआ

भुजा दा खाणा गद्दणी छाडी छोडी देणा
पलघा दा हाए जो आवो
मेरीए बाकिए गद्दण्डे

थोडी थोडी थुरी राजा छेनूए नी आउँदी
गद्दीए दे ताईं वगदी छुरी ओ
मेरिआ हरीसिघा गद्दीआ

महिलां दे हेट गद्दी भेडां जो चारे
मुरली दी धुणक सुनाई वो
मेरिआ वांकीआ गद्दीआ[1]

मींए चपली बणांदे तेरी सौंह

थोडे मीए हल वी नी वाहदे हो
थोडे चपली वणांदे तेरी सौंह

थोडे मीए कुरसीआ पर वहिंदे हो
थोडे चपली वणादे तेरी सौंह

मीआ वैठा वादरा दे पहिरे जो
मना फुलके पकादी तेरी सौंह

फुलके पकाई मना भूरे हो
सुके कुत कन खाणे तेरी मौंह

खनी रोटी दही दा क्टोरा हो
चली मीए जो नुहारी तेरी सौंह

म नही खाणा दही दा कटोरा हो
मेरी सरद तसीरा तेरी सौंह

---

१ यह गीत महाराजा संसारचद और वदला की गद्दण नागू का है। राजा शिकार खेलने वदला के गाँव आया और वहाँ उसने नोगू गद्दण को देखा और जबरदस्ती पालकी म बिठाकर नदौण ले गया।

जाती दी मैं हुनीआ चुमारी वो
मीआ भूली मत्त जादा मेरी साह

मोग्रा मेरा छलीग्रां दा पारी वो
मोग्रा सई मत्त रहिंदा तेरी सौट्

ग्रार घर मेरे पारा तेरे वा
गभे नदीग्रां वबूरी तेरी सौह

ओ मुडिआ प्रियी सिघा

कुयू ते उगमी काली वदली
ओ मुडिआ प्रिथी सिघा
कुयू ता वरसिआ ठडा नीर ओ

छाती त उगमी काली वदली
ग्रा कुडीए इदर देईए
नैनां तों वरसिआ तत्ता नीर ग्रो

कीदीआं तां तेरीआं भावीग्रा
ओ मुडिआ प्रियी सिघा
कीदी तां तेरी नार आ

तेरे जहीग्रां तां मरीग्रां भाजीआं
ग्रो कुडीए इदर देईए
तरे ते गवाई मेरी नार आ

कुपू तां आईग्रां तरीआं भाजीआं
आ मुडिआ प्रियी सिघा
कुपू तां आई तेरी नार ग्रो

जाती दी मैं हुनीआ चुमारी वो
मीआ भूली मत्त जादा मेरी सौंह

मीग्रा मेरा छलीग्रा दा पारी वो
मीग्रा सई मत्त रहि्दा तेरी सौंह

ग्रार घर मेरे पारा तरे वा
गभे नदीग्रा बवूरी तेरी सौंह

ओ मुंडिआ प्रियी सिंघा

कुयू ते उगमी काली वदली
ओ मुंडिआ प्रिथी सिंघा
कुथू तां वरसिआ ठंडा नीर ओ

छाती ते उगमी काली वदली
ग्रो कुड़ीए इंदर देईए
ननां तों वरसिआ तत्ता नीर ग्रो

कीदीआं तां तेरीआ भावीग्रा
आ मुंडिआ प्रियी सिंघा
कीदी तां तैरी नार ओ

तेरे जहीग्रां तां मेरीग्रां भाजीआं
ग्रो कुडीए इन्दर दईए
तेर ते सवाई मेरी नार ओ

कुयू तां आईंग्रां तरीआं भाजीआं
आ मुंडिआ प्रियी सिंघा
कुथूं तां आई तेरी नार ग्रा

विज ता हुदी वाली वुनजी
नी कुडीए इन्दर देईए
नाग ता हुदा कुल्ले दा प्राहुत वा

ोहणा फामी चढो गिआ

तू नी दिसदा आ माहणा तू नी दिसदा
भाईए रीजा कीतीआं ते तू नी दिसदा

तेरे फिक्रे वे मोहणा तेरे फिक्रे
मेरा दिल लगा सुक्णे तेरे फिक्रे

आइआ मरणा जो मोहणा आइआ मरणा
भाईए री गलाइआ पर आइआ मरणा

फासी चढना आ मोहणा फासी चढना
दिने रे बारा वजे फासी चढना

परवाना लिखीता जा मोहणा परवाना लिखीता
राजे तेरी फासी रा परवाना लिखीता

खाई पेहनी लै ओ मोहणा खाई पेहनी लै
अपणी मरजी रा खाई पेहनी लै

दान करी ल ओ माहणा दान करी ल
अपणीए मरजी दा दान करी लै

तू नी वचदा जा माहणा तू नी वचदा
राजे री कलमा ते तू नी वचदा

लगिआ सुकणे ओ मोहणा लगिआ सुक्णे
तोला तोला खून तेरा लगिआ सुक्ण

फासी चढी गिआ वे लाका फासी चढी गिआ
भाईए री गलाइजा पर फासी चढी गिआ[1]

मोहणा बच गिआ

तू न जानी सुखाँदा ओ माहणा
मेरा लीला तोना खून सुक्कदा

कया लुक्दा वे मोहणा कैयो लुकदा
ओ फूले लदीआ वाडीआ कैयो लुकदा

म नही लुक्दा ओ मा मैं नही लुक्दा
राजे दीआ राणीआ जो हार गुददा

खाई ले रोटी ओ मोहणा खाइ ले राटी ग्रा
माता दीआँ पक्कीग्राँ खाई लै रोटीआ

मैं नही खाणीग्रा माता तेरी राटीआ
कल्ह बारा वजे फासीआँ चटना

दुदध पी लई ग्रो मोहणा दुदध पी लई
पी लई दुद्ध छोरुआ बकरी दा

---

१ यह विलासपुर का गीत है। कहा जाता है कि एक ब्राह्मण का, जिसका नाम मोहन था राजा की लडकी से प्रेम हा गया। जब राजा को पता लगा तो उसने मोहन को फाँसी लगवा दी। यह गीत कागडा और विलासपुर म बडा प्रचलित है, और लाग इस इश्क के शहीद के प्रति बडी सहानुभूति प्रकट करत हैं।

मैं नही पीणा ओ माता मैं नही पीणा
मेरा जन-जल सुखी रहि मैं नही पीणा ओ

क्स वजनी आ मोहणा क्स वजनी
तेरी पज रँगी मुरली कस वजनी ओ

भरा वजनी ओ माता भरा वजनी
मेरी पज रँगी मुरली भरा वजनी ओ

क्स पहिनणा ओ मोहणा क्स पहिनणा
तेरा मखमली कुरता क्स पहिनणा ओ

भाई पहिनणा ओ माता भाई पहिनणा
मेरा मखमली कुरता भाइ पहिनणा ओ

क्स लाणी ओ मोहणा क्स लाणी
तेरी पज रँगी धोती क्स लाणी ओ

भाई लाणी ओ माता भाई लाणी
मेरी पज रँगी धोती भाई लाणी

घर दनया तेरा मखमली तौलीआ
भूने कौलीआं तेरा मखमली तौलीआ

वगीए डरदा आ मोहणा वगीए डरदा
थल्ट वारां वजे पाणी चढना

मैं नही डरदा ओ माता मैं नही डरदा
मेरे धरमे दे भार नाल तगना टुटदा

खभे गडीए ओ मोहणा खभे गडीए
बिलासपुर छाउणीए खभे गडीए

गडन देओ माता खभा गडन दिओ
मैं राजे नू सलाम कर वच आऊँगा

कुजू ते चचलो

कपडे धोआ छम छम रोआ चचलो
मुख बोल जवानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे मुख बोल जवानी हो

मेरे कने हथ मत लादा कुजूआ
विच्च गजरा निशानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे विच्च गजरा निशानी हो

तेरे पिछे होइआ बदनाम चचलो
किजो वणदी विगानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे किजो वणदी विगानी हो

राती वो वराती मत आउँदा कुजूआ
वैरी भरीआ वदूका हो
हाए वो मेरीए जिंदे वैरी भरीआ वदूका हो

मेरी तेरो प्रीत पुराणी चचलो
तू ता कदर ना पाणी हो
हाए वो मेरीए जिंदे तू तां कदर न पाणी हो

मेरी बाही लाल चूडा कुजूआ
अग्गे गजरा निशानी हो

हाए वो मेरीए जिंदे अग्गे गजरा निशानी हो

त्रोक ता गलादे काली-काली चचलो
तू ताँ मरुए दी डाली हो
हाए वो मेरीए जिंदे तू ताँ मरुए दी डाली हो

तू ता चलिआ प्रदेश कुजूआ
मिंजो देई जा निशानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे मिंजा दईजा निशानी हा

पँज वा रुपइए तिंजो नाल चचला
अँगूठी दिंदा निशानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे अँगूठी दिंदा निशानी हो

मेरा वो चेता नी भुलाइआ कुजूआ
मिंजो करी लणा चेता हो
हाए वो मेरीए जिंदे मिंजो करी लणा चेते हो

ये ता रहिणी निता दी याद चचला
भावें मरीए जाहाणा हा
हाए वो मरीए जिंदे भावें मरीए जाहाणा हो

नित दी हाइआ सलामा कुजूआ
शिव जी करना रखवानी हो
हाए वो मेरीए जिंदे शिव जी करला रखवाली हो[1]

---

१ यह चम्बा की एक प्रसिद्ध प्रेम-कथा है और इसका गीत कई रूपों म मिलता है। आम तौर पर लड़का की जान्यिाँ गाती हैं। एक लडका चचलो बनता १ एक कुज तथा आपस म सवाल-जवाब करत हैं।

राहे विच बगलू तेरा

भला मीआ मगलेटूआ ओ राहे विच बगलू तेरा
तेरी मौह राहे विच बगलू तेरा
कि पल भर बहिणा रे

मातीग्रा दीग्रा छावा दुख-सुख करना रे
तेरी सौंह राहे विच बगलू तेरा
कि पल भर बहिणा रे

टुड वडी दे टिआले पल भर बहिणा रे
भला मीआ मगलेटूआ राहे विच बगलू तेरा
कि पल भर बहिणा रे

कि कामलोईए दीग्रा बाई घुट पाणी पीण दे
कि कुछड बालक निआणा की दुधे पिजाणा रे
कि पल भर बहिणा रे

जेठ महीने दीआं धुपा कि छतरी ताणी रे
भला मीआ मगलेटूआ राहे विच बगलू तेरा
कि पल भर बहिणा रे

छीणी

अमीचद राजा खूह पर न्हाम्दा
छीणी पाणीए आई
सदिआ चौहा कहारा नू
छीणी डाले जे पाई

छोड छोड राजिग्रा सालूए दा लड
मैं हा नार पराई
मैं कीहाँ छडडाँ सालूए दा लड
मनू प्रीत जो ग्राई

अदरो निकली राणी
डोला किसे दा आइग्रा
राणी पुछदी गोलीआ नू
डोला किस दा आइग्रा

गोलीआ आखण राणी नू
छीणी सौंकण ग्राई
राणी बठाई पीढे
छीणी पलँगे बहाई

राणी ने दित्तीआ पिनीआ
तेरे पेईए त आईआ
अदधी जा पिनी खा लई
जीआ तिर मिर लाई

सारी जे पिनी खा लई
छीणी मर जै गी
सदिओ अमीचद राजे नू
छीणी मर जै गी

राजा जे पुछदा राणीआँ नू
छीणीआ कीआ ए जे होइआ
अदरा निकलिआ काला नाग
उन्ने डग चलाइआ

राजा जे पुछदा गोनीआँ
छीणी कीआ ए जे हाइआ
अदरा निकलिआ काला नाग
उने डग चलाइआ

सदिओ चौहा कहारा नू
छीणी दागा न नेती
चनण रक्ख कटाइआ
छीणीआ दाग ज दिते

पानो गुजरीए

रेहलूए दे मेरीआँ पण्णीआ रहीआ की राजा गुलेरीआ
पण्णीआ दे बदले तिजो पणीआ श्रो दिगा
निल्ले दा भरगा जरीमाना की पानो गुजरीए

रेहलूए दे हारे मेरा कुरता रहीआ की राजा गुलेरीआ
कुरते दे बदले तिजो कुरता मैं दिंगा
बटना दा भरगा जरीमाना की पानो गुजरीए

रेहलूए दे हारे मेरा कडीआ जो रिहा की राजा गुलेरीआ
कडीआ दे बदले तिजो कडीआ ओ दिंगा
डोरीं दा भरगा जरीमाना की पानो गुजरीए

रेहलूए दे हारे मेरा बिन्ना रिहा की राजा गुलेरीआ
बिन्ने दे बदले तिजो बिन्ना आ दिंगा
घालरा दा भरगा जरीमाना की पानो गुजरीए

रेहलूए दे हारे मेरी डल्ली आ रही की राजा गुलेरीआ
डल्ली दे बदले तिजो डल्ली ओ दिंगा

मघीआ दा भरगा जरीमाना की पाना गुजरीए

खाणा पीणा बे नैंद लाणा

खाणा पीणा वे नैंद लाणा वे घुमारूए
भरीआ चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीआ चिलमा दम लाणा

सालनी दा टिक्ट कटाई दे वे घुमारूए
शिमले दी सैर कराई दे वे घुमारूए
तेरीआं मोटरां दे विच वे घुमारूए

खाणा पीणा वे नैंद लाणा वे घुमारूए
भरीआ चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीआ चिलमा दम लाणा

जाती मेरीआ जो सभ कोई जाणदे
मिंजो ना जाती दा भेद
जाती पाती दा भेद मिटाना वे घुमारूए

खाणा पीणा वे नैंद लाणा वे घुमारूए
भरीआ चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीआ चिलमा दम लाणा

पिपले दे हेठ गोरी कीह खड़ी

पिपने दे हेठ खड़ानी की
कल्ली गोरी कीह खड़ी
किआ तेरे पेईए दूर
किआ घरे सस्स बुरी

वत्ता चलेदीआ सपाहीआ की
तिजो मेरी किआ पई
ना मेरे पेईए दूर
ना घरी सम्स बुरी

सिरे जो दिगा तिजो चौक
कने दिगा फुल्ला जोडी
चली पै सपाहीआ दे नाल
दिगा पिआरीए सुख घडी

अग्ग ताँ लग्गे तेरी चौके की
नदीआँ रुडिओ फुल्ला जोडी
जद घरी आहूँगा लाल गोरी दा
ता हल करनी सुख घडी

वहिने जो दिगा पीडा की
कतने जो चरखडी
चली पै सपाहीआ दे नाल
रहिणा पिआरीए सुख घडी

अग्ग ता लग्गीओ तेरे पीहुडे की
नदीआँ रुडिओ चरखडी
जद घरी आहूँगा लाल गोरी दा
ताँ हल करनी सुख घडी

हथाँ जो दिगा तिजो चूडी की
गले जो मत नडी
चली प सपाहीआँ दे नाल
दिगा पिआरीए सुख घडी

मधीआँ दा भरणा जरीमाना की गानो गुजरीए

खाणा पीणा वे नँद लाणा

खाणा पीणा वे नँद लाणा वे घुमारूए
भरीआ चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीआ चिलमा दम लाणा

सोलनी दा टिक्ट कटाई दे वे घुमारूए
शिमले दी सैर कराई दे वे घुमारूए
तेरीग्राँ मोटराँ दे विच वे घुमारूए

खाणा पीणा वे नँद लाणा वे घुमारूए
भरीआ चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीग्रा चिलमा दम लाणा

जाती मेरीग्रा जो सभ कोई जाणद
मिजो ना जाती दा भेद
जाती पाती दा भेद मिटाना वे घुमारूए

खाणा पीणा वे नँद लाणा वे घुमारूए
भरीग्रा चिलमा दम लाणा
वे घुमारूए भरीआ चिलमा दम लाणा

पिपले दे हेठ गोरी कीह खडी

पिपले दे हेठ खडोती की
कल्ली गोरी कीह खडी
किग्रा तेरे पेईए दूर
किग्रा घरी सस्स बुरी

वत्ता चलेदीआ मपाहीआ की
तिजो मेरी चिन्ना पई
ना मेरे पेईए दूर
ना घरी सस्स बुरी

सिरे जो दिगा तिजो चौंक
कने दिगा फुल्ला जोडी
चली पै सपाहीआ दे नाल
दिगा पिआरीए सुख घडी

अग्ग ता लग्गे तेरी चौके की
नदीआ रुडिओ फुल्ला जोडी
जद घरी आहूँगा लाल गोरी दा
ता हल करनी सुख घडी

बहिने जो दिगा पीडा की
कतने जो चरखडी
चली प सपाहीआँ दे नाल
रहिणा पिआरीए सुख घडी

अग्ग ताँ लग्गीओ तेरे पीहडे की
नदीआ रुडिओ चरखडी
जद घरी आहूँगा लाल गोरी दा
ताँ हल करनी मुख घडी

हथाँ जा दिगा तिजा चूडी की
गले जो सत लडी
चली पै सपाहीआँ दे नाल
दिगा पिआरीए सुख घडी

अग्ग लाँ लग्गे लगीआँ तूँ ए ।। मी
ग्दीआँ हन्जो गल लडी
जद पर आहूँगा लार गोरी दा
ताँ हल वग्नी सुख घडी

धन-धन्न तेरे माँ बाप गोरीए
जिनाँ तू धेतडी जाई
धन्न तिस रसीए दा भाग
जिस दे तू लड़ लाई

इक गल्ल सुणदी जाइआ

खूहे पर बठीए हाँ नी मुटिआरे
इक गल्ल सुणदी जाइआ नी वांकीए नारे नी

राहीआ जांदिआ हा वो सिपाहीआ
किआ गल्ल गलादा तू बांकीआ राहीआ ओ

धुपा कन्ने जली वो चन्न हा नी मुटियारे
पानीए दा घुट पिला नी बांकीए नार नी

डोल ते रस्सा म देई देंदी वो सिपाहीआ
आप ही भरी के पी आ बांकीआ राहीआ आ

आपू ता असा लख्ख वारी पीद नी मुटिआरे
तेरे हत्थी पीणे दा चाअ नी बांकीए नारे नी

पाणी ता पिआई बी दित्ता ओ सिपाहीआ
होर किआ गलादा तू ओ बांकिआ राहीआ ओ

पाणी ता असा पी वी लित्ता नी मुटिआरे
हुक्के दा दम वी लगवा नी बाकीए नारे नी

चिलम तमाकूए की मैं देई दिदी हाँ ओ सिपाहीआ
आपू ही भरी भरी पी आ बाक्आि राहीआ ओ

आपू ता असा लक्ख वारी पीदे हा नी मुटिआरे
तेरे हत्थी पीणे दा चा नी बाकीए नारे नी

तमाकू ता असी भरी दित्ता हा ओ सिपाहीआ
होर किआ गलांदा तू आ बाक्आि राहीआ ओ

तमाकू ता असा पी वी लित्ता हा नी मुटिआरे
रोटीआ दा टुक्ड दे नी बाकीए नारे नी

दाल ता चौल म देई दिदी हा वा सिपाहीआ
आपू पका आपू खा ओ बाकिआ राहीआ ओ

आपू ता असी लक्ख वारी खादे हा नी मुटिआरे
तेरे हत्थीं खाणे दा चा नी बाकीए नारे नी

रोटी ता असा करी वी दित्ती हा ओ सिपाहीआ
होर किआ गलादा तू ओ बाकीआ राहीआ ओ

रोटी ता असा खा वी लित्ती हा नी मुटियारे
सोने जो कपडे दे नी बाकीए नारे नी

लेफ तलाई म देई दिदी हाँ ओ सिपाहीआ
आपू बिछा आपू सौ ओ बाकीआ राहीआ ओ

दुक्ख म तौ कौ वडा दिता नी मुटिग्रारे
धरमे दी भैण हो तू नी वांकीए नारे नी

ग्राए गए दी सेवा करनी हा वो सिपाहीग्रा
असां दा है पहिला चा आ बांकिग्रा भाईग्रा जो

खूहे दीआं बोलां सँभाल

खूहे ऊपर खडोतीए मुटिआरे नी
पाणी दा घुटट पला वाकीए नारे नी

कच्छ वडा कच्छ लाटकी जो सिपाहीग्रा जी
आपू डोलो आपू पीउ ग्रसा तर महिरम नाही

आपणा ता भरिजा नित्त पीणा मुटिआर नी
तेरे हत्था दा च्हादे पतलीए नारे नी

भँन घडा कर ठीकरी चल सिपाहीआ जी
तू चल मेरे नाल पतलीए नारे नी

तेरे जिहे दा छाकरे जो सिपाहीग्रा जी
साडे बापूए दे चरबेदार जांदिआ राहीग्रा जी

तेरे ता जिहीग्रा दा गोरीग्रा पतलीए नार नी
साडी माऊ दीग्रा पँनहार पतलीए नारे नी

घर गई सस्स पुछे नूह मेरीए
एडी देर कुथू लाई पतलीए नार नी

खूह दे ऊपर छोक्रू माए मेरीए नी
बैठा था झगडा पाए असा उह्दे महिरम नाही

किहो ता जिहोआ उह्दीआँ अक्खीआ नूहे मेरीए नी
किहा जिहो उद्दी नुहार पतलीए नारे नी

नणदा ता जिहोआ उह्दीआ अक्खी माए मेरीए
तेरे तां जिही उह्दी नुहार असा उह्दे महिरम नाही

तेल कटारीआ पाई लिआ नूहे मेरीए नी
करिआ सिपाहीआ दी टहिल पतलीए गोरीए नी

तेल कटोरीआ चोई गिआ जो सिपहीआ जी
दरे दीआ भिता खोल्ह बाकिआ माहीआ जी

दरे दीआ भिता कीहा खोल्हाँ मुटिआरे नी
खूहे दीआँ बोला सँभाल पतलीए नारे नी

निक्कीआ ता हुदीआँ बिआही गिआ जी सिपाहीआ जी
हुण होई मुटिआर बाकीआ राहीआ जी

अबे दा बूटा कत साडे लादे

अबे दा बूटा कत साडे लादे
ते मरूआ किआरीआ अऊँ लानीआँ
ओ जिंदे अऊँ लानीआ
ओ चदा अऊँ लानीआ

अबे की पाणी क्त साडे दिंदे
ओ मरूए की पाणी अऊँ दिनीआ

जा जिंदे अऊँ दिनीग्रां
ओ चन्ना अऊँ दिनीआं

अँबे का गोडी क्त माड़े दिदे
आ मरुए दी गोडी अऊँ देनीआ
जो जिंदे अऊँ देनीआ
ओ चदा श्रऊँ देनीग्रा

अत्र दी छाइआ क्त साड वहिंदे
आ मरुए दी छामा ग्रऊँ वहिनीग्रा
जा जिंदे अऊँ वहिनीग्रा
ओ चदा अऊँ वहिनीआ

ओ पाणी कीआ करी भरना

खडीग्रा कुआलीग्रा वम मेरे पांदीआ
हो पीड लग्गी जली वखीग्रा
हो पाणी कीआ करी भरना नूरपुर दीग्रा घटीग्रा

भिग्रागा जा हुँदिआ मैले दा टाक्रू
सिरे पर रखी देंदीग्रा
हो पाणी कीआ करी भरना नूरपुरे दीजा घटीआ

छल्लीआ दी राटी सरसा दा साग
रिम्दा कालीआ हँडीग्रा
हा पाणी कीग्रा करी भरना नूरपुरे दीग्रा घटीग्रा

चुक्किग्रा घडालू मीनी पर धरिग्रा
सत वल पई जादें वखीग्रा
हो पाणो कीग्रा करी भरना नरपुर दीग्रा घटीग्रा

गगी ते सुदर

पाणी भरी लैणा डुघ नालूए
जाती दा किग्रा पूछना भत्त खाई लैणा इक थालूए

फुन फुलिआ ममत डटीग्रा
ग्रज्ज गगी तेरे प्राहुणे क्ल्ल जाणा सुक्त मडीग्रा

फुन फुलिग्रा कारी पिपनी
सुदरे दा बोलना सुणी गगी ग्र दरे ता बाहर निकनी

फुल्ल फुनी के सुक्की ग्रो गिग्रा
चन गगी नम्स चलीए माडा ग्रनजन मुक्कीग्रो गिग्रा

फुल्ल फुली के तोडी ग्रो दित्ता
कीनी साटी ग्रगली लाई कीनी सदर विछोडी ग्रा दित्ता

घडा भरीग्रा बिलो बिल्लीग्रा
गगीए दा बोलणा सुणी सुदर जलदा दिलो दिल्लीग्रा

तेरे अँगने चा वज्जे तबले
लुकी छिपी ग्राइग्रा सुदरा नरे बरीग्रॉ ने लण वदले

कधी भन्नी दणी पैर देई के
इक वारी मिल गगीए चाही मारी दिग्रा जहिर देई के

घडा भरी जा

छला पडतूग्रा मेरा घडा भरी जा
घडा भरी जाई बनमा ग्रा छला पडतूग्रा

चुक्किश्रा घडोलू गोरी पाणीए जो जाँदी
बिगा डिगे तेरे वाही जो भलीश्रा भलीश्रा

वाही कने हृत्थ मत लादा भलीश्रा
मत लादा भलीश्रा जो बगा भज जादीश्रा

सस्स श्रा ननाण दिंदी गाली श्रो
हो बगा भज जादीश्रा

सस्स ते ननाण मेरी जनमे दी वरन
उठी वहाँ मिजो दिंदी गाली श्रा

मेरा भरी द घडा श्रो छला पडतूश्रा
घडा भरी जाई बलमा

घडोलू कीआँ भन्निआ

घडोलू कीआ भन्निश्रा
कोई पुछे दिल दे सईआ नू

सिरा दे वे साल्लूआ नाका दे बालूआ
चलदी वे तिजो ठोकर लगिआ
घडोलू कीआ भ नग्रा

मडी शिवरातरी कुलू दे दसीहरे
मुक्ता री नुलाडीए जे खरीदिआ वे
घडोलू कीश्रा भन्निआ

सूने दा ना घटोलू रुपे रा नी वणिआ
माटीए रा बणाइआ है
घडोलू कीम्रा भ निम्रा

पाणी वो भरी के त्रौडी पर रखिम्रा
चक्दिम्रा भज्जी गिम्रा हो
घडालू कीम्रा भ निम्रा

दूरे ते ना मार अक्खीयाँ

म्रो मेरे घडे दा बिल सँघडा
मिलणा तां मिल छोरीए
म्रसी टप जाणा मडी कागडा

म्रो घडा भरणा धाई धोई के
ए ता नार बगानी छोरुम्रा
कमी भरदा रोई-रोई के

मेरी कुरती लाणी कीगरी
दूर ते ना मार म्रक्खीम्राँ
नेडे म्रा मिल ले जिंदडी

च नो ते चतरु

चतरु ने मुरली वजाई वो
च नो छोरी पानीए जो म्राई वा

वैरीम्राँ वैर कमाइम्रा वो
चतरू भरती कराइम्रा वो

चुक्किम्रा घडोलू गोरी पाणीए जो जांदी
बिगा डिगे तेरे बाही जो भलीम्रा भलीम्रा

बाही क्ने हत्थ मत लादा भलीम्रा
मन लांदा भलीम्रां जो वगा भज जादीम्रां

सस्स म्रो ननाण दिंदी गाली म्रा
हो उगा भज जादीम्रा

सस्स ते ननाण मेरी जनमे दी उरन
उठी बह्ों मिजा दिंदी गाली म्रो

मेरा भरी ते घडा म्रा छला पडतूम्रा
घडा भरी जाई बलमा

घडोलू कीआ भन्निआ

घन्नोलू कीआं भन्निम्रा
काई पुछे दिल दे सईआं नू

सिरा दे वे सालूआ नाका दे बालआ
चलदी व तिजो ठोकर लगिआ
घडोलू कीआं भन्निम्रां

मडी शिवरातरी कुलू दे दसोहरे
मुक्ता गी नुलाडीए जे खरीदिआ वे
घडोलू कीम्रां भन्निआं

सूने दा ना घडोलू रुपे रा नी बणिआ
माटीए रा वणाइआ है
घडोलू कीग्रा भन्निग्रा

पाणी वो भरी के बौडी पर रखिग्रा
चकदिग्रां भज्जी गिग्रा हो
घडालू कीग्रा भन्निग्रा

दूरे ते ना मार अक्खीयां

ग्रो मेर घडे दा बिल मँघडा
मिलणा ता मिल छोरीए
ग्रमीं टप जाणा मडी कागडा

ग्रो घडा भरणा धोई धोई के
ए ता नार बगानी छोरुग्रा
कमौं भरदा रोई-रोई के

मेरी कुरती लाणी कीगरी
दूरे ते ना मार ग्रक्खीग्राँ
नेडे ग्रा मिल ले जिंदडी

चनो ते चतरू

चतरू ने मुरली वजाई बो
च नो छोरी पानीए जो ग्राई बो

वैरीग्रा वर कमाइग्रा वो
चतरू भरती कराइग्रा बो

इक तां वठा मुसाफर नी सस्सू मेरीए
वठा ता मयर पाई नी सस्मू मेरीए

कीदे ता जेइग्रा उदीग्रा अक्खिग्रा नी नूए मेरो
कीदे जेई उन्दी चाल नी नूए मेरीए

नणदा ता जेइग्रा उदीग्रा अक्खिग्रा नी सस्सू मेरो
देवर ता जई उन्दी चाल नी सस्सू मेरीए

वारी ता वरसी पुत घर आइग्रा नी नूए मेरीए
कर न तू हार शिगार नी नूए मेरीए

उखड गिआ माहीए दा लेखा

असा कुसे की मदा नही बोलणा
चदे दी चादनी चदे कने
चदे दी चादनी चदे कने
मदा नही बोलणा नदे कने

हो नारिग्रा भवरिजा पमारिआ
बुचक्ग्रिा चुक्की चुक्की लक्क थक्की जादा
अक्लां आइग्रा ना माए डोगरे की
असा कुसे की मदा नही बोलणा
चदे दी चांदनी चदे कने

लिमणा पोचणा कोई करी लगी
उखड गिआ माहीए दा लेखा
अजे बी अक्ला आइआं ना
असा कुसे की मदा नही बोलणा
चदे दी चांदनी चदे कने

कत मेरा मोही लिआ

कत मेरा मोही लिआ
मोहणीआं चालां दे नाल
इस तो याद आ गई नीदा
तां वठी पीढे नं डाह

सुण नी सदीए गवांढण
मेरे घर मत आ
कत मेरा मोही लिआ
मिठडे बोलां दे नाल

ना मैं तेरे घर गई
ना मैं लिआ नी चुरा
कत आपणे बन्नी लिआ
न्हाढिआं सगलां दे नाल

चरखा गोरी दा रगना[1]
वैठो पीढे न डाह
कत मेरा मोही लिआ
मोहणीआ चाना दे नाल

चबे दीए डालडीए

चबे दीए डालडीए
माईए वेस्रास ना हो

---

१ इस लोक गीत म दो पडोसिनो का आपस म झगडा चलता है। एक पडोसिन दूसरी स कहती है कि तू मेरे घर आना बन्द कर दे क्योंकि मेरा पति तेरी तरफ खिच गया है। वह उसका जवाब देती है कि तू अपने पति को रोक ले।

ओने अज्ज आई पुजणा
वनी वनी खिली खिली पो
आउँदे कने दुनीआ वसाई देणी
तेरी दिले दी कली खिलाई देणी
मोईए शतावी ना पो
चवे दीए डालडीए
मोईए वेआस ना हो

ओने अज्ज आई पुजणा
वनी वनी खिली खिली पो
ओने आउणा तजो साउगी लई जाणा
तुसा इथो जाई करी नीआँ वसेरा पाणा
मोई चाओ ए चाओ
चवे दीए डालडीए
मोईए वेआस ना हो

दिल जान जानीआ

तेरा लौंगा लाइ के मेरा नाका दुखदा
तेरा लौंगा म नही लाणा दिल जान जानीआ

तेरी बगा ने ला मेरी बाह दुखदी
तेरी बगा म नही लाणी दिल जान जानीआ

तेरा फुल्ल बूट पा मेरे पैर दुखदे
फुल्ल बूट म नही पाणे दिल जान जानीआ

तेरी घोडी चढ के मेरा लक्क दुखदा
म ते जीप मँगाणी दिल जान जानीआ

तेरे गाने न ना मेरे गाग दागन
तेरे गाना म नही नाण दिन जान जानीआं

तेरा वठा न ना मेरा गना दुखदा
तेरा वठा म नही नाणा दिन जान जानीग्र।

दिल जान सुहणिआ

लौग पाई न ल बाँकी नगदी
इह लौग तू पाई ल दिन जान मुहणाए

लौग पाई के मेरा नाका दुखदा
मिजो तीली निआई द दिन जान मुहणिग्र।

हारा पाई ल ल बाँकी नगदी
इह हारा तू पाई लै दिन जान मुहणीए

हारा पाई वे मेरा गला दुखदा
मिजो पडल लिग्राई दे दिन जान मुहणिग्रा

फुल बूटा पाइ ल ग्रसा जोत लघणी
इह फुल बूटा पाई ल दिन जान सुहणीए

फुल बूटा पाइ के मेरा पैर दुखदा
मिजो सडन लिग्राइ दे दिन जान मुहणिग्रा

तू घोडी चढो जा लौ बांकी नगदी
इह घोडी तू चढी जा दिल जान सुहणीए

घोडी चढी के मेरा लाका दुक्खदा
मिंजो जीप लिआइ दे दिल जान सुहणिआ[1]

जीऊडा किंजो डोलणा

जीऊडा नी डोलणा मँदणा नी वोलणा
करी लीणी मौज कता
जीऊडा किंजो डालणा

भरी के वदूकड़ू मोडे पर रखिआ
मारी लैणी तित्तरे दी जोडी
चदा जीउडा किंजो डोलणा

अग्गे अग्गे बौड़ू पिच्छे पिच्छे पिपड़ू
ग्रोलीआ सी गइग्रा पक्कीग्राँ
चदा जीऊडा किंजो डोनणा

मरने ते नी डरनां

मडीआ जे तेरीग्रा राजा जे वसदा
रेहलू इ ता वसदी राणी
मरने ते नी डरना भला प्रीत कीहा लाणी

खडाँ जे तेरीआ पत्थर सुणीदे
जवर सुणीदा पाणी
मग्नें ते नो डरना भना प्रोत कोहा नाणी

---

१ एक पहाडन अपने प्रेमी से इस गीत म कहती है कि मैं तरी कोइ भी चीज नही पहनूगी और प्रेमी को ताने देती है।

छोटा जिहा गभरू सुणीदा बस्सवा
तू मर जाएँ चुढ़ूआ घममा
म तेर नही ओ बसणा

चढ़ी चाँदनी रातीं

ठण्डा पाणी चढ़ी चाँदनी राती
जाहने पतलू दा नाना
पाणा पीणा तेरे हाथे दा गारीए
निओं तू लोटे दी मञ्जो

नाव दे बागी फुल्लण जा फुल्लदे
म्हाड़े जा बागी बेन
अज नी राती मिलणा तां मिल न
फेर मजागां दे मेने
ठण्डा पाणी चढ़ी चाँदनी राती

मोरां दे बागे फुल्लणू जा फुल्लदे
म्हाड़े बागे फुल गासी
मन रण नी गल नही रीणीए
नणां हेल्पी न नाभी
ठण्डा पाणी चढ़ी चाँदनी राती

मन मिदा जो मेरो तरसांदी ओ

दर त चनिआ मिनरान भाराए नी मुर्गए
रिन्ट रिन्ट रद गुनारी हाठ भारीए नी मुर्गए
मन मिदा ना मेरी तरसांदी आ

देर ते चलिग्रा कसूर भावीए नी मुइए
हड्डीआ दा होइ जाँदा चूर भावीए नी मुइए
मत जिंदा जो मेरी तरसादी ओ

देर ते चलिग्रा जलधर भावीए नी मुइए
मँजा डाह् न ठडे अदर भावीए नी मुइए
मत जिंदा जो मेरी तरसांदी ग्रो

देर ते चलिग्रा गुलेर भावीए नी मुइए
नक्के जो लिआगा वेसर भावीए नी मुईए
मत जिंदा जो मेरी तरसादी ओ

देर ते चलिग्रा नादौन भावीए नी मुइए
मुडी के आदा नही साडा ग्रौण
मत जिंदा जो मेरी तरसादी ओ

चाचडी दा दाणा

जो तू चाचडी दा दाणा
ता मै चाचडी वण जाणा

जे तू चाचडी वण जाणा
ता म नौकरीआ चने जाणा

ज तू नौकरीग्रां चन जाणा
तां म रादीआ चुप्प नही जाणा

जे तू रोदीआ चुप्प नही जाणा
तां म घरे जु आई जाणा

जे तू घरे जु आइ जाणा
तां म चरखे तद नहीं पाणा

जे तू चरखे तद ना पाणा
तां म होर विआह कराणा

जे तू होर विआह कराणा
तां म अद्धो-अद्ध वंडाणा

फुड़ा विहने खड़काइआ
बागीं ता नरिहां पत गए होईआं
उजाड़ो मह घर है मेरा

इक दिन होइआ इक दिन होइआ
मुसाफिर आइआ जी
मंगदा है रातीआ डेरा
रातीआ डेरा नहीं मिलदा
तूं मेरी भाबी मैं तेरा दिउर
कन्त तेरे दा छोटा भाई
गोला मगानीआं ग्माई बणातीआं
गीता तां राजे दी नगरी

तू मेरी गोरी मैं तेरा कंत
माण तेरा मैं लिआ

घड़ी दे सुनिआरा

घड़ा दे सुनिआरा हत्थी दे मुंदरू
जिन्हाँ दे लाई दे बोर वो
जिन्हाँ दीआँ तू वे तकदा
तेरीआँ जो तक्कदे होर वो

घड़ी दे सुनिआरा मेरे कन्ना दे काटे
जिन्हा दे लाई दे बोर वो
जिन्हा दीआ तू वे तक्कदा
तेरीआ जो तक्कदे होर वा

घड़ी द सुनिआरा मेरे पैरा दीआ झाजरा
जिन्हा दे लाई दे बोर वो
जिन्हा दीआ तू वे तक्कदा
तेरीआ जा तक्कदे होर वा

मिझो बालू घड़ाई दे

मैं जो गलाइआ मिझो वालू घड़ाई दे
विआहे जो होणा किआ जाणा हो इसरूआ

हुण दी फसल दे दाणे तू आउण दे
तिझो घड़ाई देणा वालू हो रहिनीरू

मैं जो गलाइआ मिझो बूट तू लिआई दे
विआहे जो होणा किआं जाणा हो इसरूआ

हुण दी फसल री करी ल निहाल तू
तिझो लिआई देआ बूट हा

आप ता बैठा बठा हुक्का तू पीदा
मिझा नी लिआइ देंदा काट

हुण दी कणक री करी लै निहाल तू
तिझो घड़ाइ देसा काटे

जिंद जान सोहणीए

मेरा जुत्ता पाइ कै तू ता बाकी लगनी हो
मेरे जुत्ते जा पाइ ले जिंद जान साहणीए

तेरे जुत्ते जो पाइ के मरे पर दुखद हो
मनू सडल मँगवाइ दे जिंद जान सोहणिआ

मेरा चोला पाइ के तू ता बाकी लगदी हो
मेरे चोने जा पाइ ले जिंद जान सोहणीए

तेरा चोला पाइ के मेरे अग दुखदे हा
मनू जम्पर सुआइ दे जिंद जान सोहणिआ

मेरा जामा पाइ के तू ता बाकी लगनी हो
मरा जामा जो पाइ ले जिंद जान सोहणीए

तेरा जामा पाइ के मेरी लत्त दुखदी हा
मैंनू साढी मँगाइ दे जिंद जान सोहणिआं

महिला दे थल्ले जादिआ जवानाँ

महिला दे थल्ले थल्ले जादिग्रा जवाना
महिला दे अदर आइआ
हरे रुमाले वालिग्रा राझणा

महिला दे अदर कीआ आवाँ गोरीए
साथी चले जादे दूर
महिली चुवारे बैठीए गोरीए

साथीआ तेरीग्राँ जो चिट्ठीआ भेजा जवाना
नाले भेजा चौकीदार
हरे रुमाले वालिग्रा राझणा

महिलाँ दे थल्ले-थल्ले जादिग्रा जवाना
महिलाँ दे अदर ग्राइआ
हरे रुमाल वालिआ राझणा

महिला दे अदर कीआ ग्रावा गोरीए
नीले जो लई जांदे चोर
महिली चुवारे बैठीए गोरीए

नीले तेरे जो पीहरू भेजा जवानाँ
नाले भेजाँ चरखेदार
हरे रुमाले वालिआ राँझणा

किन्हे रँगी तेरी पगडी जवानाँ
कि्हे कढ्िग्रा रुमाल
हरे रुमाले वालिग्रा राँयणा

भण रंगी मेरी पगडी गारीए
नारे वढिआ ओ रुमाल
महिली चुवारे बठीए गारीए

किहो जिही तेरी भनडी जवानां
किहो जिही तेरी नार
हरे रुमाल वालिआ रांयणा

तेरे जिही मेरो भंनडी गारीए
तेतो सवाई मेरी नार
महिली चुबारे बठीए गारीए

विज्ज पवे तेरी भनडिआ जवानां
नार डसे काला नाग
हरे रुमाले वालिआ रांयणा

विज्जु हुदी मेरी भंनडो गारीए
नाग कुले दा परोहत
महिली चुवारे बठीए गारीए

महिला दे अदर कीआ आवा गोरीए
महिला दे अदर वैठीए सुहणीए
महिली चुवारे वठीए गोरीए

लक्मू लबड बुरा

अक्खी नी गारीए तेरीआं जिउं अव दीआ डलीआं
कजला सोभी सोभी पउंदा
मन डोली डाली जांदा
कजला पाणा नहीं ओ दिंदा

मेले जाणा नही ओ दिदा
लब्भू लवड बुरा

अक्खी नी गोरीए तेरीआ रौंगे दीआ फलीआ
कैंसे सोभी साभी पउँदे छल्ले छापाँ ओ भला
छापा पाणा नही ओ दिदा
अक्खी लाणा नही ओ दिदा
मेले जाणा नही ओ दिदा
लब्भू लवड बुरा

मत्था जो गोरीए तेरा जिउँ बदली दा चन्ना
कैंसे साभी मोभी पउँदे विंदीआ टिक्के ओ भला
विंदीआ लाणा नही ओ दिदा
टिक्के पाणा नही ओ दिदा
मेले जाणा नही ओ दिदा
लब्भू लवड बुरा

गल्ल सुणी जा

गल्ल सुणी जा हो मेरी गल्ल सुणी जा
ओ अडिआ गल्ल सुणी जा
ओ भलिआ गल्ल सुणी जा

चोली फटे ता मैं टाकीआ लावा
अवर फट्टे कीआ सीणा
गल्ल सुणी जा ओ

दिखदीआँ दिखदीआँ गुजरीआँ राता
पता नही तिजो कुण जिहीआँ राकाँ
चदरीआ जात कुजाता

गल्ल सुणी जा हा मेरी गल्ल सुणी जा
ग्रा ग्रडिग्रा गल्ल सुणी जा
ग्रो भलिग्रा गल्ल सुणी जा

मेरा बनाई दे रुमाल

दिल दिग्रा पिग्रारिग्रा
मेरा बनाई दे रुमाल

बजाजी दे जादा
कपड़े ले ग्रांदा
दिल दिग्रा पिग्रारिग्रा ग्रो
मेरा लिग्राइ दे रुमाल

दरजी दे जादा
कपड़े सी ग्रादा
दिल दिआ पिआरिआ ओ
मेरा सिग्राइ दे रुमाल

घाबी दे जादा
कपड़े धुआंदा
दिल दिआ पिआरिआ ओ
मेरा धुग्राइ दे रुमाल

अगणा तां तेरे चबा खिडिआ

बाहर तां कुण खड़ा सज्जणा
पखलिआ माह्णूआ ओ

रमते ते भुलिआ नी इयाणीए
पखला वो मैं माह्णू ग्रो

अगण ता तेरे चबा खिडिग्रा गोरीए
लाइ वो लैणा कालिग्रा केसा वो

जली वी जाइग्रो चबे फुल सजणा
भाइग्रा जली वो जाइग्रो काले केम ग्रो
जिन्हा वा कारन चबा लाइग्रा सज्जणा
भाइग्रा ग्रो वी गए परदेस ग्रो

की वो जलन चबे फुल गोरीए
की वो जलन काले केस ग्रो
जि हा दे कारन चबा लाइया इयाणीए
ग्राइ रहीए इत देस ग्रो

दो चाई दे पत्ते

दो पत्ते चाइ दे पतीला पाणी दा
सवाद नही ग्रो लग्गदा खसम खाणी दा

ग्रज्ज वणावा चाह हाए कल्ल वणावागे
परसो चीनी जाके हाए किते लावागे
दो पत्ते चाइ दे पतीला पाणी दा
सवाद नही ग्रो लग्गदा खसम खाणी दा

कुडी दा भाइग्रा कहिंदा मैनू गलास भरी दे
नही ते आपणी कडी हाए गहिणे धरी दे
दो पत्ते चाइ दे पतीला पाणी दा
सवाद नही ग्रो लग्गदा खसम खाणी दा

दिल मेरा मोहिआ तू ने

परसा परसू परसरामा
दिल मेरा मोहिआ तू ने

साडी वागी पक्के केले
अज विछडे कल मेले
आ आ के मिल ले परसरामा
दिल मेरा मोहिआ तू न

आईआँ गडडीआँ देंदी हरना
तीन जनीआ वाहर खडीआँ
आ आ क मिल न परसरामा
दिल मेरा मोहिआ तू न

साडी वागी पक्के नीवू
फड ले डाली ताड ल नीवू
हँस हँस के परसरामा
आ दिल मेरा माहिआ तू न

प्रदेसाँ ना जा

पाडे जा पानी आ हिग
गोरी कीहाँ जीगी तुमा प्रदेस चल
प्रदेसाँ दे मामने डाहड ओ टाना

तर पाड जा पानीआ सजी
तू वडा मुसनी घर रानी ना छडडो
प्रदेसाँ द मामन टान्डे आ टाना

तेरे घोड़े जो पानीग्रा घाह्
मैं कत्ता तू लाह् घर बैठा खा
प्रदेसा दे मामले डाह्डे ग्रो ढोला

तेरे घोड़े जो पानी दाणा
मैं कत्तां तूं लाणा घर बठा खाणा
प्रदेसा दे मामले डाह्डे ग्रो ढोला

दिल मेरा लै गिआ चोर

ह्री भरी ब्रारा ते साजन चलिग्रा
दिल मेरा लै गिआ चोर
उचे उचे परवत रिम-झिम बरखा
तेरी याद ग्राई बडे जोर

रम्स भरी याद तेरी कपटी जा दिलड़ू
ग्रक्खीग्राँ नी ग्रावे धरू
पारीए ही जाणा देमो
तेरा करी दै चूर

जीजा चलिआ नौकरीआं

सुण सालीए ओ
जीजा चलिआ नौकरीआ
जो मँगणा सो मँगले जीजा चलिआ नौकरीआ

ग्रो जीजा जी
इक्क लिग्राइग्रो लाल चूडा इक्क लिग्राइग्रो त्रिंदीआ
इक्क लिआइओ सुच्चे मोती इक लिआइग्गो चुनीआ

दिल मेरा मोहिआ तू ने

परसा परमू परसरामा
दिल मेरा मोहिग्रा तू ने

साडी वागी पक्के केले
ग्रज विछडे कल मेले
ग्रो ग्रा क मिल ने परसरामा
दिल मेरा मोहिआ तू ने

ग्राईग्रां गड्डीग्रां देंदी हूरना
तीन जनीग्रा वाहर खडोग्रा
ग्रो ग्रा के मिल ने परसरामा
दिल मरा मोहिग्रा तू ने

साडी वागी पक्क नीवू
फड ल डाली तोड ले नीवू
हँस हँस के परसरामा
ग्रा दिल मरा माहिग्रा तू न

प्रदेसां ना जा

धाड जा पानी ग्रा हिंग
गारी थीहां जीगी तुसां प्रदस चन
प्रदसां द मामने ढाहड जा ढाला

तर धार जा पानीजा गजी
तू यग्न मुगरी घर रानी ना छडडी
प्रदसां दे मामने ढाहडे ग्रा ढाला

तेरे घोडे जो पानीग्राँ घाह्
मैं कत्ता तू लाह् घर बैठा खा
प्रदेसा दे मामले डाह्डे ग्रो ढोला

नेरे घाडे जा पानी दाणा
मैं कत्ता तू लाणा घर वठा खाणा
प्रदेसा दे मामले डाह्डे ग्रो ढोला

दिल मेरा लै गिआ चोर

हरी भरी बाँरा ते साजन चलिग्रा
दिल मेरा लै गिआ चोर
उचे-उचे परबल रिम-झिम बरखा
तेरी याद ग्राई बडे जोर

रस्स भरी याद तेरी कपटी जा दिलडू
ग्रक्खीग्रा नी ग्रावे धरू
पारीए ही जाणा देसो
तेरा करी दै चूर

जीजा चलिआ नौकरीआँ

सुण साली‌ए ओ
जीजा चलिआ नौकरीआ
जो मँगणा सो मँगने जीजा चलिआ नौकरीआ

ग्रो जीजा जी
इक्क लिग्राइग्रो लाल चूडा इक्क लिग्राइग्रो त्रिदीआ
इक्क लिआइओ सुच्चे माती इक लिआइग्रो चुनीआ

ओ सालीए श्रो
क्ति पाउणा लाल चूड़ा क्ति लाणीश्रा बिंदीश्रा
क्ति पाणे सुच्चे मोती क्ति लाणीश्रां चु नीआ

ओ जीजा जी
हथ पाणा लाल चूडा मथे लाणी बिंदीआ
गले पाणे सुच्चे मोती सिरे लणीआ चुनीआ

ओ सालीए श्रो
कुन देखे लाल चूडा कुन देखे बिंदीआ
कुन देखे सुच्चे मोती कुन देखे चुनीश्रा

जा जीजा जी
सहुरा देखे लाल चूडा सस्स देखे बिंदीश्रा
ननाण देखे सुच्चे मोती वीर देखे चुनीश्रा

श्रो सालीए श्रो
लिश्राई दे मेरा लाल चूडा लिश्राई दे मेरी बिंदीआ
लिश्राई दे मेरे सुच्चे मोती लिआई दे मेरी चुनीआ

ओ जीजा जी
टुट्टी गिआ लाल चूडा गुआची गईआं बिंदीश्रा
भज्जी गए सुच्चे मोती फटी गईश्रा चुनीश्रा

ओ सालीए श्रो
जीजा चलिश्रा नौकरीश्रा
हार मंगना मा मंग न जीजा चलिश्रा नौकरीश्रा

कदने घर आमणा जी

कच्चीआ कलीआ ना तोड राजे दिआ नौकरा जी
पकणे दे दिन चार सुक जादीआ कलीआ ओए

सुत्ती पई नू ना छेड राजे दिआ नौकरा जी
सुत्ती पई दा दिल दूर असी नही बोलणा जी

कच्चीआ कलीआ सँभाल राजे दीए बेटीए नी
असी चले परदेस मुड नही आमणा ए

अगे ता फडा तेरा नीला पिछे फटा बाँह तेरी जी
सच्च दसो बेईमान कदने घर आमणा जी

पती जिन्हा दे सदा मुसाफर

हरीए नी मेरीए लम्मीए खजूरे
पत्त जिन्हाँ दे पीले ओ
पती जिन्हा दे सदा मुसाफर
नारा दे किआ हीले ओ

राजे बिना कोई राज जे भूरे
वद बिना कोई रोगी ओ
पती बिना कोई नार जे फिरदी
फिरदे तीन वियोगी ओ

बागे दे विच तोता जे बोले
मैं समझिआ कोई माली ओ
कढ के कलेजा तैनू जे दित्ता
पिंजरा रहि गिआ खाली ओ

असीं परदेसिआ चले जाणाँ

तेल वकेंदी ए तेलणी
छतिग्रा साडिआ तेल पाईग्रा

तेल पाणा सो डोहल जाणा
असी परदेसीआ चले जाणा

खूहे पर खडोतीए गुजरीए
छतिआ साडिआँ दही पाईग्राँ

दही पाणा सो डोहल जाणा
असी परदेसीआ चले जाणा

चन्ना माढ़ा चढिआ ओ

चन्ना माढा चढिआ ओ उप्पर रजौरीआ
वणी जाइआँ पंखरू ते मिली जाइआ चोरीआ
वडा है वमाग मेरी जान ग्रा

चन्ना माढा चढिआ आ उप्पर रिग्रासीआ
थाड़ा थाड़ा ताप जिंदे मधी ओ दाजासीग्रा
चीग्राँ मिलण होगा मेरी जान ओ

चन्ना माढा चढिआ ग्रा चढिग्रा पिछे उमरे
पाने चीआँ जाणा तवी ठाठाँ मार
वडा है वमाग मरी जान ग्रा

चन्ने जी दी हट्टी पर जिल्नीआँ किल्लीग्राँ
इक वारी मिल चंना वाद चाढा छल्लीग्राँ
चीग्राँ मिलन होगा मरी जान ग्रो

चिट्टी चिट्टी चादर चन्ना फुल पाणी फेरमा
हुउँ दिले दा बोल तीजो तेरमाँ
ग्रडा है ग्रसोस मेरी जान ओ

चन्न माढा चढिग्रा ओ चढिग्रा पिच्छे टिक्कारी
घर जिंदे कीग्राँ आमा राजे दीए नौकरी
कीग्राँ मिलण होगा मेरी जान ओ

सँभल सँभल चलणा जरूर

माए नी मेरीए जमूए दा राजा
चवा कितनी कु दूर
उचे उचे परवत डुगी डुगी नदीग्रा
सँभल सँभल चलणा ज़रूर
उचे उचे परवत विखरा ए पैडा
सँभल सँभल चलणा जरूर
दुख सख साज किसे नही पुछणा
ग्रसा निभाणा ज़रूर

हाँ गलादिआँ सच्च वो

हुउँ गलादीआ सच्च वो
मेरे बाकू दिआ चाचूग्रा

आपू ताँ चला जादा नौकरी चाकरी
मिजो ता देई जादा खुरपा दातरो
खाणे जे देई जादा लूणा माकडी
ग्रापू ता खादा दाल भत्त ओ

नौकरी करी के रुपईए लिग्रागा
तेरे गले रा जो गहिणा वणागा

नक्के जो लिग्राई दिगा नत्थ वो
मेरे बाकू दिए भाईए

राटी पकादी तां गरमी लगदी
भाड माजदी ता सरदी लगदी
छाटा जिहा नौकर रख वो
मेरे साकू दिआ चाचूआ

नौकरा दा सिआपा भारी
कम्मे दी करदे टाल मटाली
तनखाह तां मगद पूरी दस वा
मेर वांकू दिए भावीए

तेर बिना मैं हुण नही रहिणा
चनी सोगी सच्च वा कहिणा
गल्लां वणा चाह लक्ख वो
मेर वांकू दीआ चाचूआ

रोई रोई ना कर मनी अक्खीआं
गड्डी नेंगा तैंनू हौसला रक्खीआं
डरा वी लई नेंगा वक्त वो
मर वांकू दीए भाबीए

वजा घरराली नू अज्ज वा
मर वांकू दीए भाबीए

संभली संभली के घरितयां छोरी
हर हर वागां मै छाडें नी अहिरा
गामी जाटी क मन

सभ लोकी मेले जो आईआ छोरी
लाई वारी बाँके चोले

सभ सभ बागी कूजा जे फुलीआ
साड्डे बागे गोभी
खाणे पीणे दा लालच ना अडीए
तेरे नैणाँ दा लोभी

इक हत्थी तेरे मिसरी दा ढेलू
दूए हत्थे तेरे लोटा
सँभली सँभली के चलिआ छोरी
समा लगूगा खोटा

चलणा ता चल गगीए

तेरे मिलणे दा बेला वो
मिलणा ता मिल गगीए
छडड ताँ सारा झमेला वो
चलणा ता चल गगीए

कम्म घरे दा करदी मैं
विहल नही है लग्गदी
वेवस्म मैं होई वा
दिले विच अग्ग बलदी

गडडी आई सटेशन त
सीटी बजादी होई
साडे प्रेम दे गीत जिवें
लोकाँ नू सुणादी होई

गड्डी भरी हाई माणूआ दी
देखी के उर लगदा
मैं ता दूर नी जाणा है
चगा अपणा घर लगदा

तर बाग' च हरी पिपली
जद छोरू मुरली वजे
गगी सुणन जो बाहर निक्ली
जद घोरू मुरली वजे

घडा भरिआ घोई धाई के
जद तरी याद आवे
छोरी मरदी वो रोई राई क
जद तरी याद आव

गगीए बदाम रगीए

घड़ा भरना गरारिआ वने आ गरारिआ वने
सून सुकर पिन्नरी ओ जानी
मूर पिंजरा नमारिआ व न ओ नामारिआ व न
गगीए बदाम रगीए ओ जानी

पुन्न पुलिआ डान तुनीए आ डाल तुनीए
लिखो निखी वजा भेजनी ओ जानी
मैं तां आणा अटारी उनीए ओ अटारी उनीए
गगीए बदाम रगीए आ जानी

पुन्न पुनिआ तारीआ टान आ तारीआ टान
मव गम हानिट जो आ जानी

गम झलिग्रा जांदा ना वछोडे दा ओ वछोडे दा
गगीए वदाम रगीए ग्रो जानी

फुरल फुलिआ डाले वी वरी ओ टाले वी वरी
लोक चालदे ताप लगदे वो जानी
मेरा खून सुक्के तेरे फिकरी ओ तेरे फिक्री
गगीए वदाम रगीए ग्रो जानी

चिट्टे चौल खाणे चीनीआ कन्ने ग्रो चीनीग्रा कन्न
कम तेरा खादा खसमे जा जानी
मैं तां जूडा करना शौकीनीआ कने ओ शौकीनीग्रा कने
गगीए वदाम रगीए ओ जानी

चिट्टे चौलां दो पकाणी खिच्चडी ग्रौ पकाणी खिच्चडी
इक तेरा घर साहमणे ग्रो जानी
दूजी बालगां दी जोडी विछडी ओ जोडी विछडी
गगीए वदाम रगीए ग्रो जानी

ओ सभ सभ फुलनूं फुल्ले

ग्रो सभ सभ फुलनू फुल्ले बागी फुल्ली गोभी
उहदे तेरे नणा ताल नैणां दा मैं लोभी

ओ सभ सभ फुलनू फुल्ले फुल्ल ना रही घनेरी
औ कना जो मैं भुमकू जो दिगा माथे जो जंजीरी

ओ सभ सभ फुलनू फुले बागी फुल्लिआ जीरा
ओही राती सुपना होइग्रा तेरे चादर दी लीरा

कडो

उठीआ उठीआ नी कडीए परगडा होइआ ना
तिजो वीग्रॉं पता ससू परगडा हुण होइग्रा ना

चिडीआ झरमर लाई नी जडीए हुण परगडा हाइग्रा ना
उट्ठी ए क्डा विच हरी सोत भरी दिंदी ना

पुछे हुण ससू जो कडी विनूग्रा कुथू रखिआ ना
किलिजा तेरा विना नी क्डीए कढढ लिआ तरा घडा ना

चुक्किआ घडोलू जो कडीआ पाणीए जो हुण जादी ना
भरिआ घडोलू जी क्डीआ विनूआं पर धरिआ ना

पार जादिआ भाईग्रॉं जाती दा कुण हुता ना
जाती दा मैं हुना जी भण पंजले दा पंजला ना

उटठी ए हुण क्डी विचारी गल लगी मिली ना
चुक्ग्रिा घडोलू जी क्डीआ मुडी घरे जो ग्रादी ना

घनोडिआ जी घडा नी घर जाई क्डीग्रा रखिआ घडालीआ ना
तिजो क्आि होइआ नी क्डीए डूणा मडणी होई बैठी ना

नवीं लक्खां दा हार जी ससो खूहे विच पिग्रा ना
नवीं लक्खां दा हार गुवाइआ नी
क्डीए दसा लक्ख दा वणवाणी ना

भेजिमां हुण चिट्ठीग्रां ससू हुण क्त घर ग्राइग्रा ना
नवीं लक्खां दा हार जी क्डीग्रा खूह द विच पाइआ ना

दूरा दूरा जो भेजीआ चिट्ठीआ डोए मगवाए ना
खूहे दे उपर गए जी कडीए हार नही हुण मिलदा ना

सच सच गलाइग्रा सी कडीए हार किज्जो दित्ता ना
पारे पारे जादिआ भाईग्रा जाती दा कुण हुदा ना

जाती दा मैं हुदा नी भैणे पैंजले दा पैंजला ना
उट्ठी ए हुण कडी विचारी गली लग्गी मिली ना

उट्ठी ए हुण कडी विचारी नवाँ लक्खा दा हार नी
खोलिआ हार जो कडीआ भाईए दे गले पाइआ ना

साउण गिआ प्रदेस

साउण साउण वरमी रिहा जी ढोला
साउण गिआ प्रदेस क्द घर आउणा
दरमाँ दीआ वोरीग्रा दई भेजिग्रा जी गोरीए
तू आपणीग्रा ससू दी करी लैणी कारी

कोरे ताँ कोरे कागद लिखदी
तुसा दीग्राँ भैणा दा विग्राह
दरमा दीग्रा वोरीग्रा दई घलगी
तू आपणीग्रा नणदा दा करी लैणा विग्राह

कोरे ताँ कोरे कागद लिखदी
तेरीए नारी दा है बुरा हाल
दीग्रा जी राजिग्रा छुट्टीआ
मेरीए नारी दा है बुरा हात

तेरी सौं असां जी

वल्ल की हाजरी तरी वा घुमारुम्रा
वल्ल की हाजरी तरी
तरी सौं वल की हाजरी तेरी
मन मोइम्रा छोड दे बरीम्रा

दिन चढने नू ग्राइम्रा वो घुमारुम्रा
लो दिन चढने नूं ग्राइम्रा
तेरी सौं दिन चढने नूं ग्राइम्रा
मन मोइम्रा छोड द वैरीम्रा

रज के न कीतीम्रा गल्लां वो घुमारूम्रा
ग्रो दिल दा ना चुकिम्रा चाअ
तेरी सौ दिल दा ना चुकिम्रा चाअ
मन मोइआ छोड द बरीम्रा

चवे ला बजी री ढोक्ली घुमारूआ
लो जमूम्रां बजी रा नगारा
तेरी सौ जमूम्रा बाजी रा नगारा
मन माइम्रा छोड दे बरीआ

दिल दा लगदा चाम्र वो घुमारूम्रा
दिल दा लगदा चाम्र
तेरी सौं दिल दा लगदा चाम्र
मन मोइम्रा छोड दे वरीम्रा

तुसां जो पिम्रारी नौकरी घुमारूम्रा
लो ग्रसां जो पिआरी सेजा

तेरी सौ असा जो पिआरी सेजा
मन मोइआ छोड दे वैरीआ

सानू लैं चल्ल सग अपणे

डुग्गी डुग्डी वासी लगदी दुआसी
सानू लैं चल सँग अपणे

खरचा थोडा रसता बहुता गोरीए
तू ता रही जाइआ घर अपणे

अँमा तेरी सस्स मेरी ढोला
सानू मोहणीआ लावे

सस्स दा कहिणा सिर पर सहिणा गोरीए
तू ताँ रही जाइआ घरे अपणे

भण तेरी नणद मेरी ढोला
सानू मेहणीआँ लावे

रोटी पकाइआ सीस गुंदाइआ गोरीए
सहुरिआ दे घर पहुँचाइआ

भाबो तेरी जठाणी मेरी ढोला
सानू मेहणीआ लावे

इक्क गलागी दो तू गलाइआ गोरीए
अद्धो अध वडाईआँ

डुग्गी डुग्गी वासी लगदी दुआरी ढाला
सानूं ल चल संग अपण

बुरा साजना दा विछोडा

कलेजूए लगिआ हो दाग वो
बुरा साजना दा विछोडा
नही ओए गम जादा ओ जादा
बुरी ममता री आग वो

कलेजूए लगिआ हो दाग वो
दिने राती याद आवदी
मन नही चन पादा ओ पांदा
बडे बुरे होए भाग वो

कलेजूए लगिआ हो भाग वो
बीती गल्ला याद आंवदी
दीडकीए मन रौंदा ओ रौंदा
बुरी छोरूए दी याद वो

ओ कीआ चलदी म्हडी

ओ कीआं चलदी सपोलीए दी चाल ओ
ओ कीआं चलदी म्हडी
सपोलीए दी चाल ओ

बाही गोरीए तेरे चूडा जा सोहवे
नक्के सोहवे बलाक ओ
ओ कीआ चलदी म्हडी

सुट्टी लैंदा उडदे पँखेरुआ कीओ
चूडे तेरे दी झणकार ओ
ओ कीआ चलदी म्हडी

निम्हा निम्हा तेरीआ ओ अक्खाँ दा कज्जरा
दिले विच मारदा कटार ओ
ओ कीआ चलदी म्हडी

मिजो भुल्लणाँ वीना

मेरीए जिदे तिजो मेरी सौं
मिजो भुल्लणा वी ना
सच्च बोलिआ हो

खेता दे खेताँ घूमे मेरी जानी
याद तेरी आवणी हो
सच्च बोलिआ हो

जान मेरी उवूए रखणी
दई जा छापा निशानी हो
सच्च बोलिआ हो

जिउदिआ दे मेले

सब सव फुल्लण फुली समाण
एउ वागी फुलीरी गोभी

खाणे पीणे दे लानची नाई
तेरिआ नना दे लाभी
भला राजू रीहणा मेरी जिंदडी अडीए
जिउदिआ जिउदिआ दे मेले

उचीआँ धारा पर पिपल सुक्खिआ
ठड नाले दा खूआ
गोरीआ द भला खापड़ू सुके
इह किआ चरज हुआ
भला राजू रहिणा मेरी जिंदडी अडीए
जिउदिआ जिउदिआँ दे मेल

भला राजू रहिणा मेरी जिंदणी अडीए
जिउदिआँ जिउदिआ दे मेल
ठडीआ नालाँ दीए वासदीए नी
डुगीआ नाला द पाणी
भला राजू रहिणा मेरी जिंदडी अडीए
जिउदिजा जिउदिजा द मेल

नाम कटाई घर आ आपणे

होरना सपाहीआ द चिट्टे चिट्टे कपड
तेरा कजो मला भेस
ओ तेरी सौं तेरा कजो मला भेस
नाम कटाई घर आ आपणे

अठवें दिन सपाही लन पता करदे
हत्थी जो पई जादे छाल
जो तेरी सौं हत्थी जो पई जाद छाल
नाम कटाई घर आ जापण

कचीआ वारका सपाही साडे रहिंद
पक्कीआँ रहिंद जमादार
ओ तेरी सौं पक्कीआँ तरे अहुदेदार
नाम कटाई घर आ आपणे

दिलदा महिरम कोई न मिलिआ

हरीए नी भरीए सबज खजूरे
पतलू जिन्हा दे पीले ओ
कँदलू जिन्हा दे सवा मुसाफर
नारा दे कीजा हीले ओ

राज बिना कोई राजा जो झूरे
वद बिना कोई रोगी ओ
ओ क्द बिना कोई नार जो झूरे
तिन्नू फिरन विजोगी ओ

टुटिआ फुटिआ फटा पुराना कपडा
कोई न सीदा दरजी ओ
दिला दा महिरम कोई ना मिलिआ
जो मिलिआ अलगरजी ओ

कोठे चढ के लिखण जो बैठी
दखणे दी चलदी वा ओ
हत्थाँ दे कागज फर फर उडदे
कलम गई गुआ ओ

वाग लगावाँ वगीचा लगावाँ
विच वो रखाँ माली ओ
भर भर बूटिआ पाणी जो दिंदा
इक न रखदा खाली ओ

बागाँ दे विच तोता बोले
मैं बुझिआ कोई मानी ओ

कढ के कलजा खाली करदी
पिंजरा रहि गिआ खाली ओ

ओ नौकरा ओ चाकरा

पारी जाँदिम्रा नौकरा ओ चाकरा
कीनी रँगी दी पगडी तेरी
कीनी कढिम्रा रुमाल ओ

भैणे रँगी दी पगडी मेरी
नारे कढिआ रुमाल म्रो
दो नर्नां ने मारिआ

केही जेही तरी भैनडी ओ
केही जेही तेरी नार हो
ओ नौकरा ओ चाकरा

तेरी जिही मेरी भनडी ओ
तीते दुगनी मेरी नार ओ
दो नना ने मारिम्रा

नारा दे ओ तू छोडी नौकरा
ओ नौकरा ओ चाकरा
दो नैना ने मारिआ

किहडे देसा चले जाना

किहडिआ देसा ते आइआ जी लोका
किहडिआं देसा जी चले जाणा
दखणा देसा ते आइआ जी गोरी
पछमा देसां चल जाणा

किहुडा तू पत्तण लछणा जी लोका
किह्डा तू तखत मल्लणा
चवे दा पत्तणा लँघणा जी गोरी
लाहौरे दा तखत मल्लणा

चौंका ता पादीआं चौकण जी लोका
वातण लादिआ किलां पिआरे
किहडिआं देसां ते आइआ जी लोका
किहडे देसा चले जाणा

सस्म ता ननदा डाढीआ जी लोका
से रहीआ धूए दे पज्ज वे
किहडिआ देसां ते आइआ जी लोका
किहडे देसां चले जाणा

बारां माहीं

पकडी रकेब वदी पास खडोती
तुसी चले प्रदेश साडे जिगरे थोडे

छोडदे रकेब तैनू राम दुहाई
मापिआ दे देश तनू शरम ना आई

मापिआं दे देश सानू असाँ ठिकाणा
सहुरिआं दा देश सानू वायल जाणा

चेत दे महीने नी मैं रखां नुराते
तुसां चले प्रदेश असां भुल ना रखसे

विसाख महीने नी माए दाखा पक्कीश्रा
तुसा रहे प्रदेश असा भुल ना चखीआं

जेठ द महीने तेज धुपा पईश्रा
तुसा रहे प्रदेश श्रसा बाहर सहीश्रा

हाड द महीन अम्बीआ पक्कीश्रां
तुसा रहे प्रदश श्रसा तोड ना चक्खीश्रां

साउण महीने पीघा पईश्रा
तुसां रह प्रदश श्रसा भूट ना लईश्रा

भादों महीने रातां हनेरीश्रां
तुसां रहे प्रदस श्रसां हनरे कट्टीआं

अस्सू दे महीने पित्तर मनावां
तुसां रहे प्रदश श्रमा मने नी भावां

कतक दे महीन नी आई दीवाली
तुसां रहे प्रदश श्रसां भुल्ल ना मनाई

मग्घर महीन नेफ भराए
तुसां रह प्रदश श्रसां सद्दके पाए

पोह माघ जिच प॰ पाले
तुसां रह प्र॰श श्रमां वाहर हंडाने

फग्गण महीन हानी श्राई
तमां रह प्रदे॰ अमां रग ना पाई

गोरी मनो किउँ बिसारी

उडी उडी मेरे तिलीअर काले
लमी लाई वे उडारी
जा आखी मेरे नउ-राहु वे दूला
गोरी मनो किउँ विसारी

दिनदा टुकडा मैं कागज वणावा
उँगलीआ कट कानी
अक्खा दा कज्जला मैं शाही वणावा
हभूआ दा पाणी आ पाणी

गल्लीं लाई लीं

कीथी वसिआ मेरा कमला धनआ
ओ कुथू वसिआ वामणाँ
गल्ली लाई वामणाँ

ओ तुमाखू दिगी नरेले दिगी
ओ गल्ली लाई ओ वामणाँ
गल्ली लाई ली

दुखड़ तैनूं फिहडे विहडे

तू दग दे मेरी सरकार
दुखड़ तैनूं विहडे विहडे

मैनूं दुखडे कई हजार
दस्सां तैनूं विहडे विहडे
तेरी माता लड़े मेरे नाल
दस्सां तैनूं विहडे विहडे

विसाख महीने नी माए दाखा पक्कीश्रा
तुसा रहे प्रदेश असा भुल ना चखीआं

जेठ दे महीने तेज धुपा पईश्रा
तुसा रहे प्रदेश श्रसाँ वाहर सहीश्रा

हाड द महीने अवीआं पक्कीश्राँ
तुसा रह प्रदेश श्रसा तोड ना चक्खीश्रा

साउण महीने पीघा पईश्रा
तुसा रहे प्रदश श्रसा भूट ना लईश्रा

भादों महीने राता हनेरीश्राँ
तुसां रहे प्रदस श्रसा हनेरे कट्टीआं

अस्सू दे महीने पित्तर मनावा
तुर्मां रह प्रदेश श्रसा मने नी भावाँ

कतक द महीन नी आई दीवाली
तुसां रहे प्रदश श्रमा भुल्ल ना मनाई

मग्घर महीने लेफ भराए
तुसां रह प्रदश श्रसां सदूक पाए

पोह माघ निच पदे पाले
तुसां रह प्रदेश श्रमां वाहर हँडाले

गण महीने हाली श्राई
ां रह प्रदश असां रग ना पाई

गोरी मनों किउँ विसारी

उडी उडी मेरे तिलीअर काले
लमी लाई वे उडारी
जा आखी मेरे नउ-राहु वे दूलो
गोरी मनो किउँ विसारी

दिलदा टुक्डा मैं कागज वणावाँ
उँगलीआ कट कानी
अक्खा दा कज्जला मैं शाही वणावा
हभूआ दा पाणी आ पाणी

गल्लीं लाई लीं

कीथी वसिआ मेरा कमला घनैआ
ओ कुथू वसिआ वामणा
गल्ली लाई वामणा

ओ तुमाखू दिंगी नरेले दिंगी
ओ गल्ली लाई ओ वामणाँ
गल्ली लाई ली

दुखड तैनूं किहड़े किहडे

तू दस दे मेरी सरकार
दुखड़ तैनूं किहडे किहडे

मैनू दुखडे कई हजार
दस्साँ तनू किहडे किहडे
तेरी माता लडे मेरे नाल
दस्साँ तैनूं किहडे किहडे

तेरी भैण लड़े मेरे नाल
दस्सां तनू किहड किहडे
मैं चल जाणा तेरे नाल
दस्सा तनू किहट किहडे

नार तेरी मरना ओ जिहर खाई

थोड थोड पाणी आ मछली जो तडफे
इज्जा करी तडफ वो नौकर दी नार
आपू वी नी आउंदा आ लिखी वी ना भेजदा
किजा करी कटणी ओ वाल वरेस

आपू वी मैं आउंगा लिखी वी मैं भेजूगा
हस्सी हम्मी कटणी आ वाल वरेम
महीन महीन कतणा ओ महिंग भोई वचणा
इज करी कटणी ओ वाल बरस

लिखी लिखी कागदों मैं नौकरे जा भेजदी
नारा तरी मरना उस जिहर खाई
भरी जी कचहिरी आ नौकर चिट्ठी वांचदा
राई राई भिजदा रेशमी रुमान

जिदे चलो जाणा

ना कर गारी मनी मप्खीआं
मर्मा प्रन्सी चनी जाणा
वी चनी जाणा

नदी नामा मजाग मन
वी जाग कनी मुनी होणा
जिद चानी जाणा

भौर होइग्रा जाणा प्रदेस गोरी
मने विच नई जाँदा याद तेरी
जिदे तुगी जाणा

साजन लघी गए काली धार

फुल फुला सुलताज दा नी माए
सुलताज दा नी माए
मूरख तोडी न जांदा
तोडे सह चतर सुजान

सीसीग्रा भरी फलेल दीआ नी माए
रखनी सदूके 'च पाई
मूरख डोल्ही न जांदा
डोल्हे सह चतर सुजान

ओ गए साजन ग्रो गए नी माए
लघी गए काली धार
उचे तां चढी के देखदी माए नी
वरक्त मरदां दे नाल

बामणा रे छोरुआ

वामणा रे छोरुग्रा हस्सी नारी ना जा भला रोटी खाई
वामणा रे छोरुग्रा पारी ना जा ऊआरी रमता

वामणा रे छारुग्रा दूर वसेरा नेडे वसना
वामणा रे छारुग्रा हाथ जोडी सुनो रे मेरी ग्ररजा

वामणा रे छोरुग्रा क्टी दे घलजा वरी मगदे
वामणा र छारुग्रा वरीग्रां नू देना रे ग्रफीम मघीआ

मेरे बाके बाके माहणूआ

राह तरी देखी दखी हारी गई अक्खीआ
राई राई दिन बीत तडफी के रत्तीआ
तरे बिना मेरा हार कौण माहणूआ
आ मिल आ आ मिल ओ मेरे वाके वाके माहणूआ

वजा भुलाई दित्ता सच्च सच्च दस्सीआ
ताहन लाक मारन हस्सीआ सक्खीआ
जीणा वो भार होईआ तेरे बिना माहणूआँ
आ मिल जो आ मिल आ मेरे वाक वाक माहणूआँ

बामणा दा छोरू

वामणा दिआ छोरूआ
नदीआं कनार तरा बँगला

वामणा दीए छारीए
गालीआं न देंदी तरी माँ

वामणा दिआ छारूआ
तर पिछे बोलिआ लोकां मनूं बदमास

भना आ वामणा दीए छारीए
गारे गार हत्य राटी तल द

बड़ बम्मास न खाणी
राटी दाग सगन्न राटी बिन खाणी

चन्न द हटीआं बिन्द गलाम
तुमी हटीआ आउणा जाणा असी हटीआ आस

चदा दी हटीआँ सोडा रग डोलीग्रा
ग्रो सोडा रग डोलीआ

राजे दिआ नौकरा

उच्चिग्रा राढिग्रा बँगलू बगादी
पल भर बँगलूए वहि लैं तू
राजे दिआ नौकरा

दद ता तेरे चवे दीग्रा कलीग्रा
खोडा दी दाउण लाई लै तू
राजे दिग्रा नौकरा

जुलफा ता तेरीग्रा गज़ गज़ लमीग्राँ
सीसी भरी तेले दी पाई ल तू
राजे दिग्रा नौकरा

ग्रक्खीआ ताँ तेरीग्रा अवे दीआ फाडीआ
सुए सलाईग्राँ वाही लै तू
राजे दिग्रा नौकरा

चौधरी पुतरे की समझा

ग्रकें गुदा ललारन गुद लैंदी
हो गुद लदी
चौधरी पुतरे की समझा

साडी वाडीआँ वेलना नी ला हो
पल पलै साडे फेरा नी पा हो
चौधरी पुतरे की समझा

जे अऊ जानीग्रा पोठे नी नाडीआ
वढण नी दिदा मिगी छा
चौधरी पुतरे की समझा

अऊँ गुदा ललारन गद लदी
हो गुद लदी
चौधरी पुतर की समझा

झूठे दा वणी गिआ सच्च लोको

साड गलाए दा सच्च लाका
जमू कशमीर दा ढक्क लावा
चदा नहीग्रा लाणा
फट्ट मजूरीग्रा नहीग्रा लाणा

झूठ दा वणी गिग्रा सच्च लोको
रस्मी दा वणी गिग्रा सप्प लावो
चदा नहीआ लाणा
फट्ट मजूरोआ नहीग्रा लाणा

फट्ट न्लि दा काला लोका
कम दा करदा टाना लाका
चदा नहीग्रा लाणा
फट्ट मजूरीआ नहीग्रा लाणा

टग ग्रहाए दा गल्लां ज कीतीग्रां
नारां मनाई लिग्रा सच्च लाका
चन्ना नहीआ लाणा
फट्ट मजूरीग्रा नहीग्रा लाणा

सूलीआँ टँगोई गई जान

नी तेरी सौं सूलीआ टँगोई गई जान
भली होई जाण पछाण

उठदिआँ बहिंदिग्रा की निकलदे हउके
भुली गए घरा दे चुल्हे चौके
रहिंदा नित तेरा ही धिआन
नी तेरी सौं सूलीआँ टँगोई गई जान

भली होई राजे दी नौकरी वो सिपाहीग्रा
भली चगी फमी गई दुखे दीग्रा फाहीग्रा
भुली गिग्रा खाण ते पहिराण
नी तेरी सौं सूलीआँ टँगोई गई जान

कागाँ उडावाँ ते सदेसडे भेजाँ
वाझ तेरे मीको रेशमी सेजा
दौडी दौडी आउँदीआँ खाण
नी तेरी सौं सूलीआँ टँगोई गई जान

सानू ल चलो नाले

डुग्गी डुग्गी वासी
लगदी उदासो
ढोला जी सानू ल चलो नाले

डुग्गी डुग्गी नदीआँ
तारू से पतले
गोरीए तू किने दिआली पई

नीवें नीवें वासा
जीऊडा उदासी
ढोला जी सानू ल चलो नाले
डुग्गी डुग्गी नदीआ
वेडा पुराण
गोरीए तू किन खिग्राली पई

मेकी छोडी देणा परदेस

मकी छोडी देणा परदेस
ओ दगेनाज माहणूग्रा
मेरी जिंद मैं नही वा रहिणा
जिये रहेगा उयू मैं रहिणा
मेकी छोडी देणा परदस ओ

युयू गए तेरे लार दुलास
छडी गिग्रा मिजो क्सिद भराम
मकी छोडी देणा परदस ग्रो

प्रसां तां बापू छाडो मैं दिता
दगराजे का साथ मैं कीता
मेकी छाडी देणा परदेस ग्रा

शिल्लीआं बतना छोडी दित्ता

बिल्लीग्रां वतना छाडो दित्ता
इनन मायें सायें भी निम्राणी पानी
बुरा ओ लाक इन गगया न
मान्गीए जी दाम दिदाए जानी
कीआ बुम कन हस्मणा बालणा
कीआ बुम कत गल्न गनाणी

देवी दित्तिआ मिगी सिक्ख देई जाइआँ
कीआ मैं सस्स ननाण मनाणी

भरी भरी पूर लँघानीआँ

जलो नी जक्लो फीए नी
मिजो कजला वाण्हा दे नैणा ते
जिह्ना दे कारण कजला बाह्नीआ
उन्हाँ चले जाणा अज वो

जादे जादे चली गए अज्ज ताँ
जाई खडोते रोहीआँ दे पार
रजी ना कीतीआँ गल्लाँ गूढीआँ
साडे मन का ना चुकिआ चाओ

उवल उवल बलटोहीए तू नी
उवली के सुट पिच्छ वे
वत्ता चलेंदे याद करेंदे
हौली हौली निच्छ वे

सीने नू ला गए जेंदरे नी भैण
चाबीआँ लै गए सग ने
नदीआँ दा तू तारुआ जी बीबा
साँजो वी पार लँघाई दे

हत्ये दी दिनी मुदरी जी भाई
गले दा दिनीआ हार वे
अज रह्णा चल साडीआ नगरी
चल जाणा रोहीआ पार वे

छाती दा वणानीआ विडला नी
नाही दा वद लगानीग्रा
सिरे पुट्टी वटणी सिहलीग्रा जी वीवा
भरी भरी पूर लघानीग्रा

नदीआं दा मैं तारू गोरी
तिजो लघाई दिआ पार नी

जली जाए तेरी कम वो
मीकी वी लई चल कछ वा
माहड वांकू दिग्रा चाचूआ
मूहा ता गनानीग्रां सच वा
माहड वांके दिग्रा चाचूग्रा

ग्रापू ता जांदा नौकरी चाकरी
मिजो देई जांदा खुरपा दातरी
जली जाए तरी कम वा
माहड़े वांके दिग्रा चाचूआ

पुलके पकादिए गरमी जे लगदी
भांड मांजदी मैं चगी नांह लगदी
नौकर चाकर रख वो
माहड वांकू दिग्रा चाचूग्रा

सारी दे जातक वाजोग्रा घांद
म्हाड़े वी दीग्गी दीग्गी उन्हां कछु मगन
जली जाए तरी कमाई वा
म्हाड़े वांर दिआ चाचूआ

मुडी ना आयां देश तेरे
मैं चलिआ नी माए नौकरी चाकरी
नूहां जो सुखी रखिआं

आपू ता खांइआं माए सक्कीआं सुक्कीआं
नूहा जो पूरीआं तलाइआं

आपू तां सोइआं माए टुटड़े खटोलड़े
नूंहां जो पलँगा डाहिआं

आपू लिआ माए टुटडा खँदोलू
नूहां जो लेफ भराइआ

वारा ते वारिहां मैं घर आइआ
नूह तेरी नजर ना आए

हत्थ कटोरा पुतर देहीए दा
नदीआं नू न्हाउण गई

नदीआ दे कँढ कँढे फिराइआं
नूह तेरी नजर ना आई

हत्थ कटोरा तेले दा
सिर मुझाउण गई

नाईआ दे विहडे मै फिरी आइआ
नूह तेरी नजर ना आई

हत्थ मुजीआं नई करी
पुत्तरा जा पाउणा गई

पहिली कोठडी माए म खोल्ही
बेसर डबीआं पई

दूसरी कोठडी माए म खोल्ही
लाश बिस दी गई

जोगी हावां माए बरागी होवां
मुडी ना आवां दश तेरे

डाडे दी बेडी

डाडे दी बेडीए नीं सौकणी तू मेरीए
तेरे पर भुली रिहा मीआं जसरोटीआ

चिट्टी न चादरी मच्छी कढढे सीतीए
तेरे पर झुली रिहा मीआं जसरोटिआ

किन्ही चादर सीतीए किन्ही चादर दित्ती
कौन लई आइआ गोहडा पिआरा

अमां चादर दित्तीए आबी चादर सोतीए
भाई लइ आइआ गोहडा पिआरा

पूणी नहीउ मुकदी तद नही टुट्टदी
सस्स नहीउँ आंखदी पाणीए जा जाणा

पूणी मुकी गई तद टुट्टी गइ
सस्सू साँजो आखी दिता पानीएँ जो जाणा

डुब्ब वो घडोलूआ सिरे दिआ वेरीआ
सजण निहाल दे निंबूआ दे बाग

इक बक्ख खाइ लिआ जले दीए जलादिआ
दूआ वक्ख रिहा गिआ सपडे दे हेठ

अम्मा साडी रोदी बाबू साडा झूरदा
भाई सानू तोपदा नदीआँ दे वेर

दरमा दे कारन भेजिआ ढोल मेरा

नी जमूआ दे राजे लिखी कागद भेजिआ
जमूआ दी नौक्‍री आउणा
सहुरा न गिआ जेठ ना गिआ
दरमा दे कारन ढोल मेरा भेजिआ

पुच्छ पुच्छ रहीआँ ससू आपणी
किहडी मुहिम पुत्तर तोरिआ सी
आजा नूहे कत्त दे चरखा मेरा
अगले बाजार खेलदा सी

पुच्छ पुच्छ रहीआ जेठाणी आपणी
किहडी मुहिम दिउर तोरिआ सी
आजा दरानी कढढ दे कसीदा मेरा
अगले बाजार खेलदा सी

कच्चीआँ कलीआँ ना रोल

आगण पधरा चोगान
किहनी घोडा पीडिआ
आगण पधरा चोगान
देरे घोडा पीडिग्रा

घोडिग्रा दी पकडी लगाम
जादे दी वाग फडी
सच्च दसो जी महाराज
कद घर ग्राउणा ए

छिग्रा मह्हीनिग्राँ दी रात
वरिहा दी इक घडी
तू मेरी चचल जेही नार
विसरे ना इक घडी

फुला दी भरी ए चगेर चवे दी इक कली
खड्डू दी भरी ए परात मिसरी दी इक डली
तू मेरी चचल जेही नार
विसरे ना इक घडी

कच्चीआ कलीआँ ना राल
मूरखा माहणूआ
पकण दे दिन चार
रमे भरीग्रा डालीग्रा

पूजिग्रा गूणीआ दे रोग
म नही जादा गोरी ए

नौकरां मनिग्रा गलाइआ
गुण दे बोरीए

ग्राखी कुणी गल्त कीती
होर मने विच खुशी वडी
तू मेरी चचल जेही नार
विसरे ना इक घडी

कच्ची कली तोडी गिआं

छोटे छोट गुटठ छम-छम हुँडदा
म दूहा ते पछाणी तेरी चाल जी लोका

कच्ची कली तोटी गिग्रा विच बने सुटी गिआ
पापा ते ना डरिआ वेईमान जी लोका

ग्रापू चलिआ शिमले जो मै रोदी जाजू
रोदीआ दरद नई आए जी लोका

कोई हुदी जोडीआ कोई हुदे जोड वे
कोइ हुदे जिवें जा जलाने जी लोका

मेरा ढोल गिआ प्रदेस

उह भावी कीहा गलादे जेठ
मेरा ढोल गिआ प्रदेस
मेरा कथू गिग्रा प्रदेस
ग्रडीए कीहां गलादे जेठ

चचल खूहे दा पाणी जो भरणा
लोटा माजी सिरे पुर धरना

दुखी जादे सिरे दे केस
अडीए कीहा गलादे जेठ

पनलीश्रा पतलीश्रा वेहीश्रा मेरीआ
नाजक नाजक उँगलिआँ मेरीश्रा
जाणा है मढीश्रा दे हेठ
श्रडीए कीहा गलादे जेठ

अलबेलूआ मेरा रूसी रूसी जादा

अलवेलूश्रा मेरा रूसा रूसी जादा
श्रलवेलूश्रा, अलवेलूआ

छल्लीश्रा दी रोटी चपा चपा मोटी
छाई दा कटोरा
चूरी चूरी खादा वलूश्रा
श्रलबेलूआ, श्रलबेलूश्रा

वणका दी रोटी सरहमाँ दा साग
छोडी मत जादा वलूश्रा
श्रलनेलूआ, श्रलबेलूश्रा
श्रलबेलूआ मेरा रूसी रूसी जादा

पज लडी कि-हूँ दित्तीआ

वारहो जे वरसे कत घर आइश्रा
श्राई बठिआ ठडी छावा
मरए दी छाव वे घणी
मेरी जान मरूश्रा हो पज पत्तरा

माआ गा बठ तू पतग
तिहः मादर दऊ
तिरा ना आहगा ड
नगाण शीप जनाऊ

पयूण हुनामन पनूआ जा गिरिआ
नजर पई गन हार
पन लटीआ कीहन दित्तीपा मगी नान
गन माना तिन नित्तीपा

हउँ नही जाणदी पता तू मरिग्रा
जाए ग्रापणी मावाँ जो पुच्छ
पीढी पर बठी माता तू मरीए
मरो नाजा जो पज लडी किन दित्तीआँ

मैं नही जाणनी पुत्तर तू मरिग्रा
जाए ग्रापणी नाजो जा पुच्छ
हउँ तुजा पुच्छना नाजो तू मरीए
सच्च बी नणा बोल

झठ गलान नरकाँ जे जाद
मारिग्राँ न हुने नडे पार
पज लडी माना मा जो नवरे दित्तीआँ
दवरे दित्ता गन ना हार

निआओ मरा घोडा लिग्राग्रो मरा जोडा
लिआओ मरी ढाल तुलार
छोटा भाऊ वडढी सुटटणा
पज लडी उने दित्तीग्राँ

भाइग्रा दी जोडी सलामत नोडी
वडी देणी बांकी जो नार
विग्राह आपणा होर करना
पज लडी उने दित्तीग्राँ

तुसां चले प्रदेस

नौकरा मुसाफरा जिन्ने पीडे घोडे
तुसा चले प्रदेस साडे जिगरे थोडे

खडी सी खडी नूह सहुरे दे दरवार
सहुरे दी नज़र नूह पई गई

कीग्रा नूहे तेरा मैना मैला भेस
किने गुणे न्हे हाई पिलडी

पुत्तर ता तेरा सहुरिग्रा चलिआ प्रदेस
इहा गुणा मैं होई पिलडी

देही नी देही नूह तू चतर सुजान
जादिग्रा नौकरा नू होडिग्रा

चेतर ना जाई पीआ फुल हर भात
वसाखीए ता दाखा पिग्रारिग्रा पकीआँ

जेठ ना जाई पीआ गरमी दा जोर
हाढ ता अवीग्रा पकीग्रा

लरे ना जाई माहीआ वरखा दा ज़ोर
काले ता राता हनेरीआं

आओ रता वठ त पलग
किहने आणट दऊँ
चिनग दुनाना आट गा रूक
नटरण दीप जलाऊ

पछूए कुनामन पनूआ जा गिरिआ
नजर पई गल हार
पल नडीआ वीहल दित्तीआ मेरी नार
गल माला किन दित्तीआं

हउँ नही जाणदी वता तू मरिआ
जाए आपणी मावां जो पुच्छ
पीढी पर वठो माता तू मेरीए
मेरो नाजा जा पज लडी किन दित्तीआं

मैं नही जाणदी पुत्तर तू मेरिआ
जाए आपणी नाजो जा पुच्छ
हउँ तुजा पुच्छदा नाजा तू मेरीए
सच्च बी दणा गोल

कठ गलादे नरकां जे जादे
मारिआ दे हुदे वडे पार
पज लडी माला मा जो देवरे दित्तीआं
देवरे दित्ता गले दा हार

निआओ मरा घोडा लिआओ मरा जोडा
लिआओ मेरी म्यान तुलार
छाटा भाऊ वटडी मुटटणा
पज लडी उने दित्तीआ

भाइआँ दी जोडी सलामत लोडो
बढी देणी वाकी जो नार
बिग्राह आपणा हार करना
पज लडी उने दिसीआँ

तुसां चले प्रदेस

नौकरा मुमाफरा जिन्ने पीडे घोडे
तुसा चले प्रदेस साडे जिगरे थोडे

खडी सी खडी नूह सहुरे दे दरबार
सहुरे दी नजर नूह पई गई

कीआ नूहे तेरा मैला मैला भेस
किने गुणे न्हे होई पिलडी

पुत्तर ना तेरा सहुरिआ चलिआ प्रदेस
इन्हाँ गुणा मैं होई पिलडी

देही ी दही नूह तू चतर सुजान
जादिआ नौकरा नू होडिआ

चेतर ना जाई पीआ फुल हर भात
वसाखीए ता दाखाँ पिआरिआँ पकीआ

जेठ ना जाई पीआ गरमी दा जोर
हाढ ताँ अवीआ पकीआँ

लैरें ना जाई माहीआ बरखा दा जोर
काले ता राता हनेरीआ

मुक ना जाई पीग्रा पितर सराप
कतक दीवाली असां खलणी

मग्घर ना जाइ पींग्रा लक भरा
पाहे तां पाल पिजारिग्रा चोगण

माघ ना जाइ नाहडी दा तिउहार
होली असां खेलणी

हाए नी हाए माए बारां माह
जांदिआं नौकरां नू जाण द

कोरे ता कुज्ज दही जमा
जांद दा सगन मना

जाइउ ए जाइउ मेर शिरी महाराज
जाद दी लगी जाव नौकरी

कीआ करी कहणी बालडी बरेस

सवज पखेरूग्रा ग्रा साबा दिजा ग्रसीआ
किधर गुजारी ग्रो ग्राज खडी रैन

साबा दिआ वासीग्रा ग्रो सता दिग्रा धुनीग्रा
उधर गुजारी ग्रा ग्राज खडी रन
चव दीए बेडीए नी सौकण तू मरीए
त मेरा लोभी नी पार लँघाइआ

ग्राप वी नी आउँदा चिटठी वी नी भेजदा
किग्रा करी कहणी इह बालडी बरेस

ग्राप वी मैं आउँगा नो चिट्ठी वी मैं भेजूगा
हसी हसी क्टूणी इह वालडी वरेस

जिवे थोडे पाणीए ग्रो मछली तडपदी
उवें तडपदी ग्रो नौकरा दी नार
धागा वी नी टुट्टदा ग्रो पूणी वी नी मुक्कदी
सस्स वी नी वालदी ग्रो नी बहूए पाणीए जाणा

लिखी लिखी चिठ्ठीग्राँ मैं नौकरे जो भेजदी
नारा तेरीग्रा मरना ग्रो जहिर खाई
भरीग्राँ कचहरीग्रा नौकर चिट्ठीग्रा वाचदा
रोइ रोइ भिज्जदा ग्रो रेशमी रुमाल

केसरी बाणे आलिअ फुल्ला तोरी दा

केसरी वाणे आलिआ फुल्ल तोरी दा
धरमी होए गल्ल ता मुँह नही मोडी दा
केसरी वाणे आलिआ घभ तित्तरे दे
देश दे होइए टुकडे धरम दे मित्तरे दे

केसरी वाणे आलिआ फुल्ल मरए दा
वलीदान नही भुल्लणा हरी मुँह नलूए दा
केसरी बाणे ग्रालिग्रा फुल्ल काशी दा
वलीदान नही भुल्लणा राणी झासी दा

मेरे दिले दिआ महिरमा

सिरी तेरे काला साफा
बागी जादा छैल पछाणो लिग्रा ए
मेरे दिले दिग्रा महिरमा

मन दिग्रा आशका
नणा तेरिग्रा माही लई
हठ तेरे लिलडा घोडा
ढकीग्रा चढदा छन पछानी लिग्रा ए

मेरी दोसतीए

ऐसा कसा बो रुमाल मेरी दोसतीए
मैं ता लेआ पछिआणो मेरी दोसतीए

इह ता पिआरू री निशानी मेरी दोसतीए
मैं तां छाती माडी लाणी मेरी दोसतीए

मजा घेरी फेरी डाहणा मेरी दोसतीए
तेरा अबला सरहाना मेरी दोसतीए

तेरा सुखखणू तरू टोरा मेरी दोसतीए
तरा जाहणू निकलारा मेरी दोसतीए

जिहा कापर दा लडडू मेरी दोसतीए
ऐसा कैसा बो रमाल मेरी दोसतीए

मैं तां दाहड नाई लैणी मेरी दोसतीए
मैं तां जोजी बो भटाणो मेरी दोसतीए

वणी तणी जातरा जो जाणा मेरी दोसतीए
एसा कसा बो रमाल मेरी दोसतीए

तेरे नैणाँ दे लुहारे

रुडदी रुडदी रावी विच बूटा है जवार दा
सौकणी दे बोले तोले फट है तलवार दा
पारी तू जादिश्रा राजे दिश्रा नौकरा

कन खिनूए दी रमज सुणा दे गलावो थिउरीए
तेरे नैणा दे लुहारे वदी मोर लई ए
पारो तू जादिआ राजे दिश्रा नौकरा

तुसा छोडिआ जाणा जाणा असा छोडी आस वो
कल खिनूए दी रमज सुणादे गुलावो थिउरीए
तेरे नैणाँ दे लुहारे वदी मोह लई ए

ऐसा साकारी ना बो मिले

पारलीश्रा वाय तितरा दे जोडे
ना बा मिले मेरी जान वो बगालीआ
ऐसा साकारी ना वो मिले

घर ता तेरे दूर बो बगालीआ
ना बा मिले मेरी जान बो बगालीआ
पार लीश्रा वाटा भाईश्रा दे जोडे

एसा सकारी ना वो मिले
ना बा मिले मेरी जान वो बगालोश्रा
ऐसा साकारी ना बा मिले

दूरे दूरे दीआँ सलामा ओ

असी ओवारे खड़े
तुसी पारे खड़े
ओ दूरे दूरे दीआ सलामा ओ सेईओ

आ साजण मिलणा लग
ते मिली करी खिड़णा लगे
जिआ फट चलदे तलवारी सेईओ

ओ डरदे डरदे रेहीआ
वो इन्हाँ नारी कच्छा
जिन्हा चरखे दा शेर वणाइआ सेईआ

असी ओवारे खड़े
ते तुसी पारे खड़े
ओ दूरे दूरे दीआ सलामा आ सईआ

सोगी चल जमेदारा

हार सान दीआ लरजा जिंद
गारी रोई रोई करदी चरजाँ जिंदे
सोगी चल जमेदारा

हार सान दा दाणा जिंदे
असा चढ सिमले नू जाणा जिंदे
सोगी चल जमेदारा

हार सान दा गूठा जिंद
असी कदी नहीं वालिआ झूठा जिंद
मेले चल जमेदारा

मेले चल जमेदारा उए

सुनिग्रार सोन दीग्रां लरजां जिदे
गोरी रोई रोई करदी ग्ररजां जिदे
मेले चल जमेदारा उए

सुनिग्रार साने दी गूठी जिदे
गोरी राई राई हुदो पुठी जिदे
मेले चल जमेदारा उए

सुनिआर सान दी कैंठी जिदे
गारी रोई रोई रुमी वठी जिदे
मेले चल जमेदारा उए

मेरे पिअ परदेश

मैं निक्की ग्रयाणी हो मैं निक्की अयाणी हा
नीऊँ कोआ लाणा हो कथा
मेरिग्रा लोभीआ हो ग्रा घरे

सज रँगोली ना सज रगीनी
मरा पीग्रा परदेश हो कथा
मेरिआ लोभीग्रा हा आ घरे

पाई के बसीले ना पाई के वसीले
त जाणी जिद ठग्गी हो कथा
मेरिग्रा लोभीग्रा हो ग्रा घरे

तुसा नी ग्राउणा ते तुसा नी ग्राउणा
ते लिखी लिखी भेजे हो कथा
मेरिग्रा लाभीग्रा हो आ घर

मैं निक्की याणी त मैं निक्की याणी
मेरा पीग्रा परदेश ह्या कया
मेरिआ लोभीआ हा आ घरे

हुण किउँ दिला तो बसारी

अग्गे वी भाइग्रा मना त पिग्रारी
हुण किउँ दिला नो बसारी

तेरे जेहीग्रा धीग्रा भणे मरे वी होईग्रा
ता हुण दिना तो बसारी

नौ लक्खा हार भाइग्रा परले ता दिग्रागी
पीग्रा जो लई विग्राही

घर ता ग्राउँदीग्रा सस्स जा पुच्छदी
नौ लक्खा हार किथे गुग्राईग्रा

नदीग्रा दे कडे सस्सू नहाण जो लग्गी
नदीए लिग्रा रढाई

सद्दा जे वहुए भटडे द बटडे
नदीग्रा देंगे सुखाई

नदीग्रां द नीर सस्सू कदे नही सुक्कदे
जले दीग्रां मछनीग्रा खाद्ग्रा

सद्दां नो वहूए मटडे दे बटडे
ठगीग्रां देण चनाई

सिरे भी जिविरग्रा मटटीग्रा परा भी जिविरगा
जाहीग्रा जा खग्रीग्रा बाहर

इत इत राही मेरा वीर जो जादा
गने नू नेगा लगाई

नौकरी जा चल्निग्रा मेरा छोटा देवर
भाई पुच्छदा घरे दा हाल

होर ता भाईग्रा सभ राजी वाजी
भावी डगे चनाई

किग्रा कीती बदनामी किग्रा कीता गुनाह
किदे खातर डगिग्रा चनाई

ना कीती वदनामी ना कीता गुनाह
नौ लवखीग्रा हार गुग्राइग्रा

इक दे बदले माऐ दो लक्ख दिंदा
मना दी जोडी वछोडी

उड उड कूजडीए

उड उड कूजडीऐ
वग्गा दे धिग्राडे ग्रा
मेरे गमा जिदिग्रा दे मेले हो
वे मना जाणी मेरी जान

उड उड कूजडीऐ
पर तेरे सूने वो मढावाँ

रूपे दीश्रा चुजा हो
वे मना जाणी मेरी जान

उड उड कूजड़ीए
चिक्नी बूंदा मेघ वरसे
पर तेरे सिज्ज हो
उ मेरे गामा जाणी मेरी जान

उड उड कूजडीए
ऊचे पीपल लीधा पेईश्रा
भटे लादीश्रा सेईश्रा हो
वे मना जाणी मेरी जान

उड उड कूजड़ीए
जिंदे रेहने फिरी मलिने
मूश्रा मिलदा ना कोई हो
वे मना जाणी मेरी जान

अब पक्के घर आ

लिखी लिखी चिट्ठीश्रा मैं भेजा बलोचा श्रो
अब पक्के घर श्रा भलिश्रा लोका श्रो

अब पक्के घर कीश्रां श्रावां बलोचणीए
माहिब छुट्टी नहीं दिन्दा कि भलिए लोकणीए

लिखी लिखी चिट्ठीश्रा मैं भेजा जरनिश्रा श्रा
माई मूई घर श्रा कि भलिश्रा लोका श्रा

माई मूई ता खरा होइग्रा बलोचणीऐ
चौका निहला होइग्रा कि भलिते लोकणीऐ

लिखी लिखी चिट्टीग्रा मैं भेजाँ बलोचा ग्रो
भाई मूग्रा घर ग्रा कि भलिग्रा लोका ग्रो

भाई मूग्रा ता बुरा होइग्रा बलोचणीऐ
बाँह मेरी टुट्टी गई कि भलिते लोकणीऐ

लिखी लिखी चिट्ठीग्रा मै भेजाँ बलोचा ग्रो
भैण जुग्रादडो होई कि भलिग्रा लोका ग्रो

पसिग्रा दी गठडी मै भेजा बलोचणीऐ
भैणा जो तू निग्राह कि भलिए लोकणिऐ

लिखी लिखी चिट्ठीग्रा मैं भेजा बलोचणीऐ
साहिब मूग्रा घर ग्रावा कि भलिऐ लोकणीऐ

साहिब मूग्रा ता खरा होइग्रा बलोचा ग्रो
हुण तू घरे जो ग्राणा कि भलिग्रा लोका ग्रो

बामणा दिआ छोरुआ ओ

बामणा दिग्रा छोरुग्रा
मोइग्रा मुलख बगाना नीवें चलणा
भला बेईमान छोरुग्रा ग्रो

बामणा दिग्रा छोरुग्रा
मोइग्रा तूध पिछे होई बदनामी वे
भला बेइमान छोरुग्रा ग्रो

बामणा दिग्रा छारग्रा
ना रुमी मत जादा रोटी खाइ ल
भला बेईमान छारआ ओ

बामणा दिआ छारुआ
मोडग्रा उचिग्रा ला बँगुना वणाई दे
भना बेईमान छोरग्रा ओ

नामणा दिग्रा छारुग्रा
वो उस पर बोले काला काला काग ओ
भला वेईमान छोरुग्रा ग्रो

नामणा दिग्रा छोरग्रा
वो वजीदा त भरिआ जरीमाना
भला वईमान छारुआ ग्रो

नामणा दिआ छोरुग्रा
वा वीनीआ दा भिरिआ जरीमाना ओ
मना नेईमान छारग्रा ओ

इक गल्ल सुणी जाईआ

कूजा जाए पईआं वरोट
निटट दद गुलावी होट
गल्लां करन पजाबी लोक
तां इक गल्ल सुणी जाईग्रा

कूजा जाए पईग्रा नदौण
ठडे पाणी तां निरमल छाउण

इक घुट्ट पी जाइआँ दिआरा
ता इक घुट्ट पी जाईग्राँ

कूजा जाए पईआ गुलेर
भावी मगदी निक्के दी बेर
इक लक्ख देई जाइआ दिग्रोरा
ता इक गल्ल सुणी जाईआ

कूजा जाए पईग्राँ कलेमर
भाबी तोले दी मगदी वेसर
तुरत घडाई दे वो दिओरा
इक गल्ल सुणी जाईग्रा

कूजा जाए पईआ पपरोले
भाबो रोदी डुग्गे खोले
इक गल्ल सुणी जाइआ दिओरा
ते इक गल्ल सुणी जाईआ

कूजा जाए पईग्रा मडीग्राँ
चिट्टे चाउल रिझदे हडीआँ
दुध भत्त खाई जाइआँ दिओरा
ताँ इक गल्ल सुणी जाईआ

कूजा जाए पईग्राँ पत्तणे
मेरा दिल नहीं लगदा कत्तणे
चरखा भन्न सुट ग्रो दिओरा
ते इक गल्ल सुणी जाईग्राँ

कूजा जाए पईम्रां सकेत
इक कुछड दूआ पट
तीजा खेले बालू रेत
ते इक गल्ल सुणी जाइआं

ओ दूरे दिआ वासीआ

चवे दीम्रा धारा पैण फुहारा
म्रो दूरे दिम्रा वासीम्रा हुण घरे आए जा

बदला घिरी घिरी हार वणाणा
रल मिली सखीजा ने भूले पाए हो
म्रो दूर दिम्रा वासीम्रा हुण घरे आए जा

पंखेरू ते पछीआ ने कितणे सदेश भेजे
बिजली दी चम चम हिली हां कलेजे हो
ओ दूर दिआ वासीआ हुण घरे आए जा

लग पए जो रोग दिलां दे

जद मेरे पीम्रा तुसी घर ते तुरे
लग पए जी सानू रोग दिलां दे

भरीम्रां कचहिरी बिच चिटठी जो पुज्जी
डिग गई जी साडी कलम दुम्रात
घडी दिन टिक्की चढन नूं आइम्रा
वग पए नी गोरी राह सडकां दे

घडी दिन टिक्की चढने नूं म्राइम्रा
म्रा पकडी जी नब्ज गोरी दी

उठ मेरी नारीए उठ मेरी पिग्रारीए
हट गए नी तेरे रोग दिला दे

झुल्ल बढे दिआ पत्तरा

झुल्ल बढे दिग्रा पत्तरा
सुच्चे पतरा ग्रो
साडे सज्जणे लाइग्रा

कीआ झुल्ला मैं बूग्रा जिआणीए पछोताणीए
बूटा वाझ पाणीऐ कुमलाइआ
साडे सजणे लाइआ

दोओ नैंने दा नीर वरसानीग्राँ
बूटा उसरी आइआ
साडे सजणे लाइग्रा

विवाह-गीत

इक दिन पुत्तर पराइआ

यशोधा माए मैं नही दुध खाइआ
धिवले डाली गवाइग्रा
हथड़ू वी धणे माहीग्रा पलड़ू वी धणे
दुध कीआं छमकाइआ
छोटे छोटे हथड़ू माए छोटे छोटे पलड़ू
डिका कीआं हत्थ ग्राइआ

यशोधा माए मैं नही दुध खाइआ
हथड़ू वी डडडे माइग्रा पलड़ू वी डडडे
चुकी गले कने लाइआ
यशोधा माए मैं नहीऊ दुध खाइग्रा
दई दई तू माए मेरीए कालीआ कमलीग्रा
इक दिन पुत्तर पराईआ

मेरा जोबन घट घट जाए

खूहे दे सिरे खडोतीए
तू परा छल मल धो
लाटर चबा खिडी गिआ
तू बठी हार परो

माए नी सुण मेरीए
तू बापूऐ जो समझा

धीआं होईआं वडेरीआं
कोई नौकर दे लड ला

धीए नी बडबोलीए
तूं ऐडे बोल न बोल
जिथे कट्टीआं बारा तां बरसां
इक महीना कट्ट होर

सू लैंण दे धीए माझीआं
घीए खिल नी लैण दे कपाह
बीज लैण दे धीए कमादीआं
जद कट्ठ देणा तेरा बिआह

बारां तां बरिहआं माए इउं रही
जिहीआं खेल्हण नाल बहार
अब न कटूगी एक घडी
मेरा जोबन घट घट जाए

उह तां गाँउदीआं मगल चार

घर वसुदेव दे जमिआ पुत्तर यशोधा पलघ चढी
नद करदा है गाईया दे दान सोने दें सिंग मढी

भट्ट ब्राह्मण दिंदे नें सीस जीवे साडा क्रिशन हरी
उह तां आण ब्रिज दीआं नारा सोलां सगार करी

उह तां गाँउदीआं मगल चार जीवे साडा शाम हरी
घर वसुदेव दे जमिआ पुत्तर यशोधा पलघ चढी

[illegible] बारदा ऐ गालीयां [illegible] बाग बजार भरा
उह तां बाग बूज दीयां नारां गायां गगार करा

भट्ट ब्राह्मण दिते गीत जीव गाड़ा दिखन हुगी
उह् तां गाउदीयां मगन गार जीव गाड़ा नाम हुगी

तेरे सहुरए आए

मरुए दी छावां वटी मलदीए
दा बनजारे आए
लुक जा छुप जा धीए लाडलीए
तेरे सहुरीए आए

मैं कीआं लुकां कीआं छुपां
माए बाग्ल धरमी न सदाए
माए ताइग्रा धरमी न सदाए
दा वनजारे आए

मरुए छावां वटी मेलदी हा
लुक जा छुप जा धीए लाडलीए
तेरे सहुरीए आए
दो वनजारे आए

इहनू होर पाइउ जी

इहनू होर पाइउ जी
लाडे दे बावे दा पट बडा कुडाला
इहनू होर पाइउ जी
लाडे दे बाबे दा पेट बडा कुडाला
उडोली भत्ते दी मुकाई

वाटी मद्घरे दी मुकाई
टाँची पाणीआँ दी मुकाई
इदा पेट बडा चुकना
इह खाँदा ऊनाँ दूणा
इहनू होर पाइउ जी

होर मलो अग मेरे

दो बणजारे मैं सौदे जो भेजे
सो वणजारू ना आए
थोडा बुटणा भाइआँ भाइआ जो देणा
होर मलो अग मेरे

दो बणजारू मैं नीरे जो भेजे
सो वणजारू ना आए
थोडा थोडा नीर भरावाँ जो देणा
होर डोल्हो अग मेरे

दो बणजारू मैं तेले जो भेजे
सो वणजारू ना आए
थोडा थोडा तेल मेरे भाइआ जो देणा
होर मलो अग मेरे

बजणाँ लागीआ झाँजराँ

गज मोतीआ दा सिहरा बसिआ मन मेरे
आउ हरी साडे बिआह रघुनदन आए
लाल लगे लाडे पाटीआ वसी घर आए

आउ हरी साडे गोरे लाल लगे लाडे डोरे
आउ हरी साडे अगणे लाल लगे लाडे कगणे
आउ हरी साडे बेडे लाल लगे लाडे दे सेहरे

आउ हरी साडे बिआह रघुनदन आए
वाजे वजें कुछ बाजे बज बजणा लागीआ झाजराँ
आउ हरी साडे बिआह हरी दिखणा आइआ

नाइए जो दोश ना देणाजी

बीडी बीडी लाडा पगडीआ ब नदा
नाईए जो दाश ना देणा जी
नाईआ नाईआ मेरे धरमा दीआ भाइआ
तू मेरी बणत वणाई जी

सजी मेंजी लाडा कपडीआ पहिनदा
भणा जा दोश ना देणा जी
भण भणे मेरीए चजलीए भणे
त मेरी बणत वणाई जी

भणां दोआ इछिआ पूरीआं

घोडी दुमँध सहोडी सुमब बडजे
मली सहि तेजन घोडी
सरदार घोडी आन वधी
सरम लाडा सहि घोडीआं चढिआ
तरी माउ दे गले हार सोहे
भैंणा बाही चूडीआं
तेरीआं भाओ दे गल्ले हार साहे
भैंणां दीआं इछिआं पूरीआ

आउ नो भणा वहो नो भैंणा
सभ सहि भणां मेरीआं
गाई तां मसां तिजो दमा
हार वसतू तेरीआं

सिर ब ने दे वाले जो ब हृदे
क्ने सोहृदे कोकले
तेरे हृथड् ए रुमाल सोहे
परा पिंडे मोठडे

सेहरा तैनू देनीआ

मेहरा तैनू दे देनीआँ बीरा पहिन के जा
मैं कीग्रां पहिनां भनडीए मेरा लशकर जाए
लशकर नू बीरा माड निआ बीरा पहिन के जा

वाले तैनू मैं देनीआ बोरा पहिन क जा
मैं कीग्रा पहिनां भैनडीए मेरा लशकर जाए
लशकर नू बीरा माड लिआ बीरा पहिन के जा

कठा तैनू मैं देनीग्रां बीरा पहिन के जा
मैं कीआ पहिना भनडीए मेरा लशकर जाए
लशकर नू बीरा माड लिग्रा बीरा पहिन के जा

तेरे सेहरे नू लग्गे हीरे

नवीं दूरे दा ग्राइग्रा दई घलिग्रा राजे
रची गुद फेरी गुदी लिग्रा मेरी मालण सेहरा

तेरे सेहरे नू लग्गडे आए ओ
देखी विगसे सहि लाडिग्रा तेरा भाइग्रो

तेरे सिहरे नू लग्गडे हीरे
देखो विगसे सहि लाडिआ तेर बीरे

तेरे सिहरे नूं लगडे जामे
देखी रिगमे सहि लाडिग्रा मर माम

रच्चो गुद फेरी गुद्दी लिग्रा मेरी मालण सिहरा
नवां दूरे दा आइग्रा दई घलिग्रा राजे

बीरे दी घोडी

नीली नीली घोडी परीग्रां वागां ते मोडी
घेरी घराई बैं ह्‌ी वापू जी दे अगणा
मार पलाका बीर घोडीआ ज चढिग्रा
जी धरत कबे सारा लोक जे डरिआ

जी चडही करी जाणा बीरा साहुवरे देश
बनो नपी थक्दी बे काता की दख
नीली नाली घाडी हरीजा बागां ते मोडी
घेरी घराइ बैंह्‌ी वापू जी अगणा

घोडीआं

इह घोडी मेरे बीरे दी विंद्रावन से आइ
मेल लइ मेरे बाबे ने गोकल वजी ए बधाइ

ल घोडी बीर तुर चलिग्रा अपणी से चतुराइ
जांदा तें मैं ना घेरसा वीरा दे वधाइ

जो कुछ मगणा स मग ल भैणे देर न लाइ
सुच्चा सूट रेशमी मेरा हार वधाइ

अगल ग्रवल मेरे बीरे दे कपडे केसर दीग्रां छडकाइ
ल घोडी बीर टुर चलिआ आपणी से चतुराइ

इह घोडी मेरे चाचे दी बिंद्राबन से आई
मोड लई मेरे चाचे ने गोकल वजी वधाई

निक्की निक्की घोडी

निक्की निक्की घोडी मेरे स्री रग पतला
आण वधी मेरे बाणे दे वेहडे
वाणा कहिंदा मेरा मोतीआ दा दाणा
माई कहिंदी मेरा बालक इआणा
मार फुराटी लाडा घोडीआ चडिआ
धरती कबी सारा लोक जी डरिआ
ना डरो धरती ना डरो लोको
शाह जी दा बेटडा बिआहणे नू चढिआ

श्री रग महिलाँ जो आणा जी

लिखी लिखी चिट्ठिया मै बगले जा भेजा
श्री रग महिला जो आणा जी

मैं कीआँ आवा मेरी बाँकीए बनरो
नाइए ने घट घट रोके

नाइए जो देवा म रोक रुपईआ
श्री रग महिला जो आणा जी

म कीहा आवा मेरी बाकीए गोरीए
प्रोहता ने घट घट रोके

प्रोहता जो देवाँ मैं पलघ ता पीढिआ
श्री रग महिलाँ जा आणा जी

बस चलदा न कोई

खारीग्रा बदल लइग्रा हुण होई पराई
बाबल बेटडीए हुण होई पराई

बावल मणस दिती बस चलदा न कोई
ताए बेटडीए हुण होई पराई

ताए न मणस दिती बस चलदा न कोई
भाइए दी भनडीए हुण होई पराई

भाइए ने मणस दिती बस चलदा न कोई
चाचे बटडीए हुण होई पराई

चाचे न मणस दिती बस चलदा न कोइ
खारीग्रां वदल लईग्रा हुण होई पराई

बाहर आ मेरी शाम सुन्दरी

वाहर आ मेरी शाम सुदरी
काहन लगनां जा ग्राए जी
मैं कीहां आवां काहना मरिग्रा
बापू ते शरमांदीग्रां
वाप जा तेरा से सहुरा मेरा
उस ते क्जो शरमाणा वे

वाहर आ मेरी शाम सुदरी
काहन लगना जो ग्राए व
मैं कीहां ग्रावां काहनां जा मेरिग्रा
भाईए त शरमादीआं

भाई जे तेरा से साला मेरा
भाई ते शरमाणा किग्रा

जे साडी बेटी

तू मुण नीवआँ कुडमा
ग्ररज बदी दी सुणिओ जी

जे साडी बेटी कम न जाणे अदर बही समझाओ इ
जे साडी बेटी घिग्रो डोल्हे पाणी करके जाणिग्रो जी

जे साडी बेटी मोटा कत्ते रेशम करके जाणिग्रो जी
जे साडी बेटी मदा बोले चगा करके जाणिओ जी

सुहाग मगण बाबे दे गई

सुहाग मगण वावे दे गई ग्रो
सुहाग मगण बाबे दे गई ओ
धीए हत्थ मँहिदी सीस डोरी बाइ चूडा ला
सुहाग तैनू राम देवेगा

सुहाग मगण ताए दे गइओ
सुहाग मगण ताए दे गइओ
धीए हत्थ मँहिदी सीस डोरी बाइ चूडा ला
मुहाग तैनू राम देवेगा

सुहाग मगण चाचे दे गई
सुहाग मगण चाचे दे गई
धीए हत्थ मँहिदी सीस डारी बाई चूडा ला
सुहाग तैनूँ राम देवेगा

ताईश्रा वे धरमी धरम करें दडा
अज तेरे धरमे दी वेला
चार वो खवीश्राँ गज गज लवीश्राँ
गड्डो कुडी दे वाप दे अगणे
वाप जे धरमो धरम करेदा
अज्ज तेरे धरमे दी वेला

मन मेरा मोहिआ तुमने

अज नौणी कल वुटणा परसी भूमाँ ते डोले चढना
आगे मिली जाए परसरामा मन मोहिआ तुमने

आदी गडीश्रा दिदी हरना आगे खडीश्राँ भूमाँ तिन जनीश्राँ
आगे मिली जाए परसरामा मन मेरा मोहिआ तुमने

ओ जिंदगी दो दिन दी हसणा खेडणा जिंदगानी
आगे मिली जाए परसरामा मन मेरा मोहिआ तुमने
परसरामा वेईमाना मन मेरा मोहिश्रा तुमने

वागी साडी अव केले केले न दिल वोले
पकड डाली तोड केला केले नू दिल वोले
परसरामा वेईमाना दिल मेरा मोहिश्रा तुमने

वागी माडी निंवू पके निंवुआ नू दिल वोले
पकड डाली तोड निंवू निंवूश्रा नू दिल वोले
परसरामाँ वेईमाना दिल मेरा मोहिश्रा तुमने

सत्त लाजाँ

रग रस्स लाज पहिली कि मगल गाईआ
गोकल ता गोपीश्राँ मोहण वाले

सिर सूा गहिरा मुकट गाहण
अग बान चोनिआ
राणी तां पूजे लाज पहिली
मुखे त अमत बोलणा

रग रस्स लाज दूसरी
कि रस्सा पिआईआ
बाईआं ते पकडी कंनिआं कुमारी
राम धुनष सगारिआ
धनुषे सँगार वाले
राम आइआ श्री किशन विआहण आइआ

राणी ते पूजे
रग रस्स लाज तीसरी
कि लगण गणारी
इंदर ते ब्रह्मे लगण गाइआ
वेदी पडण आइआ
राणी ते पूजे

रग रस्स लाज चौथी कि खारा गडिआ
आंचले ते पकड विआलणा
वीरा वडडिआ तेरे धरमे दी बेडी आइए
रँगां छे गधोरी कुरक्शेतर नाहण आइआ
राणी ते पूजे लाज चौथी
रुक्मणी वर मोहिआ

रग रस्स लाज पचमी कि राधे रुक्मणी
ठुमकुए ठुमकुए चाल चलदी
पैर नेहतर रूट लई गल हार डाल
सगार सोहणें मुखे ते अमत वोलदी

राणी ते पूजे लाज पजमी
हत्था ते दान करदी ए

राणी ते पूजे
रग रस्स लाज छिटमी
सौरस वेदीग्रा रूप वाला
सेजे पर सुनिआइआ
राणी ते पूजे लाज छिटमी
हत्था ते दान करदीए

रग रस्स लाज सतमी
कि सतिग्रो लाजा पूरीआ
जनक ने बर दीआ सीग्रा दे
बिदी माता लिखिग्रा जोडीआ
राणी ता पूजे लाज सतमी
सत्ते लाजां पूरीआ

बापुए ते सरमांदी ए

बार ग्राउ मेरी सिआम सुन्दरी
कान्ह विग्राहणे जो आइग्रा
मैं कीग्रा ग्रावा ग्राप मेरे मुआमी
बापूए तो सरमादीए
बापू तेरा धरम करदा
हत्थ नोटा चूलीग्रा भरदा
ल वे सरस जवाईआ
बार ग्राउ मेरी सिग्राम सु दरी

घोडी तेरी बो बीरा

घोडी तेरी बो बीरा
मोहणी जे यणदी काठीग्रा दे नाल

जाग द तल्न तल्न ज रोई जा
नाट ना मारिआ गुणाउ र
शहिर नवाव दे घर वगणा
नान तर व वीरा

साह्णे वणद डागे द नाल
मैं वलिहारी वे मेरिश्रा गुरजणा
नागे दे थल्ले थल्ले हाई आउ
चोट नगारिआँ दी सुणाउ
शहिर नवावे द घर वसणा
वाले तेरे वे वीरा

नूह गोरी आई

हरे भधेहा मेर मने भेश्रा
किस दी सुहेतडी कुण गोरी श्राई
हरे भवेहा किस दी सुहेतडी कुण गोरी श्राई
रामचन्दर सहेतडी सीता गोरी श्राइ
क्रिशणें सुहेतडी राधा गोरी श्राई
हरे भधआ किस दी सुहेतडी कुण गोरी आई
सुन्दरे सुहेतडी नूह गोरी आई

तुम कसा घर बर लिआ

वावे जी दे महिल मे
मैं रसी लग्गी रहिंदी हा
उह उह वीवी राधके
तुम कसा वर पा लिश्रा

राम वर पा लिश्रा
भगवान वर पा लिआ

नन पड़ी गग नग जी आए
नान अइ पावती
आज मेरे भाग व

मीर वजीद नाग जी घाए
नान घाए भैरा जती
म्राज मर भाग मइ

छोडिया हो बापूए दा देस

उचे उचे बेंगले नागन जे बैठ्गी
चौपड़ मेलदी तीन वल पामदी
भरीआं पटरीआं हा
हुण होइआं तिआरिआं हो

अज पर छोडिया हा बापूए दा देस जी
हो अम्मा दा पडास जी हो
अज पर छोडिआ हो सायणी दा साथ
पीपला दी पीघ जी हा गुडीए दा मेलुणा हा

नदी हुदी डुघडी हा तार हुदा छोटडा हो
किहा करी लघणा हो नदीआ थे पार जी हो
हाथा लदी मुदडी हो गले लदी हार जी हो
लघी जाणा पार जी हो

अग्गे मोडी हाउदी पिच्छे माडी दखदी हो
टुलपुल भालदी हो छम छम रौवदी हा
खडे होइआं हेसीओ खडे हाइआ डोलीओ
पल भर देखण देया बापू दा देस जी हो

बागे छोडी कुत्थे चली

मेरीए बागे दीए कोइले
बागे छोडी कुत्थे चली
मेरे बापूए बचना दी बग्घी
बचना दी बग्घी उठी चली

लेओ रे श्री रग सिहरा

जिस दिन गरड भगवान जडिग्रा
सखीए श्री रग ग्राइआ राम
निआरा चौर झूले सिर पर
मसतक तिलक बिराजे राम
भजन बाजे बेही गाइण
सखीए श्री रग ग्राइग्रा

साठ सहेलीग्रा रुक्मणी मिलीग्रा
हरी वर देखण जाणा राम
जब देखिआ हरी बर सुदर बाँका
देखी पलडा पाइग्रा
तुम लिग्राउ रे मालिण फूल मरुग्रा
लेओ रे श्री रग सिहरा

चौका पुग्राई करी बठे बेदी
राधा ता क्रिशन दी जाडी राम
जब जोड पलुग्रा बठी
लिग्राणे पाए पैरा पर मुदरे
तुस रे मालण फूल मरुग्रा
लेओ रे श्री रग सिहरा

शिश्राम गुदर भजा वदा मैं तरा
नदी मैं तरी
ना हो माहे पामन ना
ना माड नाई ना ताड लणीआं
तुमरे माला फुल मम्आ
लग्रा र श्री रग मिहगा

तेरे महिला दे अदर

तेरे महिलां दे अदर जी बापू
मेरा टाना ग्रडिआ ए
तेरे टाल दिग छुडाई
जा धीए घर ग्रापण

तेर महिलां द अदर माए
मेरी गुडिग्रां रहिआं
तेरी गुडिग्रां दिगी पुजाई
जा तू घर ग्रापणे

तेरे महिलां द अदर जी
बापू मेरी मां राए
तेरीग्रां माग्रो जो दिगे पतिग्राई
तू जा घर ग्रापणे

आज लालण की है बारी

हरी ग्राज भेटिआ हरी कल भेटिआ
हरी साजण करे ग्रा मैं वारी
हरी ग्राज भेटिग्रा हरी कल भेटिग्रा

वाल वाहन मैं वारी मैं वठी ए लाला
लालण करीजा मैं वारी
हरी आज भेटिग्रा हरी कल भेटिग्रा

एक पीश्रा मेरा साठ सुहागण
एक सुहागण निश्रारी
हरी आज भेटिआ हरी कल भेटिआ

जा मरे पीश्रा प्रदेश सदारे
कमर कटारा हे भारी
हरी आज भेटिश्रा हरी कल भेटिश्रा

छुह छुह कलीआ मैं सज रचावा
श्राज लालण की है वारी
हरी आज भेटिश्रा हरी कल भेटिश्रा

तू तां पहिन बीरा

म तुहानू आख रही पटाईए नी
वेटडे नू चगा सिहरा वणा लिआउ
लाडे लाडले नू तू ता पहिन वोरा

घाटी ठुमक चले घाडी ठुमक चल
वागे मोड चले
तेरी लगीश्रा प्रीता जानम तोड चले

मैं तुहानू आख रही सुनिआरे वेटडे नू
चगे वाल घट लिश्राउ लाडे लाडले न
तू तां पहिन वीरा

नणद परौणी आई

अजी सदिआ दरजी सीश्रो मेरी वरदी
जी म घर पेईडे जाणा

अजी गन्निआ गुहाग पीन्त मग मावा
जी म घर पईन जाणा

भी उठीआं नी भावा मन लग भर
नी नणद परौणी आई
मना मदूर तां माइ न धीया न जाई
तू नणद किथे त आई

अजी उठ मरा भाया विदूआं न्मिआं
नणद परौणी आई
वीरे तां तेरे ने वमांदी न बीजी
म विदूआं किथे ते दोवां

अजी उठीआं नी भावो धौल पकाईआं
नी नद परौणी आई
अजी भाईए तां तेर ने कणक न बीजी
म धौल किथे ते पकावां

अजी भावा तां साडी त पडासन चगी
नी जिन साडा आदर कीता
अजी मदिआ वहारो पीडो मरा डाला
नी म घर साहुरे जाणा

जग गई नू सास पुछदी
नी किआ लिआई बधाई
अजी वीरा ता मेरा राजे दा नौकर
नी भावो दे धी घर जाई

अजी एडे नखरे ना ला मरीए वहू
नी भावो ने मुह भी न लाई

अजी बारही ता वरसी वीर घर आइआ
रुठडी ता भैण मनाई

अणो थाला दे विच थाल कटोरे
सो मेरी नणदा नू दीजो
अजी थाल कटोरे घर रख भावा
में लईआ लैणा वधाई

अनी हारा दे विच हार हथेला
अनी से मेरी नणदा नू दे दीजो
अजी हार हवेला घर रख भावो
मैं लेईआ लणी वधाई

अनी बारही ता वरसी वीर घर आईआ
नी रुठडी भैण मनाई
लोइआ ले ले वधाई
नी रुठडी भैण मनाई

भेटिआँ नी सखीए

लोका दीआ वाडीआ हरना गिआ
हरने ता टावण वीरा मैं चली
परे चुभा जी ता काडडा ए
ए वद्दीआ नी सखीए इत घरे

कुण जिस पर दे कडे
कुण भूले ठडी वाई ए
भावो खेले इस पर दे कडे भाई भूले ठडी वाजो
भेटिआ नी सखीए इत घरे

हुर यूदे भरे क्विआरी

तिजो सिहरा तिजो मुग्ट
तिजा गाती सजा दूगी
हुरे वूँदे भरे क्विग्रारी
तिजा वारस लग पिग्रागा

तिजा वाल तिजा डारी
तिजा माती सजा दूगी
हुरे वूँद भरे क्विआरी
तिजो वारस लग पिग्रागे

मैं तां सिहरा मँगांदी

मैं तां सिहरा मँगादी मुक्ट जडिआ
सिआम जी वालदे क्विउँ नहीं राधा घडीग्रा

म ता पतली चादर विच घडीग्रा
साडा ददा दीग्रा हाई जादीआं क्णाग्रां

साडे परां दीआं घसी जांदीआं तलीग्रां
सिग्राम जी वोलदे क्विउँ नहीं राधा घडीआ

म ता वाले मँगादी डोरा जडीग्रा
सिआम जी वोलदे क्विउँ नहीं राधा घडीग्रा

मेरे भाईआं जो ना लागे मन्दी गाल

कुथू ता आए वावल पट्टण
वैठी कुथू ते आई जनेत
हसी विगसी धरमीग्रा वोलणा
तेरा जस्स होए

नेड़े ते आए बाबल पाहुणे
दूर ते अई जनेत
हस्सी बिगसी धरमीआँ बोलणा
तेरा जस्स होवे

भाड ता दिआ बाबल सोहणे
भरी थाला नाल कटारीआ
हस्सी बिगसी धरमीआ बालणा
तेरा जस्स होव

मँगिआ ता दिने ओ मोती आ
थाल चोले नाल
हस्सी बिगसी धरमीआ बोलणा
तेरा जस्स होवे

सानू ता लगण बाबल दाईआ
मेरे भाईआ जो नी लगे मदी गाल
हस्सी बिगसी धरमीआ बोलणा
तेरा जस्स होवे

गाई भैस ता दिने ओ बाबल
कटूआं बडूआ नाल नी लिआई
हस्सी बिगसी धरमीआ बोलणा
तेरा जस्स होवे

मिकू ना लगण चाहीआ
मेरे भाईआ जो ना लगे मदी गाल
हस्सी बिगसी धरमीआ बोलणा
तेरा जस्स होवे

श्वसुर का घर

मेरी उठी वे कलेजे पीड

जलदी बुलाओ सहुरे की
जिन्हे खरचिआ डेड हजार, म नी वचदी
जलदी बुलाओ जेठे की
जिन्हे कीते वाजे वाले तिआर, म नहीं वचदी
मेरी उठी वे कलेजे पीड मैं नहीं वचदी

जलदी बुलाओ देवरे की
जिहडा गिआ सी जवे द नाल म नहीं वचदी
जल्दी बुलाओ उस कथ राजे की
जिन्हे लईआ लावा चार म नही वचदी
मेरी उठी वे कलेजे पीड म नही वचदी

अम्मा जी मैं नहींउ बसणा

जली जाए पहाडा दा देस
अम्मा जी म नहीउँ वसणा

खद्दरे दा चोलू नी अम्मा
लाणे जा दई देंदे
उपर लाई देंदे सूही कार
अम्मा जी म नहीउँ वसणा

देंदलू दराटू नी अम्मा
हथे विच दई देंदे

दसी देंदे ने दूरे दे खेत
अम्मा जी म नहीउँ वसणा

छलीआ दी रोटी नी अम्मा
खाणे जो दई देदे
हत्थी देंदे ने फफरू दा साग
अम्मा जी म नहीउँ वसणा

जली जाए पहाडा दा देस
अम्मा जी म नहीउँ वसणा

मेरा सालूआ

मैं महीन महीन कत्तदी तार नी
मेरा सालूआ
मेरी अम्मा ने भेजे पटार नी
मेरा सालूआ
जित्त निकले सोने दे हार नी
मेरा सालूआ

मैं महीन महीन कत्तदी तार नी
मेरा सालूआ
मेरी नणद भेजे पटार नी
मेरा सालूआ
जित निकले काले नाग नी
मेरा सालूआ

घरेकाँ फुलीआ प्रदेसी बीरा

घरेकाँ फुलीआँ प्रदेसिआ बीरा
घरेकाँ दी ठांडडी छाँ बीरा मिली जाइआँ

अगे ता शेर खाँदा भणे कोआ ग्रावाँ तेरे पास
शेरा जो पास पासीआ वीरा मिल जाएउँ

अगे ता नदीग्रा भरीग्रा कीग्रा ग्रावा तेरे पास
नदीग्रा ते बेड़े पाउनीग्रा बीरा मिली जाइआ

भावी ता तेरी डाहुडी ए भैणें कीग्राँ करी आवाँ तेरे पास
भावीए नू पईग्रा भजाई दीआ बीरा मिली जाइआँ

किथे ता बना मिले जो किथे रखा ढाल तलवार
भणे मिली लिआ

किन्नू सुणावा माए रो रो

प्हाडे देसे खट्टीग्रा नाँ जादा
प्हाडे ना जाँदा कोई

छल्लीग्रा दी राटी माए खाणें जो दिंदे
निउडे ओ करदे निग्रो निग्रो
खाणे कुखाणे माए खाणे जो दिदे
किन्नू सुणावा माए रो रो

टुटिग्रा घडोलू माए पाणीए जो दिंदे
बिने जो करदे निओ निओ
खडीग्रा कुआलीग्रा चढिग्रा ना जादा
किन्नू सुणावाँ माए रो रो

टूटा मजालू माए सौण जा दिंदे
ग्रिदा जो करदे निग्रो निओ
गारे गोरे बदने माँगणू जो लडदे
किन्नू सुणावा माए रो रो

कुण बो परौणा अज औंगा ए

गोहरे ता मेरे डिऊठडी ठणकी
कुण वो परौणा अज औंगा ए
गोहरे ता डिऊठडी मे
वीर वो परौणा आउँगा ए

ढल ढल घिउआ पक पक पोलूआ
मस कुठालीआ औणा ए
किहो ता विही भणे सस है तेरी
किहा दिही नद तेरी ए

अग्गी दा पूला सस है मेरी
अबरे दी बिजली नद मेरी ए
ठडी ठडी छौआ वडी दा टिआला
रोई रोई वेदन लाइ ए

हेरी जाइआ भैणे मुडी जाइआ भणे
रौंदे वालके खलाइआ ए
वालके मेरे जुग जुग रोणा
अम्मा दे जाए कछ मिलणा ए

घर ता जादे जा अम्मा जे पुछदी
किही ता दिही भण तेरी ए
ठडी ठडी छौंआ माए वडी टिआला
रोदीआ भेणा छडी आए

जोगी तू होइआ पुत्रा वरागी तू होइआ
भणा दे देसे मत जादा ए

जागी मैं हुगा माग बरागी मैं हुगा
भणा द देसे अलग्र जगादा ए

दाणावारी वुले जो मदा नहीं बोलणा

कम्मी वारे जो हत्थ ना लांदी
लाड करी वहिदीग्रा चांदी ग्राज
दाणा वारी कुम्मे जा मदा नही ग्रोलणा
चद दी चांदणी चदे घणे

घडे घडोलूए जो हत्थ ना लांदी
लाइ करी वहिदी ग्रा बालूए जो
दाणा वारी कुस्मे जो मदा नही ग्रोलणा
चदे दा चांदणी चदे घण

ददलू दराटूए जो हत्थ ना लादी
लाई करी वहिदीए झाजरां जो
दाणा वारी कुस्से जो मदा नही ग्रोलणा
चदे दी चादणी चदे घण

तां नजरी आउंदा बाबले दा देस ओ

पिपल बरोटीग्रा
तेरी छाग्रो मैं खडी ग्रा तेरी
खडोतरी सुकांदी काले केम

हवा नी चलदी
सुकदे नी केस वो
उडी उडी आउदा नदीग्रा दा रेत वो
खडोतरी सुकांदी काले केम वो

उवार पामे मैं खडी
पारे पारे मेरी मा खडी

डुल्ही डुल्ही पाउँदा अक्खा दा नीर वो
खडोतरी सुकादी काले केस वो
किक्करा जो वढी सुट्टा
वेरीआ जो छागी सुट्टा
ता नजरी आउँदा मेरे बाबल दा देस
खडोतरी सुकादी काले केस वो

लोका दीआ धीआ
खाउँदीआ गुड घिउ
मैं कजो खाँदी फफरूए दा साग वो
खडोतरी सुकादी काले केस वो

नाइआ तेरी लत्त भज्जे
बाम्हण तेरी मा मरे
जि ही मैं दई दित्ती उच्चे पहाड वो
पिपल वरोटीआ

सहुरिआ दे देस नहीं जाणा

जली जादा सहुरिआ दा देस ओ अम्मा जी
भिआग जे हुंदी माए वहुक्डी फडाई दिंदी
दस्सी दिंदी पटीआ दा फेर ओ अम्मा जी
मैं नही बसणा सहुरिआ दे देस

भाडे ता माजो माजी हत्थ घसी जाने
आपू क्दी काई मिजो मूहो नही लादे
जली जाए इहो दिहा जीणा ओ अम्मा जी
मैं नही ओ रमणा सहुरिआ दे देस

छल्लीआ दी रोटी माए साग वणाई दिंदे
भरी करी झोने दा कटोरा पकडाई दिंदे

जलो जाए दहो दिहा ग्राणा अम्मा जी
जलो जादा सहुरिम्रां दा दस म्रो

कित्थी बहीके न्हावां

सासू पुछां साहुवरे पुछां
कित्थी बहीके न्हावां
नी चद चड़ू दीआं चानणीम्रां
पछाड़े बहीके न्हाना

जेठा पुछां जठाणीए पुछां
कित्थी बहीके न्हावां
अँगणा चवा खिड़ी रहिआ
विच बगीचे न्हावां

सोए दे साग नू

भेजी थी म्रो सासूए सोए दे साग नू
केथां वे लिम्रावां हो मैं वारी मुईए

केथां ते लिआवा सोए दा साग हो
अगण ना बोइम्रा पछ्याड़े ना जमोइम्रा
केथा ते लिआवा सोए दा साग हो

कोल कोल टापड़ू ए भर मिझो लगदा
देई छडडी विखड़े देश हो मैं वारी मुईए
केथां ते लिम्रावा सोए दा साग हो

इक मन बोलदा नदीआ में डुब्बी मरा

अम्मा दी मैं लाडली बापूए दी पिम्रारी ए
चाचिम्रा देई छडडी चदरे गुलेर ए

अम्मा बठी रोदी बापू बठा झूरदा
भाई मेरे तोपदे खडडा खड्डा नालीआए

चिट्टीए चिट्टीए चादरे मच्छी कडे सीतीए
तिजो पर डुली रिहा डोगरे दा लोक ए
किनी चादर दीती किनी चादर सीतीए
किनी ऊपर डोलिहा अतर फुलेल ए

अम्मा चादर सीती भावो चादर सीती ए
आशकाँ ने डोलिआ अतर फुलेल ए
इक मन बोलदा नदीआँ मैं डुब्बी मरा
इक मन आखदा बालडी वरेस ए

इक बख खाई लिआ जले दीआ जलादीआ
इक बख रही गिआ सपडे दे हेठ ए
मरदी मरदी बोलदी हा माए मेरीए
हुण मत धोआ दिंदे चदरे गुलेर ए

कि बबीहा बोले

सस्स पुछदी नूहाँ गोरीए
तेरे मुक्ख पर जरदी आई नो
कि बबीहा बोले

माए जेठ महीने हल्दी कुट्टी
तिसते जरदी आई नी
कि बबीहा बोले

सस्स पुच्छदी नूहाँ गोरीए
तेरे अदर दीपक बलिआ नी
कि बबीहा बोले

जली जाए इहो दिहा ग्राणा अम्मा जी
जली जादा गहुरिग्रां दा दग ग्रो

कित्थी बहीके न्हावां

सासू पुछां साहुवरे पुछां
कित्थी वहीने न्हावां
नी पद चडेहू दीआं चाणीग्रां
पछाडे वहीये न्हाना

जेठा पुछां जठाणीए पुछां
कित्थी बहीक न्हावां
अँगणा चवा खिडी रहिआ
विच वगीचे न्हावां

सोए दे साग नू

भेजी थी ग्रो सासूए मोए दे साग नू
केतां वे लिग्रावा हो मैं वारी मुईए

केतां ते लिआवा सोए दा साग हो
अगण ना वोइग्रा पछवाडे ना जमोइग्रा
केता ते लिआवा साए दा साग हो

कोल काल टापड् ए भर मिझो लगदा
देई छड्डी विखडे देश हो मैं वारी मुईए
केता ते लिग्रावा सोए दा साग हो

इक मन बोलदा नदीआ में डुब्बी मरां

अम्मा दी मैं लाडली वापूए दी पिग्रारी ए
चाचिग्रां देई छड्डी चदरे गुलेर ए

अम्मा बठी रोदी वापू बैठा भूरदा
भाई मेरे तोपदे खडडाँ खड्डा नालीआए

चिट्टीए चिट्टीए चादरे मच्छी वडे सीतीए
तिजो पर डुली रिहा डोगरे दा लोक ए
किनी चादर दीती किनी चादर सीतीए
किनी ऊपर डोलिहा अतर फुलेल ए

अम्मा चादर सीती भावो चादर सीती ए
आशकाँ ने डोलिआ अतर फुलेल ए
इक मन बोलदा नदीआँ मैं डुब्बी मरा
इक मन आखदा बालडी वरेस ए

इक वख खाई लिआ जले दीआँ जलादीआ
इक वख रही गिआ सपडे दे हेठ ए
मरदी मरदी बोलदी हा माए मेरीए
हुण मत धीआ दिंदे चदरे गुलेर ए

कि बबीहा बोले

सस्स पुच्छदी नूहा गारीए
तेरे मुक्ख पर जरदी आई नो
कि बबीहा बोले

माए जेठ महोने हल्दी कुट्टी
तिसते जरदी आई नी
कि बबीहा बोले

सस्स पुच्छदी नूहाँ गोरीए
तेरे अदर दीपक बलिआ नी
कि बबीहा बोले

माए काले महीने हनेरीआं रातां
तांही दीपक बलिआ नी
कि बबीहा बोले

सस्स पुच्छदी नूहां गोरीए
तेरी गोदी बालक मेले
कि बबीहा बोले

माए नदी किनारे नाहुणे गईआं
बालक रुडदा आइआ नी
कि बबीहा बोले

माए किसे मलाह नू दरद ना आई
मैं चुक्क गले नाल लाइआ नी
कि बबीहा बोले

बडरा डराउणा सहुरिआं दा देस

बधीआ पटारीआ नी माए होइआं तिआरीआं
अज छोडी जाणा नी माए बाबा जी दा देस
अगे अग चलदी नी माए पिछे मुड़ देखदी
बडडा सुहाणा बाबा जी दा देस उए

अगे अगे चलदी नी माए पिछे मुडी देखदी
बडडा डरौणा नी माए बुरिआ दे देस
निकीआ निकीआं झुगीआं काउआ दीआ ठुगीआ
नी माए बडडा डरउणा नी माए सहुरिआं दा देस

सजन साडे चले गए रावी दे पार

निकी निकी कूमनी नी बागे बागे झूनदी
भुगीआ बिचारीए नी दक्खणे दी हवा

अगे अगे चलदी जी पिछे मुडी देखदी
खरा जी सुहामणा बाबा जी दा देस ए

निकीआ निकीआ चगीआ नी कामा दीआ ठुगीआ
बुरा नी डरामणा सहुरिआ दा देस ए

तद नही टुटदी जी पूणी नही मुक्दी
सस्स नही आखदी पाणीए जो जाणी ए

तद वो टुट गई पूणी वी मुक गई
ससू वी आखिया जी पाणीए जो जाणा ए

घडा नही डुब्बदा दी लज्ज नही टुटदी
बुरा डरामणा सहुरिआ दा देस ए

डुब डुब घडोलूआ जी सिरे दिआ वरीआ
सजण साडे चले गए जी रावी दे पार

इक दिल बोलदा जी नदीआ की डुब्बी मरा
दूआ दिल बोलदा जी बालडी वरेस ए

कौन सानू रामदा जी कौण सानू झूरदा
कौण सानू टोलदा जी नदीआ दे फेर ए

इक बख खाई लिआ जलीए दिआ जलादीआ
दूआ बख रही गिआ जी सपडे दे हेठ ए

ओ कदी घरे आउणा

घालूआ मजूरा ओ डेरा तेरा दूरा ओ
कदी घरे आउणा तू कदी घरे आउणा

दिआलीआरे वत्रू ताँ लाहडीआरे भिराडी आ
कीहाँ तिज्जो विसरी ओ कदी घर आउणा

पाणीए ते लक्डाँ ने सारा दिन घुलदा
तू राज रहे रुलदा आ कदी घरे आउणा

काग उडाए गोरी विदाआ लगाए गारी
गुमसुम कलीए ने कितना कु रहिणा ओ

बीरा औह गिआ

पीपला दे हेठ मेरी अम्मा खडी हो
झड झड पदे पीपल पात

जाओ तू जाओ अम्मा घर आपण
बीरना गुमानी जो भेज

आओ तू आओ बीरा बठ तू पटड
किहडे आदर देऊँ

दुधे दुहाणीने बीरा पर धुआऊँ
दतूए पटडा देऊँ

लड्डू सकोतोए वारा भाजन देऊँ
झारीए देऊँ ठडा नीर

चदा ताँ देखी देखी थाली घडाऊँ
तारिआँ गिणदे कटोरे

झीजण ता छाटी छाटी भात रनहाऊँ
मिढे मिढे बक्करे दा मास

खाइग्रा ता खाइआ वीर वड्डे गराहे
आवेगी सासू कगिग्रारी

सासू ता मेरी बीरा ग्रगनी दा पूला
नणद लसकदी बिज्ज

घाडा दुडादा बीरा ग्रौह् गिग्रा ग्रौह् गिग्रा
चापका जो गिग्रा बरसाई

चापका जो तेरी बीरा घुगरू लगाऊँ
रखागी जीवडे दे नाल

मेरे मने दिआ ओ बैरीआ

गीता गाई घरां जो चलिग्रा
ग्रगे ससू ने देई लीए भित बो
मेरे मने दिआ ग्रो बरीग्रा

आटा मैं गु्ह् आई वडीग्रा मैं भुन आई
करी ग्राई घरे दा कम्म बो
मेरे मने दिआ ग्रो बैरोग्रा

छे फेरीग्रा खूए दीग्रा लईग्रा
सतवीग्रा जाए रही खूहे दे विच वा
मेरे मने दिग्रा ग्रो बरीआ

सभ सभ ससू नूहा जो रादीआ
मेरी रादी ए छेनिया द पज्ज जा
मेरे मने दिग्रा ग्रा वरीग्रा

किग्रा ससू तू घेनिग्रा जा रादी
घेने रखी उमई चौकी दे विच जा
मेरे मने दिग्रा आ वरीग्रा

सभ सभ कत गोरीआं जा रादे
मेरा रादा ए घेनिग्रा दे पज्ज वो
मेरे मने दिग्रा ओ वैरीजा

किजा कता तू घनिग्रा जा रादा
घेने रखी ग्राई चौके दे विच वा
मेरे मने दिग्रा ग्रो वरीग्रा

माजो पिउका देखणे दा चाओ

उप्परा थे पेईए डारडीए
कि वहुत्ती कसुमिग्रा लाल

वीरन तां आइग्रा भण प्राहुणा
कि किहडे ग्रादर देऊँ
दराणी जठाणी घरे पीढे पटडे
माजो वीरे माजरू दा तोडा

दराणी जठाणी घरे शानी झीजण
हा मांजो वीरा काधरे दा तोडा
खाग्र ता खाधे वीरा सभी भोजन
कि हुण भैणे पेइए जाणा

नरमाँ कतादीए सासू मेरीए
कि माजो पेइए भेज
हउँ नही जाणदी हो बहुए तू मेरीए
जाई आपणी नणदा जो पुच्छ

गुडीए खेलदी नणदा जो मेरी
कि माजो पेइए भेज
हउँ नही जाणदी भाबी जा मेरी
जाई आपणे कता जो पुच्छ

घोडलू दर्डांदीआ कता मेरिआ
कि माजो पेइए भेज
लिआओ वे गुआलूओ पाजे दी छटीआ
ये सारी जाऊँ जाऊँ चुकाऊँ

पारली जे धारे हो रुग बुगीए[1]
कि थोडी भैंणे निवदी होईआ
तुध पिच्छे मेरा पेइआ पिओका
माँजो मुईए देखणे दा चाओ

बुरा विहा लगदा सहुरिआँ दा देस

इक बानेनडे इक खतरेटडे
करदी की नदीआ दे फेर ओ

---

१ एक नवविवाहिता अपने पीहर को याद करती हुई वहाँ जाने के लिए हर प्रकार से आज्ञा माँगती है। जब उसका कोई बस नही चलता और उसका पति भी खफा होकर बोलता है तो वह पहाड की चोटी से कहती है कि तू ही नीची हो जा ताकि मैं अपने बाप का घर देख सकू।

तद नहीं मुकरी वी जिद नहीं छुटणी
सस्स नहीं बोलदी वी पाणीए नूं जाणा ए

तद भी मुकरी गई वी जिद भी छुटी गई
ससू भी बोलिग्रा वी पाणीए जा जाणा ए

रुढ़ रुढ़ ननूआ वी डुब्ब डुब्ब पहालूग्रा
मैं वो तां डुब्बी मरां नदीओ दे फेर ग्रा

अमां मेरी रोमदी वी बापू मेरा झूरदा
भाई मरा तोपदा नदीग्रां दे फेर आ

ऊँचे ऊँचे बँगले वी ऊचीग्रां ऊचीग्रां बठकां
खरा दिहा लगदा वी बापू जी दा देस ग्रा

नीठे नीठे बँगले वी नीठीग्रां नीठीग्रां बठकां
बुरा दिहा लगदा सहुरिग्रां दा देस ग्रा

काली काली पीलीए बदलीए

काली काली पीलीए बदलो
वरसी मेरे बापू दे देस

अनारां दे हेठ रगी सुक्दी चुनाटिआं
उडी जा यां कालीग्रा कागा
जाई बोलयां मेरे पिखके
सौण महीना धी उडीकदी

केही जेही तेरी माई
केहे जेहे तेरे बापू

केहे जेडे तेरे बीर
भणा नू मिलण नही आवदे

गगा सरसवती मेरी माई
तीरथ जे मरे बापू जी
चदा ताँ सूरज मेरे बीरे
भैणा नू मिलण जरूर आणगे

रगीआ नी अम्मा
सूहीआ चुनडीआ
अलसी मजीठ नी
भण नू मिलण असी जावणा

पारीए ते जादे नी माए दो जने
नी सस्से मेरीए
इक ताँ नाईआ दूआ बीरा
सावन आइआ रे

जादिआँ नौकराँ नू होडी नी

नौकर ता चले ससू नौकरीआ जो
जाँदिआ नौकरा नू होडिआ नी
साडे ता होडे नही रहिंदे नूएँ
नौकर जादे बाह मरोड

तिजो ताँ दाम पिआरे ससू
साँजो पिआरी नौकराँ दी जान
मीणे मत लादी बोलीआँ मत लादी नी नूएँ
चली जा नौकराँ दे नाल

जम्मू दिआ नौक्करा

चमक मत्थे दीए बिंदीए तिजा लाई बैठी गोरी
गोरी झूरदी आ गोरी
कांता जम्मू विच जाई रहिग्रा ए
ते सौंजे डाढो सस्सू वस पाई गिआ
घरे आजा जम्मू दिआ नौक्करा
गोरी गलीए रुल

छणक पैंरे दिए झाजरे तिजो पाई बैठी गोरी
गोरी झूरदी आ गोरी
कांता राजे ग्ररस जाई पिग्रा
कि सौंजा डाढो नणदा वस्स पाई गिग्रा
घरे आजा जम्मू दिआ नौक्करा
गोरी गलीए रुले

मिझो पेईआं दे घर जाणा

सहुरे मेरे पलँग पल बैठे
मिझो पेईआ दे घर जाणा

सहुरा वाले मेरीए कुल बहूए
जाई पुच्छ अपणी सासू पास

सासू बोली मेरीए कुल बहूए
अपनी जठानीग्रा जाई के पुच्छ

पटडे बठी मेरी जठानीए
मैं पेईए दे घर जाणा

दरशण ए मेरीए भैण
अपने देआरे जाई के पुच्छ

गिदूआ खेलदे मेरे देवरा
मैं पेईए दे घर जाणा

भावीए मेरीए कुल भावीए
अपनी नणदा जाई के पुच्छ

गुड्डीआं खेलदी मेरी नणदे
मैं पेईए दे घर जाणा

भावीए मेरीए कुल भावीए
जाई के अपने बिआउए नू पुच्छ

लिआइआ गुआलूआ नरमे दी छट्टी
इसरा खोऊँ जाणा जाणा

गुडडीआं खेलदीए

गुड्डीआ खेलदीए कुडीए
मेरे चोलए लगीआं लीरा
वत्ता चलेंदीआ भट्टा भटेडूआ
तिज्जा किआ पई मेरी

अज ता है मैं भटां भटेडू
कल भटेऊ सही ओगा
जे तू आरीगा कल भटऊ
तां अम्मा बापू गोदी सेनांगी

जे तू मेलगी ग्रम्मा वापूए दीग्रां गोदाँ
ताँ मैं ढोल जवाई वणी उगा
गुडीग्रां मेलदीए गुडीए
मेरे चोलूए लगिग्रां लीराँ

माषिआ ने नहींओ तोरनी

कानू ग्रागिआ सुनहिरी पग्ग वन्ह के
कि मापिग्रां ने नहीग्रो तोरनी
चुप्प करके गड्डी विच वहि जा
कि मापिग्रां दी सेधी कोई ना
कानू उग गिग्रा सुनहिरी पग्ग वन्ह के

तेरे ताँई मैं झाँजराँ लिग्राइग्रा
कि चले गोरी सग मेरे नी
तेरी झाँजरा पर नी पाँदी
कि तेरे सग नही जाणा जी
कानू ग्रा गिग्रा सुनहिरी पग्ग बन्ह के

तेरे ताइ मैं कपडे लई ग्राइग्रा
कि चलो गोरी सग मेरे नी
तेरे कपडे ता अग मैं नही लाँदी
कि तेरे सग नही जाणा जी
कानू आ गिआ सुनहिरी पग्ग वन्ह के

तेरे ताइ मैं गहिणे लई ग्राइआ
कि चलो गोरी सगी मेरे नी
तेरे गहिणिग्रा न गले मैं नी पाँदी
कि तेरे सग नही जाणा जी
कानू ग्रा गिग्रा सुनहिरी पग्ग वन्ह के

उडी जा ओ कालिआ कागा

उडी जा ओ कालिआ कागा
भाईए जो सुनेहा देणा हो
चोच मढाऊँ तेरी सिउने कन्ने
पख मढाऊँ रूपे
भाइए जो सुनेहा देणा हो

चिट्ठीआ पाऊँ गल तेरे हो कागा
भाइए जो सनेहा देणा हो
थोडी थोडी बुरी मिझो अम्मा दी लगदी
भाईए दी याद सतादी हो कागा
भाईए जो सनेहा देणा हो

कीती मिल मेरी माउँ सुतीए

कौण रँगावे चूडला
साडे कौण ता कस्स देवे वन्द नी
एणा राहा दे वडे वडे पध नी
कीती मिल मेरी माउँ सुतीए
कीती मिल मेरी माउँ भलीए
मावा मिलिआ ते पइ जादी ठड नी
वीरा मिलिआ ते चढी जादे चद नी
कीती मिल मेरी माउँ भलीए

बावल रँगावे चूडला
साडी माउँ ता कस देवे वद नी
एणा गहा दे वडे वडे पध नी
एणा नदीआ दे वडे वडे छब्र नी
कीतो मिल मेरी माउँ भलीए
मावा मिलिआँ ते पइ जादी ठड नी

बीरां मिलिश्रां ते चढी जांदे चद नी
कीती मिल मेरी माउँ सुत्तीए

कौण रँगावे चोलणो
साड़े कौण तां वम्स देवे बद नी
एणां राहां दे वडे वडे पध नी
कीती मिल मेरी माउँ सुत्तीए
कीती मिल मेरी माऊँ भलीए
मावां मिलिग्रां ते पइ जांदी ठड नी
बीरा मिलिग्रां ते चढी जांदे चद नी
कीती मिल मेरी माउँ सुतीए

बाबल रँगावे चोलड़ी
साडी मा ता वम्स देवे बद नी
एना राहा दे वडे वडे पँध नी
कीती मिन मेरी माउँ सुत्तीए
कीती मिल मरी माउँ भलीए
मावां मिलिआ ते पइ जादी ठड नी
बीरा मिलिआं ते चढी जादे चद नी
कीती मिल मेरी माउ सुत्तीए

बाबल रँगावे चूड़ला
माडी माउँ ता वस्स देवे बद नी
एणा राहा दे वडे वडे पध नी
एणा नदीग्रा दे वडे वडे छप नी
कीती मिल मेरी माउँ भलीए
मावां मिलिग्रा ते पई जादी ठड नी
बीरां मिलिग्रा ते चढी जादे चद नी
कीती मिल मेरी माउँ सुत्तीए

सान आवइआ रे

नाङ दे हत्थ विच घुगरू
नी माए मेरीए
बीरे दे हत्थ विच वाजा
सावन ग्राइग्रा रे

किथे ता रक्खण माए घुगरू
नी माए मेरीए
किथे ता रक्खाँ ए वाजा
सावन ग्राइग्रा रे

किलीग्रा मा टँग घुगरू
नी माए मेरीए
महिला विच रखा ए वाजा
सावन ग्राइग्रा रे

किस दे भिज्जे सूहे सोस
नी माए मेरीए
किस दा भिजदा रुमाल
सावन आइआ रे

भावो दे भिज्जे सूहे सोस
नी माए मेरीए
वीरे दा भिजदा रुमाल
सावन आइग्रा रे

महिलाँ ताँ पावाँ सूहे सोस
नी माए मेरीए

वागी उडावाँ ए रमान
सावन ग्राइआ रे

छोरूए जो क्द करांगा ओ

कीनी तोडे तेरे बँगडारे सीस
कीनी तेरी बाह् मरोडी ग्रो
ओ कीनी लए पजा सौआँ दे नोट
कीनी जेब तोडी ग्रो
उधरी ऑगा राम सिंघ दे यार
छारूए जो क्द करांगा

बारीं बरसीं में घर आइआ

बारी वरसी मैं घर ग्राइग्रा कि ग्राई उतरिआ वागो
पीपल पीघा सी पाईग्रा कि भूटण दो जणीग्रा
छोटी नणदा देवर दराणी जठाणीग्राँ
लिग्राग्रो ढाल तरवार कि बीर ग्रसी बढ देणा

वीर न मारिग्रो आपणा कि भज जादी बाही तेरी
मारिओ घर की नार कि होर वथेरीआँ
नार न मारीग्रो ग्रापणी कि खिड जादी जोडी मेरी
जिस ते उगेसी लाल कि लाला दीग्राँ जोडीआ

नामा लुआई दे रतनिआँ दा

भला मीग्रा ग्रलबेलूग्रा ओ
नामा लुआई दे रतनिग्रा दा
ग्रो नामां लुग्राई दे रतनिग्रा दा

जे तू चली दा पारली नगरी
सानूँ वी लिग्राई दे मोनी दई घगरी

घगरी पाईके जाणा भलिआ
नामाँ लुआई दे रतनिम्रा दा
भला मीम्रा ग्रलवेलूआ आ
नामाँ लुआई दे रतनिआ दा

जे तू चली दा ऐनी ऐनी
सानू बी लिम्राई दे सुरमेदानी
सुरमा पाई के जाणा भलिम्रा
नाम लुम्राइ दे रतनिम्रा दा
भला मीम्रा ग्रलवेलूम्रा
नामाँ लुम्राई दे रतनिआ दा

जे तू चली दा पारल कलैंसर
सानू बी निआइ दे सोनी दिहो बेसर
वेसरा पाइ के जाणा भलिम्रा
नामा लुम्राई दे रतनिम्राँ दा
भला मीम्रा अलवेलूआ म्रो
नामा लुम्राइ दे रतनिआ दा

जे तू चलिम्रा पारले रवडे
सानू बी लिम्राइ दे सोने दहे कपडे
कपडिम्रा पाई के जाणा भलिम्रा
नामा लुआई दे रतनिआ दा
भला मीआ अलवेलूम्रा म्रो
नामाँ लुम्राई दे रतनिम्रा दा

जे तू चलिम्रा पारले ऐंडले
सानू वी लिम्राइ दे सोने दहे सैंडले
म्रो सडला पाई के जाणा भलिम्रा

नामाँ लुग्राई दे रतनिग्राँ दा
भला मीग्रा ग्रलवेलूग्रा ग्रो
नामा लुग्राई दे रतनिग्रा दा

घोडी ताँ भेजो साडे कात वे

जमो दिआ राजिग्रा वे नौकरा वे लोभीग्रा
तुध पिग्रारी नौकरी कि ग्रासा पिग्रारा कात वे
वाल त्ररेसा साजो छोडी चला गिग्रा
घोडी ता भेजो साडे कात वे

लोहडीग्रा दिग्रालीग्रा तेरा रसता नुहार दी
घरे नही ग्राउदे मेरे कात वे
साउण महीने दीग्रा झडिग्रा जे लगीग्राँ
मीहा ताँ वरसे मेरे नैण वे

सासू ता सावरे झिडकाँ जे रोजी
नणदा दे राजी गल म्हीणे पए
घरे ताँ भेजो काता ग्रो राजा
वदीग्राँ दी चली नही ताँ जान वे

दिनो दिन जोत सवाई ओ

घूए खडोतीए गारीए
गोरीए कित्त होइआ दलगीर ग्रा
याँ तेरी मस्स लडाकडी
गारीए याँ तेरे मापे ने दूर ग्रो

नाँ मरी सस्स लडाकडी वीवा
नाँ मेरे माप ने दूर ग्रो

आप वडडी वर छोटडा बीबा
मापिआँ ने लड लाई ओ

सोने कराँ तुगी पीलडी गारीए
मोतीए जडत जडाई ओ
छोड कते दी दोसती गोरीए
चली पै सिपाहिए दे नाल ओ

अग्ग लगे तेरे सोनडे बीबा
मोती नदीए हडाई ओ
अज्ज निकडा कल्ह् बडडा बीबा
दिनो दिन जोत सवाई ओ

जी वसती चीरे वालिआ

महिआ दे थल्ले थरने जादिआ
जी वसती चीरे वालिआ
महिला दे अदर आणा जी सपाहीआ

महिला दे अदर नही आउँदे
नो कलालीए नैणाँ मारीए
साडा औण नही साडे घोडे जादे

घोडियाँ तेरिआ बदलू भेजगी
तुसा महिलाँ दे अदर आउणा
जी वसती चीरे वालिआ

महिलाँ दे अदर मैं नही आउँदा
कलालीए नैणाँ मारीए नी
घरे ताँ साडे सवाइ नार नी

नारीग्रा तेरीग्रां जो पईग्रा अवरे दी बिजली
तेरे खाग्रो फनीग्रर नाग वो सपाहीआ
जी वसती चीरे वालिग्रा

अबर दी बिजली साडी भैण नी
फनीअर नाग साडा भाई नी
कलालीए नैणा मारीए

चीरे वालिआ सपाहीआ

सर्झा जे पइग्रा हरा जा होइआ मुसाफर मगदे डेरा
भला चीरे वालिग्रा सपाहीग्रा त मन मोह् लिग्रा मेरा

डेरा डफेरा ग्रसा नही देंद राजे दा मुलख वथेरा
भला चीरे वालिग्रा सपाहीग्रा त मन जाह् लिग्रा मेरा

राजे द डरे दीपक वलदा सपाहीग्रा द डर हरा
भला चीरे वाले सपाहीग्रा त मन मोह् लिग्रा मेरा

राजा दे डेरे वक्र वलौंदे सपाहीग्रां दे डेरे वटेरा
भला चीरे वालिआ सपाहीग्रा त मन माह् लिआ मेरा

राजे दे डेरे नौवत वजदी सपाहीग्रां दे डेरे दोतारा
भला चीर वालिग्रा सपाहीग्रा त मन मोह् लिग्रा मेरा

चलो पौणा वो कासी रामा

चली पौणा वा कामी रामा
वागां दीग्रां ठडीग्रां छामां
इको तां साके साली जा लगदी
दूए जा लगदी लाडी

चली पौणा वो कासी रामा
वागाँ दीग्रा ठडीग्राँ छामा
इक ता साके जो भावी लगदी
दूए जो लगदी लाडी

कागडे दा नौकरा

कागडे दे नौकरा जो छुटीग्रा जे होइग्रा
घरां वल सुरत दुडाई
घरे जे ग्राई माता जे पुछदा
किथे गई सस्सू दी जाई
भाई पराहुणा लैणा जे ग्राइआ
पेकिग्राँ दे दिती पुजाई

कागडे दे नौकरा जो छुटीग्रा जे होइग्रा
घोडा जे छजिग्रा काठी जो क्स्सी
सहुरिग्रा दे सुरत दुडाई
ग्रागणा 'च खडी कहिणा जे लगी
पिठे पर बैठ मेरा भाई
भाई ता हुदे ग्रम्मा दे जाए
मैं तेरे बाप दा जुग्राई

कागडे दे नौकरा जो छुटीग्रा जा होइग्रा
गुत्तों ते पकडी घोडे पर सटटी
रोदीग्रा दी कीती ना सुणाई
घोडा दुडाइग्रा चाबक मारी
घरां पर उतरिग्रा ग्राई
कागडे दे नौकरा छुटिग्रा जो होइग्रा
घरां वल सुरत दुडाई

फुटकर

काहे दे कारण

काहे दे कारण हस्सो ब गारीए
काह दे कारण तू रोई बा हा
तुसा मिल ता मैं हस्सी मेरे महाराजा
सिर बदीआ आइआं ता मैं रोई बा-हां

जे ता रोदीआ गारीए दुखे दी मारी
मापिआ दे मैं दिगा पुचाई बो हां
जे ता रोदीआ गारीए भुखे दी मारी
बढी करी करा टुकड़े चार वो-हा

कालीआ दे राजा धौले होए
कद सिलाणा गोरी बालक वो हा
हट्टीआ विकदे रानी महिंगे मुल्ल लदे
नहीं करमा की दिआ लैणे वो हा

लबडा नी लबडा बहुत ही बुरा

ओ मेले जाणे नी दिंदा
जो टिकलू लाणे नी दिंदा
आ बिंदलू लाण नी दिंदा
लबडा नी लबडा बहुत ही बुरा

ग्रक्खा तां मेरीग्रा अवोए दीग्रां पक्कीग्रां
कि कजला पाणे नी दिंदा
किम सुरा लाणे नी दिंदा
लवडा नी लवडा वहुत ही बुरा

उँगलीग्रां मेरीग्रा जे कमोए दीग्रां फलीग्रां
कि छल्ला पाणे नी दिंदा
कि वुदीग्रा पाणे नी दिंदा
लबडां नी लवडा बहुत ही बुरा

उचिआं ते रिडिआ बँगला पुआदी

उचिग्रा ता रिडिग्रां वँगला पुआदी लमीआं रखादी ग्रो कांती
लमीग्रां रखादी कांती लोभीग्रा लमीग्रा रखांदी ग्रो कांती
बँगले दा बूहा खुल्ला जो रखांदी ग्राई जाइआं मेरे साथी
ग्राई जाइग्रां मेरे साथी लोभीग्रा ग्राई जाइग्रा मेरे साथी

उचिआं तां रिडिग्रा खूग्रा ओ
दुआंदी लमीग्रां सटादी ग्रो लज्जनी
लमीग्रा सटादी ओ लज्ज नी लोभीग्रा लमीआ सटादी लज्ज नी
आउँदे ता जादे डोली डोली भरदे मूरख जांदे घर आए
मूरख जांदे घर ग्राए लोभीग्रा मूरख जांदे घर भाए

इको तां थालीग्रां दुद्ध भत्त खाइआ ओ दुद्ध भत्त खाइग्रा
हुणे किजो पुच्छदा जाती ओ लोभीग्रा हुण किजो पुच्छदा जाती
पजा तां पीरां सुक्खणा जो सुखीग्रां नणा देवी जो छेली
नणा देवो जा छेली लोभीआ नणा देवी जो छेली

इतां तां बरेसा इक मत्त जमदा
ग्रो दो मत्त जमदे हीर फिरे अलवेली

हीर फिरे अलबेली लाभीआ हीर फिरे अलबेली
घर दोआ नारां जो छड्डी छड्डी जादा
गुजरीआ कने मन लाइआ
गुजरीआ कने मन लाइआ लोभीआ गुजरीआं कने मन लाइआ

घर दोआ महिलां जो छड्ड छड्ड जादा
टप्परीआं 'च मन लाइआ
टप्परीआ 'च मन लाइआ लाभीआ टप्परीआ 'च मन लाइआ
बँगले दा बूहा मैं खुल्हा जो रखादी आई जाइआ मेरे साथी
आई जाइआ मेरे साथी लोभीआ आई जाइआ मेरे साथी

बाथरी दा बणजारा

बाथरी दा बणजारा
सिर पर बँगड़ी दा भारा
छोकरी जो दसदा बुखारा
आगे आगे सावण दु दासा
पिछे बँगड़ी दा साका
गहिरे गहिरे सड़क बणाइआ
गाओआ मेरे सैला जा जाणा
गाओ आइआ गाओ जगलाती
सदिआ दिने ते आउंदा राती
राजी रहीओ होली दिओ लोको
गाओ दा नित्ता सुख सात
डरा मत बाथरी दे लोको
गांओ मेरा बांधका जो आइआ
बाथरी दा बणजारा

झुल वे बरोटूआ

झुल वे वरोटूग्रा
तेरे मैंनू झुलणे दा चाग्रो
सज्जणा दा लाइग्रा
पाणी विना कमलाइग्रा
झुल वे वरोटूग्रा
ग्रापे लाइग्रां आपे बुझाइआं
ग्राप हूग्रा वेईमान

झुल वे बरोटूआ
कोरे कोरे कागज
लिख लिख भेजदी
वाचणे वाला प्रदेस
झुल वे वरोटूग्रा
लई जा मेरा सदेस
झुल वे वरोटूग्रा

पल भर बही लैणा वो

पल भर वही लणा वो वही लेणा ग्रो चदा
इस वे बरोटे दीग्रा छावा पल भर वही लणा वो

नूरपुर हमीरपुर ठडीग्रा छावा
विच वो बलोचा दा ठाणा पल भर वही लैणा

चिट्टट चिट्टटे चौल दुध ते मलाई
इही ग्रसाँ लोका दा खाणा पल भर वही लणा

भरीश्रां वदूक्ड़् मोठे भर धरीश्रां श्रो
मारी लैणी तीतरां दी जाडी पल भर रही लणा

दुख सुख कही लैणा

वही लणा श्रो मिश्रा
वही लणा पल भर वही लणा
पल भर वही लणा
दुख सुख कही लणा
पल भर यही के दा गल्लां करी लणीश्रां
कदी हस्सी लैणा कदी श्रक्खां भरी लणीश्रां

मन दा दुख सुख कही लणा
पल भर रही लैणा
छल्लीआं दी राटी तां छाई दा कटोरा
सरहोश्रा दा भुजू श्रालूश्रां दा निश्रोडा
चिटिश्रां चौलां दा भत्त खाई लणा
पल भर वही लणा

नाले नाले जादा छोरू बांसरी बजादा

जानी दिले जो तरसादा श्रो भलिश्रा श्रलवेलूश्रा
टिक टिक दीश्रा तेरीश्रा जघा जली गईश्रा
जघलू दी गाल मत देंदी भलीए श्रलवेलीए
छोटी छोटी जघा बनबाई श्राइआ गगा

गगा दी निशानी त्रिआ श्रादी भलिश्रा श्रलवेलूश्रा
घडी घडी छणकादा भलिआ श्रलवेलूश्रा
बीश्रा पर वहिंदा छोरू टिक टिक लादा
दबू रिड रिड लादा लगी है घराटा दी बोडी

मेरे कदूआ हो

मेरे कदूआ हो तेरी लवी लत्री बेल
मेरे कदूआ हो तेरी बेल गई पछाडे

मेरे कदूआ हो तेरे पिवले पित्रले फूल
मेरे कदूआ हो तू हो गिआ तिआर

मेरे कदूआ हो तनू ल चलू बाजार
मेरे कदूआ हो तेरे टक्के हो गए चार

ओ राज अंग्रेज दा

ओ कागडे दिआ फौजीआ ओ
छुटटीआँ जे होइआँ घर आ सूरत दइआ
ओ राज अग्रेज़ा दा

घरे जे आउँदा ते माता कोलो पुछदा
पिता कोले पुछदा नार मेरी नजर न आई
ओ राज अग्रेज़ा दा

माता जी वी कहिंदे पिताजी वी कहिंदे
नार जे तेरी पेकिआँ जो गई
ओ राज अग्रेजा दा

सहुरिआँ दे जाके सस्स कोलो पुछदा
सहुरे कोलो पुछिआ
ओ नार मेरी छलनी कि नही
ओ राज अग्रेजा दा

इक दिन मरना जरूर

डुघली नदी रग खाधला पाणी
हेरि हरि कायाँ डरी जादा है

तू किजो डरी मेरी भोलिआ कायाँ
इक दिन मरना जरूर

खगी खड़ाकी हाखरी माँ पाणी
आई बुढापे दी निशानी हो

जोबन थीए ताँ जतन थीए
लागू थीए सभ कोई हो

जोबन सुक्को जतन मुक्के
बात न पुछदा कोई हो

हरी भरोसे तेरे वो जाबनूआ
ना कीता धरमा दा भाई हो

रकत थीए ता बक्त थीए
लागू थीए सभ कोई हो

रक्त सुक्के ताँ बक्त रहे
बात ना पुछदा काई हा

थोड़े वो दिना दिआ जोबनूआँ
फिर वो आइआ चार दिहाड़े हो

कालडे ते वेस धौलडे हाए
केमे मेरे रग वदलाइग्रा हा

वे ठडे पाणीए जो जाणा

कोरे घडे पर दाणा
वे ठढे पाणीए जो जाणा
वे ठढे पाणीए जो जाणा

कारे घडे पर एवा
वे ठढे पाणीए दा बेवा
वे ठडे पाणीए जो जाणा

कारे घडे पर चिमटा
वे ठढे पाणीए दी चिंता
वे ठढे पाणीए जो जाणा

कार घडे पर तैंथा
वे ठढे पाणीए दी ससा
वे ठढे पाणीए जो जाणा

कोरे घडे पर कडछी
वे ठढे पाणीए जो तरसी
वे ठढे पाणीए जो जाणा

कोरे घडे पर कथना
वे ठढे पाणीए दा मिलना
बे ठढे पाणीए जो जाणा

डोडणी दी छाई

मजी डाहणी ग्रा
डोडणी दी छाइ ग्रो डलकू
मठी मारी ओ
डोडणी दी छाई ग्रो डलकू

कगणा दी जोडी ग्रो
तिजो लिग्राणी ग्रो छोरीए
घडा भरने ही ग्रो
वौडीग्रा पर जाई छारीए

देवर-भाभी

उठ मेरे देरनूआ

उठ मेरे देरनूआ
चिटीए चिण चिण लाई
कि उठ मेरे देरनूआ

भावी मेरीए नी
भिआगा उठे तेरा काता
मिजो मत बोलदी

उठ मेरे देरनूआ
मज्झीआ चोणे वेला होई
उठ मेरे देरनूआ

भाबी मेरीए नी
मज्नीआ चोवे तेरा काता
मिजो मत बोलदी

उठ मेरे देरनूआ
पाणीए भरने जो जाणा
उठ मेरे देरनूआ

भावी मेरीए नी
पाणी भरे तेरा काता
मिजो मन भानदी

उठ मेरे देरनूआ
खाई नी नुहारी तू छेना
उठ मेरे देरनूआ

भावी मरीए नी
देहीए ने देई दे नुहारी
कि भुक्ख मिजो लग्गी ए वडी

भावी कुकू कीआ बोलदा

वाड पर मेजर तेरा
भावी कुक कीआ बालदा
कीग्रा बोलदा या कुकू कीग्रा बोलदा

भरिग्रा घडोलू गारी बीणी पर धरिग्रा
बाल न लादा पापी कोई
भाबी कुकू कीग्रा बोलदा

भरीग्रां बन्दूकां गोरी कंधे पर धरीग्रां
मारी लणी तित्तरां दी जोडी
भाबी कुकू कीआं बोलदा

यट्टा र कुकू मेरे मन बसिग्रा
छाट कने प्रीत कुनी लनाणी
भाबी कुकू कीआं वालदा

दिओर भाबी

तेरे लक्क 'च सज्जदा घग्गरा भाबी
असा दिउर भरजाइस्रा दा क्षगडा भाबी
फुल्ल लई लै कि फुल्ले दा मुल्ल मैं देवागा
तेरे हत्थ 'च गूठी दिओरा
तू करदा गल्ला भूठी दिओरा
फुल्ल नही लैणा कि फुल्ले दा मुल्ल नहीग्रो पुग्गणा

छोटा जिहा दिउरनू

छोटा जिहा दिउरनू भाबी तो रुस्सिग्रा
रुसी के नौकरीग्रा चलिग्रा गइआ
कोरे कोरे कागजा मै लिखी लिखी भेजदी
मरवते दीग्रा बोतला मेरे वल भेजदा
थोडा थोडा पीणा भाबो पहाडा दीआ ठडा
इक ता तू ए भाबो नार नेगानी
दूजे, चढी भाबो नई जुग्रानी

दिओरा बो लोभीआ

कूजा जाई रहीग्रा नादौन
ग्रगे ठडे बाक नैण
इक घुट लाई लै बो दिओरा
दिग्रोरा वा मेरिग्रा लोभीग्रा

कूजा जाई रहीआ कनेसर
भाबो तोले दी मँगदी बेसर
तुरत वडाई दे बो दिओरा
दिग्रोरा वो मेरिग्रा लोभीआ

कूजा जाइ रहिम्रा हुण पतण
मेरा दिन नही लग्गदा क्तण
चरखा भन्न सिटीम्रा दिम्रारा
दिम्रोरा वो मेरिम्रा नोभीम्रा

कूजा जाइ रहीम्रा सुकेत
इक कुच्छड़ दूआ पेट
तीआ खेले बालू रेत
दिआरा वा नाभीम्रा

कूजा जाई रहीआ हुण मडीम्रा
चिटट चौल न रिन्दे हुंडीम्रां
दुध भत खाई ल वो दिम्रारा
दिम्रोरा वो लोभीआ

कूजा जाई रहीम्रां जिउट
चिटटे दद गुलाबी हाठ
थीडीम्रा नाई ला वो दिम्रोरा
दिआरा वो लोभीम्रा

चिड़िआं ने चुर पुर लाई उठ देरनूआं

उठ देरनूम्रां चिड़िआं न चुर पुर लाई उठ दरनूम्रां
नारा भावरीए यग उठ कत तेरा पिठे छाटा दरनूम्रा

उठ दरनूआं मज्झीआं तां दुरणा जाणा उठ दरनूम्रां
नारा भावर भ्रग चन्न कत तरा पिछे मैं दरनूम्रां

उठ देरनूम्रां दहीआं वरानण जाणा उठ देरनूआं
भारा भावर भ्रग चन्न कत तरा पिछे छाटा देरनूआं

मेरिआ बाँकिआ दिउरा

कूजा जाई पईग्रा वरोट
चिट्टे दद गुलाबी होठ
गल्लाँ करदे पजाबी लोक
इक गल्ल सुणी जाइग्राँ दिउरा
कि मेरिआ बाँकिआ दिउरा ओ

बारी लानी ग्रा मैं तुलसी
चिट्ठी कागद लिखदा मुणशी
तुरत बुलाई लणा दिउरा
कि मेरिग्रा लोभीआ दिउरा
कि मेरिआ बाकिग्रा दिउरा ग्रो

कूजा जाए पईग्रा गगरेट
मजी डाहुणी पिपले हठ
पल भर विही लणा दिउरा
कि मेरिआ लोभीआ दिउरा
कि मेरिग्रा बाकिग्रा दिउरा ओ

कूजा जाए पईआ पप्पराले
मितरे बाझ मेरा दिल डोले
खड्डा पार दो तितरू वाले
इक गल्ल करी जाइग्रा दिउरा
कि मेरिग्रा बाँकिग्रा दिउरा ग्रो

वागे लानीग्राँ शहतूत
मैं गुजरेटी तू रजपूत
जोडी वणी गई दिउरा

कि मेरिश्रा लोभीश्रा दिउरा
कि मेरिश्रा वांकिश्रा दिउरा श्रो

तेरी सौं

मेर श्रुरत जा टोली मत लादा हा
मैं तां पालिश्रा क्टारा तेरी सौं

मेरे दद सोने दी पतरी हा
मेरा माणू मुने दा खत्री हो
बावू रिडकिश्रा चवे द घाट हो
असां होरिश्रा तमाशा तेरी सौं

वुटा चुकी करा वुजकए पाया हो
वँने पार लँघाइजा तेरी सौ
हत्थ छतरी मुढे पर झाला हा
चद चलिश्रा तरीका तरी सौ

भत्त खाई ले ओ दिउरा

भत्त खाइ ले ओ दिउरा भत्त खाई ल
रस्सी तस्सी वठा ना तू गल्ला करदा
वैठी के हुण ठडीश्रा श्राहा काहनू भरदा
मने जो चिंता मत लाई ले
भाबीआं दे हत्थे दा भत्त खाई ले

चिटिटश्रा चौला दा भत्त मैं वणाइश्रा
दाली विचघिउए दा तुडका लगाइश्रा
खटटा खटटा माक्डी दा माह णी वणाइश्रा
देर ना ला हत्था धोई भत्त खाई ले
भाबीश्रा दे हत्थे दा भत्त खाई ले

बारहीं बरसी खट्ट के आइआ नी भाबीए

वारही वरसी खट्ट के ग्राइग्रा नी
भावीए डिग्रोढी मँगदा मैं डेरा

डिग्रोढी डेरा किवे दिआ जी दिउरा
भाई घर नही तेरा

टुट्टण मँजालू वाण पुराणा जी दिउरा
जाई सोइग्रा पिछाडी

लहौरी जावाँगा पैसे क्मावागा
नी भावीए तिजो हार वणावागा

पेइए जावागी भैंण लई ग्रावागी
तेरा विग्राह वे करावांगी

पहिन पतासे सरउत घोलिग्रा
सालूए दे लड पुणिग्रा

सालू मेरा कर्ने हत्थ दिखिग्रा
लादा सालू राजे दितू दा

मेरीए वेलडीए

वेलीं नी रस भरीए नी वेली
डालिग्रा छोड भईग्रां रेली
नी मेरीए वेलडीए

भैणां ता भैणा मत्तर कीता
चल नी भैणे पइआ जाईए
उह मरीए बेलडीए

किग्रा देणा जिस भावो दे हथी
किआ देणा भाइए पगा जा
उह मेरीए बलडीए

कुगूए कटारी भाबा दे हथी
हरी हरी दुरभ भाईए पग्गा जे
नी मेरीए बलडीए

किग्रा देणा जिना धीआ धीग्राणी
किग्रा देणा उह जवाईए ज
उह मेरी बेलडीए

बाइ दा चूडा धीग्रा धीआई
पगा दा घोडा मरे जवाईए जा
उह मेरी बेलडीए

धर्म, त्योहार, पूजा और भक्ति

पाडूआं दा गीत

पजा जणा श्रा पडू प राजे जिंदा दरागा जा जाणा
पीठी पीछे हेरो राजा धरम मात कुती सो छुटी

रखा जो चदन त्रडो दुहाई माता दाग दिती
काना कानू कीरे नान माता सुरु नाजो दिती
पीठी पिछे तेरे राजा धरम पचणी राणी छुटी

छुटी जिना आ आपणी पापे जिंदा दरागा जा जाणा
पीठी पिछे हेरो राजा भीश्रा बीर छुटी

हरी चन्द जी साडे आए

छोटीग्रा बूदीआ मीह जो बरसे
बडरी बूदी फुहार
हरी चद जी साडे आए
प्रथी पाल जी म्हारे श्राए

ठडा पाणी मैं गरम कराउँदा
श्राज प्रभू जी तुसी नहाओ
वासमती छडदी ताँ भत्त रिन्हाँदी
हरीआ माहा दी दाल बणाँदी

चुण चुण कलीआ मे आसण वणादी
आओ प्रभू जी तुसी बैठ जाओ
हरी चद जी साडे आए
प्रथी पाल जी महारे आए

शिव पारवती

शिवा मेरे महा देवा महा देवो कुण कुण वाजा तेरे
राणी गारजे गोरजे ससार बाजा तेरा

राणी गरजे गोरजे राहे खडी नाड वजाए
राणी गारजे गोरजे बाल पुणे तारा लाए विकडा जाए

शिवा मर महा देवा जी नाचे मुकुट खिलाए
राणी गारो गारी गगा राणी मुकुट छुपाए

तेरी रामा कने पेश नी जाणी

सीता जो तू पुजाई कँनिआ मेरे रावर मे
कल रानी सपना हाइआ मेरिआ दस रावर म
मेरी नक्के दी बसर ठगी जाए कँतिआ मेरे रावर म
तुम बुजराम मौका होरम रानी मदोदरीए
मघनाथ जैम पुत्र हमारे राणी मदादरीए
कुम्भ करण जस भाई ओ राणी मदादरीए
तरी रामा कने पश नी जाणी सुणा दस रावर म

जमना किनारे इक नटटडा नी मा

जमना किनार इक नटटडा नी माँ
पाणी भरन ना देंदा
छाट छाट डाम्ब मर मगर लगान्दा
नी माए लिहाज रखदा नी कसदा नी

कनो कलोट अक्खी मिरगा वाली
नी माए लिहाज करदा नी कक्ख नो
जमना किनारे इक नट्टडा नी मा
पाणी भरन ना देदा

सुखरात कुडीओ चिडीओ

सुखरात कुडीम्रो चिडीओ
सुखरात राजे दे विहडे
सुखरात कुडीम्रो चिडीम्रो
सुखरात नणा पाणीहारा
सुखरात कुडीआ चिडीओ
सुखरात लक्षमी नराइण

ठढा पाणी किहा करो पीणा हो
तेरे नणा हरी हेरी जीणा हा
सुखरात कुडीम्रो चिडीम्रो
सुखरात राजे दे बेहड
सुखरात कुडीम्रा चिडीम्रो
सुखरात नणा पाणीहारा हो

होलो

ओ रँगीला छल खेलो होरी
ओ महाराजा रँगीला छल खेलो होरी

आपणे रे आपणे रे अले मदर मे निक्ली
इक साउली दूजी गोरी
ग्राज रग मे बज मे सभ रग मे
ग्रो रँगीला छल खेलो होरी

अजी मेरी मोदा माई रुक्मनी तेरो नाडलो
मगी थी दातण मानू ना मिली
अजी मेरी मोदा माई कइ ता पेइए पुजा
कई ता तू नदीग्रा रुढा
अजी मेरी सोदा माइ

मगी थी दातण सानू ना मिली
कृष्ण जी पिग्रारे रुकमन घरे दा शिगार
पेइए ता मै न भेजा
उठ मेरी रुकमन राणी उठी के करी ले शिंगार
गडडा ता आइआ तेरे बाप दा मेरे राम

अजी मेरी सोदा माइए रूठिग्रां दा किआ मनाणा
अजी मेरी सादा माइए रूठिआ दा किग्रा शिंगार
गड्डा ता श्राइआ साडे बावे दा
गड्ड आइग्रा सानू वहिलीग्रां
सुण गोविंद जी मेरे ना मेरे बीरे दा विआह

ना मरे वाप घर शादीग्रा मेरे राम
अजी मेरे गोविंद पिग्रारे मनइ उतारी ठडे बाग
मिलणे नू ग्राइआ सठ सहेलीग्रां मेरे राम
अजी मेरो सोदा माइग्रा वाहर रिमझिम मेघला
अदर मुनीग्रर बुनाण जी

अजी मेरी मोदां रुक्मनी नना सुत्ता महिल जी
अजी मरी मोदा माइआ कीता वहिनीआ भेज
रुक्मनी नेणी ए बुनाइ

सोने दा कहीआ

मान दा कहीग्रा तेनू दिल दी सुणावाँ मैं
प्रेम दा पुग्राड़ा दिन रात गम खावा मैं
अज्ज पता लग्गा शिग्रामा इतना कठोर वे
इतना कठोर शिग्रामा मक्खणे दा चोर वे
तेरी मूरती मोहण मैं बार बार देखदी
नैनै बन बठ वे पई आ कागाँ उडार दी

गुगा भरतरी

चढदे रण भण गुगा राणा मल जम्मिजाँ
सिर दे तिहाड़े भण गुगड़ी
पजाँ घडीग्राँ पज पाडव जम्मे
चौथ घडीग्राँ चौंठ जागनीआ
पजू पुजू नरदमरी चम्मार

रछरा मछरा कोकरा नन भरा
नीना भोग्ताजी राही लाद्दआ जट
श्री घट परान
मी-जेई नगारची वीणी बटवाल
वनू पटपान मुग्गणू बीर

पापी जटी वोरघी बगहमणी
आछना काछना पगीघी पान
न्थ्री धीजी मान सिप बजोरा
गुरु गोरखनाथ
मरवन-मुरजा

मुरली ते रौणक लाई जो

उच्चे टापू महाराज तकाए
जिनी मुरली ते रौणक लाई जो
वण केरे पछी डिगी पैंदे
माणस कौण वचारे जी

ऐसी सुदर ए मुरली वजांदा
हेरणे एडा की छैल जी
चलो चलो रडी भैसाडिग्रो
दुध नही वेचणे जाणा जी

मुरली वजाणे वाला इह वालक
ग्रसी जाई जाई तकाणा जी
काणी देही गुजरी वोलदी मैणो
मैं हाखी जो सुरमा लाणा जी
होरना गुजरीए विंद विंद लाइग्रा
काणी दे मुट्ठ भगी लाइग्रा जी

घर शाम दे आए

मिलण सुदामा हारनी घर शाम दे ग्राए
पर नगे तन लीर ना होई
नाल गरीवी दे हालत होई
मिलण गए कृष्ण मुरारी जी
घर शाम दे ग्राए

मिलण सुदामा हार नी घर शाम दे आए
रल मिल सहीग्रां खूव नुहाए
उच्चे ग्रासन पर बिठलाए

तरगी जी के नाथ जी
उह्नाँ चरन दबाए

मिलण मुदामा हारनी घर शाम दे आए
सिआम ने पुछिआ दसो शतावी
खाण नू की भेजिआ मेरी भावी
मुखे सुदामा बोलदे
कढदा चौल लुकाए

मिलण सुदाम हारनी घर शाम दे आए
उह्ना चौला दा सिआमे भोग लुआइआ
गिआन सुदामा नू परख के आइआ
दसदे महिल रँगीले लगी नजर नी आए
मिलणा सुदामा घर शाम दे आए

मेरे पीआ ने रँगाई सो रँग दे लाला

मेरे दोनों वसती रँग दे लाला
मेरे पीआ ने रँगाई सा रँग दे लाला
भरी पचकारी भारी मोरे मनमुख तारी
अगीआ ते भिज्ज जादी सारी ए लाला
छू लाला मेरे पीआ ने रँगाई

मो लाला मेरे पीआ ने रँगाई सा रँग दे लाला
हसनी चुनीरीआ रे मेरे पीआ की वदरीआ रे
मेरे दोनों वसती रँग दे लाला
मेरे पीआ ने रँगाई मो ए लाला
मेरे पीआ ने रँगाई सो रँग दे लाला

सिद्धा तेरीआ माडलीआ

सिद्धा तेरीआ माण्लीआँ
कि यातरू दूरे ते आए
सिद्धा तेरीआँ माडलीआ
कि संघा दी पई गुजार
सिद्धा तेरीआ माडलीआ
धूएँ दी लगी धुणखार

ति न रुत्ता

चार महीने हुमिआो वे आए
पखूआ झोलो रे साजनवा
चार महीने बरसात वे आए
ओ रिमझिम भीगे रे साजनवा
चार महीने सरदी के आए
ओ थर-थर कांपे रे साजनवा

होलीआँ दे मेले

होलीआ दे मेले जो हवा भुलदी
फुली सरसो ओह मोइआ फुली सरसो

होलीआ दे मेले जो फुली सरसो
उह मोए होलीआँ दे मेले जाणा परसो

हत्थ गहिणे उह मोइआ हत्थ गहिणे
होलीआ दे मेले जा दो ही जणे

पईआ बरखा उह मोइआ पईआँ बरखा
होलीआ दे मेले जो पईआ बरखा

हवा भुलदी उह मोइआ हवा झुलदी
होलीआँ दे मेले हवा झुलदी

जन्म-गीत

बाडीआ हुणे फुल पक्के

धन धन माईए देवकीए
तू पुतर कान्हू जाइआ
तेरीआ चोरीआ कान्ह मेरीआ
कान्हा जी वूबड लाइआ
तू रोइआ ना कान्हा मेरिआ

हुण मैं पाणीआ जाणा
कान्हा जी रोइआ ना
तू खेल कान्हा मेरिआ
वाडीआ घोगर रहिंदे
कान्हा जी रोइआ ना

वाडीआ हुण फल्ल पक्के
कान्हा जी मैं ने आवागी
गरीआ छवारे कन्ने बदामाँ दी
भोजन कान्हा जी मैं दिंगी
कान्हा जी रोइआ ना

गीगा पुछींदा दाई आपणी नूं

गीगा पुछीदा दाई आपणी नू
काई दाइए मेरा बाबा ना

हत्थाँ बलाई फिरदा सिपाही
ओही गीगिआ तेरा बाबा ना

गीगा पुछदा दाई आपणी नू
कोई दाइए मेरा दादा ना
पैरी जो जोडा चढने जो घोडा
ओही गीगिआ तेरा दादा ना

गीगा पुछीदा दाई आपणी नू
कोई दाइए मेरी दादी ना
हत्था मधानी बैठी राणी
ओ गीगिआ तेरी दादी ना

गीगा पुछीदा दाई आपणी नू
कोई दाइए मेरा नानो ना
पैरा ना जुत्ती चडने जो कुत्ती
ओ गीगा तेरा नानो ना

गीगा पुछीदा दाई आपणी नू
कोई दाइए मेरी नानी ना
सिराँ पर खारी बुढडी विचारी
ओ गीगिआ तेरी नानी ना

हे बालक लोरी ले

जित दिन गीगे जन्म लिआ
मीह ओ पाणी घणी धुप्प
तेरे पिओके ओ बधाइआ
हे बालक लोरी ले

गर नानाड होई दुक्ख
तेरे बाबे द गिर दुक्ख
नर नाने दे गिर दुक्ख
ह बालक लागी ने

काले महीने दीआं हेरीआं रातां

काले महीने दीआं हरी रातां
जनमिआ त्रिलोक सुरागी
मेरे शाम जी

जां जम्मिआ जां दीपक बलिआ
चो चक्के हा रहीआ लाई
मेरे शाम जी

सहिजा धोता पाट पलेटिआ
कुच्छड मिलिआ चाइआ
मेरे शाम जी

घोल पतासा मैं गुलमत देसा
सोने दी कटोरी
मेरे शाम जी

रुड़ी तुरफडी तू इस घर आई

तू मैं विआई राणीए तू मैं विआई
रुड़ी तुरफडी तू इस घर आई

इनां विआइआ राणीआं दीआ पेठा
बालक जम्मिआ सत्त माईआ दा जेठा

इना विग्राइग्रा राणीआँ दीग्राँ चौल
वाले दीग्रा मामिग्रा लइ गए रौल

इसा विग्राइआँ राणीग्रा दा जो-दिग्राँ दुध
वालक जम्मिग्रा घर होइग्रा सुध

इसा विग्राइआ राणीआँ जो दिग्रा टिका
वालक जम्मिआ सताँ भाइजी दा लडिक्का

मँडला किसे घर बाजिआ

ग्रजी सिंवल दा फुल गहिरा गनेर गहिरा गनेर
छडदे देवी न देवते
मँडला किसे घर बाजिग्रा

ग्रजी राजे दी नगरी बसे
सारा लोक बसे सारा लोक
मँडला किसे घर बाजिआ

अजी बाडले भाइए घर
जरमिग्रा पूत जरमिआ पूत
मँडला उसे घर बाजिग्रा

ग्रजी रीसी रीसी कत्ताँ निका सूत
कत्ताँ निका सूत कत्ता निका सूत
रीसी पूत न जम्मदे

सुद्ध सरीकाँ नू दिओ जी

अँगण बैठडा भाइग्रा वाला काग
लग्गी भरीआ उडारी जी

जाइ वालीग्रां मरीआं अम्मडीआ
धीग्रां होलर जाइआ जी

अम्मा भेजड मानूं घोस घड
सूढ सरीकां नू दआ जी
धिग्रा धाई लिग्रा धीआ लाडलीए
सूढ सरीकां नु दीआ जी

सम्सू भेज सान विगड चौल
उपर सुढी दी गट्ठी जी
चौल खाइ लाआ वहू लाडडीए
सुढ कसी मत्थे लाइआ जी

दिनोआं लोरी

दिनीग्रा लारी मुनूग्रा सोई जाणा ग्रा
आगणे ता साडे निंवुए दा वूटा
उथू ता रखी देग्रा जूता ता सोठा
हौले हौले पैरी तू ग्राई जाया ग्रो

ग्रागणे ता सूतिआ मुनूए दा वापू
उथू ते वची क्ने ग्राई जायां ग्रा
दिनी आ मैं लारी सोई जाया ग्रो
हौले हौले पैरी तू ग्राई जाया ग्रो

आज मोरे बजीआं बधाईआं

वजीग्रा वधाईग्रा गुरू के नगार
ऐसी नसीव वाली ग्राई
की ग्राज मारे वजीग्रा वधाईग्रा

काइसदी मैं गुलचट दीमाँ
काइसदी ए कटोरी
की आज मोरे वजीआ वधाईआ

भन्न वे पतासा मैं गुलचट दीमा
सोने वाली ए कटोरी
की आज मारे वजीआ वधाईआ

काइसदा मैं झगू सिआदीआ
काइसदा सिआमा टोपू
की आज मोरे वजीआ वधाईआ

मखमल दा मैं झगू सिआदीआ
रेशमी दीमा टोपू
कि आज मोरे वजीआ वधाईआ

ढोलरू

बजिआ ढोलरु

पहिला ता नाम लणा राम दा
जि ह सारी दुनीआ वसाई ए
दूजा त नाम लणा भाई बाप दा
जिन्न वसिआ ससार ए
चढिआ ता चेतरा त्रिसाख
मैं शराधिआ धरम जी हाए
वज्जिआ ढालरु
आइआ सरीआ चिने
वज्जिआ ढोलरु असा नही आउणा ए

इह दिन वरीआ दे औगे
गौरजा राणी ता चलीए पाणीए
हत्थ ता लिआ घडालू गौरजा
पटरी पर बैठिआ राजा रामचदर
सीता हरी बडरी बहार
तुलसीआ दी डाली गौरजा ना लणा
तुलसी वाह्मण पिआरी ए
मरुए दे फुन्ने जी ना लणा
मरूआ जाती दा खदरेटा ए

सभ जा हरी जी रामा फिर हरी आ
मानश फिरिआ नही आउँदा

हिओदडा गिग्रा जी घर ग्रापणे
ग्राई चला सोए दी वहार
ग्रारन फुन्नी जी गौरजा ना लैणा
आरन जाती जी आरन जी दा लणा
मेखूले मूए दा तू ना लिग्राओ
इह घर फुन फुले राधा
पहिला ता नाँ लैणा राम दा

राजा भरथरी

काए दी बणो काइग्रा कोठडी
काए दा वणिग्रा जजाल
समझी चलो राजा भरथरी

झूठी वणी काइग्रा कोठडी
झूठा वणाइग्रा ससार
समझी चला राजा भरथरी
बारा वरसा दा राजा जो होइआ
मत कीती विग्राह
पहिली विआही राणी पिंगली
दूजी कुलवती नार
समझो चलो राजा भरथरी

राणी जी कहिंदी सुणा राजा
मेरी इक्को दिही वात
कदी ना राजा उह रण चढिग्रा
कदी ना खेलिआ शिकार
डाई लगी राजे पतर
हाणा महिनाँ ते बाहर
पज लिग्राओ मेरे कपडे

छटा लिआमा हथिआर
सतमी ला द्दपा मर जी लीला
जा हाणा महिलां ता पार
ममझो चला राजा भरथरी

जांदा जांदा राजा जाई रिहा
बांको बाहर फिरदी फिरदी जा आइ
सुण राजा मरी इहा जही बात
हीरे हिरन मत मारदा
जिहदो सौ सठ नार
मारी लिआ पज सत मिरगाणीआं
तरा हुणे शिकार

पहिलां तीर राज मारिआ
हिरने लीआ खुजां
दूजा तीर राज मारिआ
हिरने लीआ बचा
तीजा तीर मारिआ
हिरने गिआ कलजे पार
फिरदी फिरदी हिरनी आई
सुण राजा मेरी इहो जही बात
जैसी रंडी हिरनी फिरे
वैसी फिरे तेरी नार

तडप तडफेंदा हिरन कही गिआ
सुण राजा मरी इहो जही बात
सिंगा दिआ किसे नादीए
जो सजरा नवाइआ
नैण वडीआं किसे राणीए

जिहड़ी सोला करेगी शगार
मासो दिग्रा क्सि होडीजा जो
जिहडा छिबी छिबी खागा
खलडे दिग्रा किमी पडत जो
जिहडा हेठ बिछागा
समझी चलो राजा भरथरी
वारां चली चवा मालती
महिला हरी कुल नार
समझी चलो राजा भरथरी
राणी क्हिंदी सुण गोली मेरी
इहो जिही वात
मथे दी बिंदी गिरी पई
मुरखी गई भुझा भार
नके दी वेमरी फुटी गई
माती पए भुजा भार
पलगा दी पट्टी टुटी गई
राणी गई भुजा भार

गोली क्हिंदी सुण राणी
मेरी इहो जिही वात
नेकां हुदे राणी सुपने
नेका हुदे जजाल
कन घर ग्राउणा राजें भरथरी
काइदी वणी काइआ कोठडी

वारें

गुग्गे दी वार

ए दाने दी ए बेला गुगूआ
पुन दी ए बला
मधिग्रा दो वला आई
बुनी तो पूज राणी मदरों तो पूज
ठाकरा मन लीला लाई
भुखिआ जो भाजन नीलावती
नगिआ जा उडण रजाई
होई ता धाई राणो केसों जा पलट
ठाकरा मन लीता लाई
आरसी दीग्रों मनी ठीकरीग्रा करी रखों
सीसे जा दिओं ठुकराई
छम छम देई ग्रम्मा वाछला रावे
हभूग्रा गाद भराई
कालिग्रा दे ता हुण धौल हाए
रग दिता वदलाई
कद् होणी पुतरे दी वधाई
हट्टे नही मिलदे वजारे नही मिलद
हुण लणे फले 'च नकलाई
दछण किनारे गोरख नाथा दे डेर
सेवा तू करिग्रा उह जाई
दछण किनारे गारख नाथा द डेर

सेवा राणी ररि आ तू जाई
दछण किनारे राणी बामो वामी पूजे
दुधे दिदो ए नुआई
वारा साना दे गोरख नाथा नू कम्म जिहड़े हुदे
राम राम करदे ने जाई
मैं लच्ठिआ माइ तू कुझ मगिआ
दिा मैं तिजो उह जाइ
धन दौलत वावा सभ कुझ है जी
पुत्तरे ताजी घर नही उह जाड
अमृत फल गुरु गोरख नाथा दित्ता
सेवा राणी कीती है जाई
खांदी है अमृत फल राणी
पदावार हुदी उह आई
पजवा महीना छिटटा महीना हुण
अठवें वारी चढी आइ
मजला मजला राणी चलदी
मजला हुण रसता कीता जाई
दिले विच राणी साच करदी ए
जलणा ए पिओकिआ दे जाई
रसते विच गुगा मटलीक अडी करदा
मैं नानकिआं दे नही जाणा
नाविआं दे घर जे मैं जागा
गरभे च मडलीक माना फ्ती
गडन जा माता दिती पाई
मजनां दे रसते जाई वरसां द रसते
हुण दसां रोजां विच महिलां आई
अगे महिलां च रहिदे मडलीक पूजिआ
पैदावार हुण होई आई
इह वेले माई शुभ जिहडे हुदे
मगन नारी गादिआ आई

ग्रन उह राणिग्रा ध'न मडलीगा
ध न ग्रम्मा राछना माई

(दूसरा कली)

सिर दे तिहापुए गुगा छत्तरी जम्मिग्रा
रण विग्राण भर्णा रागना
सिर दे धिग्रावे तेरा कलू जम्मिग्रा
चडद तिहाड माइग्रा धारी
डल्हीग्रा ढलेला वेला गाई
जम्मदिग्रां छनरिआं दीवे वलद
परवत हुदिग्रा लाई
जम्मी जाए सतजुगे दे चारा भाई
खवरा होइग्रां साम्हए दे देस
वजी रही पुत्तर वधाई
गुम्म नगारिग्रा चोट लगाई
नारी मजल लै गाई
हरी हरी दुरुभ पगा पर लगाई
देव राजा वेदी वुलादा
पढिग्रा पडता राजे दी साइत गणाई
हथे सोटी मुढे पोथी
मजला मजला कुले दा परोहत ग्रादा
ग्रादा पडत वेद विचारदा
पूरे लगन जनम निग्रा भाई
लिख लईआ पजका चुकदीग्रा भरदा
पज कलाणीए जनम लिया भाई
खवरा होइग्रा मासीग्रां काछला
हिका विच दव दई रोई
रोदी कलादी नागा दे जादी
बाई करोड नाग लए जगाई
माम्हए देसे गुगा छतरी जम्मिग्रां

नागा दोआ नेदी बहिणा आई
जिस कमाणा माम्ए दा राज
जौहड़ा दा हाल नही है कोई
हुक्म दिते नागे विस्सा दे भडारीए
विस्सा दोआ कोठडीआ सुलाई
मौ सण जहिर मासी चोचूए चारे
भाणजूए जो चीचू देणा
मुते दे पघूड़े भैण भाई खेलदे
लोरीआ दिदी तुलसी दाई
दिजा भैणा आपणे बालके
मिजो वेदण होई
घलोलूए ते चुक्दी गोदीआँ लदी जी
भैणा चीचू मुँह दिता पाई
दहिणें हत्थे चीचू मुट्टे पाइआ
धरती दिता वहाई
सौ मण जहिर धरती बहाइआ
हड्डूआ दी कुण कुण लाई
हुटदी फिरदा काछला मासी फिरी
सुतिआ नाग लिआ जगाई
सौ मण जहिर नागा घुट घुट पीता
हडोआ दी कुण कुण लाई
हुक्म कीते नागे कलीअर नागे जो
गाऊड़ू जो उसी ओड़आ जाई
सौ मण जहिर जिनी लागा चारिआ
माम्ए जो रखी धाई
नारा काहा विच सुका मारिआ
पथर पटके मेरे भाई
हिलदा क्वदा नाग माम्ए जो ओंदा
घर घर मारू कबे सारा जाई

गूो पलगूड़ूए भाट भैण गेलट
टुनैग्यिां दिदी तुलमी दाई
तरेड़ूए तरेड़ूए नोट ट् छाड़्मा
मडीए जो रखदा लुकाई
इहां गल्लां जा माई राछल सुणदी
छम छम रादी मेरी माई
जागो मोए शहिरे देउ लोको
मारूए दा राजा नागां लिग्रा खाई
इहनां गल्लां गुगा छतरी सुणदा
खिड खिड दई हस्सदा मेरा भाई
देहणे हत्थे भैण रागना पलटी
वावे सुडी मुहे पाई
सौ मण जहिर घुट मैं पीता
मैं हड्डूग्रां दी कुड कुड लाई
छडी दीआ जीजा छडी भणोइग्रा
सूलीआ दिगा मैं तिजो विआही
कद दा मैं जीजा कद दा भणोइग्रा
कदी कीती मैं भागा दे कुडमाई
सौ मन जहिर घुट मैं पीता
मैं हडीआ कुड कुड लाई
छडो छडो जीजा छडो दिग्रा भणोइग्रा
सुलीअर दिग्गा मैं तिजो विग्राही
कदी दा मै जीजा कदी दा भणोइग्रा
कदी कीती मैं नागा दे कुडमाई

राम सिंघा दीआ वगावता

घर मिआमे दे राम घिंस जम्मिआं
जम्मिआ वडा ग्रवतारी
जिस दा नाम रखिया मार जग

जिन रखी राजपूता दी लाज
वेटा वजीर दा खूब लडिग्रा
लिख परवाना कम्पनी भेजदी
गोरिया नाल ना छेड
फरगी है बुरी बला
त की रखेगी पिंजरे पा
वेटा वजीर दा खूब लडिग्रा

लिख परवाना राम सिंघ भेजदा
मैं लडना गोरिग्रा नाल
अकेला पठाणीग्रा खूब लडिग्रा

दूर कलकत्ते दीआ फौजा चढीग्रा
वासे दा चढिया वजीर
सरिहूग्राली ते चढिआ साहब
जग्ग विच पई गई लडाई
ग्रकेला पठाणीग्रा खूब लडिआ

न्हाई धोई राजा पूजा पर बहिंदा
वाम्हणे चुगली लाई
पूजा पर दित्ता पकडाई
वेटा वजीर दा खूब लडिग्रा

डल्ले दीआं धारां डफले वजद
पलटणी कडके तबूर लोको
अकेला पठाणीग्रां खूब लडिआ

लिख परवाना कम्पनी भेजदी
गोरिग्रां नाल ना छेड़ राजा

फरगी है बुरी बला
त की रखेगा पिंजरे पा
तेरा घर-बार करेगा नीलाम
बेटा वजीर दा खूब लडिआ

लिख परवाना राम सिंघ भेजदा
मैं लडना फरंगीए नाल
मेरा दाईआ अंग्रेजां दे नाल
मैं जीणां दिहाडे चार
बेटा वजीर दा खूब लडिआ

लिख परवाना मामिआ जो भेजदा
सदिआ दास कोतवाल
सदिआ अमर सिंघ मिरहास
जिन्ने सूतरी लई तलवार
मै परखणी फौजां दे नाल
मेरी कसी चलदी तलवार

खाए मरोडा फिर रामसिंह चढिआ
हत्थ पकडी तलवार
जिहडी करदी है मारोमार
मैं परखनी है फौजा दे नाल
अकेला पठाणीआ खूब लडिआ

हाई धोई राजा पूजा घर बहिंदा
फिर बाम्हणे चुगली लाई
फिर चोरीआ दित्ता फडाई
घर सिआमे दे रामसिंघ जम्मिआ
जम्मिआ वडा अवतारी राजा

जम्मदे ने पकड़ी तलवार राजा
दाईआ वप्पा अंग्रेजा दे नाल राजा

लिखी परवाना भुली की भेजिआ
सदिआ दास कातवाल राजा
सदिआ जगी पडताल राजा
सदिआ तारा सिंघ साहवे राजा
सदिआ नहँगी धनोटीआ राजा
धनोटीआ न लिखिआ जवाब राजा
सदिआ अमर सिंघ मिनहास राजा
जिस दे घोड़े दे गल हार राजा

अमर सिंघ मूतरी लई तलवार राजा
चलो मिलीए अंग्रेजे दे नाल राजा
रखणी धरम चादे दी आन राजा
पलटणा मारीआ चार राजा
लहूआ दे नगदे नाल राजा

हुण डेरा कूच करिआ राजा
डेरा नागा वारी पाइआ राजा
उथे वाहमण रसोई की लाइआ राजा
कम्स कपड़ा ढाका पर जुआन राजा
वजीर तू हुण कुताओ जा राजा

मेनो घोड़ा दिआ नै जाओ इनाम राजा
लका मूतरी लई तलवार राजा
उस नन्ही लई ढाका ते जुआन राजा
उथे सिपाहीआं को हुकम कराइआ राजा
डेरा शाहपुरे दे अंदर लाइआ राजा

ओथे सिपाहीआँ की हुक्म कराइआ राजा
लुट्टी लो शाहपुरे दा शहिर राजा
डल्ले दीआँ धारा डफ्ले बजद
कुम्हानी खडक तवूर राजा
तेरी खबर गई हजूर राजा

मलमल साहब चढो आइआ राजा
आउँदिआ हल्ला कराइआ राजा
मलमल साहब दे हत्थे की तीर लाइआ
हत्थें दा कीता नाश राजा

मलमल दा भाई चडी साहब चढिआ
उस आउँदिआ ने फट चलाइओ राजा
फट ढाला पर बचाइआ राजा

फट साहब दे सिर पर बहिआ राजा
ओह्दा देह दिहली चुकाइआ राजा
देई करी ढाला दा अडिका
हारे दे नाल अडकाइआ राजा

फरगी है बडा बादशाह राजा
लिखी परवाना पुछिआ राजा
अग्रेज है बडा बादशाह राजा
घर-बार करादा नीलाम राजा
जीदिआ नही देंदा जाण राजा
अमर सिंघ आखदा
मैं जीणा दिहाडे चार राजा

जरनैल करनैल चढी आइआ राजा
आउँदिया ढिंडोरा पिटाइआ राजा
राम सिंघ दिओ पकडाए राजा
दो हजार रुपिआ इनाम राजा
जो रामसिंघ दए पकडाए राजा

तेरे बामणे दगा कमाइआ राजा
पूजा बैठदा पकडाइआ राजा
विच सुखपाले दे पाइआ राजा
नूरपुर शहिर की आइआ राजा
बाले दे तल पर बिठाइआ वज़ीर राजा

इक दौडदा हरकारा चला आइआ राजा
सिआमिआ मेरा चुहर अडाही विच पाइआ राजा
बादशाह कने तू जोरा लाइआ
अंग्रेज़ है बडा बादशाह राजा
जिहडा रखदा पिंजरे पा राजा
करम लिखिआ सो मैं पाइआ राजा
मेरे मिसराई ने दगा कमाइआ राजा

भाई गोपाल सिंघ मिलणे की आइआ राजा
सक्के भाई ने दगा कमाइआ राजा
भाईचारा दिंदा मदत राजा
जींदा लैंदा कौण मेरा नाँ राजा
मरदा दे बोल रहिंदे मरदा नाल राजा

लडदे माइग्रा दे पुत्तर राजा
राम सिंघा पठाणीग्रा जोर लडिग्रा[1]

गीत रामसिंह पठानीआ

घर सिआमे रे रामसिंह जम्मिग्रा
जम्मिग्राँ उडा ग्रवतारी राजा
जि नी जमदिग्रा पक्डी तलवार राजा
काइ एसा पठानीग्रा जोर लडिग्रा

पहिली लडाई विच वास द मारीए
हुण भलिआ वाडा दा ताल राजा
माता इ दौरी ठाका पाए
वच्चा गारिजा कन्न ना छेद राजा
गोरे हृदे ने बुरी वला राजा
तिकी रखणगे पिंजरे पा राजा
घर वार करणगे निलाम राजा

ग्रम्मा बतरी धारा तू वखशी दे
मेकी लडना दे गोरिग्रा कन्ने राजा
लिखी परवाना राजे की भेजिआ
खरच पाणी सभ राजे ने मं नग्रा

---

१ राम सिंघ की बगावता की यह 'वार जे० एफ० मिच्चिल असिस्टेंट कमिश्नर कुल्लू ने लागों से सुनी और इसे लिखित रूप प्रदान किया। सी० एच० डानलड के कथनानुसार इस वार को पहले कभी लिखित रूप नही दिया गया था। जसा कि उसे नूरपुर के एक बूढ़े अब्दुल्ला ने बताया वह उस बूढे के पिता और दो चाचाओं ने मिलकर गाई थी। जिनके नाम जटटूधमन और बिल्लू है। लिखित रूप म न होने के कारण ही यह वार कई रूपो म मिलती है। यह राम सिंघ के गिरफ्तार होने ही लिखी गई प्रतीत होती है। अगले पृष्ठो म इसके और रूप भी दिए गए है।

पिछे फिरी दित्ता जवाव राजा
कोई ऐसा पठानीग्रा जोर लडिग्रा

एक सवाली तेरी ग्रतर्ली पतली
दूसरी नागर वल
गलादोग्राँ साडीग्रा चूडीग्रा वग नही पाइग्रा
साकी मुत्तीआ छड्डी नही जाइग्रा

गला दा मैं नही सवालोग्राँ दा भूखा
ग्रसाँ पकड लई तलवार राजा
हुण तलवाराँ दी बजे झणकार राजा
कोई ऐसा पठानीग्राँ जोर लडिग्रा

बही के बस सलाह् जे कीतीए
कुण कुण करना याद राजा
पहिले आपणा भाइ चारा करना याद
फिरी बारा मगिग्रा दा मन राजा
जिह्दिग्राँ घोडीग्रा दे गल हार
वहादरसिंह मामा जिह्दे कगणा वद्धी बहार

ग्रसा रली मिली करनी लडाई
ताँ ग्रापणा नूरपुर लेणा वचाइ
साडा राजा करेगा राज बापू
सिग्रामा करे वजीरी
तेरा बडीआ दा विडिग्राल
जिह्दा हाल रिहा खेतरे विच
जिन्नी सुग्रारी लैइए भडार
राजा कोई ऐसा पठानीग्रा जार लडिआ

इस कारण साहब पक्की माइया
जिनी आई ए इट परमाइया
इसरी शाहपुर दणा नाम
इसकी कांगड़ा दणा नाम
जिहद ग्म नड्द जवान
जिन्हां रजपूतां दी रग्ग मई साज
असां नहीं नामा द गून भुगग
असी बग्गी ए लड़ाई
असां नूरपुर नणा बनाई
राजा कोई एसा पठानीआं जोर लड़िआ

बची के पारन फिरी गनाह जिस कीती
लेआं पपिआं दा राजा बोड़आ
लक्ख लक्ख चढ हुण तीर राजा
हुण बासत चढे वजीर राजा
जिना बबूकां भरी लए तीर
तुसी गिणी गिणी मारने जवान
जि दा इक नहीं देणा जान राजा
राजा कोई पठानीआं जोर लड़िआ

कोई ऐसा पठानीआं जोर लडिआ
उले दीआ धारा डफ्ले बजदे
सुमनी बजे तबूर राजा
जिद्दी खबर गरीए हजूर राजा
कोई एसा पठानीआं जोर लड़िआ

लडन का रभ रचाइआ
डेरा थोनी दे किले की लाइआ
लिखी परवाना कागडे की भेजिआ

इक परवाना नादौने की भेजिश्रा
होर परवाना गुनेर की भेजिश्रा
सत्रना राजिश्राँ ता मगी ए मदद राजा
सवना ने दित्ता ए जवाब राजा
लडीश्रा तू आपणे जोर मीश्राँ
कोई ऐसा पठानीश्रा जोर लडिश्रा

जिन्नी सूतरी लईए मचार
जिन्नी पाइश्रा घमसान
वढी दिते नाँ दस जुश्रान
कोई ऐसा पठानीआँ जोर लडिआ

इक वारन साहव चडीह् श्राइआ
जिन्नी श्राइके यह फरमाइआ
इसको शाहपुर दिश्रो इनाम
क्ने कागडा दिश्रो इनाम
जिदे ऐसे लडदे जुआन
जिन्हा रजपूता दी रख लई श्राण

श्रसाँ नही इनामा दे भुक्खे
श्रसा करनी ए लडाई राजा
श्रसा लणा नूरपुर छुडाई राजा
कोइ ऐसा पठानीआ जोर लडिश्रा

फिर वेही कर सलाह जो कीती ए
लप्पा पडोपीआ दारू जे वडीश्रा
बुक-बुक वड्डे ने तीर राजा
बासे दे चढे ने वजीर राजा

समय के चरण-चिह्न

अद्धी अद्धी रातीं आइआ थानेदारा

इक भाई टिकटर दीआँ धारा
दूजा भाई ठेकेदार ओ
घोड़े घोड़े पूछीए थानेदारा
जागा देवी कूनी भारी ओ
अद्धी-अद्धी राती आइआ थानेदारा
मैं किहड़ा खून कीता ओ
नीली घोडी लुगीआ तेरा साफा
राणी बुज्झे राजा आइआ ओ

किन्ने मेरी बागलू दा शीशा तोड़िआ
किन्ने मेरा लौंग परिआ ओ
आपू चढी गिआ चवे दे चुगाना
छोहरो वदनाम होइआँ ओ
अद्धी-अद्धी राती आइआ थानेदारा
मैं किहड़ा खून कीता ओ
जपणे को राम चाहिए
मन चित्त लादिआ

नीली घोडी

नीली हुण घोडी नौ रगीए
दो सभ सूम्वाँ दा रग महिंदीआ

अज तां दगो गूम्बां ग
वारां गगं दी गाठी ग
तगे गो गरां गे मगाम
ां वद्दी पछता जो गीगो पानी पज तां

लिघ निग जी न्ट्टीपां भजाजां
जी निटीपा मांमिपां ता
मजना द वण जी मगोजां मनादपां जज नां
सानी दिती जी हुण गीनी पाडी पज तां
नेतर जां मटीन गीनीयां गी पाडी गाणो याना
नीली हुण पाडी नों रगीए

विगडी कागडे देश जाणा

नचिग्रां जो दिदे छाई जे ग्रटिआ
दुध जा वेचदे जाई ये हट्टीग्रा
दुध जो वचदे जाई ये हट्टीग्रा
मिहनतां हुण घट लोको
विगडी कागडे देश जाणा

विगडी कागडे देश जाणा
वापूए जो वोलदे बम्म वर मित्तरा
घरी ते कढी दे मारी के छित्तरा
लाडिग्रां जो लई होदे वच लोको
विगडी कागडे देश जाणा

ग्राउदिग्रां पितरां जो डग वडगा
मोइग्रा पितरां जो लई जादे गंगा
कलजुग होइग्रा परतक्श लोको

चढ़ी दे ववकरा झट नोको
विगड़ी कागडे देश जाणा

इस देश दीआ मूरख जनानीआ
टके ते कधीआ ते प्रीत लगादीआ
होर न रही कोई गत्त लोको
कलजुग होइआ परववश लोको
विगड़ी कागडे देश जाणा

मन चित लादिआँ

वारे वाके महिल चाहिए
देखणे को मोरीआ
जपणे को राम चाहिए
मन चित लादिआ

अम्मा चाहिए बापू चाहिए
भाईआ दीआ जोडीआँ
बाँके वाके खेत चाहिए
वैला दीआ जोडीआ

मनणा सिआणिआ दा कहिणा लो

पधरी मदाने वँगला पवादी
पधरी मदान वँगला पवादी
कन्ने वगीचड़ी लानी ओ
कन्ने वगीचड़ी लानी ओ

घडीआँ दूधे वाली गऊ जे लेणी
घडीआँ दूधे वाली गऊ जे नेणी
छड छड फिरदी मधानी नो

छड छड फिरदी मधानी लो
छोटडे छोटडे बल लई आउण
डूहगडे डूहगडे हल चलाउणे
खेती आपणी चलाणी लो
खेती आपणी चलाणी लो

सँभाली ले आपणा तू गहिणा जे गठा
सँभाली ले आपणा तू गहिणा जे गठा
मैं मापिआ चली जाणा लो
मैं मापिआ चली जाणा लो

पुठीए ताँ अडिआ ना पा मोईए
रीमाँ पुठीआ तू अडीआ ना
मन्नणा सिआणिआ दा कहिणा लो
मन्नणा सिआणिआ दा कहिणा लो

मुकीआ टुकडीआ खाई करी मुनूआ
मुकीआ टुकडीआ खाई करी मुनूआ
रोज सकूले जो जादा लोको
राज सकूले जो जादा लोको

सुन शामजी रेल आई

लाहौर शहिर द पुल टूट गए
लाए दी सडक बणाई
रेला दे विच रेलू जम्मिआ
कार लाट साहिब दी आई
पज रुप साधू मगदा
साधू मगन्दा रेला दी दसाई

सुण शामजी रेल आई
पज रुप चूढा मगदा
चूड़ा मगदा रेला दी सफाई
पज रुपै दाई मगदी
दाई मगदी रेल दी बधाई
सुण शामजी रेल आई

चवे जाई राणी होइआं

अगे वी मैं जाती दी रठिआणी
चवे जाई राणी होईआ
अगे खादी वी इहना दा साग
चवे जाई मास मगदी हो
किने चोरे पजा सैआं दे नोट
किने मेरी जेब मरोडी ओ
जिन्नी चोरे पजा सैआं दे नोट
उनी तेरी जेब मरोडी ओ

लाज रखे लाटां वाली

इक मिन्ट बीतिआ दो मिन्ट बीते
करनल ने सीटी मारी
तिन मिन्ट बीते चार मिन्ट बीते
झाजे चडी ओ सवारी

मोरचे ते चिट्ठीआं जे आइआं
नाम लग्गी वडी भारी
झाजे चड्दे गुखणा जे करदे
नाज रखे लाटां वाली

सर सर पवनाँ दीग्रा साजा ता उर्जांदा जी
पेड़ ग्रा भरदा अनाज लाका
लोकाँ दा चली पिग्रा राज लोका

साने दीग्रा नदीग्राँ दाने विच दिंदा जी
जोगीग्रा सिधाँ दे चरनाँ धोई धोई पीदा जी
वीरा दीग्रा फौजाँ दे भरोसे पुर जीदा जी
देसे दीग्रा टुकडिग्रा परेमे कने सीदा जी
वणी रहिंदा देसे दा राज नोको
लोका दा चली पिग्रा राज लोको

बस्सी ताँ कागडे देश जाणा

लोका दा चली पिजा राज लोको
वस्सी ता कागडे दश जाणा

पहिले ता हुदे थे तेले दे दीए
हुण चलिग्रा लिशकारा लोको
वस्सी ता कागडे द॰ जाणा

पहिले ता हुदे थे धाए दे टप्परू
हुण चलिग्रा घनिग्रारा लोको
बस्सी ता कागडे देश जाणा

पहिले ताँ हुदे थे घोडे ते खच्चरा
हुण चलीग्रा मोटरा लाको
वस्सी ताँ कागडे देश जाणा

पीआ करो पीआ करो

झिके ते मुनिआरे आए पहाड़ा दे विपारी
पिठी पादे बुचका तम्बाकू वेचन आए
ढोला छोडी देणी छोडी चिलम तम्बाकूए दी

जली बे जाइउ इस तम्बाकूए द पठा
इन्नी वो वकाइआ मेरा सोने दा कठा
ढोला छोडी देणी छोडी चिलम तम्बाकूए दी

जली वो जाइउ इस पहाड़ूए दी हटटी
इह्नी वो खाधी मेरे सौहरे दी खट्टी
ढोला छोडी देणी छोडी चिलम तम्बाकूए दी

जली वो जाइउ इस कराड़ूए दा भुग्गा
इह्नी वो वकाइआ मेरीआ वालूए दा मुगा
ढोला छोडी देणी छोडी चिलम तम्बाकूए दी

सदा साडिआ चौठी क्हारा पीडे साडा ढोला
इयू खागी सारी रोटी पेईआ खागी थोडा
ढोला पीआ करो पीआ करो तम्बाकूए दी

मदो साडे चम्एदारां पीडा साडा घोडा
झिके जांगे विआह् करांगे
गोरीए रमी रही पिउकिआं दे जाई

दहाड भीनी नरेन घडानी अरसीआ कटोरी
चनण दा तम्बाकू सोने दी अंगारी
ढोला पीआ करो पीआ करो

सेविंग सरटीफीकेट लण लई

मेरा तेरा गारीए घर सारमण ओ
फुलमू घर गाहमण
रखे मनां दी प्रीत गारीए
ओ प्रीत जानी राजी रहिणा

मैं जा गनाया मिजो बांट वणा
मिजा नथ घडा मीआं मेघूआं
छोडी दे वदी दा मिआल ढोना
ओ मिआल जानी राजी रहिणा

बांटे वी तिजा वणायांगा
गोरीए सस्ते दिन होणा
इतने चांदीए दे ते पसे वई
फौजा दे मुनुए दे पैसे आए

पसे औंदिआं होइआं तू लोभी हाइआ ओ
त लोभी जानी राजी रहिणा
अज्ज जे रुपईइ बचाइए गोरीए
बचाइए जानी राजी रहिणा

सेविंग सरटीफीकेट लईए
बारां ता वरिहां हो जादे
डेबले दसा दे पदरा
मुनूए पढाणे ने कमे औंगे

ओ बिआहे लाणे पसे
ओ जमीन लनी मुईए फुलमू

चरनाँ मैं तेरिग्रा दी दासो
ढाला ग्रो मैं दासी जानी

ल रूपईग्रा सेविंग सरटीफिकेट
लइआ सरटीफिकेट
छडी दे वदी दा खिग्राल ढोला
खिग्राल जानी राजी रहिणा

वदला जमाना बे

नवें छे पैसे दा पुराणा एक ग्राना वे
किरपी बिचारीए वदला जमाना वे
लई लणा रेडीग्रा देणे पैसे दूणे वे
नवें नवें गाणे घरे घरे सुणे वे

पिछले जमाने री न रही चेवे चाल वे
नागे सिरे चलणा हाथा दे रुमाल वे
नवें माझो क्पडे लादे नमी चली चाल वे
गल्लाँ करें चटपटी जेवा रखी खाली बे

कागडे दीग्राँ मोडा तो मोड मोटराँ

मोड मोटरा सनेरूग्रा मोड मोटरा
इन्हा काँगडे दीग्राँ मोडाँ तो मोड मोटरा

वेसर मगदी सनेरूग्रा वेसर मगदी
इन्हाँ कागडे दिग्राँ नौकराँ तो वेसर मगदी

इह नही पुग्गदी सनेरूग्रा इह नहीं पुग्गदी
इन्हाँ कागडे दिग्राँ नौकराँ तो इह नही पुग्गदी

हार मगदी सनरूआ हार मगदी
इन्हां कागड दिम्रां नोकरां ता हार मगदी

इह नही पुग्गदा सनरूग्रा इह नही पुग्गदा
इन्हां कॉगड दिग्रां नौकरां ता इह नही पुग्गदा

माड मोटरा सनेरूग्रा माड मोटरा
इन्हां कागडे दिग्रां मोडां तो माड मोटरा

कपडे सलाई दे

मैं जो गलाईग्रा मिजो कपडे सलाई दे
हुण कीआ विग्राहे जो जाणा इस रूहा हा

कपडे ता ग्रज्ज कल्ल सिलण बी नाही
गठी मुठी करना गुजारा रतनीए हो

इसा ता फसला दे दाणे भला ग्राउणे
काटे दीग्रां बणवाईग्रा ईसरूग्रा ग्रो

ग्रसां तां खूने जो पैसे नी गवाणे
पसिग्रा जो लेंगे बचाई रतनीए ग्रा

इहना ता गल्ला तू मिजो जो दसदा
ग्रापी कीग्रा हुक्का पीदा

तिजो ता दिखी करी मुनूआ जे पीणा
ग्रापू ता खगा कने मरदा ईसरूग्रा ग्रो

तमाकू ता मैं पीणा छडी भला देणा
तू भी गनाया मन ले रतनी ओ

चरनां मं तेरीआ दी दासी ईमरूआ ओ
जिहा गलाया तिहाँ मन्नी ओ

देखो तमाशा बारने दा

वारन साहब है डाहडी सरकार लाको
देखो सरकार लोको

टोपे टोपे दारू वडिआ
मणे वडे हुन तीर लोको
देख तमाशा बारने दा

पहिली लडाई फतेह चद चढिआ
लहूआं दे वगी जादे हुढ लाको
देखो तमाशा बारने दा

पहिला बदोबस्त बारने कीतां
अज्जी तक दिदे दुआए गरीब लोको
देखो तमाशा बारने दा

सुदर जवान वहादर सूरमा
कोई ऐसा नही देखिआ अँग्रेज़ लोको
देखो तमाशा बारने दा

बारन साहबी खानदान बनाए
दित्तीआं वख्शी जागीर लोको
देखो तमाशा बारने दा

साहब बहादर जर मड ग्राइग्रा
हा गई लोक खुशनाव लारा
देखो तमाशा वारने दा

टिहरी सुजानपुर राजे पकड़
हा गिम्रा ग्रमन ग्रमान लोका
देखा तमाशा वारने दा

एसा नहा काई रहिमदिल सुणिम्रा
ना देखिम्रा गरीब परवार अग्रज लाका
दखो तमाशा वारन दा

आइआ रॅगरूट ओ

बारही बरही ग्राइग्रा रगरूटा र
हाथी छतरी पैरी बूटा रे
नहीं चलणा कुछ चारा ग्रा
ग्राखदा रे प्राणू दा पिग्रारा ओ
बाथरी दा ग्राया बणजारा ग्रा

सिरे पर व ह् गड्डू दा भारा ग्रो
इक हत्थ गडी चुकाणी ग्रो
ते दूजे हथ साबणू दी लाणी ग्रा
लाहडे पर मोटर खिलारी ग्रो
धोरह् मानो खिडकी दुग्रारी ओ

हत्थ लिग्रा दुदधे गलास ओ
ते पानो शाहरी रुमाल ओ
कणका दी चढी लमी कानी ग्रा

देख मई पानो दी जवानी ओ
बारही बरही आइआ रँगरूटा ओ

मेरा फुलणू बारन साहब दे टोपे

मेरा फुलणू लाणों बारन साहब दे टोपे
बारन साहब है बहादर जवान
राजा म्हारा वालक छोटा
मुलखा पर भूचाली
चला साहब बारने री टोपा
चला भाईओ फरिआदी चलीए
बारन साहब री आगे
पूरा तालदा बिनों वट्ट इनसाफ लेणा
बारन साहबे री हाथा
लोग पूजे लाहौरे
तां साहब भूबे हो जोते
मेरा फलणू लाणा बारन साहब दे टोपे

हा बाबू रेंजरा

बाबू रे किचना बोला भात्ता दुदधा री बाड़ी
पाज मागे कपडे रुपए मागे चाली
हाए बाबू रेंजरा बासी नगरा तेरे

बाहरनी को जादीए बो हाथा लइआ लोटा
दई सुणी चालणा जमाना लागी रा खोटा
हाए बाबू रेंजरा बासी नगरा तेरा

बाबूआ रे आंगणा रे बहीणा री कयारी
सच्च बोले बाबूआ तू जा नही री पयारी
हाए बाबू रेंजरा बासी नगरा तेरे

पहाडे दीआ मूरख जनानोआं

साडे पहाडे दीआं मूरख जनानीआ
मैलीआ कुचैलीआं कपडीआ लाँदीआ
मूनूआ दे मथ्थे काला टिकूआ लांदीआ
मूनूआ जो पई जादो चहिए लोको
पेटी सधाहीए लक्क लोको

फुदू दीआ लाडीआ मत्त लाको
रेशमी घाघरा लक्क लोको
चदा नहीओ लाणा
फुदू मजूरीआ नहींउँ लाणा
साडे पहाडे दीआं मूरख जनानीआ

धरमू सूरमा

ठडी ठडी हवा धरमूआ वरखा दी छमकार लो
अदर पक्के फुलके धरमूआ बाहर रिझ्झी दाल लो
वढडे जे भाईए चुगली लाई सदी बलाई सरकार लो
होले होले पुलसा चलदीआ कडीआ दी छणकार लो
सौ सौ रपीआ सपाहा मगदे दो सौ थाणेदार लो
मैं कुत्यां ते दीमा लोको देवे धरमू दी जान लो

सुत्ता सुनेडा धरमू उठिआ हथू फडी तलवार लो
पज ता वड्ढे पुलस सपाही छीमा थाणेदार लो
काठे चढ के पित्ता रोवे धरमूइ खाणी मार लो
तू किउँ रोदा पिता मेरा धरमू नी खादा मार लो
पौडीआ चडदी माता रोवे दर विच रोवे तेरी नार ला
तू किउँ रोदी माता मेरी धरमू नी खाँदा मार लो

मिमल गी मदर माने हैदना उँटा
घटो मा गा रगणा दम दुगौलाँ [illegible]
हाए वाबू रेंजरा वागों [illegible]

जोगी वणी ओ जाणा

आ बाबू रामा रेंजरा
जोगी वणी आ जाणा
पार वगे मिमला
पार वग या ठाणा
जोगी वणी या जा जाणा

ससू द ग्रांगण 'च
बीहण दी है या विमाही
पंजे गारे मपड़े दपए मग मान्दी
आ बाबू रामा रेंजरा
जोगी वणी ओ जाणा

चद घेरिग्रा बदलाग्रा
माछी घरी ग्रो जाली
तू बी घेरिग्रा ओ वाबूआ
इ ना लोकाँ दी गल्ली
ग्रो बाबू रामा रेंजरा

बाबूए दी बाबूग्राणी
जगाँ तो है ओ हीणी
बजे दी पालकी नाले नाल ग्रो लौनी
ओ बाबू रामा रेंजरा
जोगी वणी ग्रो जाणा

पहाड़े दीआँ मूरख जनानीआँ

साडे पहाड़े दीआँ मूरख जनानीआ
मलीआ कुचैलीआ कपडीआ लाँदीआ
मूनूआ दे मथ्थे काला टिकूआ लादीआ
मूनूआ जो पई जादी चहिक लोको
पेटी सधाहीए लक्क तोको

फुद दीआ लाडीआ सत्त लोको
रेशमी घाघरा लक्क लोको
चदा नहीओ लाणा
फुद मजूरीआ नहीउँ नाणा
साडे पहाड़े दीआ मूरख जनानीआ

धरमू सूरमा

ठडी-ठडी हवा धरमूआ वरखा दी छमकार लो
अन्दर पक्के फुलके धरमूआ बाहर रिझझी दाल ला
वढडे जे भाईए चुगली लाई सदी वलाई सरकार लो
हौले-हौले पुलसा चलदीआ कडीआ दी छणकार लो
सौ-सौ रुपीआ सपाही मगदे दो सौ थाणेदार ला
मैं कुत्थों ते दीमा लोका देवे धरमू दी जान लो

सुत्ता सुनेडा धरमू उठिआ हथ फडी तलवार लो
पज ताँ वड्डे पुलस सपाही छीमा थाणेदार लो
कोठे चढ के पिता रोवे धरमूई खाणी मार लो
तू किउँ रोदा पिता मेरा धरमू नी खादा मार लो
पौडीआँ चडदी माता रोवे दर विच रोवे तेरी नार लो
तू किउँ रोदी माता मेरी धरमू नी खाँदा मार लो

किसी दा नी मारिया धरमू मरदा गरमी री हार लो
चार चुफरे धरमू दोर पिआ मूर्छा द भार लो
पहली गोली छाती वज्जी दूजी कलेज फाड़ लो
सर तो पक्षा गानजा गिरनिआ गरथी वनुमार लो
गडीआं मोटरां धरमू जादा उतर गिआ हरी दुआर लो
शहिरी बजार डौंडी पिट्टी धरमू दी पा गई लाश लो

मच गई धूंधू कारी लो

दस पन्दरा दिन जगां ना मिलदी जहाज पलटन चाढी लो
जहाज तां बठकर चिट्ठिआं लिखदे उमीद न रखीआ माड़ी लो
वड जा चलदे तापां जा चलदीआं मच गई धूंधूकारी लो
आगे जवानां दे दिल घबरांद पिच्छे रिटाइर नराद लो
चिट्ठीआं लिख लिख घरां जो घल्लदे टगद कलेजे माडी लो
चिट्ठीआं सुणी कर माई बाप रांदे पईआं रांदीआं नारी लो

भला हेर

कमेरे बजार मेरे पूरनां मखमल दा थाण भला हेर
मखमलां दा कोट मेरे पूरनां रोमी रोमी सीणा भला हेर
दसां गजां दा कोट मेरिआ पूरनां चढी चव जो जाणा भला हेर

हौली हौली चलणा रावी दे पड़ पड़
ठंडा ठंडा रावी किनारा हा
बही चणा पीपलां दी ठंडीआं छावां
किन्ह रहिणा दिन सारा गे
उच्ची उच्ची धारा तन टढ़ी मढ़ी नदीआं
चम्बे दा चौगान पिआरा हा

साएं साएं मत्त कर रावीए

साएं साएं मत्त कर रावीए
मिंजा तेरा डर लगदा
चम्बे दे गले दीए लड़ीए
मिंजे तेरा डर लगदा

टेढ़ी मेढ़ी चाल तेरी सौ सौ नखरे
धदे तेरे रावीए कर ना तू नखरे
तेरे कढे वहिण दा दिन मेरा करदा
तेरे ही मैं गीत गावां ऐसा मन करदा

आप चलिआ चम्बे

लाणा घडोलूए जो बाल जमादारनीए
सरनू जे मरनू सकीआं भैणा हो
आप चलिआ चम्बे जो मे सौंगी तेरे जाणे
दिखीआ जी चम्बे जो मैं सौंगी तेरे जाणे

लई के घडोलू गोरी पाणीए जो जांदी
चढ़नी सकदरे दी धार हा
खसम जा तेरा राजे दा हजारी
देवर तेरा ठाणेदार हो

चम्बे दिआ हटटीआ विक्दा चीणा

मिजो भरोमा तेरा हो माणूआ
हो ठगवाज हा वेईमान माणूआं
चम्बे दीआं हट्टीआं बिक्दा चीणा
कुस मरना कुस जीणा हो माणूआं
आप तो चलाइआ चम्बे दी चाकरी
साडा की करी गिआ हीना माणूआं

मैं नहीं जाणा चवे दीआं धारां

मैं नही जाणा चम्बे दीआं धारां
चवे दीआ धारां पैण फुहारां
मेरा चोलणू सिजी जांदा सारा ओ जी
मैं नहीउँ जाणा चम्बे दीआं धारा
हथड़ू ता गोरी दे ठरी बो तां जांदे
पैरा की लगी जांदा पाला ओ मेरे

चम्बे दे चौगाने विच ढोलकी जे वजदी
अम्बी वजे नगारा ओ जी
घर घर टिकलू घर घर विंदलू
घर घर बांकीआं नारा
ओ मेरे गद्दीआ मैं नही जाणा
चम्बे दीआं धारां मैं नहो जाणा

चम्बे दीआं धारां वो मेरे

घिरी घिरी आंवदीआं वो मेरे
चम्बे दीआं धारां वो मेरे
हुण बरफां पावदीआं वो मेरे
चम्बे दीमां धारां वो मेरे
बन्नीं बुंदे पाई लैंणे

हौनी हौनी चलणा गाड्डी द गड गड
डोडा डोडा रावी दिखाणा हा
ग्ही गणा पीपलाँ दी ठंडीआँ छावाँ
किन्हे रहिणा दिन सारा हा
उच्ची उच्ची धारा गने टढी मढी नदीआँ
चम्बे दा चौगान पिआरा हा

साएँ साएँ मत्त कर रावीए

साएँ साएँ मत्त कर रावीए
मिजो तेरा डर लगदा
चम्बे दे गले दीए लडीए
मिजे तेरा डर लगदा

टेढी मेढी चाल तेरी सौ सौ नखरे
धदे तेरे रावीए कर ना तू नखरे
तेरे कढे वहिणे दा दिल मेरा करदा
तेरे ही मैं गीत गावाँ ऐसा मन करदा

आप चलिआ चम्बे

लाणा घडोलूए जो वान जमादारनीए
सरनू जे मरनू सवीआ भणा हो
आप चलिआ चम्ब जो मे सौगी तेरे जाणे
दिखीआ जी चने जो मैं सौगी तेरे जाणे

लई वे घडालू गारी पाणीए जो जाँदी
चढनी सक्दरे दी धार हो
खसम जा तेरा राजे दा हजारी
देवर तेरा ठापहार हो

चम्बे दिआ हट्टीआं बिकदा चीणा

मिंजो भरोसा तेरा हो माणूआ
हो ठगवाज हा बेईमान माणूआ
चम्बे दीआ हट्टीआं बिकदा चीणा
कुस मरना कुस जीणा हो माणूआं
आप तो चलाइआ चम्बे दी चाकरी
साडा की करी गिआ हीला माणूआ

मै नहीं जाणा चबे दीआ धारां

मैं नही जाणा चम्बे दीआ धारा
चवे दीआं धारां पैण फुहारां
मेरा चोलणू सिजी जांदा सारा ओ जी
मैं नहीउं जाणा चम्बे दीआ धारां
हथड़ू ता गोरी दे ठरी वो तां जादे
पैरा कीं लगी जादा पाला ओ मेरे

चम्बे दे चौगाने बिच ढोलकी जे वजदी
अम्बी वजे नगारा ओ जी
घर घर टिकनू घर घर बिदलू
घर घर बांकीआ नारा
ओ मेरे गद्दीआ मैं नही जाणा
चम्बे दीआ धारां मैं नही जाणा

चम्बे दीआं धारां वो मेरे

घिरी घिरी आंवदीआं वो मेरे
चम्बे दीआं धारां वो मेरे
हुण वरषां पावदीआं वो मेरे
चम्बे दीआं धारां वो मेरे
कन्नी बूंदे पाई लैणे

होली होली चलणा रावी द कढे कढे
डाडा डाडा रावी किनारा हो
बही लणा पीपला दी ठडीग्रा छावा
किन्हे रहिणा दिन मारा हो
उच्ची उच्ची धारा कने टेढी मेढी नदीग्राँ
चम्बे दा चौगान पिआरा हा

साएँ साएँ मत्त कर रावीए

साएँ साएँ मत्त कर रावीए
मिजो तेरा डर लगदा
चम्बे दे गले दीए लडीए
मिजे तेरा डर लगदा

टेढी मेढी चाल तेरी सौ सौ नखरे
घदे तेरे रावीए कर ना तू नखरे
तेरे कढ बहिणे दा दिल मेरा करदा
तेरे ही मैं गीत गावा ऐसा मन करदा

आप चलिआ चम्बे

लाणा घडोलूए जो बाल जमादारनीए
सरनू जे मरनू सखीग्राँ भणा हो
आप चलिग्रा चम्बे जो मे मौगी तेरे जाणे
दिखीग्रा जी चन जो मैं मौगी तेरे जाणे

नई व घडालू गारी पाणीए जो जांदी
चढनी सखदरे दी धार हो
खमम जा तेरा राजे दा हजारी
देवर तरा ठापहार हा

चम्बे दिआ हट्टीआं बिकदा चोणा

मिजो भरोसा तेरा हो माणूआ
हो ठगवाज हो वेईमान माणूआं
चम्वे दीआ हट्टीआं बिकदा चीणा
कुस मरना कुस जीणा हो माणूआ
आप तो चलाइआ चम्बे दी चाकरी
साडा की करी गिआ हीला माणूआ

मैं नहीं जाणा चबे दीआं धारा

मैं नही जाणा चम्वे दीआ धारा
चवे दीआ धारां पैण फुहारां
मेरा चोलणू सिजी जांदा सारा ओ जी
मैं नहीउँ जाणा चम्वे दीआ धारां
हथड़ू ता गारी दे ठरी बो तां जादे
पैरा की लगी जादा पाला ओ मेरे

चम्वे दे चौगाने विच ढोलकी जे वजदी
अम्वी वजे नगारा ओ जी
घर घर टिकलू घर घर विंदलू
घर घर वाकीआ नारा
ओ मेरे गद्दीआ मैं नही जाणा
चम्वे दीआ धारा मैं नही जाणा

चम्बे दीआं धारा वो मेरे

घिरी घिरी आंवदीआं वो मेरे
चम्बे दीआं धारां वो मेरे
हुण बरफां पावदीआ वो मेरे
चम्बे दीआं धारां वो मेरे
कन्नीं बुंदे पाई लैंणे

हाथी गुगरन माई सण
नवी नथनू माई मणा
नारी नथनू मायनीमा मरे
चम्बे दीमा नारा ना मरे

घोन नार मेर नई ण
पिडर जो चलीग्रा
वरपा द पहाड छड्डी
मुवरा पहाड मल्लीग्रा
ग्रमा शिमले जाणा
नवा चोला लाणा
नवो नाणा मैं डेरा
घिरी घिरी ग्रावदीआ वो मेरे
चरे दीग्रा धारा वो मेरे

मेरे तेरे सजोग हो

नोहली भोटडीए गम करी ना मेरी लाहनी हो
लोहली भोटडीए ठडे नाले लकडी चुगणी हो
लोहली भोटडीए जोता पुरे वगला पवाणो हो
लोहला भोटडीए वगलूए शीशे लगान हो
लोहली भोटडीए मेरे तेरे सजोग हो

गोरी दा चित्त लगदा

चवे दीग्रा धारा पैण फुहारा
उडणू ता भिज्ज गिआ सारा
लाडो दा चित्त लगदा चवे दीग्रा धारां
घर घर चक्क घर घर बकरू

घर घर मौज वहारा
गागे दा चित्त नग्गा चवे दीग्रा धारां

घर घर बिंदलू घर घर टिक्लू
घर घर वाकीआ नारा
गोरी दा चित्त लग्गा चंवे दीग्रा धारा
घर घर चरखे घर घर पूणीआ
घर घर नारा भतारा
गोरी दा चित्त लग्गा चंवे दीआ धागा
घर घर वजदे ढोल नगारे
घर घर नारां भतारा
गोरी दा चित्त लग्गा चवे दीग्रा धागा

चबे दीआं घल बहारा

चवे दीए गोरीए घोरीए
कट्टी पा मडोग्रा जो फेरा
छडिता मिजो मिलणा
वो किची हू लिग्रा मन तेरा

हस्सी के ना लघ बैरीआ
मरी सास भरमा दी मारी
दिखी वे जो लणी नणदे
वे क्लेम पौणा मेरा तेरा

चव री ग्रा छैल वहारा
गऊ चराउंदीग्रा गोरीआं नारां
ग्राई कन्ने मिलणा जो यारा
वो वालम सांय सवेरा

कौलां वे गदेटड़ीए नी मेरीए

कौलां व गदेटड़ीए नी मेरीए
हरी सिधा न्दिउरा हा नी मेरिया

हट्टी बठ दुकानीआ
तरी हट्टी बाव दा जीरा
हार लांदीआ रेशमी डाठू मैं लगादी मोरा
आ मेरिआ हरी सिधा दिउरा हा नी मेरिआ

पुल पर पुलगां दी नौरी
ओ मेरीए कौलां वे गदेटड़ीए
पुले लंघिआ की की दणी तारी नी
मेरीए कौलां वा गदेटड़ीए

होरनां द बागे सभ फुल्ल फुल्ले
मेरे बागे फुल गोभी
इकस तां मेरी जिंद निभाणी दूजे सारा जग्ग लोभी
आ मेरिआ हरी सिधा न्दिउरा हा नी मेरीआ

छैला राजपूता

पारीए वी जादा छला राजपूता
दो जलीए दा मुल्ल कर जादआं
गोरी दा जी हुदा सईआ लाख टका
सांवली दा हुदा लाख चार

गोरी जो वी सजदा काजल कूगू
सांवली जा सज्जे बिंदू लाल
गोरी जो वी सजदा वारी काना पुड्डू
सांवली जा सज्जे गुलानार

कुने जी दित्ता तुज्जो गँभर गडवा
किने वो दित्ता गले हार
जा माए जी दित्ता माजो गँभर गडवा
बापूए दित्त गले हार

कुजू दा गीत

चबे दे चौगान तेरा डेरा कुजूग्रा
मूहा बोल जवानो ग्रो
कपडे धोग्रा नाले रोग्रा कुँजूग्रा
विच वटन निशानी ग्रो
हाए कुजूआ विच वटन निशानी ओ

गोरी गोरी बाहीआ तेरी चूडा चचनो
विच गजरा निशानी ग्रो
छीट दा रुमाल हत्थ मेरे चचनो
विच रग निशानी ग्रो
हाए मेरीए जिंदे विच रग निशानी ग्रो

हत्थ बने हत्थ मिला दे कुँजूग्रा
दे जा निशानी ग्रो
ले लई ग्रो दिल दी निशानी
सच मेरी जानी ग्रो
इही जिंदे जग दे मेले सच मेरीए जिंदे
कुफरी दा चौगान विच लाणा डेरा कुजूग्रा
उत्थे ओ मिलणा भाग मेना
मच डो मेरीए जिंदे
जिंदा लगदा मेना
हाए मेरीए चचलो जिंदा लगदा मेला

हत्थ पा हत्थ मत मादा म जूआ
मेरीग्रां टुटी जांदीमा वगां
जने दे चौगान तरा डरा मजूआ
मूहा चोल जवानी आ
ग्रो मेरीए जिंद मूँहा चोल जवानी आ

अलबेलूआ हो

नाले नाले जांदा अलगोजूआ वजांदा
मुत्तिग्रां दी नीदर गवांदा हो
ग्रलवेलूग्रा हो

छल्लीग्रां दी रोटी हुंदी वडी मोटी
छाही कने चूरी करी खांदा भला हो
ग्रलवेलूग्रा हो

कोदरे दी रोटी हुंदी वडी मोटी
दही कने चूरी करी खाणी भला हो
अलवेलूग्रा हो

नाले नाले जांदा ग्रलगोजूग्रा वजांदा
लोकां जो गलादा हट्टी मेरी भला हो
ग्रलवेलूग्रा हो

चवे दी हट्टी मेरे देरे दी खटटी
लोका जो गलादा हट्टी मेरी भला हो
ग्रलवेलूग्रा हो

खाने जो नी दिंदा पहिनणे जो नी दिंदा
लोका जो गलादा नाडी मेरी भला हो
अलवेलूग्रा हो

भँवरा

लाल तेरा साफा भँवरा
मोरे की दी क्लगी हो
तेरी मेरी प्रीत भँवरा
टुट्टी ताँ नही जानी हो

लाल तेरा चोला भँवरा
चिट्टी तेरी टोपी हो
धिआडा नी घरोदा भवरा
घडा नी भरोदा ओ

तेरी मेरी प्रीत भँवरा
टुट्टी ता नही जानी हो
बुरे हुदे बुरे भँवरा
झिके केरे लोका हो

नाले नाले जाइआ भँवरा
वँसरी लजालीआ हो
वँसरी वजाइआँ भँवरा
दिले जो तरसाइयाँ हो

व्रिज लाला भँडारी

आ जोते पर वँसरी वजाई भला वो
व्रिज लाला भँडारीआ
भावो जो रुणकी सुणाई वो
व्रिज लाला भँडारीआ
जोते पर हटली तेरी वो
व्रिज लाला भँडारीआ

कदे छुट्टीआ आमणा

चिट्टी चिट्टी चादर च ना फुल्ल पाणा फेरमा
घडीआ दे करार कीते
महीना चढिआ तेर्हवा

आ आरे पार लारी जादी
गव्वा मोनही छाकरी हाए
बो गो बे सोनी छोकरी

त वाजी बासरी लो मे बूआ खोल्हया
हाए बा जानी मैं बूआ खोल्हया
जे तू चनिजा हट्टी घर साडी रग डालिआ

चद मारा चढिआ
आपरा रे जा रिआ
जम्मू दिआ नौकरा कदो छुट्टीया आमणा

मेरी बाकीए गद्दणे

नगारे चुकी राजा हाडे जो चढिया
वाकी जिही लद्दण नजरी आई
जा मेरीए वाकीए गद्दणे

चार सिपाही राजे दड दड भेजे
वाहा त चुकी टोलीए पाई
जो मेरीए वाकीए गद्दणे

छड्डी ता दणा गहणो पहाडा दा हेंडाणा
पदरे नादौण जा आ
जा मरीए वाकीए गद्दणे

छड्डो ता देणा सदणों भुजा दा सोणा
भूग्ररी दे पँलघा जो आ
ओ मेरीए बांकीए गद्दणे

छड्डी ता देणा गद्दणी तसलीआ दा खाणा
सोने दे थाला जो आ
ओ मरीए बाकीए गद्दणे

छली छली राजा गद्दणी जो पुछदा
कीदी कीदी लगदी बुरी
ओ मेरीए बाकीए गद्दणे

थोडी थोडी बुरी राजा घेलूआँ दी आउँदी
गद्दीए दे ताइ बगदी छुरीए
ओ मेरीआ हरी सिघा गद्दीआ

थोडी थोडी बुरी राजा तेरी वी लगदी
गद्दीए दे ताइ बगदी छुरीए
ओ मेरीआ हरी सिघा गद्दीआ

महिला दे लागे गद्दीआ बकरीआँ चारदा
इता परी दरसन दआो
मेर हरी सिघा गद्दीआ

इक लख मगे गद्दी दो लख मगे
पनमा दी देणी वजीरी आ
मेरीए बाकीए गद्दणे

हरी सिंघ दिउरा ओ जी जानी

पुले पर पुलस गई जाडा नी मेरिआ
हरी सिंघ दिग्रौरा ग्रो जी जानी

पुल लघणा की लबी तारी नी मरिश्रा
हरी सिंघ दिओरा आ जी जानी

ओ पुलसा दई देणी चोटणी मेरिआ
हरी सिंघ दिओरा ग्रो जी जानी

आ वसदी ओ बहँदी त ओ जवाडनी नी मेरिग्रा
आ हरी सिंघ दिग्रारा ओ जी जानी

ग्रा ववरू पकाणे लाका आ गड चडीग नी मेरीए
हरी सिंघ दिग्रोरा ग्रा जी जानी

भिग्रागा घडी जा जागा जी जानी
मरिग्रा हरी सिंघा दिग्रोरा आ जी जानी

हुला वेलूआ ओ

हूला वेलूआ ग्रो हूला वेलूग्रा ओ
नाले नाल आउँदा ते वासरी वजादा
ग्रा मरे वलूआ रे

ग्रापू तां चली पिआ धारा नगरी
मनूं सई दई माहणी जेही घगरी
ग्रा मरे वलूआ रे

घगरी लगाई कन्ने चललणा ओ
नावाँ लुग्राई दिआ रतनीग्राँ दा
ग्रो मेरे वेलूजा रे

खाणी भी ना देंदा पीणे भी ना देंदा
नाले जीणे भी ना देंदा
मेरे बेलूग्रा हा

मेरीए छल गद्देटडीए

पहाड दा लाणा ओ राजा राणीग्रा जो सोहँदा
राणीग्रा जो मोहँदा

पहाडे दे लाणा मनजूर जीग्रा ओ
होणी मेरीए छैल गद्दे टडीए

सलवारी दा लाणा आ राजा राणीग्रा जो सोहँदा
राणीग्रा जो सोहँदा

पहाडे दा लाणा मनजूर जीग्रा ग्रो
हो नी मेरीए छैल गद्दे टडीए

साकी रसता बताई करी जाणा

ग्रो जाणा महाराजा रसता बताई कई
वत्ते ते भुली गईग्रा ग्रो लोका
साकी रसता बताई करी जाणा ग्रो महाराज

चवे लो चँडेदीग्रा की रात जे पई गई
रसते ते भुल्ली गईआँ ओ लोका
माँकी रसता बताई करी जाणा ग्रो महाराज

वँगी वँगी अपखीआं नी मान म्हारे मग
मैं तां यालय निमाणी डोला
वध परदेस ओ रसते भुली गईआं आ लारा
सांकी रसता वताई करी जाणा महाराज

नीकी नीकी हँडणा ना हार द वीच आ
निक्का दिहा मोती नी मेरा वेसरा द वीच आ
रसते ते भुली गईआं ओ लोकां
सांकी रसता वताई करी जाणा महाराज

गाली दिखीआ दिदी

फुन फुनी वारे पारे ठोडा
गाली दिखी दिदी छोरी
नही नां पिटागी मामा रे सोगा

तेरे कोठे ते पण नोरडे
गाली दिखी दिदी छोरुआ
नही ता पिट जागा मामा कोरडे

ओ सच दस पिंग वालणी

उपर धारा विजदा मरीना
ओ सच दस पिंग वालणा

तेरे विना किन ब्रे जीणा
ओ सच दस पिंग वालणी

उपर धारा विजवे करेले
ओ सच दस पिंग वालणी

कजा छोडे मिजा दे मेले
ग्रो सच दस पिंग वालणी

उपर धारा विजदे ददासा
ओ सच दस पिंग वालणी

क्या पाया दँदडूग्रा दा हासा
ग्रो सच दस पिंग वालणी

चादर फटे ते में टाकी जे पादीग्रा
लो सच दस पिंग वालणी

दिल फटे ते कीग्रा साणा वो
ओ सच दस पिंग वालणी

लोका जू गलादा

हौलि हौले जादा मूग्रा लक्ड़ चुगादा
लोकां जो गलादा ठेकेदार वेलीओा

खाणे जूनी देंदा मूग्रा लाणे जूनी देंदा
लोका जू गलादा लाडी मेरी वेलीआ

चादरा जु फटी मेरे देवरे दी खट्टी
तू ता गज लढा वी ना देंदा वेलीग्रा

जितनी कु जिमी मेरे देवरा दी खट्टी
लाका जु गलादा जिमी मेरी वेलीआ

किआ कुछ बिक्दा

कौलां वो गद्देटडीए हो मेरीए
कौलां वो गद्देटडीए

चम्ब दीग्रां हटीआं किग्रा कुछ विकदा
इक विकदा ग्रा लहिंगा जानी
ग्रा फिरी मिलगा जे जीदा रीहिंगा ग्रा जानी

चम्ब दीग्रा हटीग्रां ग्रा किग्रा कुछ विकदा
इक विकदा ग्रा चौला जानी
मेरा हरी सिंघ मेरा भाला भाला ग्रा जानी

चम्बे दीग्रां हटीग्रां किग्रा कुछ विकदा
इक विकदा जानी ओ लाटा
हो मेरे मन कपटी ग्रा दिल खाटा ग्रो जानी

चम्बे दीग्रा हटीग्रां किआ कुछ बिकदा
इक बिकदा धूणी ग्रो जानी
ग्रो मेरे इक वो बटाई लैणी दूजी आ जानी

चम्बे दीग्रा हटोआं किग्रा कुछ विकदा
इक विकदी आरी ग्रो जानी
ग्रो मेरा लक पतला ओ लहिंगा भारी ग्रा जानी

हो वो जाणा माले दीआ राखी

डूघे डूघे वालू चढणे गवालू
जाणा माले दीग्रा राखी
हो वो जाणा माले दीग्रा राखी

उच्चीआं ने घाटीग्रा ग्रो विखडा ए पडा
जाणा माले दीग्रा राखी
हो वो जाणा माले दीग्रा राखी

जेठ महीने ताउ जे लगदा
व्होणा मिली करी छांइ
हो वे व्होणा मिली करी छाईं

हो वो आईआ ना मेरा साथी
चांदणी राती खेलण गवालू
आइआ ना मेरा साथी

सावण महीने अम्बजे पक्कदा
व्होणा मिली करी राखी
हो वो व्होणा मिली करी राखी

रूपणूआ लाहौल मत जादा हो

तोव कने किसी सकीआ भैणा हो
कुण कुडो लाहौल जा नीणी हो
रूपणूआ लाहौल मत जादा हो
दोसती दा मजा वरसादा हो

कुण कुडी सखत विमारा हो
एक हत्थ रोगणी दी नाडी हो
रूपणूआ लाहौल मत जादा हो
दोसती दा मजा वरसादा हो

जाल मूआ त्रेदणू बणी ब्रहिंदा हो
इक हत्थ भगी दी डाली हो
रूपणूआ लाहौल मत जादा हो
दोसती दा मजा वरसादा हो

भडर्डी पाइआ लम्मा फरा हो
आइआ मर म्पणू दा म्रा हो
म्पणूआ नाहोल मत जादा हो
दोसती दा मजा नरसादा हो

तेरी ओ मजाजा भारी ओ

चिट्टा व चाला काला डारा मुईए मसतूनी
चिट्टा व चाना काला डोरा ओ
चढी चम्ब नू चली जाणा मुईए मसतूनी

जाणा चम्ब दीआ जाआ
वाहा भरी वगा दी भनाणी मुईए मसतूनी
वाहां भरी वगा दी भनाणी ओ
वाहा भरी वगा दी भनाणी मुईए मसनी
मित्तर कीता वनजारे

तरी ओ मजाजा भारी मुईए मसतूनी
तेरी ओ मजाजा भारी ओ

भला मीआ मँगलोटूआ हो

भला मीआं मँगलोटूआ हो
चौह दिना दा जीणा तेरी सौह
दु खी जसी रहिणा हो

भला मेरी गद्दे टड्डीए
दुखें नी कटटणी जिंदडी तेरी तेरी सौंह
सुखे असी रहिणा हो

भला मीयाँ मँगनोटूआ हो
सिरा ना चक्दा घडोलू तेरी सौंह
दूर दूर पाणी हो

भला मेरी गद्दे टडोए
सिरे नी चक्किआ घडोलू तेरी सौंह
गावा गावा पाणी हो

भला मोआ मगनोटूआ हो
गावा दी वार्टा औंखीआ तेरी सौंह
हौले हौले चलणा हो

कुणी दित्ता रेशमी रुमाल

आइआ मेरा पुणू पोहालू ओ
धारे-धारे बँसरी बजादा ओ
धारे बँसरी बजादा ओ
वँसरी जो ताल ना चलादा ओ
रोपुणू दा शोसत्त भेडा ओ
भेडा जो वीलूण ना जूडा ओ
आइआ मेरा रोपुणू पोहालू ओ

असा जाणा सिमले बजारा ओ
आइआ मेरा रोपुणू पोहालू ओ
तारा टुट्टी गड्डी कोआ लघणा ओ
आइआ मेरा रोपुणू पोहालू ओ
कुणी दित्ता रेशमी शलवारा ओ
आइआ मेरा रोपुणू पोहालू ओ

सभ सभ पाहानू घर आए आ
ग्राज्जा मेरा रापुण पाहानू आ
रापुणू दा ग्राइग्रा मुगड़ गांगा आ
हथ छतरी मुण्डे नाना ग्रा
ग्राइग्रा मेरा रापुणू पाहालू ग्रा
रापुणू दा ग्राइग्रा टाला ग्रो
आइग्रा मेरा रापुणू पोहानू ग्रो

कुसी की जाई गलाई देना

कुसी की जाई गलाई देना
तुहाडी मूरत नित कुनादी ग्रा
भनी ना पीदी ना कुफ सादी ग्रा
आ सजणा दस्स तू हाल मेरी
ना दम ग्राए ना जिंद जादी ग्रा
लाहौरी राजे कन गनाई देना
गोरी ठाकरु ठाकरु गादी ग्रो
कुसी की जाई गलाई देना

आज दीए राती रहु मेरे गद्दीआ

ग्राज दीए राती रहु मेरे गद्दीग्रा
ग्राज दीए राती रहु ओ
आज दीए राती रानी रहु मेरे मित्तरा

आज दीए राती रहु मेरे गद्दीग्रा
सहुरा वी घर नही सस्स वी घर नही
कन्नीए जो नगदा ए भौ
ग्राज दीए राती रहु मेरे गद्दीआ
रहु मेरे मित्तरा

तेन वी दिनीआं साँगण वी दिनी आ
ठडीआं वौटीआ न्हाउ
आज दीए राती रहु मेरे गद्दीआ
रहु मेरे मित्तरा

चौल वी दिनीआ दाल वी दिनीआ
तड़के जो दिनीआ घिउ
आज दोए राती रहु मेरे गद्दीआ
रहु मेरे मित्तरा

मजा वी दिनीआं बिद भी दिनीआ
तू ठढिआ वागा बिन सौ
आज दीए राती रहु मेरे गद्दीआ
रहु मेरे मित्तरा

मेरे तेरे लिखे सजोग

बकरी चुगाणी गलीं लाणी गद्दी जालमा
बकरी चुगाणी ठडे नाले गद्दी जालमा
मेरे तेरे लिखे सजोग कुडीए पुगला
बालू बलाका दा काओ गद्दीआ जालमा
वालू देला मजेदार कुडीए पुगला

चढिआ महीना जेठ

चढिआ महीना जेठ कि पल्ले हेठ कि लूआ डाढीआ
माही गिआ परदेस ना खबरा साडीआँ
चढिआ महीना हाड कि तरण पहाड कि बलण अँगोठीआँ
माही गिआ परदेस मैं बिरही लूठीआ

टप्पे

नीले पाणीए दी टाकी भरू री
दस वो रुपइए लई ने
वखा देखणे जो वाकी लगदी

तेरे कोठे ते पैर फिसने
घुड वाजो पादी छोरीए
असा वैठी जरे तेरे ग्रासरे

हरी वणका दा दाणा भरू दा
सट्टी दी नी आई छोरीए
तेरे टब्बरा दा कौण मरूदा

पाणी भरना री डोले उमरे
माडा किग्रा कसूर गोरीए
गाली दिती आरी तेरे टबरे

तेरे कोठे ते पइआ मसरा
इक वारी मिन छोरीए
असी कड लणी सारी कसरा

गड्डी ग्राई री ग्रो घुम्मी घुम्मी
सिओने दी तू वण जा छोरीए
असी छडडी देणी राजी वो नामी

मेरे दिलड जो दु ख तेग दितए
वाटा त किनारे हटी जा
म्हारा खून तू बथेरा पीतू रा

तरे पलगा थले खेरा रे पावे
बोलूए ना मन्निग्रा पागले
मार खूना पीदे सभी दावे

पानी छडना फीग दाने जो
दूरा दी ए मोइए गगीए
दिल वालदा ना घरा जान जो

पत्ता पानो रा ब झरोखे रक्खो रा
दखिआ वेईमानी करदा
दिल तेरे भरास रखी रा

चिट्टे ददरूए वेरिग्रा बरमा
वालका री लगी ममता
हूणी मरने ते नही डरना

चिटटा कुरता सलवारी कने
लगिग्रा दिल नही मुडदा
भावें बड्ढी दे ललवारी वन

चिटटे कपडे सीग्रा दरजा
लमडे बरार देउरी
हुण मिलणे जो हुई री मरजो

धान बाणा ते पशू निक्ले
साम्हणे ना आइ घारीए
म्हारी आखरी रा आसू निकल

फुल फुली गिआ बाटा रो घारे
कुछ घरी लिखी रे दिदे
कुछ समझ टमाका रे जारे

लम्बा पात व तमाखूए दा
चल छोरी चली जा जाणा
जग नप्पणा सवाडूए रा

तरी हटटीआ त विक पिसता
इथे जिउणा कठन गिआ
तेरी शक्ला रा काई नी दिसदा

तेरे काठे ते पईआं तुल्लीआ
चिट्टे तेरे दद घारी
आजा साने री वनाई दू पुल्लीआ

पाणी भरी लणा गागरी क्ने
सडकां रें माड टुट्टी गए
तेरे हरे पीले चादर क ने

बग्ग बला री जौटी दवाक
ममता जो सारी दुनिया
काई दिदा नहीं कनेजा कढ़ाक

हरी चीली रे चीली तखते
ग्रखी रा इशारा जाणी जा
ग्रसी जीभा ते नी बोली सक्दे

हरा रग तेरे बगड़ूआ दा
इक लक्ख जानी दा देणा
दो लक्ख ह ददड़ूग्रा दा

रौंदिआ छडडी वे गिग्रा
चिट्ठी लिख किथे पावा
जादी वारी दस्स नी गिग्रा

तेरे घोडे जो देंदी मैं दाणा
प्रदेसाँ नही जाणा
घर बैठिग्राँ ही खाणा

तेरे कोठे ते दुद्ध रिडके
मेरी भामाँ जान कढी ल
मारे सजना तू मत झिडके

फुल फुलिया रे कथा रे मेरे
बहुतेरी समझाई छोरी
हुण करनी ले विनतीग्रा दे मारे

छा वडनाँ रे घानाँ रे बीडा
सुख साद ल ल पापणी
तेरे सजना जो डम्मी रा कीडा

धान वाणा ते पनू निराल
साम्हणे ना आइ छारीए
म्हारी आखरी रा आंसू गिरन

फुल फुली गिआ वाटा रा धार
कुछ धरी लिखी र दिद
कुछ समझ टमाका रे जारे

लम्बा पात व तमाखूए दा
चल छारी चली आ जाणा
नग नप्पणा सवाडूए रा

तेरी हटटीआँ त विक पिसता
इथे जिउणा कठन गिआ
तेरी शक्ला रा काई नी दिसदा

तेरे काठे ते पईआ लुल्लीआ
चिटटे तेरे दद छारी
आजा सोने री वनाई दू फुरलीआ

पाणी भरी लणा गागरी कने
सडका रें मोड टुटटी गए
तेरे हरे पीने चादरू क ने

वग्गे वला री जौटी दध्के
ममता जो सारी दुनिया
काई दिदा नही कलेजा कढक

हरी चीलो रे चीली तखते
अखी रा इशारा जाणी जा
असी जीभा ते नी बोली सकदे

हरा रग तेरे बगड़ूआ दा
इक लक्ख जानी दा देणा
दो लक्ख हैं ददड़ूआँ दा

रौंदिआ छड्डी वे गिआ
चिट्ठी लिख क्थि पावाँ
जांदी वारी दस्स नी गिआ

तेरे घोडे जो देंदी मैं दाणा
प्रदेसा नही जाणा
घर बैठिआँ ही खाणा

तेरे कोठे ते दुद्ध रिडके
मेरी भामा जान कढी ल
मार सजना तू मत झिडके

फुल फुलिया रे कैथा रे मेरे
बहुतेरी समझाई छारी
हुण करनी ले बिननीआ दे मोरे

छा वडना रे धानाँ रे गीडा
सुख साद ल ल पापणी
तेरे मजना जा इम्मीग कीम

फुल फुलिया पगा हेठीआ
किता तेरी गीत सुनजा
किता लगी जाजया हठीग्रा

पानी भरना ले हरी डडीग्रा
मरने ते हार डरदे
ग्रसी लडणा तलवारी नगीग्रां

फुन फुलदा रे भर क्यिारीग्रा
बटरी मगा दे छोरीए
असा चलणा रे राती ब्यिाडीग्रा

गडी ग्राई री बा गडडे बा खड्डे
मले री जलवी खादी
हुण निक्ली वा हडडे बा हडडे

फुन फुलिग्रा डोडनी दा
छेती छेती तुरी वदा
मदा हाल वो रागणो दा

घडा भरना धाई बो धाई
दिन तेरे ग्रासरे क्हां
रातां कटणी रोई वे राई

चिटटा रग वे पतास दा
गुरखी दा की मलणा
गूहडा रग व ददासे दा

तेरे रुपए ते बढडी ड्गागी
लोका छोरु गरला मारदा
अप् त्रिआही काली डूमणी

पाणी भरी नेवा डाने व डाल
गाली देखिग्रां देदा छोरुग्रा
तू तें लगी रा बगाने रे बोले

चिटटे कपटे री सीवी घगरी
तू वीं परदेसी छोरुग्रा
वे जो ग्रसा छोटी देणी तेरी नगरी

धार टालीग्रा द पछी पपला
इजत बरान कीतीग्रा
नी तिजो क्दी भी नी ग्राई ग्रक्ल

●

कीदीआ = किसके जैसी
कुआलू = चढ़ाइ
कुकडिआल = मुर्गे की
कुगू = टीके वाला सिंदूर
कुतरा = कुत्ता
कुथू = कहाँ से
कुनी = किन किस, किसक
कुलज = पूजा वाली मूर्ति
कूआ मारना = आवाज देना
केरे ता करे = लगातार
कोटूए = क्उ का वक्ष
काक्री = मुर्गी

खटनालू = एक फूलदार पौधा
खनी = छलनी
खाखड़ = गाल
खिद = लीरा का गद्दा
खदना = हाकना
खाहा = अखरोट
खोडी = घास

गराइआ = घरखड़ी
गतारां = गान वालियाँ
गलाणा — बोलना कहना
गहले = गड्ढे म
गाइ = गाय
गिरी पई = गिर गई
गुआनूआ = पशु चरान वाला
गूणाआं दे राग = वियोग का दुःग
गुलचट = अत्र
गाहड़ा = रूई का गाला
गौरां = पार्वती
गोरजा = पार्वता

घनिआरा = सलट का पत्थर
घनरी = फूल का नाम
घडालीआ = घडौंची
घडालू = घाड़ा
घालकर = नौकर
घेनिया — गहन

चक्रू = चकार
चरूएदार — नौकर चाकर
चावड़ी = धान आदि की फसल
चापका = चाबुक स
चिजण = छोटे दटिया चावल
चितरगा = चित्रकार रंग करन वाला
चिड़वा = चिवडा

छत्ते = पट पुरुषा के सिर के बाल
छन = बरामदा
छलेछले = पुचकारकर छल सहित
छेरू = बकरी का बच्चा
छल = सुंदर युवक
छोदा = बुलावा
छाडे छोडे = जल्दा जल्दी

जघा = जाँघ टाँगें
जदोकना = जब का
जनास = ब्याही स्त्री
जवाइए = जमाई का
जवरा = बूढ़ा (बाप)
जमान — बिलकुल ही
जलदीआ = मछला
जाहणू = घुटना
जावन = जवान बालक
जातक = लड़का
जिवक = नीचे मदान

जिक्कीआ=चिनकर दबा दना
जिजराडा=स्त्री का दूसरा ब्याह
जिंद रह्ल फिरी मलिल—जीन रह ता फिर मिलेंग
जोगी=जिऊगी
जुआदडी=जवान युवती
जाजी=चोली
जात=दर्रा पवत की चाटी

झाज=जहाज म
झिक्ले=निचल नीच क
झीजण=छाट वच्चिया चावत
झरी=दुखी हाना पछताना
झतझात=छूत छात
झाल=छाछ म नमक और हल्दी उबाल कर तयार किया गया खान का एक पदाथ

टगाना=लटक जाना चढ जाना
टापर=झुग्गी झापडी
टावण=हटाना
टिआला=चबूतरा (पट क इद गिद)
टिक टिक्कदीआ=पतली
टिक्लू=टीका (बिंदी)
टुहाणीआ=दुकानदार
टोल=घर, कुनवा
टाला=पत्थर

ठाहरी=ठौर जगह स्थान
ठाकी पाए=समझाए
ठाकणा=राकना

डगा=दीवार बध पत्थरा की हद
डबल=पुराना पसा, टका
डल्नी=डलिया, टोकरी
डडाली=छावडा
डाई=दुख
डाहा डींगा=टेढ़ा मटा
डुगर=गहरे
डगाणी=रुपय का कुण्डा (हमल का)
डगा=गहरा
डाटणी=रीठा
डूणमडूणी=चक्कर जाना
डारडीए=ढूढती है
डारु=निकम्मा गवार

ढलीआ ढलला=दिन ढल
ढाई न=हटाकर

तपका=तरका
तरू टारा सुथणू=चूडीदार पाजामा
तरेडा=जगहाई
तरेडए=कुडली मारकर
तिसा नडे=उसक पास
तिजो=तुझ
तीत=तुझस
तथा=खुरचना
तोपणा=ढूढना
तोपदे=ढूढत
तौंदी=उमस, गरमा का मौसम
तोला=उतावला

थाडी=थाली
थीआ=था, (दुआबी)

दछण=दक्षिण
दतिआलू=नाश्ता
दतूए=ऊची जगह

द बू=बच्चा
दरम=दाम, परा
दरवडा=खना मैदान
दीमा=की
देला=दूगा
दवा=देवी
दोहर=दोहर, दोहरी चादर

धजा=भन्डी
धूरी=धुध
धीन=गेहू व आटे का रात

नमौच—खालिस साफ
नचरौरी—आने वानी चौथ
नजाणी=अनजाने
नदाई=गुडाई नलाई (दुआवी)
नरेला=नारियत
नाल—नाडा
नाड—नाद पीपनी एक वाजा
निआई=कटाई आरम्भ करना
निहार—इतजार प्रतीक्षा
निहाडा=पशुओ का वाडा (घरा से दूर)
नीठी=नीची
नीणी=ल जानी
नुहारी=नाश्ता
नहतर=धाना
नोई=नई
नौणी=मक्खन

पईआ=मका पीहर पिता का घर
पहुणे=अतिथि महमान
पवला=ओपरा आदमी
पट=छोग सन
पव्लोई जाणा=भूल जाना
पणीआं=चरणें
पतनू=पत्ते
परगडा=मह ज मेरे
परान=पुआन
परोन=डयाटी
पाजा=जगली चरी
पाजी=जगली जवार (मक्की)
पाटीआ=क्यारियाँ
पारही=रखवाली करने वाना
पिंजर=पिंजरा शरीर
पिपड्=पीपल
पीडो=तैयार करो
पूजिआ=धुन दियाँ
पेडीआं=मीढिया
पईए=मा बाप के
पडा=माग, बाट
पोनूआ—पराठे जमा

फफरूआ=जगली बूटी (सब्जी के लिए)
फल च निकलाई=फदे म स निकालना
फुलनू—फूल
फूली समाए=खिलकर मुरझा गए
फेरे=बाली

बहिलीआं=बघियाँ
बकरू=वकरे
बगरोर=चूडियाँ (काँच की)
बजपा दणा=बिरादरी से निकाल दना
बटहडा=पत्थर घडन वाला कारीगर
बटोनना=चुगना, समेटना उठाना
बत्ता=रास्ता
बत्तरी=बत्तीस

महुआ=एक पेड़
मलरना=खाद डालना
म्हटो=चालाक स्त्री
माहणू (माण)=आदमी
माक्डी=आम की सूखी फाँकें
माँजरू=चटाई
माणी=नौका के आगे रखा पत्थर
म्हाणी=आम का खटाई वाला पानी
मिज़ो=मुझ
मिझा=मुयवा
मीवी=मुझे
मीणे=ताने
मीनी=कलाई, बाँह
मुआल=गाली देना
मुसती=मस्त लापरवाह
मुगा=नग
मुडीए=गर्दन का
मुना=हल
मूसना=खिसका लेना चोरी करना
मघ=मेह वर्षा
मसा=भमें
मजर=झगडा खराब बातें करना
माडी=सग

रकड=पथरीली ज़मीन
रखोकड=घर बसाई स्त्री
रमज़=तेज
रमी रही=मन लग गया
रडिआँ=टाने पर
राम=पहाड़ी मड
री=की
रग बुग्गी=इक्का दुक्का
रूपा=चाँदी
रेन्ना=झगडा

लप पगापीआ=भर भरकर
लगारिआँ=अलमारियाँ
लाहड=किनारे पर
लान्डू=मकान के साथ सब्जी आदि के लिए जमीन
लाडी=बहू, बीबी
लिचडा=नीला
लुहारे=थाके
लुणाई=फसल की कटाई
लरे=सावन के महीने
लोटकी=लुटिया

वयाहकुल=विवाह की तिथि लगन

सइ=सोना
सस्सू=सास
सगेलणा=इकट्ठा करना
सघडा=तंग
सच्ची रा कीडा=साँप काट गया
सनेरूआ=सुनार
सघडा=पत्थर
सल्ह=श्मशान भूमि
सवाणा=चराने वाला, चरवाहा
साओगी=साथ, संग
साइत=एक सगुन
साकी=हमें
सावा दा रासी=सावन का महीना
सिज्जा=गीला, सीला
सीर=जहाँ पानी रिसता हो
सुहेतडी=सभालकर रखी हुई
सुक्केकुत्त=सखी रोटी
सुखरात=सगुन वाली रात
सुज्जे=आश्विन के महीने
सन्ना=भिगोना

बदरी=पुआल की चराई
बनूआं=मिस्सी ईटुली
बबरू=खमीरी पूरी
बरेही=खाली भूमि बंजर
बरी=बुराई
बल्ही=नदी किनारे का टीला या खेत
बडका=बडा भाई
बढी=बट का वक्ष
बाइआ=भाइयो
बाइ=नाव
बामण=बरतन
बाहा=बाहर
बागनू=चूडियां
बाजीआं=मिठाई
बाल्ला=बच्चा
बाणा=बन्ना दूल्हा
बीनी=बावन
बामी=नामी
बारन=जुताई
बानू=नय
बाड़ए सुमानूए=गाव की मीमा म बस्ती
बिहाग=सवेरा
बिहौनरी=विवाहिता स्त्री
बिखरा (बिगडा)=मुश्किल मस्त
बिगमा=मिल जाना
बिज्ज=बिजली
बिन्नू=बिन्नी
बिन=मुह (घडे का)
बिडला=नौरा
बीआ=घर के आगे छोटी दीवार
बीहण=धनिया
बीह=मेत की मेड
बमर=नय बुनाक
बहाआं=बांह
बाढी=विवाह की मुन्नी
बोणा=बढना
बोढवाना=बूटा
बोनो=बहन
बोलीआ=कौल वचन
बौहडी=चौबारा
बोहकरी=बुहारी झाडू
बौडी=बावडी

भइआ रेली=नीच पसर गई
भटान=मिट्टी के डले का तोडने वाला लकडी का हथौडा
भटरू=खमीरी रोटी
भडाणी=पत्तनी
भनोला=पागल
भराती=प्याऊ
भरी=झाडू बुहारी
भारी=दूर
भिआगा=सवेरा
भिक्कड=मिट्टी की डली ढेल
भुज=साग
भन्न=प्रेम की यादें

मझा=बीच म मध्य
मझी=बीच
मन्दा=राज (मकान बनाने वाला)
मडला=कटोरी बजाने वाला
मटार=कोई हथियार
मघरा=साग सब्जी
मनजूर=मनभाता
मनिआरे=बिसाती
मरथिआल=श्मशान
मरीना=पशम कपास

मरूआ=एक पेड़
मलेरना=खाद डालना
म्हूणी=चालाक स्त्री
माहणू (माणू)=आदमी
माकडी=आम की सूखी फाँकें
माजरू=चटाई
माणी=नौका के आगे रखा पत्थर
म्हाणी=आम का खटाई वाला पानी
मिजा=मुझे
मिझा=मुझको
मीकी—मुझे
मीणे=ताने
मीनी=कलाई बाँह
मुआल=गाली देना
मुसती—मस्त लापरवाह
मुगा=नग
मुडीए=गर्दन को
मुन्ना=छोटा
मूसना=खिसका लेना चोरी करना
मघ=मेंह वर्षा
मैंसां=भैंस
मजर=झगडा खराब बातें करना
मोदी=संग

रकड=पथरीली जमीन
रखोकड=घर बसाई स्त्री
रमज=तज्ञ
रमी रही—मन लग गया
रडिआं=टीले पर
रास=पहाड़, मेरु
री=की
रुग बुग्गी=इक्का दुक्का
रूपा=चोली
रेंगना=झगडा

लप पडापीआ=भर भरकर
लमारिआं=अलमारियाँ
लाहड=किनारे पर
लाहडू=मकान के साथ सब्जी आदि के लिए जमीन
लाडी=बहू बीबी
लिचडा=नीला
लुहारे=चाक
लुणाई=फसल की कटाई
लरे=सावन के महीने
लाटकी=लुटिया

वयाहक्ल=विवाह की तिथि लगन

सइ=सोना
सस्सू=सास
सगेलणा=इकट्ठा करना
सघडा=तंग
सच्ची रा कीडा=साँप काट गया
सतेरूआ=सुनार
सघडा=पत्थर
सल्ह=श्मशान भूमि
सवाणा=चराने वाला चरवाहा
साओगी=साथ, संग
साइन=एक सगुन
साकी=हम
सावा दा रासी=सावन का महीना
सिज्जा=गीला सीला
सीर=जहाँ पानी रिसता हो
सुहेलदी=सभालकर रखी हुई
सुक्केकुत्त=सूखी रोटी
सुपरात=सगुन वाली रात
सुज्जे=अश्विन के महीने
सेदना=भिगोना

सडी=पानी दिया
सली=हरी, सब्जा
सोगना=छाया म

हटली=दुकान
हडणा=लांघना पदन चलना
हावरी=आस

हार—पगले सन
हार—पगले गतियां
हसीआ=मजदूर सामान ढोन वाल
हेरी=रखना
हडीआ=शिकारी
हाणींवीहा—किस तरह का होगा
होलर=बच्चा